भाषाविज्ञान परिभाषा कोश

डॉ. कविता रस्तोगी
रीडर
भाषाविज्ञान विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

भारत बुक सेण्टर, लखनऊ

૧૩૮- ૨|૧|૧૭ (૫)
BVP-103૯.
૫|૫.

"शृद्धेय गुरुवर

श्री राजकिशोर रस्तोगी

को

सादर समर्पित"

"पुस्तक केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय (मानव संसाधन विकास मंत्रालय) के संस्वीकृति–पत्र संख्या 5-24/2002 के. अनु. ए. दिनाँक 3-3-2003 के माध्यम से प्राप्त वित्तीय सहायता से प्रकाशित हुई है। कापीराइट अनुदानग्राही के पास है।"

भाषाविज्ञान परिभाषा कोश

डॉ. कविता रस्तोगी

रीडर

भाषाविज्ञान विभाग

लखनऊ विश्वविद्यालय

लखनऊ

भारत बुक सेण्टर, लखनऊ

प्रकाशक : भारत बुक सेण्टर
17, अशोक मार्ग
लखनऊ

ISBN : 81-7678-115-9

संस्करण : प्रथम
वर्ष : 2003
मूल्य : 114.00 रुपये

शब्द संयोजन : रस्तोगी कम्प्यूटर्स
राजा बाजार, लखनऊ
मुद्रक : पारेख आफसेट प्रिन्टिग प्रेस
टैगोर मार्ग, लखनऊ

BHASHAVIGYAN PARIBHASHA KOSH

- Dr. Kavita Rastogi

भूमिका

सुश्री (डॉ.) कविता रस्तोगी द्वारा तैयार किया गया 'भाषाविज्ञान परिभाषा कोश' अपने ढंग का सराहनीय प्रयास है। कोश-निर्माण एक श्रमसाध्य प्रयास है, जिसे धैर्य एवं योग्यता के आधार पर ही पूरा किया जा सकता है। श्रीमती कविता ने इस दिशा में आठ सालों में शनै : शनै : प्रयास किए, जो वर्तमान रूप में प्रस्तुत हैं। हिन्दी में परिभाषा कोशों की परम्परा है। भाषाविज्ञान में डा. भोलानाथ तिवारी का जो (परिभाषा) कोश है, उसमें बहुत पुरानापन है (करीब 38 साल) तथा भाषाओं एवं बोलियों के संग्रह से उसका कलेवर तो बड़ा हो गया, लेकिन संकल्पनाओं की संख्या, उनकी समुचित व्याख्या आदि का अभाव यत्र-तत्र खटकता है। इसके अलावा, 1960 के बाद भाषाविज्ञान में अभूतपूर्व विकास हुआ, नए वाद आए, पुराने गए, देश-काल में इस विषय का विस्तार हुआ। यह विस्तार भारत में तो पूर्णतः अँगरेजी में है। पूरा उत्तर भारत का छात्र समुदाय (दिल्ली, अलीगढ़ छोड़कर) हिन्दी माध्यम से भाषाविज्ञान पढ़ता है, यद्यपि सहायतार्थ अँगरेजी की सहायता ली जाती है। अँगरेजी में तो अनेक छोटे-बड़े पारिभाषिक कोश भाषाविज्ञान को लाभ पहुँचा रहे हैं, लेकिन हिन्दी में इसका अभाव खटकता था। डॉ. कविता ने इसी कमी की बहुत कुछ पूर्ति इस कोश के माध्यम से कर दी है।

डॉ. कविता ने संरचनात्मक भाषाविज्ञान में काम किया है, किताबें लिखी हैं, भारतीय भाषाविज्ञान की सरणि को भी पहचाना है, विश्वविद्यालय में रीडर की हैसियत से पढ़ा भी रही हैं, अतः उनके प्रयास से तैयार यह कोश छात्रों, शिक्षकों एवं सामान्य जनों के लिए परिचयात्मक भूमिका अदा करेगा, ऐसी मेरी आशा है। इस कोश में 1064 प्रवृष्टियाँ हैं और वे सभी संकल्पनात्मक हैं। प्रत्येक प्रवृष्टि को क्षेत्र / शाखा विशेष से जोड़कर सरल भाषा में परिभाषित किया गया है। परिभाषा प्रायः सटीक है। यथाशक्य उदाहरण भी दिए गए हैं। संदर्भ-सूची से आश्वस्त होने के कारण है कि परिभाषाएँ प्रामाणिक हैं। प्रमुख भाषा समुदाय ही वर्णित हैं, भाषा परिवारों को ठीक ही छोड़ दिया गया है। यथासंभव आरेख आदि से कोश को उपयोगी बनाया गया है। भाषाविज्ञान में हिन्दी के पारिभाषिक शब्दों की बड़ी जटिलता है, अतः हिन्दी निदेशालय के पारिभाषिक शब्दों का आधार बनाना ठीक है। अँगरेजी एवं हिन्दी के समतुल्य अंत में वर्गीकृत सूची में दिए गए। हर हिन्दी प्रवृष्टि का अँगरेजी रूप साथ-साथ देकर पाठक को काफी सुविधा प्रदान की गई है।

मैं आशा करता हूँ कि इस कोश का हिन्दी जगत स्वागत करेगा। शुभास्तु,

प्रो. भगवानदीन मिश्र

पूर्व प्रो. एवं अध्यक्ष, भाषाविज्ञान विभाग
सागर विश्वविद्यालय, सागर।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची (अंग्रेजी)

Akmajian, A. and Henry, F. (1975) An Introduction to the Principles of Transformational Syntax. MIT Press.

Bolinger, D.L. and Sears, D.A. (1981) Aspects of Language. 3rd ed. Harcourt Brace Jovanovich.

Catford, J.C. (1977) Fundamental Problems in Phonetics. Edinburgh University Press.

Corder, S.P. (1973) Introducing Applied Linguistics. Penguin.

Dinneen F.P. (1967) An Introduction to General Linguistics. Holt, Rinehart and Winston, Inc.

Ladefoged, P. (1982) A Course in Phonetics. 2nd ed. Harcourt Brace Jovanovich.

Lepschy, G.C., (1982) A Survey of Structural Linguistics. Cambridge University Press.

Lyons, J. (1968) Introduction to Theoretical Linguistics. Cambridge University Press.

Lyons, J. (1977a) Chomsky. Fontana.

Lyons, J. (1977b) Semantics. Vols I and II Cambridge University Press.

Matthews, P.H. (1974) Morphology. Cambridge University Press.

Matthews, P.H. (1981) Syntax. Cambridge University Press.

Palmer, F.R. (1984) Grammar. 2nd ed. Penguin.

Robins, R.H. (1980) General Linguistics : An Introductory Survey. 3rd ed. Longman.

Trudgill, P. (1984) Sociolinguistics : An Introduction. 2nd ed. Penguin.

Verma and Krishnaswamy, (1989) Modern Linguistics : An Introduction. Oxford University Press, Delhi.

पारिभाषिक शब्दावली निर्धारण सम्बन्धी एकरूपता के लिए वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित `भाषा-विज्ञान शब्दावली' को आधार रूप में ग्रहण किया गया है किन्तु कतिपय बिन्दुओं पर मेरा उनसे मतभेद है, यथा- classification और categorisation दोनों के लिए वहाँ वर्गीकरण, कोटिकरण शब्द दिए गए हैं जबकि मैंने classification के लिए वर्गीकरण तथा categorisation के लिए कोटिकरण शब्द रखा है। साथ ही, आवश्यकतानुरूप कतिपय नवीन शब्दों की रचना भी की गयी है, यथा - condition के लिए `शर्त' या language shrink के लिए `भाषा-संकुचन'। इस प्रकार, भाषाविज्ञान के विकास में सैद्धान्तिक, वैचारिक व अवधारणात्मक महत्त्व रखने वाले शब्दों को संकलित कर स्पष्ट एवं सुबोध भाषा में परिभाषित करने का प्रयास किया गया है।

श्रद्धेय गुरुवर श्री राजकिशोर जी को श्रद्धा सुमन अर्पित करना चाहूँगी जिन्होंने समय असमय का ध्यान न रख, सदैव मेरी शंकाओं का निराकरण किया और मुझे निरन्तर कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। पाण्डुलिपि के टंकण में लेजर ग्राफिक्स के अधिष्ठाता श्री दिनेश पाण्डे जी ने जो परिश्रम किया उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। साथ ही मैं उनके छोटे भ्राता श्री कृष्णवेश पाण्डे जी की भी आभारी हूँ जिन्होंने विशेष रूचि लेकर कोश में आगत आरेखों का निर्माण किया। `सुलभ प्रकाशन' के अधिष्ठाता श्री वीरेन्द्र बाहरी जी ने पुस्तक के प्रकाशन में जो रुचि व तत्परता दिखाई उसके लिए उन्हें भी बहुत-बहुत धन्यवाद। व्यक्ति का कोई भी कार्य परिवार के सदस्यों के सहयोग के अभाव में पूर्ण नहीं होता और यह कोश भी अपवाद नहीं है, किन्तु उन्हें धन्यवाद दे मैं उनके गुरुत्व को कम नहीं करना चाहती हूँ।

डॉ0 कविता रस्तोगी

आमुख

कई वर्षों तक इस कोश की रूपरेखा मन में बनती रही, कार्य कठिन एवं दुरुह था। कतिपय सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रेरणाओं के फलस्वरूप 1994 में कार्य प्रारम्भ किया और छह वर्षों के निरन्तर परिश्रम का परिणाम आज आप के समक्ष प्रस्तुत है। हिन्दी भाषा-विज्ञान के क्षेत्र में, एक विस्तृत परिभाषा कोश की कमी पाठक प्राय: महसूस करते रहे हैं। आशा है, प्रस्तुत कोश एक सीमा तक उसे दूर करेगा। ऐसा नहीं है कि पूर्व में परिभाषा कोश रचे नहीं गए, श्री राजेन्द्र द्विवेदी एवं डॉ0 भोलानाथ तिवारी के द्वारा किए गये प्रयास प्रशंसनीय हैं किन्तु विषय के विकास के साथ-साथ पुनरीक्षण एवं पुनरावलोकन न होने के कारण आज इनकी उपयोगिता कम हो गई है।

प्रस्तुत कोश में नवीन विकसित सिद्धान्तों से सम्बन्धित पारिभाषिक शब्दों को यथासम्भव सरल एवं सुबोध शैली में लिखा गया है। प्रविष्टियों की सुगम परिभाषा, आवश्यकतानुरूप उनके उदाहरण एवं आरेख भी दिए गए हैं। कोश की प्रविष्टियों के चयन में कुछ बिन्दुओं का ध्यान रखा गया है, जैसे-भाषाओं एवं भाषा परिवारों के नाम की सचेतता चर्चा नहीं की गयी है। कोश का विषय भाषा-विज्ञान की अधिभाषा है तथा कोश का माध्यम हिन्दी भाषा है अत: अपवाद रूप में हिन्दी को स्वतन्त्र प्रविष्टि के रूप में स्थान दिया गया है। इसी प्रकार पारम्परिक व्याकरणिक वर्णन से सम्बन्धित शब्दों को स्वतन्त्र प्रविष्टि के रूप में अलग-अलग न रखकर (यथा- एक वचन, द्विवचन, स्त्रीलिंग, पुर्लिंग) एक प्रविष्टि के अन्तर्गत रखा गया है। भाषावैज्ञानिक सम्प्रदायों में भी प्रमुख सम्प्रदायों का ही उल्लेख किया गया है। अ, क्, च्, ट् आदि स्वनों की अलग प्रविष्टि नहीं बनाई गई है वरन् स्वर, व्यंजन आदि शीर्षकों में ही इनका वर्णन है।

अ

अंगजा आश्रित व्याकरण daughter dependency grammar

व्याकरणिक विश्लेषण का एक उपागम, जो वाक्यीय अभिलक्षणों एवं आश्रयता सम्बन्धों को महत्त्व देता है। इस विश्लेषण में रूपान्तरण की अनिवार्यता नहीं होती है वरन् यह वाक्यीय प्रतिरूपण पर निर्भर करता है। इसमें आसन्धियों के मध्य प्राप्त ऊर्ध्वाधर (vertical) सम्बन्धों को **अंगजा आश्रित** के रूप में सन्दर्भित करते हैं तथा कर्ता एवं क्रिया के मध्य प्राप्त क्षैतिज (horizontal) आश्रयता सम्बन्धों को **भगिनी आश्रित** के रूप में। इस उपागम की प्रत्येक आसन्धि द्विचर अभिलक्षणों वाली होती है जबकि पूर्व प्रचलित रूपान्तरण व्याकरण में यह अनिवार्य नहीं था।

अंगविक्षेपविज्ञान kinesics

संकेत विज्ञान के अन्तर्गत अंग विक्षेप शब्द का प्रयोग आंगिक चेष्टाओं एवं व्यवस्थित मुख भंगिमाओं द्वारा अर्थ सम्प्रेषण के सन्दर्भ में किया जाता है। प्राय: शारीरिक अंग विक्षेप (जैसे - होंठ पर आई हँसी अथवा भौंह का तिरछापन) भाषिक वाक्य की व्याख्या को कुछ परिवर्तित कर देते हैं। अभिव्यक्ति को अधिक सक्षम बनाने के लिए जिन शारीरिक मुद्राओं एवं मुखाकृतियों का प्रयोग किया जाता है, उनका विस्तृत अध्ययन अंगविक्षेप-विज्ञान का विषय है। इसका प्रमुख उद्देश्य यह ज्ञात करना है कि क्या अंग विक्षेप क्रियाएँ पूर्ण सम्प्रेषण करने में समर्थ हैं ? अथवा कहाँ तक ये भंगिमाएँ प्रमुख सम्प्रेषण माध्यम भाषा की सहायक रूप में कार्य करती हैं ?

भाषा अर्जन से सम्बन्धित अध्ययन में यह अवधारणा **विकासात्मक अंगविक्षेप-विज्ञान** शीर्षक के अन्तर्गत आती है। कतिपय विद्वान समस्त एमिक (व्यवस्थापरक) शब्दावली के आधार पर **अंगविक्षेप, सहअंगविक्षेप** इकाइयों की स्थापना कर उनके मध्य के अन्तर की भी चर्चा करते हैं किन्तु इस शब्दावली के आधार पर शारीरिक भाषा की व्याख्या कठिन ही नहीं, विवादास्पद भी है।

अंगागिवाचन synecdoche

अर्थ परिवर्तन का एक प्रकार जिसमें शब्द के प्राचीन एवं नवीन अर्थ के मध्य समग्रता एवं अंश का सम्बन्ध विद्यमान माना जाता है, यथा - अंग्रेजी शब्द `town' और `stove' के प्राचीन अर्थ क्रमशः `fence' और `heated room' थे जिनके बीच समग्रता एवं अंश का सम्बन्ध दृष्टिगत होता है। यही सम्बन्ध हिन्दी `मृग' शब्द के प्राचीन अर्थ `जानवर' एवं `हिरन' के बीच मिलता है।

अंत coda

ध्वनिविज्ञान में प्रयुक्त शब्द जो किसी अक्षर के एक खंड की ओर संकेत करता है। यह खण्ड प्रायः किसी अक्षर के शिखर के बाद आता है, उदाहरणार्थ - काम् (आ) में म् ।

अंत प्रत्यय suffix

वह प्रत्यय जो मूल रूप के पश्चात् संयुक्त हो। परप्रत्ययीकरण की प्रक्रिया हिन्दी की एक बहुप्रचलित प्रक्रिया है। हिन्दी में इसका प्रयोग नवीन शब्दों के निर्माण के लिए (व्युत्पादक प्रत्यय) तथा व्याकरणिक सम्बन्धों की अभिव्यक्ति के लिए (विभक्ति प्रत्यय) होता है।

अंतरण transference

इस शब्द का प्रयोग अनुवाद के क्षेत्र में किया जाता है। नाइडा ने अपने अनुवाद सिद्धान्त में मूलभाषा पाठ के विश्लेषण तथा लक्ष्यभाषा पाठ के पुनर्गठन के बीच की प्रक्रिया को अन्तरण संज्ञा दी। अन्तरण की प्रक्रिया अनुवादक के मस्तिष्क में घटित होती है तथा इसकी प्रकृति त्वरित और अन्तर्ज्ञान मूलक होती है। अनुवाद कार्य में अनुवादक के व्यक्तित्व की महत्ता इस सोपान पर होती है। विश्लेषण एवं पुनर्गठन के सोपान पर अनुवादक अन्य व्यक्तियों से सहायता ले सकता है किन्तु अन्तरण के सोपान पर उसे अकेले कार्य करना पड़ता है। इस सोपान पर दो तथ्य महत्त्वपूर्ण होते हैं - अनुवादक का व्यक्तित्व तथा मूलभाषा एवं लक्ष्यभाषा के मध्य संक्रमणकालीन तालमेल।

अंतरीकृत internalized

वह प्रक्रिया जिसके द्वारा कोई वक्ता अपनी भाषा की संरचना सम्बन्धी ज्ञान को

धारण करता है। प्रजनक भाषाविदों ने इस शब्द का प्रयोग किया। भाषार्जन के सन्दर्भ में भी इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग किया गया। इन विद्वानों के अनुसार हिन्दी भाषी बच्चों द्वारा किया गया प्रयोग *कुर्सिएँ इस तथ्य का संकेतक है कि बच्चों ने हिन्दी बहुवचन नियम को पूर्णत: अन्तरीकृत कर लिया है। प्रजनक विद्वान भाषिक दक्षता को अन्तरीकृत नियमों का समुच्चय मानते हैं।

अन्तर्गामी वायु प्रवाह ingressive air stream

फेफड़ों से वायु प्रवाह दो प्रकार से होता है अन्तर्गामी एवं बहिर्गामी। सामान्यत: भाषिक ध्वनियाँ बहिर्गामी वायु प्रवाह से उच्चरित होती हैं किन्तु कभी-कभी अन्तर्गामी वायु प्रवाह से भी कुछ भाषिक ध्वनियाँ उच्चरित होती हैं। अत्यधिक पीड़ा या आश्चर्य की अभिव्यक्ति अथवा सांस लेते समय बोलने पर कभी-कभी अचानक अन्तर्गामी वायु प्रवाह से उच्चरित ध्वनि सुनाई पड़ती है।

अन्तर्निहित अभिलक्षण inherent feature

प्रजनक व्याकरण के कतिपय प्रारूपों में स्वीकृत एक प्रकार के द्विचर अभिलक्षण जो कोशीय सूची में निहित होते हैं तथा किसी मद के वाक्यीय प्रकार्य को प्रभावित करने वाली विशेषताओं की सूचना देते हैं, यथा - (+मानवीय), (+अमूर्त), (+पुर्लिंग)। विश्लेषण के अनेक बिन्दुओं, यथा - चयनपरक बाद्धयताओं के स्पष्टीकरण तथा अकोशीय रूपान्तरणों में, ये अभिलक्षण कार्यरत रहते हैं।

अन्तर्मुखी endophoric

किसी पाठ की संरचना को परिभाषित करने वाले संसक्तिपरक सम्बन्धों को अभिव्यक्त करने के लिए कुछ विद्वान अन्तर्मुखी शब्द का प्रयोग करते हैं। इन सम्बन्धों को अन्वादेशक तथा पश्चोन्मुखी दो वर्गों में विभाजित किया जाता है। बहिर्मुखी सम्बन्ध इसके प्रतियोगी होते हैं जिनकी संहति में कोई भूमिका नहीं होती और जो भाषा बाह्य परिस्थितियों पर व्याख्येय होते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय स्वनवर्णमाला international phonetic alphabet

किसी भी भाषा के वाक्-स्वनों के लिप्यंकन के लिए **अन्तर्राष्ट्रीय स्वन संस्था** ने एक वर्णमाला तैयार की, जिसमें उच्चारण-व्यवस्था का ध्यान रखते हुए लिपि-चिह्नों तथा

विशेषक चिह्नों का समावेशन किया गया। इस संस्था की स्थापना सन् 1880 में यूरोपीय स्वनशास्त्रियों ने की थी।

अंतर्विनिमेयता interchangeability

किसी प्रतीक व्यवस्था का एक प्रमुख अभिलक्षण। भाषा में भी यह विशेषता मिलती है जिसके कारण किसी समुदाय के सदस्य परस्पर कोड का आदान-प्रदान करते हैं। कतिपय जानवरों की संकेत व्यवस्था में यह विशेषता नहीं मिलती है, जैसे - मादा द्वारा की गयी पुकार में कभी-कभी समूह के नर सदस्य सहभागी नहीं होते हैं।

अंतर्वैयक्तिक interpersonal

अर्थ का एक प्रकार जो सामाजिक सम्बन्धों को बनाने एवं बनाए रखने से सम्बन्धित है। कतिपय विद्वान भावबोधक अर्थ को इसके अन्तर्गत रखते हैं जबकि एक अन्य दृष्टिकोण वाले विद्वान सामाजिक सम्बन्धों की भाषिक अभिव्यक्ति सम्बन्धी अध्ययन को समाजभाषिक या संकेत-प्रयोग प्रकार्य का विषय मानते हैं अर्थ विज्ञान का नहीं।

अंतिम final

किसी भाषिक इकाई के आखिरी तत्त्व को अन्तिम संज्ञा देते हैं, विशेष रूप से स्वनप्रक्रिया में, जैसे - / प् / स्वनिम `झड़प' शब्द में अन्तिम स्थिति में मिलता है। इसी प्रकार हिन्दी में बहुवचन प्रत्यय अन्तिम स्थिति में आता है (लड़कियाँ, लड़के, भेजें)।

अन्तिम घटक ultimate constituent

आसन्न घटक विश्लेषण द्वारा प्राप्त वाक्य का अन्तिम अविभाज्य घटक अन्तिम घटक/चरम अवयव कहलाता है, उदाहरणार्थ - `मोहन को साथियों ने मारा' वाक्य के अन्तिम घटक मोहन+को+साथ+ई+ओं+नें+मार+आ हैं। इन्हें आगे अर्थ की दृष्टि से या व्याकरणिक आधार पर विश्लेषित नहीं किया जा सकता है।

अंत:केन्द्रिक रचना endocentric construction

व्याकरणिक विश्लेषण के अन्तर्गत वितरणात्मक मानदण्ड के आधार पर वाक्यीय

रचनाओं के दो वर्ग किए जाते हैं - अन्त:केन्द्रिक एवं बहि:केन्द्रिक। जब वाक्यान्तर्गत विन्यास की दृष्टि से सम्बन्धित शब्द समूह के स्थान पर प्रकार्यात्मक दृष्टि से समतुल्य समूह का कोई एक शब्द प्रयोग किया जा सके तो ऐसी रचना अन्त:केन्द्रिक रचना कहलाती है। इस रचना का एक केन्द्र होता है जो रचना के अन्दर होता है तथा जिसका वितरण एवं प्रकार्य सम्पूर्ण रचनावत होता है। इसके दो उपवर्ग होते हैं - (i) **आश्रित** जहाँ रचना के समस्त घटक शीर्ष के अधीन हों, यथा - `भूरे बालों वाली लड़की' रचना में `लड़की' शीर्ष है, शेष शब्द उसके आश्रित हैं।

(ii) **समानाधिकृत** - जिस रचना में कोई भी घटक आश्रित नहीं होता, यथा - `देश, जाति अथवा राष्ट्र'; `रोटी और अचार' आदि।

अन्त:प्रज्ञा intuition

कोई मातृभाषी अपनी भाषा के विषय में जो निर्णय लेता है उस क्षमता को अन्त:-प्रज्ञा कहते हैं। ये निर्णय वाक्य की सत्ता के प्रति, उसकी ग्राह्यता के सम्बन्ध में तथा दो वाक्यों के मध्य प्राप्त अन्तर्सम्बन्ध आदि विषयों में लिए जाते हैं। इसे निहित (tacit) ज्ञान भी कहते हैं। प्रजनक भाषाविश्लेषण में अन्त:प्रज्ञा को विशिष्ट सैद्धान्तिक महत्त्व दिया गया और अपने परवर्ती अध्ययनों में चॉमस्की ने इन्हें डाटा का अभिन्न अंग माना जिनका वर्णन ही व्याकरण का उद्देश्य है। चॉमस्की अन्त:प्रज्ञा के चार प्रकार मानते हैं, यथा - `यह बाता सच्ची नहीं हैं' (स्वनप्रक्रियात्मक दृष्टि से अग्राह्य वाक्य) ; 'थोड़ी सा चाय पिलाना' (रूपरचनात्मक दृष्टि से अग्राह्य वाक्य) ; 'वह चिलचिलाती चाँदनी में घूम रहा है' (आर्थी दृष्टि से अग्राह्य वाक्य) तथा `मैंने वापस दी उसे कर गाड़ी' (वाक्यात्मक दृष्टि से अग्राह्य)। कोई भी वक्ता भाषा की सुगठनता सम्बन्धी ये निर्णय अपनी अन्त:प्रज्ञा द्वारा ही लेता है।

अंत:भाषिक interlingual

रोमन यकोब्सन, कैटफोर्ड आदि विद्वान अनुवाद के तीन प्रकारों का उल्लेख करते हैं - **आंतर भाषिक, अन्त:भाषिक** तथा **प्रकार्य परिवर्तन**। एक भाषा के पाठ का किसी दूसरी भाषा में अन्वयान्तरण (rewording) अन्त:भाषिक अनुवाद कहलाता है। इस प्रकार, यह एक भाषा की प्रतीक व्यवस्था द्वारा व्यक्त अर्थ का दूसरी भाषा की प्रतीक व्यवस्था में अन्तरण है। संस्कृत कवि कालिदास की रचना मेघदूत का अन्य भाषाओं में अनुवाद इसका उदाहरण कहा जा सकता है।

अंत:लक्षी नियम क्रमण intrinsic rule ordering

प्रजनक व्याकरण में नियमों के क्रम पर लगाया गया एक प्रकार का प्रतिबन्ध, जिसकी विपरीत स्थिति में नियमों का अनुप्रयोग सांयोगिक (random) क्रम में किया जा सकता है। अन्त:लक्षी क्रमण में नियम-व्यवस्था की रूपात्मक या तार्किक विशेषताएँ नियम अनुप्रयोग के अनुक्रम को निश्चित करती है, जैसे - कोई नियम `ब' उस समय तक लागू नहीं होगा जब तक नियम `क' की संक्रिया समाप्त न हो जाए क्योंकि नियम `ब' की संक्रिया के लिए आवश्यक विशेषताएँ नियम `क' ही प्रस्तुत करेगा। बहिर्लक्षी नियम क्रमण में नियमों के अनुप्रयोग का क्रम रूपात्मक संगति द्वारा प्रेरित नहीं होता है। प्राय: नियम किसी भी क्रम में घटित हो सकते हैं किन्तु भाषा की सामग्री का ध्यान रख किसी न किसी प्रकार का क्रमण आरोपित अवश्य किया जाता है जो सही निर्णय तक पहुँचने में सहायता देता है।

अंत:स्तरीय interlevel

हैलिडे द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त में मुख्य विश्लेषण स्तरों के मध्य स्थापित स्तर को अन्त:स्तरीय अभिधान दिया गया। इनके अनुसार स्वनप्रक्रिया अन्त:स्तरीय स्तर है जो स्वनिक/लेखिक सत्व और भाषिक रूप को सम्बन्धित करता है।

अंत:स्फोटी implosive

उच्चारण प्रयत्न के आधार पर किया गया ध्वनि का एक वर्ग। वे स्पर्श स्वन जिनका उच्चारण श्वासद्वारीय अन्तर्मुखी वायुप्रवाह तंत्र द्वारा होता है। सिंधी के ज्,ब्,ड्,ग्, इसी प्रकार के स्वन हैं।

अन्त्य प्रतीक terminal symbol

वाक्यीय घटक के निर्गत (output) की कतिपय विशेषताओं को निरूपित करने वाला पारिभाषिक शब्द। वाक्य के वाक्यीय प्रतिरूपण में समस्त नियमों के लागू होने के पश्चात प्राप्त इकाइयाँ (रूपिम, रचक, अभिलक्षण) अन्त्य तत्त्व या प्रतीक कहलाती हैं। ये अनन्तिम प्रतीक से भिन्न होते हैं जो सहायक तत्त्व होते हैं और नियमों द्वारा व्याख्यायित किए जा सकते हैं। वह माला जिसमें अन्त्य प्रतीक होते हैं **अन्त्य माला** कहलाती है। पदबंध संरचना व्याकरण अन्त में इसी का प्रजनन करता है।

अक्ष axis

भाषायी विश्लेषण के आयामों को विभाजित करने के लिए कभी-कभी इस शब्द का प्रयोग भाषाविज्ञान में किया जाता है। प्रसिद्ध स्विस् भाषाविद् फर्दिनान्द डी सेस्यूर ने समकालिक एवं द्विकालिक के अन्तर को **युगपद् स्थिति का अक्ष** बनाम **अनुक्रमों का अक्ष** इस आधार पर गुणों की चर्चा करते हुए वर्णित किया। इसी प्रकार सारणिक/विन्यासक्रमात्मक की भिन्नता को अक्षों के रूप में सन्दर्भित किया जा सकता है (विन्यासक्रमी अक्ष, श्रृंखलात्मक सम्बन्धों का अक्ष आदि)।

व्याकरणिक वर्गीकरण के कतिपय प्रारूपों में बहि:केन्द्रिक रचना का एक घटक अक्ष या धुरी कहलाता है, जैसे - मोहन ने; बगीचे में; on the table; saw Ram रचनाओं में आगत संज्ञा शब्द सम्पूर्ण रचना के अक्ष हैं तथा रचना के शेष घटक उससे जुड़े हैं।

अक्षर syllable

सम्भाषण का वह अंश जो एक स्वन से बड़ा तथा शब्द से छोटा होता है, जिसका उच्चारण एक झटके से निष्क्रमित् वायु द्वारा होता है। यह स्वन श्रृंखला नहीं अपितु हृत्स्पन्दन द्वारा उच्चरित स्वन खण्ड है जिसमें एकाधिक स्वन हो सकते हैं। सभी स्वर आक्षरिक होते हैं। कभी-कभी **आक्षरिक व्यंजन** भी मिलते हैं। अक्षर में एक मुखरता-शिखर अवश्य होता है। एक अक्षर वाले शब्द एकाक्षरी तथा एकाधिक अक्षर युक्त शब्द बहुआक्षरी कहलाते हैं। शब्द स्तर पर, अक्षर पर पड़ने वाला बलाघात, आक्षरिक बलाघात कहलाता है। चॉमस्की एवं हॉले द्वारा स्थापित भेदक अभिलक्षण सिद्धान्त में स्वरात्मक (vocalic) के स्थान पर आक्षरिक (syllabic) का प्रयोग किया गया और स्वरों, नासिक्यों तथा तरलों को + आक्षरिक कहकर इनका वर्णन करते हैं।

अक्षराश्रित लय syllable timed rhythm

स्वनविज्ञान में प्रयुक्त एक सामान्य पारिभाषिक शब्द जो एक विशेष प्रकार की लय वाली भाषाओं की उच्चारण सम्बन्धी विशेषता की ओर संकेत करता है। इन भाषाओं में अक्षर समान अंतराल पर आते हैं, जैसे - फ्रेंच या भारतीय आर्य भाषाएँ।

अग्र front

अग्र स्वन दो प्रकार के होते हैं - (i) वे स्वन जो मुख के अग्र भाग में उच्चरित हों तथा (ii) वे स्वन जो जिह्वा के अग्र भाग द्वारा उच्चरित हों। इन दोनों मानदण्डों को पूरा

करने वाले स्वन अग्र स्वर होते हैं तथा कतिपय अग्र व्यञ्जन।

अग्र प्रस्तुति foregrounding

शैली विज्ञान का एक पारिभाषिक शब्द जिसका प्रयोग संकेत प्रयोग विज्ञान और प्रोक्ति विश्लेषण में भी मिलता है। भाषिक या सामाजिक दृष्टि से स्वीकृत मानक से किसी भी प्रकार का विचलन अग्रप्रस्तुति कहलाता है। भाषा द्वारा विशिष्ट अनुभवों या विशिष्टताओं की अभिव्यक्ति के लिए सामान्य भाषा का अतिक्रमण कर उससे आगे बढ़ना पड़ता है। इस आगे बढ़ने या स्वीकृत मानक से भिन्न प्रयोग को ही पश्चिम में `फोरग्राउडिंग' और हिन्दी में अग्रप्रस्तुति, अग्रगामिता या पेशबन्दी कहते हैं, उदाहरणार्थ - तुक, अन्त्यानुप्रास, अनुप्रास, छंद नियमितता आदि स्वनप्रक्रियात्मक स्तर पर इसके उदाहरण हैं। इसमें मुख्यत: विचलन और समानान्तरता को रखा जाता है। मूलत: इस संकल्पना का प्रयोग प्राग् सम्प्रदाय के विद्वान मुकारोफ़्स्की ने किया था।

अग्र `ल' clear `l'

जिह्वा की उच्च और अग्र स्थिति में उच्चरित `ल' ध्वनि के लिए प्रयुक्त सामान्य शब्द। अंग्रेजी के स्वरों तथा [ j ] के पूर्व इस प्रकार का `ल्' मिलता है, यथा - little शब्द का प्रथम `ल' अग्र एवं स्पष्ट है तथा दूसरा पश्च और अस्पष्ट है।

अचिह्नित unmarked

भाषाविज्ञान में इस शब्द का प्रयोग एकाधिक अर्थ में किया जाता है। किसी भाषा का ऐसा निश्चित अभिलक्षण जो अधिक सामान्य, अपेक्षाकृत कम जटिल और अधिकतम प्रत्याशित हो अचिह्नित कहलाता है, यथा - प्रवाही अभिलक्षण के सन्दर्भ में दंत्य `त' अचिह्नित है। इसे [u] से संकेतित किया जाता है।

इसकी संकल्पना प्राग स्कूल के विद्वान त्रुबेत्स्कॉय द्वारा की गई है। आधुनिक काल में प्रजनक स्वनप्रक्रिया में चॉमस्की और हॉले ने इसे नया सन्दर्भ देकर पुनर्जीवित किया। आज इसका `कोर व्याकरण' में विशेष महत्त्व है।

अचेतन inanimate

प्राय: भाषाओं में जागतिक वास्तविकता के आधार पर, संज्ञा के चेतन और अचेतन दो वर्ग किए जाते हैं। जड़ पदार्थों का बोध कराने वाले शब्द अचेतन वर्ग में आते हैं और

इनकी क्रिया से अन्विति निश्चित होती है, जैसे - *मेज सोती है या *कुर्ता पढ़ता है प्रयोग शुद्ध नहीं माने जाते।

अति अर्थिमिक hyper sememic

स्तरपरक व्याकरण में स्वीकृत एक तल जिसमें भाषा की संकल्पनात्मक या संदर्भगत विशेषताओं का अध्ययन विश्लेषण किया जाता है।

अतिक्रमण cross over

प्रजनक व्याकरण में संज्ञापदबन्ध को रूपान्तरित करने वाले रूपान्तरण की संक्रिया पर प्रतिबन्ध लगाने वाला सिद्धान्त अतिक्रमण सिद्धान्त कहलाता है (उदाहरणार्थ - कर्मवाच्य, निजवाचक तथा कठिन संचालन आदि)। प्रारम्भिक निरूपण में सिद्धान्त यह प्रतिपादित करता है कि यदि किसी रूपान्तरण को लागू करने पर संज्ञापदबन्ध अपने प्रतिसन्दर्भपरक संज्ञा पदबन्ध को लाँघ कर आगे बढ़ जाता है तो ऐसे रूपान्तरण पदबन्ध चिह्नक पर लागू नहीं किए जा सकते हैं। `राम ने अपने को कोसा' वाक्य में कर्मवाच्यीकरण लागू क्यों नहीं किया जा सकता है इस तथ्य की व्याख्या **अतिक्रमण सिद्धान्त** द्वारा की जा सकती है। `राम ने राम को कोसा' यह मूलाधार संरचना दिए जाने पर `राम को राम द्वारा कोसा गया' यह वाक्य व्युंत्पादित होगा जो इस नियम का उल्लंघन करेगा। परवर्ती निरूपणों में इस सिद्धान्त के अनुप्रयोग पर अधिक स्पष्ट प्रतिबन्ध आरोपित किए गए।

अतिव्यापी over lapping

जब एक स्वन की गणना एकाधिक स्वनिमों में की जाती है तो स्वनप्रक्रिया के अन्तर्गत इसे स्वनिमिक अतिव्यापन कहते हैं। यह पूर्ण एवं आंशिक दो प्रकार का होता है।

भाषा अर्जन सम्बन्धी अध्ययन में इस शब्द का प्रयोग एक विशेष प्रकार के सम्बन्ध के लिए किया जाता है। कभी-कभी प्रौढ़ व्यक्ति द्वारा प्रयुक्त शब्द का अर्थ किसी बच्चे द्वारा प्रयुक्त उसी शब्द के अर्थ से भिन्न होता है। कहीं प्रयोग प्रसार में वृद्धि तो कहीं कमी हो जाती है, यथा - जब एक बच्चा `कुत्ता' शब्द का प्रयोग सभी चौपाए जानवरों के लिए करे, तो यह अतिव्यापन की स्थिति कहलाएगी।

अति शोधन दोष hyper correction

जब किसी अमानक बोली रूप का वक्ता मानक रूप का प्रयोग करते समय कुछ

-ज़्यादा ही शुद्धता की ओर बढ़े तो इस घटना को अतिशोधन कहते हैं। वक्ता मानक रूप के प्रयोग की अती करता है जिसके फलस्वरूप उसका प्रयोग मानक से भिन्न दृष्टिगत होता है, यथा - दीर्घ /a/ के स्थान पर ह्रस्व /ae/ का प्रयोग अंग्रेजी के cap, mat शब्दों में।

अति सामान्यीकरण over generalization

भाषा अधिग्रहण सम्बन्धित अध्ययनों में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द जो उस प्रक्रिया को सन्दर्भित करता है जहाँ बच्चा किसी व्याकरणिक अभिलक्षण का प्रयोग उन सन्दर्भों में भी करे जो वयस्क भाषा में नहीं प्राप्त होते हैं, जैसे - अंग्रेजी *goed *putted या हिन्दी *उसारा, *उनारा।

अधस्तल sub-stratum

भाषा का एक प्रकार जो किसी भाषिक समुदाय की बहुप्रचलित भाषा संरचना या प्रयोग को प्रभावित करता है। प्राय: जब कोई भाषा किसी भाषिक समुदाय पर थोपी जाती है तो यह स्थिति अधस्तल भाषा को जन्म देती है और उस समुदाय के भाषाभाषी नवागत भाषा में अपनी भाषा की स्वनिक एवं उच्चारणात्मक विशेषताओं को आरोपित करते हैं जिससे भाषा का नवीन रूप उद्भूत होता, यथा - विविध क्षेत्रों की क्षेत्रीय भाषाएँ अथवा बोलियाँ हिन्दी के मानक स्वरूप को प्रभावित करती हैं और परिणामस्वरूप एक भोजपुरी वक्ता हिन्दी `ड़' और `र' के स्थान पर क्रमश: `र' तथा `ल' का प्रयोग करता है साथ ही `ने' परसर्ग का प्रयोग नहीं करता - `माँ दूध पिलाया'।

अधिकरण कारक locative case

कारक, संज्ञा का व्याकरणिक प्रवर्ग है जो वाक्य में दूसरे शब्दों के साथ उसका सम्बन्ध व्यक्त करता है। हिन्दी में आठ कारक हैं। संज्ञा का वह रूप जिससे क्रिया के आधार का बोध होता है अधिकरण कारक कहलाता है, यथा - शेर वन में रहता है, बंदर पेड़ पर चढ़ रहे हैं। हिन्दी में इसके विभक्ति चिह्न `में, पर' हैं। अंग्रेजी में यह कारक नहीं मिलता है तथा इस अभिप्राय की अभिव्यक्ति (at) पूर्वसर्ग करता है। अधिकरणात्मक अर्थ को अभिव्यक्त करने वाली संरचनाएँ भी अधिकरण कही जा सकती हैं। The man wan standing at a bus stop. इस वाक्य में at a bus stop अधिकरण पदबन्ध कहा जा सकता है। कतिपय विद्वानों ने भाषिक सिद्धान्त के विकास में अधिकरण रचनाओं का विशेष योगदान माना है, यथा - **कारक व्याकरण** में इसे विशिष्ट स्थान प्राप्त है।

अधिकार government

व्याकरणिक विश्लेषण के अन्तर्गत विशेष प्रकार की वाक्यीय सम्बद्धता का द्योतक शब्द-जहाँ एक शब्द या शब्द वर्ग दूसरे शब्द या शब्द वर्ग के विशिष्ट रूपरचनात्मक स्वरूप की आकांक्षा करता है, यथा - हिन्दी में ने, को, से आदि परसर्ग अपनी पूर्ववर्ती संज्ञा को तिर्यक रूप में आने के लिए बाद्ध करते हैं (लड़का खाना खाता है > लड़के ने खाना खाया)। प्राय: अन्विति और अधिकार में भेद किया जाता है। जब किसी वाक्यीय रचना में प्रयुक्त एकाधिक शब्द किसी समान व्याकरणिक लक्षण की रूपात्मक अभिव्यक्ति करें तो इस सदृश अभिव्यक्ति को अन्विति की संज्ञा देते हैं, यथा - हिन्दी में विशेषण और संज्ञा के मध्य लिंग, वचन, कारक की अन्विति घटित होती है।

अधिकार और अनुबंधन Government and Binding

1980 में चॉमस्की ने **ट्रेस सिद्धान्त** में संशोधन कर कारक, अधिकार, अनुबन्धन आदि धाराओं को सम्मिलित किया जो अधिकार एवं अनुबन्धन सिद्धान्त के नाम से प्रसिद्ध हुआ। अधिकार सिद्धान्त, रचना के शीर्ष तथा उस पर आश्रित कोटियों के मध्य प्राप्त सम्बन्ध दर्शाता है और अनुबन्धन सिद्धान्त अन्वादेशक, सर्वनाम तथा अन्य चरों का उनके सम्भावित पूर्वपदों से सम्बन्ध स्पष्ट करता है।

अधिकारक governor

आश्रयता व्याकरण में आश्रयता वृक्ष की आश्रित आसंधियों के समुच्चय को नियंत्रित करने वाली उच्च आसन्धि अधिकारक कहलाती है। प्रत्येक अधिकारक एवं उसके आश्रित के मध्य एक विशिष्ट संरचनात्मक सम्बन्ध होता है, यथा - 'बड़े आदमी का लड़का' पदबन्ध में 'लड़का' `बड़े आदमी का' पदबन्ध को नियंत्रित करता है और `आदमी' `बड़े' को नियंत्रित करता है।

अधिकार कोटि governing category

अधिकार एवं अनुबन्धन सिद्धान्त में अधिकार कोटि ऐसी अल्पतम संरचना को कहते हैं जिसके अन्तर्गत अनुबन्धन के सम्बन्ध घटित होते हैं, यथा - `क' `ख' के लिए अधिकार कोटि होगी यदि `क' ऐसा अल्पतम संज्ञापद अथवा वाक्य है जिसमें `ख' को संचालित करने वाले घटक हैं। अन्वादेशक (anaphors) अपनी अधिकार कोटि के

अन्तर्गत बद्ध होते हैं (अर्थात् किसी न किसी संज्ञापद से प्रतिसमुद्देश्य होते हैं); जबकि सार्वनामिक मुक्त होते हैं (अर्थात् किसी संज्ञापद और इनका उद्देश्य समान नहीं होता है); कोशगत संज्ञापदबन्ध सदैव स्वतंत्र/मुक्त होते हैं।

अधिकार क्षेत्र domain

इस शब्द का प्रयोग भिन्न-भिन्न अर्थ में किया जाता है। कुछ विद्वान किसी नियम के अधिकार क्षेत्र की बात करते हैं अर्थात् वह नियम किन-किन संरचनाओं पर लागू होगा। प्रजनक भाषा-विज्ञान में एक वृक्ष आरेख की एक आसंधि से निकलने वाले भागों के लिए **अधिकार क्षेत्र** शब्द का प्रयोग किया जाता है अर्थात् एक आसन्धि जिस संरचना को नियंत्रित करती है।

अर्थविज्ञानियों ने इस शब्द का प्रयोग किसी विशिष्ट अर्थ-क्षेत्र से सम्बन्धित शब्द समुच्चय द्वारा आवृत्त अनुभव क्षेत्र के लिए किया, यथा - रंग शब्दावली या बंधुतावाची शब्दावली आदि। समाज भाषाविज्ञान के अन्तर्गत पारम्परिक सामाजिक परिस्थितियों का एक समूह जो व्यवहार सम्बन्धी सामान्य नियम समुच्चय को नियंत्रित करता है, अधिकार क्षेत्र कहलाता है, यथा - परिवार का अधिकार क्षेत्र गृह तथा धर्म का मन्दिर, गिरजा या मस्जिद है। अनेक वक्ताओं से सम्बद्ध, बहुभाषिक स्थितियों के विश्लेषण के लिए, यह एक महत्त्वपूर्ण संकल्पना है। जिसका प्रयोग व्यक्ति विशेष के भाषा सम्बन्धी चयन में प्राप्त भिन्नताओं का सम्बन्ध, व्यक्ति की सामाजिक, सांस्कृतिक मान्यताओं से जोड़ने के लिए किया जाता है।

अधिक्रम / सोपानिकी hierarchy

वर्गिकीय विश्लेषण पद्धति में इस शब्द का प्रयोग भाषिक इकाइयों के ऐसे वर्गीकरण के लिए किया जाता है जो एक के बाद एक आने वाले आश्रित स्तरों के क्रम को महत्त्व देता है। इन भाषाविदों के मतानुसार भाषा में यह सोपानिक क्रम सदैव प्राप्त होता है। स्वनिकी, स्वनप्रक्रिया, रूपरचना, वाक्यरचना एवं अर्थ के क्रम में भी सोपानिकता दृष्टिगोचर होती है। इसी प्रकार विभिन्न भाषिक इकाइयों के मध्य भी सोपानिक सम्बन्ध घटित होते हैं। प्रोक्तियाँ वाक्यों द्वारा निर्मित, वाक्य उपवाक्यों या पदबन्धों द्वारा तथा पदबन्ध शब्दों द्वारा और शब्द रूपिमों द्वारा निर्मित माने जाते हैं।

सम्बन्धपरक व्याकरण में **अभिगम्यता अधिक्रम** पदबन्ध के अंग के रूप में इस शब्द का विशेष स्थान है।

अधिखंडात्मक suprasegmental

प्राय: स्वर, व्यंजन ध्वनियाँ भाषागत विश्लेष्य ध्वनियों के रूप में स्वीकार की जाती हैं किन्तु वास्तव में, भाषा सिर्फ इन ध्वनियों का संयोग नहीं है वरन् इनके अतिरिक्त कुछ अधिखण्डात्मक अभिलक्षण भी हैं जिनके प्रयोग के बिना भाषा के उद्देश्य की पूर्ति सम्भव नहीं है।

स्वनविज्ञान एवं स्वनप्रक्रिया में अधिखण्डात्मक शब्द का प्रयोग किसी कथन में घटित एक प्रकार के वाक् प्रभाव के लिए किया जाता है जो एकाधिक ध्वनिखण्डों पर घटित होता है, यथा - मात्रा, बलाघात या संहिता से सम्बद्ध अभिलक्षण। प्राय: स्वनप्रक्रियात्मक इकाइयों का वर्गीकरण खण्डात्मक एवं अधिखण्डात्मक इन वर्गों में किया जाता है। अमरीकी संरचनात्मक सिद्धान्त में अधिखण्डात्मक अभिलक्षणों को स्वनिम और इनके अनुक्रमों को रूपिम की भाँति, विश्लेषित किया गया किन्तु सभी स्वनशास्त्री इन्हें व्यवस्थापक इकाई (एमिक) के रूप में विश्लेषित नहीं करते हैं। प्राय: लिपियाँ इन्हें लिप्यांकित नहीं कर पाती हैं। जिस लेखन प्रणाली द्वारा इन अभिलक्षणों को अभिव्यक्त किया जाता है उसे अधिखण्डात्मक लिप्यंकन कहते हैं।

अधिगम्यता learnability

अनुकूल परिस्थिति होने पर शिशु सिद्धान्तत: किसी भी भाषा को सीख सकता है। इसे ही अधिगम्यता की संज्ञा दी जाती है। मानवीय भाषा में प्राप्त यह विशेषता अन्य प्रतीक व्यवस्थाओं में नहीं प्राप्त होती है।

अधिग्रहण / आदान borrowing

ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक भाषाविज्ञान में प्रयुक्त एक शब्द जिसका प्रयोग उस प्रक्रिया के लिए करते हैं जिसके माध्यम से एक भाषा या बोली के भाषिक रूप दूसरी भाषा या बोली में जाते हैं। ऐसे रूप को आगत तत्त्व और दूसरी भाषा में आए शब्दों को आगत शब्द कहा जाता है। अधिग्रहण की यह प्रक्रिया भाषा के समस्त स्तरों पर घटित होती है, जैसे - हिन्दी में अंग्रेजी के प्रभावस्वरूप ऑ ध्वनि आई है और अंग्रेजी का व्याकरण एवं शब्दावली फ्रेंच आगत तत्त्वों से परिपूर्ण है।

अधिनियम meta rule

आधुनिक भाषिक सिद्धान्त में एक विशेष प्रकार के नियम के लिए प्रयोग किया

गया शब्द जो किसी व्याकरण के कतिपय नियमों की परिभाषा व्याकरण में पहले से उपस्थित अन्य अभिलक्षणों के आधार पर करता है, उदाहरणार्थ - प्रजनक व्याकरण के **संशोधित विस्तारित प्रारूप** (REST) में एल्फा संचलन एक अधिनियम है क्योंकि अन्य सभी संचलन इसके अन्तर्गत ही आते हैं। अत: यह कहा जाता है कि अधिनियम एक व्याकरण प्रस्तुत करते हैं जिसका किसी व्याकरण के निर्माण में प्रयोग किया जा सकता है - दूसरे शब्दों में ऐसा व्याकरण एक अधिव्याकरण होगा।

अधिप्रत्यय super fix

किसी कथन में एकाधिक ध्वनि खण्ड पर आच्छादित वाक् प्रभाव के लिए स्वन-विज्ञान एवं स्वनप्रक्रिया के अन्तर्गत प्रयोग किया जाने वाला शब्द। जब किसी विशेष व्याकरणिक संरचना के सन्दर्भ में इन अभिलक्षणों (सुर, मात्रा, बलाघात आदि) का विश्लेषण किया जाता है तब अधिप्रत्यय शब्द का प्रयोग किया जाता है। आजकल सामान्य रूप से अधिखण्डात्मक शब्द ही प्रचलित है।

अधिभाषा meta language

किसी अध्ययन विषय के वर्णन के लिए प्रयुक्त उच्चस्तरीय भाषा को अन्य विज्ञान अधिभाषा कहते हैं अर्थात् जिस माध्यम से वह अपनी विषयवस्तु का वर्णन करते हैं। चूंकि भाषाविज्ञान में माध्यम और अध्येय वस्तु दोनों भाषा ही है अत: भाषा के नमूने; अन्त:प्रज्ञा आदि जो हमारे भाषिक अनुभव का निर्माण करते हैं, अधिभाषा कहलाते हैं और इसका अध्ययन करने वाला विषय **अधिभाषाविज्ञान** कहलाता है। प्रस्तुत कोश का विषय भाषिक अधिभाषा ही है। 1950 के लगभग विद्वानों ने अधिभाषा विज्ञान शब्द का प्रयोग अधिक सुनिश्चित अर्थ में किया - सम्बन्धित संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में भाषिक व्यवस्था एवं अन्य व्यवहार व्यवस्थाओं का सम्पूर्ण सम्बन्ध। इनके अनुसार इस प्रकार का समग्रतापूर्ण अध्ययन ही भाषिक रूप के पूर्ण अर्थ को सम्यक रूपेण निरूपित कर सकता है। जे.आर. फर्थ द्वारा प्रतिपादित `स्थिति - सन्दर्भ' की अवधारणा इससे समानता रखती है।

अधिव्यय cost

स्वनप्रक्रियात्मक विश्लेषणों की सापेक्षिक सरलता या सहजता की व्याख्या के लिए प्रजनक स्वनप्रक्रिया में इस शब्द का लाक्षणिक प्रयोग मिलता है। इस मान्यता के अनुसार किसी विश्लेषण की जटिलता बढ़ने पर उसका अधिव्यय भी बढ़ता है और विश्लेषण

की सरलता अधिव्यय को कम भी करती है। यहाँ कार्यरत सिद्धान्त एक सामान्य सिद्धान्त है, कभी-कभी जिसकी चर्चा ह्रासमान प्रत्यावर्तन (diminishing returns) की अवधारणा के सन्दर्भ में भी की जाती है अर्थात् यदि भाषिक इकाई के अधिक वर्ग होंगे तो प्रत्येक वर्ग में कम आँकड़े होंगे। यद्यपि यह विशेषता व्याकरण की सहायता से विकल्पों के विश्लेषण की आज्ञा देती है तथापि बहुमत में काफी गिरावट आती है। अत: प्रश्न यह उठता है कि विश्लेषण में सबसे कम अधिव्यय पर काटने वाला बिन्दु कौन सा होगा।

अधीन subordinate

जब एक भाषिक इकाई दूसरी भाषिक इकाई पर आश्रित होती है या दूसरी इकाई का घटक होती है तब पहली इकाई को अधीन की संज्ञा देते हैं तथा व्याकरणिक विश्लेषण के अन्तर्गत भाषिक इकाइयों को सम्बद्ध करने वाली यह प्रक्रिया **अधीनता** कहलाती है। `जब लड़का पाँच वर्ष का हुआ तब पिता ने उसे स्कूल भेजा' इस वाक्य में `पिता ने उसे स्कूल भेजा' उपवाक्य प्रथम मुख्य उपवाक्य `जब लड़का पाँच वर्ष का हुआ' पर आश्रित है।

अधोस्तरण downgrading

व्याकरणिक सोपानिक क्रम में जब कोई इकाई अपने से निम्न स्तर की इकाई के रूप में आधायित होती है तो इस व्याकरणिक प्रक्रिया को अधोस्तरण कहते हैं, उदाहरणार्थ `मैं नहीं कर सकता, उसका तो सदैव यही जवाब रहता है' वाक्य में `मैं नहीं कर सकता' उपवाक्य शब्द के समतुल्य प्रयोग किया गया है अत: यह अधोस्तरित हुआ है।

अध्यारोपित बोलियाँ super imposed dialects

सामाजिक प्रयोग के आधार पर निर्मित बोलियाँ अध्यारोपित कहलाती हैं। ये तीन प्रकार की होती हैं - **सामान्य**, **साहित्यिक** एवं **परिनिष्ठित**। इनमें उच्च स्थान परिनिष्ठित को, तत्पश्चात् साहित्यिक और फिर सामान्य बोली को दिया जाता है। ये रूप समाज द्वारा मान्यता प्राप्त होते हैं समाज में इनका क्या स्तर है? इनका प्रयोग किस सीमा तक है यही इनका महत्त्व है। सामान्य भाषा बोलचाल की लचीली भाषा होती है इसका क्षेत्र व्यापक होता है। यह एक ऐसी संकल्पना है जो अपने कलेवर में विविध सम्पर्कों को समेटे रहती है। दूसरा भाषा का वह रूप जो साहित्यिक सृजन में प्रयोग किया जाए। इस भाषा रूप में प्राचीन परम्परा का निर्वाह, आलंकारिक शब्दों का प्रयोग मिलता है। साहित्य की विविध विधाओं में जिज्ञासुओं, लेखकों एवं आलोचकों द्वारा इसका प्रयोग किया जाता है।

कोई बोली जब अन्य की तुलना में अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है उसका प्रयोग क्षेत्र व्यापक हो जाए उसे सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक महत्त्व प्राप्त हो जाए तो वह परिनिष्ठित बोली कहलाती है।

अध्याहार / लोप ellipsis

ऐसा वाक्य जिसकी संरचना का कोई अंश लाघव, शैली, बल आदि कारण से छोड़ दिया गया हो तथा सन्दर्भ की संवीक्षा करने पर उसे पुन: प्राप्त किया जा सके, अध्याहार कहलाता है। पारम्परिक व्याकरण ऐसी स्थिति में तत्त्व के बोध की चर्चा करते हैं किन्तु आधुनिक भाषिक विश्लेषणों का झुकाव इस अवधारणा को और अधिक सीमित करने की दिशा में है अत: वे इस आवश्यकता पर बल डालते हैं कि वाक्य के लुप्तांश असंदिग्ध रूप में व्याख्येय हों, उदाहरणार्थ - `तुम कहाँ जा रहे हो' वाक्य के प्रत्युत्तर `घर` वाक्य के शेषांश की कल्पना की जा सकती है किन्तु `धन्यवाद' `हाँ' आदि वाक्यों के लुप्तांश को स्पष्ट रूप से जानना कठिन है (मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ, मुझे तुम्हें धन्यवाद देना चाहिए आदि) । हमारे दैनिक व्यवहार की बातचीत का एक बड़ा भाग इस प्रकार की लुप्तांश रचनाओं से निर्मित होता है।

अनाक्षरिक non syllabic

ऐसा स्वनिम जो स्वयं अक्षर निर्माण में समर्थ न हो अथवा जो अक्षर शिखर बनने की स्थिति में न हो, अनाक्षरिक कहलाता है।

अनियमित irregular

भाषा की संरचनात्मक व्यवस्था के अपवाद रूप में प्राप्त भाषिक रूप अनियमित कहलाते हैं, यथा - हिन्दी में जा > गया का निर्माण अनियमित है क्योंकि हिन्दी के काल सम्बन्धी नियम का यहाँ पालन नहीं किया गया। व्याकरण का उद्देश्य भाषिक सामग्री की नियमित अभिरचनाओं की खोज है।

अनिर्धार्यता indeterminacy

किसी कथन की व्याकरणिकता या ग्राह्यता के सम्बन्ध में जब मातृभाषाभाषी अनिश्चित हो अथवा मातृभाषाभाषियों के मध्य असहमति हो तो उस स्थिति को अनिर्धार्यता की संज्ञा देते हैं। विविध संरचनाओं के मध्य विभाजक रेखा कहाँ और कैसे खींची जाए

इससे सम्बन्धित मतभेद भी इसी नाम से अभिहित किया जाता है।

अनिवार्य obligatory

नोअम चॉमस्की ने अपनी पुस्तक सिंटैक्टिक स्ट्रक्चर्स (1957) में दो प्रकार के रूपान्तरण नियम का प्रतिपादन किया - अनिवार्य एवं वैकल्पिक। वह रूपान्तरण जो सुगठित वाक्य की व्युत्पत्ति के लिए किसी दिए गए चरण पर लागू करना आवश्यक होता है, अनिवार्य रूपान्तरण कहलाता है, जैसे - प्रत्ययों को मूल रूप से संयुक्त करने वाले नियम। परवर्ती रूपान्तरण व्याकरण में अनिवार्य रूपान्तरणों की सहायता से बाह्य संरचना आन्तरिक संरचना से व्युत्पादित की गई।

अनिश्चायक indefinite

वह वस्तु या वस्तुओं का वर्ग जिनकी कोई निश्चित पहचान न हो। अंग्रेजी में इसकी अभिव्यक्ति अनिश्चायक आर्टिकल (a, an, the) द्वारा होती है। कभी-कभी सर्वनामों (one, some आदि) का भी प्रयोग मिलता है। हिन्दी में सर्वनाम (कोई, कुछ, किसी, किन्हीं) तथा विशेषण (कई, थोड़ा, सब) द्वारा यह विशेषता परिलक्षित होती है।

अनुकरण imitation

यह पारिभाषिक शब्द भाषार्जन के क्षेत्र में अपने सामान्य अर्थ में ग्रहण किया जाता है। चतुर्दिक व्यवहृत भाषा का अनुकरण शिशु के भाषिक व्यवहार में परिलक्षित होता है। इस संकल्पना का दोहरा महत्त्व है आज यह प्रमाणित हो चुका है कि सिर्फ अनुकरण द्वारा भाषा विकास के तथ्यों की व्याख्या सम्भव नहीं है। वक्ता द्वारा प्रयुक्त *अच्छी सूँघ आदि प्रयोग इस तथ्य के संकेतक हैं कि इन रचनाओं में एक प्रकार की आन्तरिक प्रक्रिया घटित होती है। शिशु द्वारा अचानक वाक् उत्पादन या अवबोधन में जो निपुणता दृष्टिगत होती है वह अनुकरण की कुशलता से भिन्न है। भाषार्जन सम्बन्धी अध्ययन में अनुकरण, उत्पादन एवं अवबोधन से सम्बन्धित प्रयोगों एवं वर्णनों को विशेष महत्त्व दिया गया।

अनुकरणात्मक शब्द imitative word

वे शब्द जिनका निर्माण अनुकरण के आधार पर होता है। इनके तीन भेद हो सकते हैं (i) **ध्वन्यात्मक** - जहाँ ध्वनि का अनुकरण होता है, यथा - सीटी, भोंपू आदि।

(ii) **दृश्यात्मक** - जिनमें दृश्य का अनुकरण होता है, जैसे - जगमग। (iii) **प्रतिध्वन्यात्मक** - ये प्रतिध्वनि के आधार पर बनते हैं, जैसे - घोड़ा-वोड़ा, रोटी-वोटी। अधिकांश भाषाओं में ये शब्द भिन्न-भिन्न प्रकार से बनाए जाते हैं।

अनुक्रम sequence

किसी पाठ या कथन की इकाइयों के मध्य दिखाई पड़ने वाला क्रम। जब क्रमिक इकाइयों या आसन्न इकाइयों के बीच आश्रयताएँ कार्य करती हैं तो अनुक्रम **रैखिक** कहलाता है, जैसे - मेरा-बेटा-श्याम...। किन्तु कभी-कभी **अरैखिक अनुक्रम** भी दृष्टिगोचर होता है, जैसे - she made the whole story up.। भाषिक अनुक्रम का अध्ययन विन्यासक्रमी विश्लेषण के अन्तर्गत किया जाता है। प्राय: यह पारिभाषिक शब्द क्रम की अमूर्त अवधारणा से भिन्न प्रतिपादित किया जाता है।

अनुतान intonation

पदबन्ध या वाक्य के विशेष स्थल/स्थलों पर आघात के फलस्वरूप उत्पन्न उच्चारण-वैशिष्ठ्य। उच्चारण में किसी अक्षर, शब्द, पदबन्ध, वाक्य आदि पर किया गया बलाघात/स्वराघात आघात (accent) कहलाता है और जब यह वाक्य संरचना का सार्थक अंग हो तो इसे अनुतान कहते हैं।

अनुदात्त grave

यकोब्सन एवं हॉले द्वारा प्रतिपादित स्वनप्रक्रिया के प्रभेदक अभिलक्षण सिद्धान्त में उच्चारण स्थान की विविधता के वर्णन के लिए ध्वनि का एक अभिलक्षण अनुदात्त माना गया। उच्चारणात्मक दृष्टि से ये ध्वनियाँ वाक् पथ की परिधि पर उच्चरित होती हैं तथा ध्वानिक दृष्टि से इनमें ऊर्जा का संकेन्द्रण स्पैक्ट्रम की निम्न आवृत्तियों पर मिलता है। पश्च स्वर, कोमल तालव्य एवं ओष्ठ्य व्यञ्जन इस वर्ग में आते हैं। अपने संवादी माध्यमिक/उदात्त स्वनिमों की तुलना में इन स्वनिमों का अनुनादक अपेक्षाकृत विस्तृत और अल्प विखण्डित होता है।

संस्कृत में उदात्त, अनुदात्त एवं स्वरित तीन सुरों की चर्चा मिलती है। संस्कृत वैयाकरण पाणिनी के अनुसार `नीचैरनुदात्त:' अर्थात् अनुदात्त नीचा या निम्न होता है। यदि अनुदात्त का अर्थ सुरविहीन लें तो यह ग्रेव आघात का समानार्थी नहीं है। यदि इसका अर्थ उदात्त से थोड़ा निम्न लें तो यह ग्रेव का समानार्थी हो जाता है। इस आघात का चिह्न [ / ] है। वैदिक पाठ में इसे अक्षर के नीचे `पड़ी पाई' से द्योतित करते हैं।

अनुनाद resonance

भौतिकशास्त्र से आगत एक पारिभाषिक शब्द जिसका प्रयोग संवहनमूलक स्वन-विज्ञान में वाक् पथ में वायु संचलन के उन स्पन्दनों के लिए किया जाता है जो स्वनन स्रोत के कारण उत्पन्न होते हैं। वाक् पथ के प्रमुख अनुनाद विवर मुख, नासिका एवं ग्रसनी हैं। ये विवर अपने भिन्न -भिन्न आकार द्वारा ध्वनि आवृत्तियों को प्रबलित कर विविध मानवीय स्वनों का उच्चारण करते हैं।

अनुनादी resonant

वह स्वन जिसमें अनुनाद हो तथा जिसके उच्चारण में न तो स्थानीय घर्षण हो और न वायु प्रवाह का पूर्ण अवरोध हो, अनुनादी कहलाता है। इस वर्ग में स्वर, अर्धस्वर, नासिक्य, प्रकंपित एवं पार्श्विक स्वन आते हैं।

अनुप्रतीक iconic

वे प्रतीक जिनके भौतिक रूप उनके द्वारा संकेतिक वस्तुओं की विशेषताओं के लगभग समान होते हैं अर्थात् प्रतीक द्वारा संकेतिक वस्तु की विशेषता उसके भौतिक रूप से साम्य रखती है, अनुप्रतीक कहलाते हैं। यह स्थिति जानवरों के सम्प्रेषण में मिलती है, जैसे - भय के कारण उत्पन्न चीख भय उत्पन्न करने वाले सन्दर्भ में ही सुनाई पड़ती है। भाषाओं में ऐसे मद अल्प संख्या में मिलते हैं। अनुकरणात्मक अभिव्यक्तियाँ अनुप्रतीक कही जा सकती हैं।

अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान applied linguistics

भाषाविज्ञान की वह शाखा जहाँ भाषावैज्ञानिक-सिद्धान्तों, प्रणाली एवं खोजों का अनुप्रयोग विभिन्न क्षेत्रों से जुड़ी भाषा समस्याओं के समाधान के लिए किया जाता है। व्यवहार एवं प्रयोग की दृष्टि से अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान के दो वर्ग किए जा सकते हैं - सीमित एवं व्यापक। सीमित रूप में यह भाषाशिक्षण का पर्याय माना जाता है और व्यापक रूप में इसकी सीमा में अन्य अन्तर्विषय आते हैं। इसकी प्रवृत्ति मूलत: प्रकार्यात्मक होती है। सामान्यत: इसका प्रयोग वक्ता की मन:स्थिति को समझने के लिए (**मनोभाषाविज्ञान**), समाज पर भाषा का प्रभाव ज्ञात करने के लिए (**समाजभाषाविज्ञान**) भाषा विशेष में रचित साहित्य की संरचनात्मक व्याख्या के लिए (**शैली विज्ञान**), मानव, मानवीय सभ्यता एवं संस्कृति से भाषा के सम्बन्ध को ज्ञात करने के लिए (**नृभाषाविज्ञान**), भाषा नियोजन, अनुवाद, शब्द कोश निर्माण के लिए होता है।

अनुबंध adjunct

व्याकरणिक सिद्धान्त में किसी रचना के वैकल्पिक या गौण तत्त्वों के लिए प्रयुक्त शब्द। इस तत्त्व को रचना से निकाल देने पर रचना के संरचनात्मक अस्तित्त्व पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। अंग्रेजी के क्रिया विशेषण वाक्य स्तर पर इसी प्रकार के तत्त्व होते हैं, यथा - `Yesterday he killed the bird' इस वाक्य का प्रयोग Yesterday के अभाव में किया जा सकता है। अनेक अनुबंधकों को विशेषक के रूप में भी विश्लेषित किया जा सकता है, इस स्थिति में ये पदबन्ध के शीर्ष से जुड़े होते हैं।

अनुबंधी adjuction

रूपान्तरण व्याकरण में प्रयुक्त एक आधारिक वाक्यीय संक्रिया जो ऐसे नियम की ओर ध्यान आकर्षित करती है जो संरचना के कुछ तत्त्वों को सहवर्ती स्थिति में यह बताने के उद्देश्य से रखती है कि किस प्रकार ये संरचनाएँ बृहद्‌तर इकाइयों में साथ-साथ आती हैं। अनुबंधी के दो प्रकारों की चर्चा की जाती है - **सह अनुबन्धन** (sister adjuction) तथा **चॉमस्की अनुबन्धन** (Chomsky adjuction)। एक विशिष्ट आसंधि तले जब दो तत्त्व रूपात्मक दृष्टि से संयुक्त किए जाते हैं तो इसे सह अनुबन्धन की संज्ञा देते हैं। चॉमस्की अनुबन्धन में एक तत्त्व को एक आसंधि से संयुक्त किया जाता है और फिर इस आसन्धि की नकल इसके तत्काल ऊपर बनायी जाती है और यही संयुक्त तत्त्वों को शासित करता है।

अनुबंधन[1] conditioning

किसी भाषिक इकाई द्वारा ग्रहण किया गया वह रूप जो पूर्णत: या अंशत: उस भाषिक सन्दर्भ से निर्धारित होता है जिसमें उसका प्रयोग किया गया है, अनुबन्धित कहलाता है तथा यह प्रक्रिया अनुबन्धन कहलाती है। अनुबन्धन तीन प्रकार के हो सकते हैं - (i) **स्वनप्रक्रियात्मक** जैसे - हिन्दी में / -अक / एवं / -क / प्रत्यय स्वनप्रक्रियात्मक अनुबन्धित होते हैं। / -क / का योग संवृत्ताक्षर के बाद होता है (ठुनक, ठुमक) तथा / -क / का योग विवृत्ताक्षर के पश्चात् होता है (फूँक, छींक)। (ii) **रूपरचनात्मक** अनुबन्धन - हिन्दी में कुरूप, कुकर्म, कुचाल में / कु / पूर्व प्रत्यय संयुक्त होता है जबकि कपूत में / क- / युक्त होता है, कह सकते हैं कि / क- / का प्रयोग `पूत' के पहले तथा अन्य सन्दर्भों में / कु / का प्रयोग होगा। (iii) **व्याकरणिक** - संस्कृत में लिंग के अनुरूप ही प्रत्यय संयुक्त होते हैं, यथा - छात्र: छात्रौ छात्र: (पु.); छात्रा छात्रे छात्रा: (स्त्री.) फलम् फले फलानि (नपु.)।

कभी-कभी सामाजिक सांस्कृतिक परिस्थितियाँ भाषिक रूप के चयन को प्रभावित करती हैं और विद्वान इस सन्दर्भ में भी `पर्यावरण अनुबन्धन' की चर्चा करते हैं।

अनुबंधन² binding

किसी वाक्य के तत्त्वों को रूपात्मक दृष्टि से सम्बद्ध या अनुबद्ध करने वाली परिस्थितियों का एक अनुक्रम अनुबन्धन कहलाता है। 1970 के अन्त में प्रजनक भाषिक सिद्धान्त के अन्तर्गत इसका प्रयोग किया गया। यह अधिकार एवं अनुबन्धन सिद्धान्त का एक अंग है। यदि कोई घटक ऐसा समुद्दिष्ट संज्ञापद हो जिसका किसी अन्य समुद्दिष्ट संज्ञापद के साथ सहनियतन (co-indexing) हो तो उसे बद्ध कहते हैं। बद्ध न होने वाले तत्त्व मुक्त कहलाते हैं। अनुबंधन के संदर्भ में तीन प्रकार के संज्ञापदों की चर्चा मिलती है अन्वादेशक, सार्वनामिक एवं कोशीय अनुबन्ध परिस्थिति फिल्टर का कार्य करती है और यह स्पष्ट करती है कि कौन सी सहनियत संरचनाएँ असुगठित हैं।

अनुभावक experiencer

कारक व्याकरण के परवर्ती प्रारूप में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द जो क्रिया द्वारा अभिव्यक्त कार्य या स्थिति से प्रभावित किसी वस्तु या व्यक्ति की ओर संकेत करे; यथा - `राम' का विश्वास है कि वह प्रथम आएगा। आरम्भ में इसे सम्प्रदान कहा गया।

अनुयोजक connective

ऐसे शब्द या रूपिम जिनका प्रमुख कार्य किसी भी स्तर पर भाषिक इकाइयों को जोड़ना है, शब्द के व्याकरणिक वर्गीकरण में अनुयोजक कहलाते हैं। इस वर्ग में समुच्चयबोधक (और, तथा) के अतिरिक्त क्रिया विशेषण (जब-तब) या कुछ क्रियाएं (अंग्रेजी - be, seem) भी आती हैं। एक प्रकार की बहि:केन्द्रिक रचना भी अनुयोजक कहलाती है। इनमें प्रथम तत्त्व संयोजक होता है और द्वितीय विधेय-विशेषण।

अनुलग्नता entailment

तर्कशास्त्र से लिया गया यह पारिभाषिक शब्द आज अर्थविज्ञान के अध्ययन का अंग है। जब दो वाक्यों में ऐसा सम्बन्ध हो कि द्वितीय वाक्य की सत्यता निश्चित रूप से प्रथम की सत्यता पर आश्रित हो तो इसे अनुलग्नता की संज्ञा देते हैं, यथा - मेरे पास

साइकिल है। मेरे पास सवारी है। यहाँ एक साथ प्रथम वाक्य पर बल और द्वितीय का खण्डन नहीं किया जा सकता है।

अनुवर्तन copying

रूपान्तरण व्याकरण की एक महत्त्वपूर्ण संक्रिया जो पदबन्ध चिह्नक में किसी घटक के द्विगुणित रूप को पदबन्ध चिह्नक के किसी अन्य भाग से जोड़ती है, उदाहरणार्थ - He is a doctor जैसे वाक्यों में बद्ध प्रश्न से सम्बन्धित नियमों के निर्माण हेतु क्रिया की, वाक्य के दाएं ओर अनुवृत्ति की जाती है तथा उसे सकारात्मक से नकारात्मक कर देते हैं तत्पश्चात् क्रिया के कर्ता की अनुवृत्ति उसके दाएं तरफ की जाती है, यथा - He is a doctor, isn't he? कतिपय विद्वान बद्ध प्रश्न के एक उपवर्ग के रूप में अनुवृत्ति प्रश्न का उल्लेख करते हैं जिसका स्वरूप मुख्य उपवाक्य क्रिया की भांति (सकारात्मक या नकारात्मक) होता है, यथा - He is a doctor, is he?

अनुवाद translation

इसका व्युत्पत्तिमूलक अर्थ है पुन: कथन, एक बार कही हुई बात को दोहराना। एक भाषा में व्यक्त विचारों को, यथासम्भव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा या किसी अन्य सम्प्रेषण व्यवस्था में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है। इसकी गणना प्रायोगिक भाषाविज्ञान के अन्तर्गत की जाती है। अनुवाद कार्य करने वाला व्यक्ति अनुवादक कहलाता है। एक सफल अनुवादक के तीन अनिवार्य गुण हैं - स्रोत भाषा का पूर्ण ज्ञान; लक्ष्य भाषा का ज्ञान; विषय का समुचित ज्ञान। अनुवाद के कई प्रकार किए जाते हैं - (1) सामग्री के स्वरूप के आधार पर-गद्यानुवाद; पद्यानुवाद; मुक्त छन्दानुवाद, (2) साहित्यिक विधा के आधार पर-काव्यानुवाद; नाटकानुवाद; कथानुवाद (3) अनुवाद की प्रकृति के आधार पर-मूलनिष्ठ अनुवाद; मूलमुक्त अनुवाद। इनके अतिरिक्त भी विद्वानों द्वारा अनेक प्रकारों का उल्लेख (मौखिक; लिखित आदि) समय-समय पर किया गया।

अनुसर्व घटक pro constituent

वाक्य में आगत कोई एक तत्त्व जब वाक्यान्तर्गत अन्य स्थानों पर किसी कोशीय मद की स्थानापत्ति करता है तो उसे अनुसर्व की संज्ञा देते हैं। प्रजनक व्याकरण में इसका बहुत प्रयोग मिलता है।

अनुसर्व रूप pro form

व्याकरणिक वर्णन में प्रयुक्त एक पारिभाषिक शब्द, किसी वाक्य के वे मद जो अन्य मदों या रचनाओं की स्थानापत्ति करते हैं। यह शब्द सर्वनाम के सादृश पर गढ़ा गया जो स्वयं संज्ञापदबंध के स्थान पर प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त अन्य अनुसर्व रूप क्रियाविशेषण, विधेय या सम्पूर्ण वाक्य के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, जैसे - मुझे मिठाई अच्छी लगती है; मुझे भी-बाद में आगत `भी' सम्पूर्ण विधेय अंग के स्थान पर आया है।

अन्योन्य समीकरण resiprocal assimilation

जब पास-पास स्थित दो व्यञ्जनों के उच्चारण परस्पर एक दूसरे को आंशिक रूप से प्रभावित करें और उनके समीकरण द्वारा किसी तीसरे रूप का प्रतिपादन हो जिसमें दोनों के अभिलक्षण समाहित हो, जैसे - संस्कृत आर्य > प्राकृत अज्ज, संस्कृत सत्य > अपभ्रंश सच्च।

अन्वय / अन्विति agreement / concord

व्याकरणिक सिद्धान्त एवं वर्णन में तत्त्वों के रूपात्मक सम्बन्ध को सन्दर्भित करने वाला एक पारम्परिक शब्द। जब किसी शब्द के एक रूप को दूसरे शब्द के सहवर्ती रूप की आवश्यकता हो, यथा - संस्कृत में व्याकरणिक शब्दों की अभिव्यक्ति का प्रमुख साधन अन्विति है जो शब्द क्रम की निश्चित अभिरचना के अभाव में विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है, यथा - ते बालका: विद्यालयम् गच्छन्ति। हिन्दी में विशेषण विशेष्य के मध्य प्राय: लिंग, वचन, कारक की अन्विति घटित होती है, यथा - बड़ा लड़का, बड़ी लड़की; बड़े लड़के ने।

अन्वादेश anaphor

एक प्रकार का विशिष्ट संज्ञापदबन्ध जिसका स्वतंत्र सन्दर्भ नहीं होता है बल्कि जो वाक्य के किसी अन्य घटक को सन्दर्भित करता है। प्रत्येक अन्वादेश का `पूर्वपद' वाक्य में ही होता है वाक्य के बाहर नहीं, उदाहरणार्थ - `राम ने अपने भाग्य को सराहा'। इस वाक्य में `अपने' अन्वादेश `राम' (पूर्वपद) से बंधा है जो वाक्य के अन्तर्गत है। `राम ने उसके काम को सराहा' इस वाक्य में `उसके' का पूर्वपद वाक्य से बाहर है। हिन्दी के निजवाचक एवं पारस्परिक सर्वनाम इस वर्ग में आते हैं।

अन्वादेशक anaphoric

वाक्य में पूर्व वर्णित इकाई या अर्थ को सन्दर्भित करने वाली भाषिक इकाई

व्याकरणिक वर्णन विश्लेषण में, अन्वादेशक कहलाती है। जो कुछ कहा जा रहा है तथा जो कहा जा चुका है इन दोनों के मध्य का अन्तर अन्वादेशक का सन्दर्भ स्पष्ट करता है, यथा - `कल मैंने एक साड़ी देखी वह बहुत महँगी थी' अथवा `उसने यह वहाँ बनाया था'। द्वितीय वाक्य के प्रत्येक शब्द का एक अन्वादेशक सन्दर्भ है जो `मोहन ने पंखा घर पर बनाया था' वाक्य के प्रत्येक शब्द से सहसम्वादिता की स्थिति में है। अन्वादेशक से भिन्न दो अन्य प्रक्रियाएँ भी दृष्टिगत होती हैं - पश्चोन्मुखी (cataphora) अर्थात् जब वाक्य के शब्द आगे ज़ाने वाले सन्दर्भ की ओर संकेत करते हैं, यथा - `मेरे मित्र के पिता ही वह डॉक्टर हैं जिन्होंने आपका इलाज किया था'; बहिर्मुखी (exophora) यदि वाक्य के शब्द सीधे/प्रत्यक्षत: भाषाविज्ञान वाह्य स्थितियों की सूचना देते हैं, जैसे - `राम ने `वहाँ' यह कहा'।

अन्वित विन्यास collocation

दो शब्दों के `साथ-साथ रहने की प्रवृत्ति' को सह प्रयोग/सह सम्बन्ध या अन्वित विन्यास कहा जाता है। भाषा में कुछ शब्द वितरण की दृष्टि से अपेक्षाकृत अधिक मुक्त होते हैं, जैसे - अच्छा (अच्छा घर, अच्छा लड़का, अच्छी जगह आदि), लेकिन कुछ शब्द किसी विशेष प्रकार या वर्ग के शब्दों की ही अपेक्षा करते हैं, जैसे - प्रकांड (प्रकांड पंडित, प्रकांड विद्वान, *प्रकांड घर, *प्रकांड जगह)। भाषा में ये शब्द प्राय: एक दूसरे के सहगामी होकर आते हैं और एक विशेष प्रकार के शाब्दिक प्रतिबन्धन द्वारा नियन्त्रित होते हैं। व्यक्तिगत कोशीय मदों की स्वाभाविक सहभागिता के लिए जे.आर. फर्थ आदि विद्वानों ने इस शब्द का प्रयोग किया, यथा - `शुभ' शब्द के साथ घड़ी, मुहूर्त, विवाह, कार्य आदि शब्द सह सम्बन्ध रखते हैं। इसी प्रकार सुई का सम्बन्ध सिलाई, कढ़ाई, दर्द, चुभन आदि शब्दों से है। ये एक प्रकार के विन्यासक्रमी कोशीय सम्बन्ध होते हैं और एक सीमा तक इनके सम्बन्ध में भाषिक पूर्वानुमेयता सम्भव है। यह पूर्वानुमान कहीं कम और कहीं ज्यादा होता है (जैसे - साफ-सुथरा के मध्य का सम्बन्ध दृढ़ है)। यही विशेषता सहसम्बन्ध को आशय साहचर्य (sense associations) से भिन्न स्थापित करती है।

सह सम्बन्ध का एक गुण यह है कि ये रूपात्मक होते हैं आर्थी नहीं, यथा - 'गुलाबी' का सह सम्बन्ध 'शर्म' शब्द से है (नीला, पीला प्रयोग नहीं किया जा सकता है।) जबकि दोनों के बीच के सम्बन्ध का कोई समुद्दिष्ट आधार नहीं है।

अन्वेषणात्मक heuristic

सामान्यत: समस्या समाधान या खोज प्रक्रिया के अंग रूप में इस पारिभाषिक

शब्द का प्रयोग भाषाविज्ञान में मिलता है। मुख्यतः इसका प्रयोग अमरीकी भाषाविद् ब्लूमफील्ड की खोज प्रक्रिया और प्रजनक भाषाविदों के रूपात्मक विश्लेषण के मध्य व्यतिरेक प्रदर्शित करने हेतु किया गया।

अपठन dyslexia

लिखित भाषा अर्जन एवं विकास के क्षेत्र में अत्यधिक क्षति अपठन कहलाती है। बचपन की ये असमर्थताएँ डेढ़ दो वर्ष या अधिक आयु वाले बच्चों की पाठन एवं वर्तनी सम्बन्धी व्यवहार योग्यता को प्रभावित करती हैं।

अपादान कारक ablative case

संज्ञा या सर्वनाम के उस रूप को अपादान कारक कहते हैं जिससे क्रिया के विभाग की अवधि सूचित होती है। इसके द्वारा अलगाव, अन्तर, उत्पत्ति या तुलना का भी बोध होता है। हिन्दी में इसका विभक्ति चिह्न 'से' है, यथा - पेड़ से फल गिरा; गंगा हिमालय से निकली है। लैटिन की भाँति अंग्रेजी में अपादान कारक नहीं मिलता है वरन् वहाँ अन्य साधनों द्वारा इस अभिप्राय की अभिव्यक्ति होती है, यथा - विशेष रूप से with, from या by पूर्वसर्गों द्वारा - 'He did it with his hands'.

अपारदर्शिता opacity / opague

किसी रूप की व्युत्पत्ति के अन्त में किस सीमा तक एक नियम का अनुप्रयोग स्वनिक निर्गत प्रदान नहीं करता इसे सन्दर्भित करने वाला पारिभाषिक शब्द अपारदर्शिता है। प्रजनक स्वनप्रक्रिया में किसी नियम की अपारदर्शिता का व्यतिरेक पारदर्शिता द्वारा किया जाता है। आधुनिक प्रजनक वाक्यविज्ञान में इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग प्रतिबन्धों के ऐसे समुच्चय के लिए किया गया जो किसी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता/मुक्तता को बाधित करने वाले व्याकरणिक सन्दर्भ को स्पष्ट करते हैं, उदाहरणार्थ - अंग्रेजी रचना They believe [each other are intelligent] में each other अपारदर्शी सन्दर्भ में है और इसके बाहर किसी मद से इसका अनुक्रमण नहीं हो सकता। यह एक असुगठित संरचना है क्योंकि अन्वादेशक each other अपनी नियंत्रक कोटि से बद्ध होना चाहिए किन्तु यहाँ इस कार्य को पूर्ण करने वाला उपयुक्त संज्ञापद नहीं है। अंग्रेजी के एक अन्य वाक्य They believe [each other to be intelligent] में each other पारदर्शी सन्दर्भ में है क्योंकि यह उपवाक्य के बाहर स्थित संज्ञापद से सहअनुक्रमित है।

अपिनिहिति epenthesis

यह ध्वनि आगम का एक रूप है। किसी शब्द के दो व्यंजनों के बीच अर्थात् मध्य स्थिति में, किसी स्वर अथवा अक्षर का आगम अपिनिहित कहलाता है, यथा - कर्म>करम; बर्फ>बरफ। अंग्रेजी gamet का आधुनिक रूप gamble इसी प्रक्रिया का परिणाम है। मध्य स्थिति में आगत यह ध्वनि **अपनिहित स्वन** कहलाती है।

अपूर्ण atelic

पक्ष के व्याकरणिक विश्लेषण में प्रयुक्त शब्द जो उस घटना की ओर संकेत करता है जहाँ प्रतिक्रिया का कोई स्पष्ट अन्तिम बिन्दु नहीं होता है, यथा - हिन्दी के अपूर्ण क्रिया रूप 'वह चल रहा है'; 'वह गा रहा है'। ये क्रिया रूप पूर्ण क्रिया रूप से व्यतिरेक प्रदर्शित करते हैं जहाँ प्रतिक्रिया का स्पष्ट अन्तिम बिन्दु होता है, यथा - 'चिट्ठी भेज दी'; 'खाना लाया था'।

अपूर्ण पक्ष imperfective

क्रिया के उस रूप का संकेतक जो परिस्थिति की आन्तरिक काल संरचना अनुसार रूप को चिह्नित करता है। इसका व्यतिरेकी पूर्ण पक्ष होता है जिसमें बिना समय का ध्यान रखे परिस्थिति का समग्र अवलोकन किया जाता है। स्लाविक भाषा में इसके स्पष्ट उदाहरण मिलते हैं।

अप्रचलित fossilized

किसी भाषा की ऐसी रचना जिसमें उत्पादकता शेष न रह गई हो व्याकरण एवं कोशविज्ञान के अन्तर्गत अप्रचलित कहलाती है। भाषाओं में अनेक अप्रचलित कोशीय मद भी मिलते हैं। इस वर्ग में पुनुरुक्ति रूप भी आते हैं, यथा - खाना-वाना, पैसा-वैसा आदि।

अभिकर्ता agentive

1960 में चार्ल्स फिल्मोर ने कारक व्याकरण प्रस्तुत किया। इन्होंने चॉमस्की द्वारा प्रतिपादित अन्तस्तलीय एवं बहिस्तलीय संरचना भेद को स्वीकारा तथा यह निरूपित किया कि कारक का सम्बन्ध अन्तस्तलीय संरचना से है। इनके मतानुसार बहिस्तलीय संरचना में कर्ता रूप में कार्यरत संज्ञापद अन्तस्तलीय संरचना में करण, अनुभावक आदि अन्य कारक में हो सकता है अत: दोनों संरचनाओं के कर्ता को भिन्न-भिन्न नाम से अभिहित

करना चाहिए। इस भेद को स्पष्ट करने के लिए फिल्मोर ने 'अभिकर्ता' शब्द का प्रयोग किया। यह बहिस्तलीय में कर्ता तथा अन्तस्तलीय में अभिकर्ता कहलाया, जैसे - 'राम ने पत्र लिखा' इस वाक्य का आन्तरिक एवं बाह्य दो दृष्टियों से कर्ता 'राम' है किन्तु 'पत्र राम द्वारा लिखा गया' वाक्य में आन्तरिक दृष्टि से कर्ता 'राम' एवं बाह्य दृष्टि से 'पत्र' है अत: प्रथम को अभिकर्ता एवं द्वितीय को कर्ता कहते हैं। स्पष्ट है कि क्रिया द्वारा अभिज्ञात कार्य का चेतन, ज्ञात प्रेरक का प्रमुख कारक अभिकर्ता कहलाता है।

अभिकलनात्मक भाषाविज्ञान computational linguistics

भाषाविज्ञान की एक शाखा जिसके अन्तर्गत अभिकलनात्मक तकनीकियों एवं संकल्पनाओं का अनुप्रयोग भाषिक एवं स्वनिक समस्याओं के समाधान के लिए होता है। वाक् संश्लेषण, वाक्-पहचान, स्वत: अनुवाद, प्रकृत भाषा संसाधन, व्याकरणों की जांच आदि अनेक क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ सांख्यकीय गणना एवं विश्लेषण की आवश्यकता होती है और इन्हीं क्षेत्रों में किए जा रहे शोध कार्य अभिकलनात्मक संगणक भाषाविज्ञान का क्षेत्र हैं।

अभिगम्यता accessibility

कोई वक्ता किसी भाषिक रूप को स्मृति से निकाल किस सीमा तक पुन: स्मरण कर लेता है इसे अभिगम्यता की संज्ञा देते हैं। मनोभाषाविज्ञान में प्रयुक्त यह पारिभाषिक शब्द मनोविज्ञान से लिया गया। जिह्वा स्खलन या वाक् स्खलन अथवा 'मुँह में है याद नहीं आ रहा है' जैसे प्रयोग के सन्दर्भ में अभिगम्यता सम्बन्धी समस्याएँ दृष्टिगत होती हैं।

अभिगम्यता सोपानिकी accessibility hierarchy

सम्बन्धपरक व्याकरण में इस पदबन्ध का प्रयोग किया गया। इनके मतानुसार संज्ञापरक सत्वों के मध्य एक अनुमानित आश्रयता की रैखिक श्रेणी मिलती है जो वाक्यीय नियमों के अनुप्रयोग को नियंत्रित करती है इसे ही अभिगम्यता सोपानिकी कहते हैं, उदाहरणार्थ - कर्ता की भाँति कार्य करने वाला नामिक 'मुख्य कर्म' की भाँति कार्य करने वाले नामिक से अधिक अभिगम्य होता है तथा 'गौण कर्म' की तुलना में 'मुख्य कर्म' अधिक अभिगम्य कहा जा सकता है यह श्रृंखला आगे भी जा सकती है। इस धारणा का अनुप्रयोग विविध व्याकरणिक क्षेत्रों में किया गया, जैसे - सम्बन्धपरक उपवाक्य निर्माण तथा निर्चवाचक एवं परिमाण वाचक के प्रयोग में। इस सम्बन्ध की सम्पूर्ण सम्भावनाओं की खोज अभी नहीं हुई है।

अभिगामी approximant

कतिपय स्वनशास्त्रियों ने उच्चारण प्रयत्न के आधार पर वाक् स्वनों के वर्गीकरण का एक उपवर्ग अभिगामी स्वनों का बनाया। अन्य उपागमों में अभिगामी के लिए ही घर्षणहीन संप्रवाही स्वन (w,j,r,l तथा समस्त स्वर) नाम दिया गया। इनके उच्चारण में उच्चारक एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाता है किन्तु संकीर्णता इतनी नहीं होती है कि घर्षण श्रवणीय हो। कुछ विश्लेषणों [h] को अभिगामी वर्ग में रखा गया।

अभिगृहीत axiom

यह शब्द किसी सिद्धान्त द्वारा सत्य समझे जाने वाले आरम्भिक स्वयं सिद्ध तथ्यों के समुच्चय का संकेतक है। इसके आधार पर भावी निष्कर्षों (प्रमेयों) का अनुमान निगमन के विशिष्ट नियमों द्वारा किया जाता है। एक **अभिगृहीत तन्त्र** (axiomatic system) के सम्पूर्ण विवरण में एक 'वाक्यविज्ञान' होता है जो निष्कर्षों की सुगठनता निर्धारित करता है और एक 'शब्दावली' होती है जो तन्त्र के समस्त शब्दों की तालिका बनाती है। भाषाविज्ञान में इन विचारों का अनुप्रयोग चॉमस्की के विचारों के प्रभावस्वरूप प्रारम्भ हुआ।

अभिधेयाथ denotation

अर्थविज्ञान के अन्तर्गत अर्थ के प्रकारों की चर्चा में इसका उल्लेख किया जाता है। किसी एक भाषिक इकाई (विशेषत: एक कोशीय मद) तथा उसके द्वारा संकेतित अभाषिक तत्त्व के मध्य का सम्बन्ध अभिधेयार्थ में सम्मिलित होता है। यह कोशीय मद का व्यावहारिक और लौकिक अर्थ है। इस प्रकार यह संदर्भपरक/समुद्दिष्ट अर्थ के समतुल्य कहा जा सकता है तथा व्यञ्जनार्थ इसका विलोम होता है, उदाहरणार्थ - कोश में दी गई परिभाषा के अनुसार पक्षी का अभिधेयार्थ 'एक पंखों वाला प्राणी' होगा।

अभिरचना pattern

अभिरचना से तात्पर्य है 'इकाइयों का व्यवस्थित विन्यास'। भाषाविज्ञान एवं स्वन-विज्ञान में अनेक सन्दर्भों में इसका प्रयोग मिलता है। भाषा शिक्षण में किसी विशिष्ट संरचना का अभ्यास करते समय आदेश बंध तकनीकी का प्रयोग **'अभिरचना अभ्यास'** कहलाता है। **'अभिरचना समता'** से तात्पर्य किसी भाषा के स्वनिमों या रूपों की व्यवस्था में अन्तर्निहित सममिति (symmetry) है। अभिरचना समता में किसी भाषिक इकाई की

अनुपस्थिति **'अभिरचना रिक्ति'** कहलाती है, जैसे - सिन्धी भाषा में यदि अभिरचना समता निम्नलिखित है-

ग्	ज्	ड्	ब
ग	ज	?	ब

तो 'ड्' का संवादी अंत:स्फोटी / ड / अभिरचना रिक्ति का उदाहरण है।

अभिरचना द्वैत duality of pattern

यह मानवीय भाषा की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है जो उसे अन्य प्रतीक व्यवस्थाओं से भिन्न प्रतिपादित करती है। इसके अनुसार भाषा में दो अमूर्त स्तरों पर संरचनात्मक संगठन मिलता है। प्रथम उच्च स्तर पर, भाषा को सार्थक इकाइयों के संयोजन रूप में विश्लेषित किया जा सकता है (यथा - शब्द, रूपिम), द्वितीय निम्न स्तर पर भाषा का विश्लेषण स्वन खण्डों के अनुक्रम रूप में किया जा सकता है जो स्वयं तो अर्थहीन होते हैं किन्तु जिनके संयोजन अर्थपूर्ण इकाइयों का निर्माण करते हैं।

अभिलक्षण feature

उच्चरित या लिखित भाषा का कोई भी ध्यान देने योग्य महत्त्वपूर्ण गुण अभिलक्षण कहलाता है। भाषिक विश्लेषण के विविध स्तरों के आधार पर अभिलक्षणों का भी वर्गीकरण किया जाता है, जैसे - स्वनिक/स्वनप्रक्रियात्मक/व्याकरणिक/वाक्यीय अभिलक्षण। यह वर्गीकरण वर्णन के आयाम के आधार पर भी किया जा सकता है - उच्चारणात्मक/ श्रवणात्मक/भौतिक ध्वनि लक्षण/सामान्य स्तर पर अभिलक्षणों को भाषिक एवं भाषेतर दो वर्गों में बांटा जा सकता है। विशिष्ट स्तर पर कई प्रकार के अभिलक्षणों की स्थापना किसी सिद्धान्त की लघुतम इकाई के रूप में की जा सकती है जैसा स्वनप्रक्रिया के प्रभेदक अभिलक्षण सिद्धान्तों में दृष्टिगत होता है। प्रजनक विश्लेषण में कोश में शब्दों का वर्गीकरण जिन व्याकरणिक विशेषताओं पर आधृत है उन्हें अभिलक्षण कहते हैं, यथा - [चेतन], [संख्येय], [पुलिंग]। ये अभिलक्षण द्विचर समझे जाते हैं, यथा - [+चेतन], [-चेतन]। इसी प्रकार आर्थी अभिलक्षण भी द्विचर होते हैं, जैसे - [+मानवीय], [+पुलिंग] आदि।

अभिवाचक allative

व्याकरणिक वर्णन में विभक्ति के एक प्रकार के लिए प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द जो 'किसी स्थान की ओर जाना' (गति) अर्थ अभिव्यक्त करती है। यह विभक्ति फिन्निश भाषा में मिलती है।

अभिवृत्तिक attitudinal

किसी वाक्य की प्रबलता या अनुतान क्रोध, प्यार, व्यंग आदि संवेगों की अभिव्यक्ति करती है। अर्थ में प्राप्त इन संवेगात्मक तत्त्वों को अभिवृत्तिक अर्थ की संज्ञा दी जाती है तथा अर्थ भेद की चर्चा में इस शब्द का प्रयोग अर्थविज्ञान में किया जाता है। स्वनगुण के सन्दर्भ में प्रायः अभिवृत्तिक अर्थ को व्याकरणिक अर्थ से भिन्न प्रतिपादित किया जाता है।

अभिव्यंजक expressive

किसी अभिव्यक्ति के अभिव्यंजक अर्थ से तात्पर्य उसके भावात्मक आशय तथा प्रयोक्ता की व्यक्तिगत एवं वैयक्तिक सृजनात्मकता के आधार पर ज्ञात अभिव्यक्ति की पहचान दोनों से लिया जाता है। यह प्रायः वर्णनात्मक और सामाजिक अर्थ से भिन्न होता है। वक्ता के भावों की अभिव्यक्ति करने वाले कथन वाग्व्यवहार सिद्धान्त के अन्तर्गत अभिव्यंजक कहलाते हैं, यथा - मैं माँफी चाहता हूँ; मुझे दुःख है आदि।

अभिव्यक्ति expression

इस शब्द का प्रयोग भाषाविज्ञान में सामान्य अर्थ में किया जाता है। अभिव्यक्ति से तात्पर्य तत्त्वों की एक माला से है जो व्याख्या एवं विश्लेषण के उद्देश्य से एक इकाई मानी जाती है। प्रत्येक अभिव्यक्ति का एक निश्चित व्याकरणिक एवं कोशीय स्वरूप होता है जिनके आधार पर उसकी परिभाषा की जा सकती है, यथा - 'करता है' अभिव्यक्ति रूप वर्ग का अनुक्रम या कोशीय मदों का अनुक्रम दोनों ही तरह से विश्लेषित की जा सकती है। यही नहीं इसका विश्लेषण आर्थी गुणों के आधार पर भी सम्भव है।

फ्रेंच विद्वान फर्दिनान्द डी सेस्यूर ने इस शब्द का प्रयोग किया। इनके अनुसार अभिव्यक्ति (या रूप) तथा आशय (या अर्थ) के मध्य भेद है - अभिव्यक्ति से तात्पर्य है भाषिक रूपों के सभी पक्ष अर्थात् - ध्वनियाँ एवं उनके व्याकरणिक अनुक्रम।

अभिसरण convergence

बोली परिवर्तन की प्रक्रिया जिसमें बोलयाँ एक दूसरे के समान होने लगती हैं अर्थात् अभिसारी हो जाती हैं। यह प्रक्रिया प्रायः उस समय घटित होती है जब किसी मानक रूप का प्रभाव अमानक रूप पर पड़ता है; परन्तु विपरीत स्थिति में भी अभिसरण हो सकता है। कभी-कभी भौगोलिक दृष्टि से सहवर्ती भाषिक समुदायों को **अभिसरण क्षेत्र**

नाम दिया जाता है। प्राचीन समय में प्राप्त दो स्वतन्त्र रूपों में जब विलयन की स्थिति मिलती है तो इस अवस्था में ऐतिहासिक भाषाविज्ञान में भी अभिसरण की चर्चा होती है।

अभ्युपगम postulates

आरम्भिक प्रकारताओं का एक समुच्चय जिसे कोई सिद्धान्त सत्य मान लेता है। ये आरम्भिक कथन तथा इनके आधार पर प्राप्त निष्कर्ष सामूहिक रूप में अभ्युपगम पद्धति कहलाते हैं। भाषाविज्ञान में भाषा सम्बन्धित विचारों को व्यवस्थित करने के लिए अनेक अभ्युपगम समुच्चय प्रतिपादित किए गए। इनमें सर्वाधिक प्रचलित अमरीकी भाषाविद् ब्लूमफील्ड तथा ब्लॉक द्वारा प्रस्तावित अभ्युपगम माने जाते हैं।

अयोगात्मक isolating

जिन भाषाओं में प्रकृति में कुछ भी संयुक्त नहीं होता अर्थात् शब्द सदैव अपरिवर्तनीय होते हैं। इस वर्ग की प्रमुख भाषाएँ तिब्बती-चीन परिवार की हैं।

अर्जन acquisition

शिशु के भाषा विकास से सम्बन्धित अध्ययन में इस शब्द का प्रयोग किसी भाषा को सीखने की प्रक्रिया के सन्दर्भ में किया जाता है। अध्ययन का यह क्षेत्र **'बाल भाषा अर्जन'** नाम से अभिहित किया जाता है। इसका अध्ययन क्षेत्र बच्चों में भाषा-अर्जन की प्रक्रिया के विविध चरणों को उद्घाटित करना एवं मानव-व्यवहार से इसके सम्बन्ध को विश्लेषित करना है। भाषा-अर्जन की प्रक्रिया में संलग्न अधिगम योजनाओं तथा भाषा संरचना को अर्जित करने के काल से सम्बन्धित निर्णायक आधारों/मानकों के विषय पर विद्वतजन दीर्घ काल से विचार-विमर्श करते आए हैं। कतिपय सिद्धान्तवादी 'अर्जन' एवं 'विकास' के मध्य भिन्नता मानते हैं। उनके अनुसार जहाँ प्रथम भाषिक नियमों (व्याकरण, ध्वनि प्रक्रिया एवं अर्थ से सम्बन्धित) के ज्ञान को सन्दर्भित करता है वहाँ द्वितीय विस्तृत भाषिक एवं सामाजिक परिस्थितियों में नियमों के प्रयोग से सम्बन्धित है। अनेक भाषाविद् दोनों के मध्य कोई स्पष्ट विभाजन नहीं स्वीकारते हैं और एक के स्थान पर दूसरे का प्रयोग उचित समझते हैं।

प्रजनक भाषाविज्ञान में **भाषा-अर्जन-प्रविधि** (language acquisition device) का प्रयोग भाषा अधिगम के उस प्रारूप के सन्दर्भ में किया जाता है जिसमें नवजात शिशु में भाषिक संरचना को अर्जित करने की एक सहज पूर्वानुकूलता को मान्यता दी जाती है।

इस दृष्टिकोण से असहमत विद्वान भाषा अर्जन को अनुकरण अधिगम प्रक्रिया अथवा संज्ञानात्मक विकास की प्रतिप्रतिक्रिया के रूप में मानते हैं।

अर्थ meaning

इस आधारिक संकल्पना का प्रयोग सामग्री रूप में तथा विश्लेषण के आधार रूप में, दोनों प्रकार से किया गया। साथ ही, भाषा के अन्य पक्षों के अध्ययन में भी अर्थ को एक आधार रूप में स्वीकार किया गया। भाषा के सन्दर्भ में अर्थ का विषय अनेक अभाषिक तत्त्वों की आकांक्षा करता है। सम्भवत: इसीलिए इस क्षेत्र में भाषाविद् के साथ-साथ दर्शनशास्त्री, तर्कशास्त्री, मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्री की भी रूचि रही है। भाषाविद् की मुख्य रुचि दैनिक बोलचाल में व्यवहृत भाषा के अर्थ विश्लेषण में, सामान्य भाषिक सिद्धान्त के घटकों से अर्थ को सम्पृक्त करने में तथा समय के साथ अर्थ में घटित परिवर्तन को ज्ञात करने में होती है। भाषाविज्ञान किसी सूचना की व्याख्या करने वाले समस्त तत्त्वों को अलग करने का ऐसा महत्त्वपूर्ण परिदृश्य प्रस्तुत करता है जो अर्थ सम्बन्धी अन्तर्भाषीय अभिलक्षणों की स्थापना में सहायक हो। अर्थ को तीन वर्गों में विभाजित किया जाता है - जब भाषा और सत्व, घटना या कार्य की अवस्था के मध्य प्राप्त सम्बन्धों पर बल होता है तो ऐसे अर्थ को समुद्दिष्ट/वर्णनात्मक/वस्तुनिष्ठ/तात्विक/विस्तृत या वस्त्वर्थ नाम दिया जाता है और जब वक्ता की मन:स्थिति एवं भाषा के मध्य के सम्बन्ध केन्द्रीय हो तो ऐसे अर्थ को दो उपवर्गों में निरूपित किया जाता है वैयक्तिक, भावात्मक पक्षों के लिए भावपरक/लक्षणार्थ/संवेगार्थ अभिवृत्तिपरक/अभिव्यंजक आदि पारिभाषिक शब्द प्रयुक्त होते हैं। बौद्धिक एवं तात्विक पक्षों की अभिव्यक्ति संज्ञानात्मक/विचार प्रधान अर्थ इन शब्दों द्वारा होती है। जब अध्ययन में इस बात पर बल हो कि भाषा के अवबोधन एवं व्याख्या को भाषाविज्ञान-बाह्य परिस्थितियाँ किस प्रकार प्रभावित करती हैं तो सान्दर्भिक/प्रकार्यात्मक/अन्तर्वैयक्तिक सामाजिक/स्थितिपरक अर्थ का उल्लेख किया जाता है। भाषा के प्रत्येक स्तर की व्याख्या करने वाले अर्थ को उस स्तर के अर्थ की संज्ञा दी जाती है। कोशीय अर्थ अर्थात् जो कोशीय मदों के अर्थ होते हैं; व्याकरणिक संरचना का अर्थ व्याकरणिक या संरचनात्मक अर्थ कहलाता है। इस परम्परा को आगे बढ़ाते हुए फर्थ के अनुयायियों ने स्वनिक एवं स्वनप्रक्रियात्मक अर्थ का उल्लेख किया।

अर्थ परिवर्तित meaning changing

प्रजनक व्याकरण के दो प्रकार के रूपान्तरणों के मध्य स्थापित सैद्धान्तिक भेद।

यदि किसी रूपान्तरण की संक्रिया में निविष्ट वाक्य एवं व्युत्पादित वाक्य में अर्थ परिवर्तित हो जाता है तो रूपान्तरण 'अर्थ-परिवर्तित' है अन्यथा उसे 'अर्थ-संरक्षित' की संज्ञा दी जाती है।

अर्थविज्ञान semantics

भाषाविज्ञान की एक शाखा जिसका सम्बन्ध शब्दार्थ तथा भाषागत व्याकरणिक रूप से भी होता है। फ्रांसीसी विद्वान माइकेल ब्रील ने अर्थविज्ञान को एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया। इनके काल में अर्थविज्ञान का मुख्य परिप्रेक्ष्य शब्द के वास्तविक अर्थ पर विचार करना था। बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में ऐतिहासिक अर्थविज्ञान की अध्ययन-पद्धति में पर्याप्त विकास हुआ। जर्मन भाषाविद् कार्ल बुह्लर ने अर्थ-सम्बन्धी समस्याओं के समाधान के लिए संरचनात्मक दृष्टि को ही उचित बताया। जी.मैतोरे ने सामाजिक कारणों को अर्थ-निश्चयन और परिवर्तन के लिए उत्तरदायी ठहराया। ब्लूमफील्ड द्वारा प्रतिपादित 'व्यवहारवादी अर्थविज्ञान' ने व्यवहारवादी तकनीकियों के अनुप्रयोग पर बल दिया तथा अर्थ के अध्ययन को निरीक्षणीय एवं मापनीय व्यवहार तक प्रतिबन्धित/सीमित किया।

अर्थहीन nonsense

ऐसे वाक्य जो व्याकरणिक हो किन्तु आर्थी दृष्टि से ग्राह्य न हो अर्थात् जिनका निर्माण भाषा के व्याकरण के अनुरूप हुआ हो परन्तु अर्थ की दृष्टि से जिन्हें उपयुक्त नहीं कहा जा सके, जैसे - *कुर्सी दौड़ रही है; *He drank the lamp in a chair.

अर्थिम sememe

कतिपय आर्थी सिद्धान्तों में अर्थ स्तर की लघुतम इकाई अर्थिम कहलाती है। इस आधार पर प्रत्येक रूपिम का अर्थ एक अर्थिम के समतुल्य होगा। कुछ विद्वान अर्थिम को आर्थी घटक की अवधारणा के समान मानते हैं। स्तरपरक व्याकरण में तल व्यवस्था के वर्णन के लिए अर्थिमिक शब्द का प्रयोग किया गया। इस तल पर कोशीय मदों के मध्य अवस्थित आर्थी सम्बन्धों की व्यवस्था का वर्णन किया जाता है। भाषा एवं बाह्य जगत के सम्बन्धों का विश्लेषण करने वाला तल अति अर्थिमिक कहलाता है।

अर्धद्विभाषिकता semi bilingualism

किसी भाषा में दक्षता के लिए उत्पादकता एवं ग्रहणशीलता दो तत्त्वों की आवश्यकता

होती है। इनमें से किसी एक के अभाव में अर्ध द्विभाषिकता की स्थिति होती है, जैसे - यदि कोई वक्ता बंगला समझ ले किन्तु बोल न सके।

अर्धवाक्य semi-sentence

ऐसे वाक्य जिनकी व्याकरणिकता या ग्राह्यता संदेहात्मक हो किन्तु जिनके सम्बन्ध में अव्याकरणिकता सम्बन्धी निश्चित निर्णय सरलता से नहीं लिए जा सकें। प्राय: भाषाओं में ऐसे वाक्य मिलते हैं जो निश्चित सन्दर्भ में ग्राह्य होते हैं किन्तु सन्दर्भ च्युत होने पर जिन्हें अव्याकरणिक मान, स्वीकार नहीं किया जाता है, जैसे - 'हमने देखी है इन आंखों में महकती खुशबू' वाक्य में चयनपरक नियमों का उल्लंघन किया गया है।

अर्धसंकर / पिजिन pidgin

भाषा का वह मिश्रित रूप जिसकी व्याकरणिक संरचना, शब्दावली एवं शैलीगत प्रसार अन्य भाषाओं की तुलना में सीमित होता है तथा जो किसी भाषिक समुदाय की मातृ भाषा नहीं होती है। प्राय: दो भाषिक समुदायों के मध्य सम्पर्क होने पर व्यापारिक उद्देश्य की पूर्ति हेतु भाषा का यह मिश्रित रूप जन्म लेता है। सम्पर्क की अवस्था में दो भाषिक समुदाय परस्पर एक दूसरे समुदाय के अधिक स्पष्ट अभिलक्षण ग्रहण कर लेते हैं, जैसे - अंग्रेजी, स्पेनिश, फ्रेंच का पिजनीकृत रूप। जब यह रूप किसी एक भाषिक समुदाय की मातृभाषा का स्थान ग्रहण कर ले, जिसका लिखित रूप भी सम्भव हो तो उसे संकर या क्रियोल कहते हैं, जैसे - अफ्रीका एवं अमरीका में प्रयुक्त क्रियोल भाषाएँ।

अर्ध स्वर semi-vowel

वे स्वन जो औच्चारिक दृष्टि से स्वर के उच्चारण के सन्निकट तथा भाषा में व्यवहार की दृष्टि से व्यंजन के अनुरूप होते हैं। इनमें कुछ विशेषताएँ स्वर तथा कुछ व्यंजन की होती हैं। इनके उच्चारण में संघर्षहीनता की स्थिति रहती है। उच्चारण अवयव एक स्वर स्थिति से दूसरी स्थिति की दिशा में गतिशील होते हैं अत: ये स्वन श्रुत्यात्मक हैं। साधारणत: भाषाओं में दो अर्द्ध स्वर प्राप्त होते हैं - वृत्ताकार सघोष कंठ्योष्ठ [w] और अवृत्ताकार तालव्य अर्द्ध स्वर [j]।

अर्धोक्ति anacoluthon

वाक्यान्तर्गत यदि अपेक्षित व्याकरणिक अनुक्रम को खण्डित कर नवीन वाक्य

का प्रयोग किया जाए तो यह विच्छेद अर्धोक्ति कहलाता है, जैसे - जब कोई वाक्य एक रचना से प्रारम्भ होकर अपूर्ण रह जाए और बीच में ही अधूरा रह जाए यथा - एक राजा के चार बेटे थे और उनके क्या तुम सुन रहे हो?

अलिजिह्वीय uvular

अलिजिह्वा एवं जिह्वा पश्च के सहयोग से उच्चरित व्यंजन ध्वनि अलिजिह्वीय कहलाती है, जैसे - मानक फ्रेंच का r स्वन अलिजिह्वीय होता है इसे [R] चिह्न द्वारा लिप्यांकित करते हैं।

अल्पतम युग्म minimal pair

स्वनप्रक्रिया द्वारा प्रयुक्त खोज प्रक्रियाओं में एक खोज प्रक्रिया जो यह निश्चित करती है कि कौन सी ध्वनि सदृश वर्ग या स्वनिम के अन्तर्गत परिगणित होनी चाहिए। यदि दो शब्दों में सिर्फ एक ध्वनि परिवर्तन द्वारा अर्थ परिवर्तन हो तो उन्हें **अल्पतम युग्म** कहते हैं, जैसे - चाल:साल; डगर:नगर। इस प्रकार का परीक्षण **अल्पतम युग्म परीक्षण** कहलाता है। एक ध्वनि परिवर्तन से भिन्न अर्थ सूचित करने वाले शब्दों के समुच्चय के लिए कभी-कभी 'अल्पतम युग्म समुच्चय' पदबन्ध का प्रयोग होता है, जैसे - काल, गाल, साल, चाल, माल, नाल.....।

अल्पार्थक/लघुतावाची diminutive

एक प्रकार का प्रत्यय जिसका सामान्य अर्थ 'थोड़ा', 'लघु' होता है। रूपरचना में इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग मिलता है इस प्रत्यय के उदाहरण इतावली - ino; पुर्तगाली - zinho तथा अंग्रेजी - let हैं।

अवधारक intensive

यह शब्द किसी संरचना के निर्मायक तत्त्वों के मध्य अवस्थित घनिष्ठ आर्थी तादात्म का संकेतक है, यथा - वाक्य के कर्ता और पूरक अथवा कर्म एवं पूरक के बीच का सम्बन्ध। ऐसे वाक्यों की क्रिया अवधारक क्रिया कहलाती है।

अवनाम hyponym

विशिष्ट एवं सामान्य कोशीय मदों के मध्य घटित सम्बन्ध अवनाम कहलाता है,

यथा - बिल्ली जानवर का अवनाम है। यहाँ प्रथम 'बिल्ली' द्वितीय 'जानवर' में अन्तर्निविष्ट है। कुत्ता, तोता, शेर भी जानवर के अवनाम हैं अत: इनका एक समुच्चय बन सकता है जिसके सदस्य **सह अवनाम** कहलाते हैं।

अवरूद्ध blocked

रूपान्तरण व्याकरण में किसी रूपान्तरण नियम के न लागू होने की स्थिति को सन्दर्भित करने वाला पारिभाषिक शब्द। किसी नियम को उस स्थिति में अवरुद्ध कहा जाता है जब वह नियम किसी व्युत्पत्ति पर, पदबन्ध चिह्नक के किसी विशिष्ट गुण के कारण, अनुप्रयुक्त न किया जा सके।

अवरुद्ध भाषा blocked language

कतिपय व्याकरणिक वर्णनों में इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग मिलता है। यह शब्द सीमित सम्प्रेषणीय सन्दर्भों में संक्षिप्त संरचनाओं के प्रयोग को सन्दर्भित करता है और इसमें उपवाक्य या वाक्य के स्थान पर शब्द तथा पदबन्ध का विशेष प्रयोग किया जाता है, उदाहरणार्थ - धूम्रपान निषेध, निकास, प्रवेश निषेध आदि।

अवरोध[1] barrier

आकांक्षा की अवधारणा को प्रतिबद्ध करने वाली परिस्थिति जिसका आधुनिक प्रजनक भाषा-विज्ञान में प्रयोग किया गया। अवरोध स्थिति के अनुसार यदि संज्ञापदबन्ध अथवा एक आश्रित उपवाक्य की सीमाएँ बीच में आती हैं तो एक कोटि दूसरे को निर्देशित नहीं करती है।

अवरोध[2] closure

स्वनविज्ञान में प्रयुक्त एक सामान्य शब्द जो एक ऐसे उच्चारण की ओर संकेत करता है जहाँ प्रमुख या गौण उच्चारणों के मध्य का सम्पर्क, वायु प्रवाह को मुख अथवा नाक में अवरुद्ध करे। संघर्षी, नासिक्य एवं स्पर्शों के उच्चारण में पूर्ण अवरोध होता है। आन्तरिक अवरोध की स्थिति में ताड़ित, उत्क्षिप्त एवं लोड़ित ध्वनियाँ उच्चरित होती हैं। पार्श्विक ध्वनि के उच्चारण में आंशिक अवरोध होता है। कुछ स्वनशास्त्री संघर्षी को आंशिक या अपूर्ण अवरोध के अन्तर्गत रखते हैं। वाक् पथ का ऐसा संकोचन जहाँ प्राय: कोई उच्चारणात्मक सम्पर्क नहीं होता है, निकोच कहलाता है।

अवरोही falling

वह सुर/स्वराघात जो प्रारम्भ की तुलना में अक्षरान्त में निम्नस्तरीय हो अवरोही कहलाता है। अनुतान व्यवस्थाओं और तान भाषाओं के अध्ययन के समय इसके विविध प्रकार देखने को मिलते हैं, यथा - उच्च/निम्न अवरोही, अवरोही-आरोही। वह संध्यक्षर जिसके दो स्वरों में से पहला स्वर दूसरे की अपेक्षा अधिक बलाघात-युक्त होता है अवरोही-संध्यक्षर कहलाता है, जैसे - अंग्रेजी में ie(make) ou (post) आदि।

अवस्था state

किसी भाषा की काल विशेष की स्थिति या किसी अनुमानित काल की स्थिति को सन्दर्भित करने वाला पारिभाषिक शब्द, जैसे - मध्ययुगीन आर्य भाषएँ, 10वीं शताब्दी की हिन्दी आदि। भाषा की निश्चित काल अवस्था का अध्ययन विश्लेषण संकालिक भाषा विज्ञान के अन्तर्गत किया जाता है जिसे फर्दिनान्द डि सेस्यूर ने 'et a de langue' की संज्ञा दी।

अविकारी invariant

शब्द को दो वर्गों में विभाजित किया जाता है विकारी एवं अविकारी। वे शब्द जो बिना किसी रूपरचनात्मक परिवर्तन के प्रयोग किए जाते हैं अविकारी कहलाते हैं। हिन्दी में ये अव्यय भी कहलाते हैं और समुच्चयबोधक, विस्मयादि बोध्रक, नार्थक आदि शब्द इस वर्ग में आते हैं, यथा - और, अथवा, हाय, नहीं आदि।

अविच्छिन्नता uninterruptability

व्याकरणिक इकाई के रूप में शब्द की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता उसकी अभेद्यता होती है अर्थात् शब्द की आन्तरिक संरचना किसी प्रकार का व्यवधान स्वीकार नहीं करती है जिसे शब्द की अविच्छिन्नता (uninterruptability) की संज्ञा दी जाती है।

अव्यय invariable

शब्दों के व्याकरणिक वर्गीकरण का एक वर्ग जिसके मदों में सामान्यतया लिंग, वचन, कारक, पुरुष सम्बन्धी कोई विकार नहीं होता है उन्हें अव्यय कहते हैं। ये बहुधा आश्रयी होते हैं तथा भाषाओं में इनकी संख्या कम मिलती है। रूप एवं अर्थ की दृष्टि से

हिन्दी में इनके चार प्रकार मिलते हैं - क्रिया विशेषण, समुच्चय बोधक, सम्बन्ध सूचक, विस्मयादिबोधक। क्रिया विशेषण वह पद है जो काल, स्थान, रीति परिमाण-सम्बन्धी विशेषताओं का बोध कराकर क्रिया की व्याप्ति को मर्यादित करता है यह क्रिया की विशेषता व्यक्त करता है, यथा - तुम्हें पहले आना चाहिए। वे अव्यय पद जो किसी संज्ञा के बाद आकर उसका सम्बन्ध अन्य पदों से व्यक्त करते हैं सम्बन्ध सूचक कहलाते हैं। अंग्रेजी में ये संज्ञा के पूर्व (with the ball; on the table) तथा हिन्दी में संज्ञा के बाद आते हैं (लड़के को, कलम से, गांव तक, खाने के लिए)। अधिकांशतः सम्बन्धसूचक अव्यय पूर्ण शब्द या शब्दांश होते हैं। विद्वानों का मानना है कि हिन्दी परसर्ग प्रारम्भ में स्वतंत्र शब्द रहे होंगे कालक्रमेण ध्वनि ह्रास के कारण ये इतने सूक्ष्म हो गए कि इन्हें शब्द नहीं कहा जा सकता है। इसीलिए इनको सम्बन्धसूचक अव्यय न कहकर कारक परसर्ग कहना अधिक उचित होगा।

दो पदों, वाक्यांशों अथवा वाक्यों को मिलाने वाले पद को समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं, उदाहरणार्थ - और, तथा, किन्तु, लेकिन, यदि-तो। कुछ सर्वनाम, विशेषण तथा क्रियाविशेषण भी दो वाक्यों में सम्बन्ध जोड़ते हैं और समुच्चयबोधक के समान कार्य करते हैं, यथा - जैसा कार्य करोगे वैसा ही परिणाम होगा।

जिनसे वक्ता के विस्मयादि तीव्र मनोविकारों को व्यक्त किया जाता है वे विस्मयादिबोधक पद कहलाते हैं। वास्तव में इनका वाक्य के किसी अन्य पद से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं होता है, यथा - ओह! बाप रे बाप!

अशुद्ध व्युत्पादन misderivation

एक प्रकार के जिह्वा स्खलन दोष के लिए कुछ मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द जहाँ शब्द के बाद अशुद्ध प्रत्यय संयुक्त किया जाता है, जैसे - kingship के लिए kingness अथवा ending के लिए pendency प्रयोग।

असंगति incompatibility

कोशीय मदों के मध्य प्राप्त एक प्रकार का आशयात्मक सम्बन्ध। किसी समुच्चय के एक मद का चयन करने पर उसके अन्य सदस्यों का प्रयोग नहीं किया जा सकता है, यथा - साड़ी पीली है से तात्पर्य है कि साड़ी लाल/काली/नीली आदि नहीं है। किसी समुच्चय के जिन मदों के बीच इस प्रकार का व्यतिरेक मिलता है उन्हें असंगत कहते हैं तथा इस सम्बन्ध को असंगति।

असंतत discontinuous

यकोब्सन तथा हॉले द्वारा प्रस्तुत स्वनप्रक्रिया के प्रभेदक अभिलक्षण सिद्धान्त में ऐसे स्वन जिनका उच्चारण वाक्पथ के पूर्ण बन्द होने पर होता है (स्पर्शों की भाँति) असंतत कहलाते हैं। जब किसी रचना का विखंडन किसी अन्य व्याकरणिक इकाई के अन्तर्निवेश के कारण हो तो व्याकरणिक विश्लेषण में इसे असातत्य (discontinuity) कहते हैं, उदाहरणार्थ - हिन्दी में 'है कोई माई का लाल जो मुझसे लड़ सके' या अंग्रेजी is he coming? । कतिपय विद्वान असंतत रूपिम की चर्चा करते हैं, यथा - अरबी धातुएँ व्यञ्जन समूह के रूप में होती हैं जो स्वरों द्वारा विभक्त की जाती हैं, यथा - k-t-b. kitab (पुस्तक), makatab (विद्यालय)।

असन्निहित विषमीकरण remote dissimilation

स्वन परिवर्तन की वह प्रक्रिया जिसमें दो दूरस्थ समान स्वनों में से एक अपना स्वरूप छोड़कर भिन्न स्वरूप ग्रहण कर लेता है, जैसे - लैटिन turtur; अंग्रेजी turtle।

कभी-कभी प्रजनक भाषा विज्ञान में असन्निहित संरचना पदबन्ध का प्रयोग आन्तरिक संरचना के लिए किया जाता है।

असुगठित illformed

प्रजनक भाषाविज्ञान में किसी वाक्य की अव्याकरणिकता की ओर संकेत करने वाले पारिभाषिक शब्द। यदि एक वाक्य उस भाषा के प्रजनक नियमों द्वारा प्रजनित नहीं हो सकता तो वह असुगठित होगा और यदि उसका प्रजनन व्याकरण के नियमों से हुआ है तो वह सुगठित होगा।

अस्तित्त्ववाची existential

अंग्रेजी की ऐसी वाक्य संरचनाएँ जो बलाघातहीन शब्द there से आरम्भ हों और उसके बाद be क्रिया का कोई रूप आए अस्तित्त्ववाची कहलाती हैं क्योंकि इन शब्दों द्वारा वहाँ अस्तित्त्व की अवधारणा अभिव्यक्त की जाती है, यथा - There is plenty to eat; there are two cars in the parking। रूपान्तरण व्याकरण इस प्रकार के वाक्य एवं अन्य वाक्यों के मध्य के सम्बन्ध को महत्त्वपूर्ण मानता है।

आ

आंकड़ा data

भाषाविज्ञान में 'डाटा' से तात्पर्य उस भाषिक व्यवहार से है जो विश्लेषण के लिए विषय वस्तु प्रस्तुत करे। पारम्परिक अध्ययन में निरीक्षणीय वाक् अभिरचनाओं एवं लिखित सामग्री को ही डाटा में समाहित किया गया किन्तु प्रजनक भाषाविज्ञान भाषा प्रयोक्ता के अपनी भाषा के सम्बन्ध में लिए गए निर्णयों को भी डाटा के अन्तर्गत स्वीकारता है। भाषा अधिग्रहण के अन्तर्गत प्राइमरी भाषिक डाटा से तात्पर्य उस सामग्री से है जो बच्चा अपने माता-पिता से प्राप्त करता है।

आंतरभाषिक intra lingual

किसी एक भाषा की प्रतीक व्यवस्था द्वारा व्यक्त अर्थ का उसी भाषा की अन्य प्रतीक व्यवस्था द्वारा अन्तरण आंतर भाषिक अनुवाद कहलाता है; यथा - शेक्सपीयर के पद्यबद्ध नाटकों को चार्ल्स लैम्ब ने अंग्रेजी में ही गद्य रूप में अनूदित किया है।

आंतरिक संरचना deep structure

प्रजनक व्याकरण में व्यवहृत एक प्रमुख सैद्धान्तिक शब्द जिसका विलोमार्थक 'बाह्य संरचना' शब्द है। आन्तरिक संरचना किसी वाक्य का अमूर्त वाक्यीय प्रतिरूपण है - संरचनात्मक व्यवस्था का एक मूलाधार स्तर जो वाक्य के निर्वचन में सहायक समस्त तत्त्वों की चर्चा करे। यह स्तर ऐसे वाक्यों के विषय में सूचना देता है जो यद्यपि समान बाह्य संरचना वाले होते हैं तथापि जिनके एकाधिक निर्वचन सम्भव होते हैं अर्थात् जो संदिग्धार्थी होते हैं, यथा - 'यह तस्वीर हरि की है' यह वाक्य दो मूलाधार वाक्यों से सम्बन्धित है (i) इस तस्वीर का स्वामी हरि है, (ii) तस्वीर में हरि नामक व्यक्ति का चित्र बना है। बाह्य रूप में भिन्नता वाले एवं समान मूलाधार अर्थ वाले वाक्यों का सम्बन्ध भी आन्तरिक संरचना द्वारा ज्ञात होता है, उदाहरणार्थ - कर्मवाच्य एवं कर्तृवाच्य वाक्य के मध्य का सम्बन्ध - 'शिकारी ने शेर पकड़ा' की तुलना में 'शेर शिकारी द्वारा पकड़ा गया'। रूपान्तरण व्याकरण

इनमें से एक की व्युत्पत्ति दूसरे से मानता है अथवा दोनों को किसी तृतीय अमूर्त आन्तरिक मूलाधार संरचना से व्युत्पन्न मानता है। विद्वान इनके सम्बन्ध को सन्दर्भित करने के लिए आन्तरिक कर्ता एवं आन्तरिक कर्म जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं।

आक्षरिक लिपि syllabic writing

इस लिपि में प्रत्येक प्रतीक अक्षर विशेष के लिए प्रयुक्त होता है। लिपि के इस रूप ने लिखने की क्रिया को संक्षिप्त कर दिया। हिन्दी की लिपि देवनागरी अर्ध अक्षरात्मक लिपि है।

आगत loan

जब कोई भाषिक इकाई (प्राय: कोशीय मद) अपने मूल स्रोत के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा या बोली में प्रयुक्त होने लगे जो उसे आगत तत्त्व की संज्ञा देते हैं। कई प्रकार की आगत प्रक्रियाओं की चर्चा की जाती है, यथा - **आगत शब्द** जब रूप एवं अर्थ दोनों का आदान हो और भाषा की स्वनप्रक्रियात्मक व्यवस्था के अनुरूप उसका स्वरूप निर्मित हो जाए, जैसे - sputnik। **आगत मिश्र शब्द** जब रूप का एक अंश तथा सम्पूर्ण अर्थ का आदान हो, जैसे - हिन्दी में फ्रेंच से आगत रेस्टोरेन्ट। **आगत अर्थ परिवृत्ति** जब अर्थ का आदान हो और शब्द रूप पूर्ववत रहे, जैसे - पोस्ट ऑफिस। **आगत अनुवाद** जहाँ आगत शब्द के रूपिमों को एक-एक कर अनूदित किया जाए, जैसे - यदि हिन्दी में hot dogs के लिए 'गर्म कुत्ते' का प्रयोग उसी अर्थ के लिए किया जाए।

आगत अनुवाद loan translation / claque

एक विशेष प्रकार का आदान जिसमें आगत शब्द या पदबन्ध के रूपिमिक घटकों को नवीन भाषा के समतुल्य रूपिमों में एक-एक कर अनूदित किया जाता है, यथा - अंग्रेजी के शब्द - power politics (जर्मन machtpolitik) तथा superman (जर्मन cipermensch), अंग्रेजी शब्द - economic investigation हिन्दी में आर्थिक अन्वेषण।

आघात/बल accent

उच्चारण करते समय किसी अक्षर, शब्द, पदबन्ध, वाक्य आदि भाषिक इकाइयों पर दिया जाने वाला बलाघात या स्वराघात, आघात कहलाता है। आघात, स्वराघात (pitch) या बलाघात (stress) के लिए समावेशी पारिभाषिक शब्द है। वाक्य संरचना का

सार्थक अंग होने पर आघात **अनुतान** (intonation) कहलाता है जबकि शब्द संरचना के धरातल पर प्रतिफलित स्वराघात **तान** (tone) कहलाता है। संस्कृत में आघात की संकल्पना स्वराघात तक सीमित है और इसके तीन भेद किए गए हैं - उदात्त, अनुदात्त एवं स्वरित।

वह प्रतीकात्मक चिह्न जो स्वरों के उच्चारण में आघात को संकेतिक करता है आघात चिह्न (accent mark) कहलाता है।

भाषा में शब्दों के समस्त पद बनने पर अथवा प्रत्यय संयोजन होने पर अथवा कभी-कभी वाक्य में प्रयुक्त होने पर उनके स्थानीय बलाघात में परिवर्तन हो जाता है इसे आघात परिवृत्ति (accent shift) की संज्ञा देते हैं, यथा - diplomat; diplomacy; diplomatic.

आज्ञार्थक imperative

वाक्य का एक प्रकार जो ऐसी क्रिया, वाक्य, उपवाक्य की ओर संकेत करता है जहाँ आज्ञा, उपदेश, निषेध आदि का बोध हो, यथा - वहाँ मत जाओ! शैतानी मत करो! आदि।

आदरार्थक honorific

कुछ भाषाएँ निश्चित रूपात्मक एवं वाक्यीय लक्षण द्वारा आदर एवं नम्रता की अभिव्यक्ति करती हैं। यह अभिव्यक्ति मुख्यत: व्यक्ति के सामाजिक स्तर की तुलना में की जाती है। व्याकरणिक विश्लेषण में इन रूपों की चर्चा आदरार्थक वर्ग में की जाती है, उदाहरणार्थ - हिन्दी की सर्वनाम व्यवस्था में तू-तुम-आप का प्रयोग।

आदर्शीकरण idealisation

किसी विश्लेषण को अधिकाधिक अनुप्रयोज्य बनाने के लिए भाषाविद् आधारभूत सामग्री की परिवर्तनशीलता के कतिपय पक्षों की जिस सीमा तक उपेक्षा कर सकता है उसे आदर्शीकरण की संज्ञा देते हैं। यह प्रजनक भाषाविज्ञान की अवधारणा `भाषिक दक्षता' का मूल है। इस दृष्टिकोण के अनुसार भाषाविज्ञान का उद्देश्य आदर्श भाषिक समुदाय में आदर्श वक्ता-श्रोता द्वारा प्रस्तुत भाषा का वर्णन है।

आदिनिहिति prothesis

किसी शब्द की आद्य स्थिति में स्वर अथवा अक्षर आगम आदिनिहिति कहलाता

है, जैसे - हिन्दी में अस्पताल>हस्पताल; स्त्री>इस्त्री। यदि उच्चारण दोष के रूप में किसी अतिरिक्त स्वन का इस स्थिति में आगम हो तो संस्कृत में उसे अनुनाद कहते हैं, जैसे - हवामि>अह्वामि। इस स्थिति में आगत स्वर **आदिनिहिति स्वर** कहलाता है।

आधायित embedded

जब एक वाक्य दूसरे वाक्य में अन्तर्निविष्ट हो तो इस रचना प्रक्रिया को प्रजनक व्याकरण में आधायित होना कहते हैं। यह प्रक्रिया संयोजी प्रक्रिया से भिन्न होती है, उदाहरणार्थ - `वह आदमी जिसकी आंखे भूरी हैं चला गया' वाक्य दो वाक्यों से व्युत्पन्न है। (i) आदमी चला गया। (ii) आदमी की आंखे भूरी हैं। यहाँ प्रथम आधात्री (matrix) वाक्य में द्वितीय वाक्य आधायित है। आधायित उपवाक्य प्राय: पूरक उपवाक्य भी कहलाते हैं।

आधार base

रूपरचना में धातु या प्रातिपदिक के लिए प्रयुक्त एक अन्य रूपान्तर जो इकाई रूप में मान्य होने के साथ-साथ शब्द का ऐसा अंश होता है जिस पर कोई कार्य सम्पादित किया जा सके, यथा - हिन्दी बैठक में `बैठ' आधार रूप है जिसमें `अक' संयुक्त हुआ है जबकि बैठकें शब्द में `बैठक' आधार रूप है जिसमें-एँ संयुक्त हुआ है। कुछ भाषाविद् आधार एवं धातु को समतुल्य मानते हैं अर्थात् शब्द का वह अंश जो समस्त संयुक्त होने वाले तत्त्वों को हटाने के उपरान्त शेष रह जाता है। इस दृष्टिकोण से `बैठ' अपने सभी उत्पादकों का आधार रूप होगा (बैठक, बैठकबाजी, बैठकें, बैठो आदि)।

व्याकरण के अधिक अमूर्त उपागम में रूपों की श्रृंखला को अन्तर्सम्बन्धित करने वाली किसी अमूर्त इकाई को आधार रूप कहते हैं। ये अन्तर्सम्बन्धित रूप परिवर्त कहलाते हैं, जैसे - रूपरचना के स्तर पर एक रूपिम का आधार रूप उसका कोई सम्परिवर्तक होगा (उदाहरणार्थ- man रूपिम का आधार रूप man है जिससे man व्युत्पन्न हुआ है) इसी प्रकार वाक्य रचना में एक वाक्य आधार रूप माना जाता है जो अन्य वाक्यों को व्युत्पन्न करता है (उदाहरणार्थ - कर्मवाच्य वाक्य से कर्तृवाच्य वाक्य तथा सकारात्मक से नकारात्मक वाक्य की उत्पत्ति मानी जाती है) प्रजनक व्याकरण में इन्हें मूलाधार रूप (underlying form) नाम दिया गया और इनका विशेष अध्ययन हुआ।

आधार घटक base component

प्रजनक व्याकरण के प्रणेता चॉमस्की ने व्याकरण के तीन घटकों की चर्चा की

जिनमें से प्रथम घटक वाक्यीय घटक कहलाता है जिसके उन्होंने दो उपवर्ग किए - आधार घटक एवं रूपान्तरण (उप-) घटक। चॉमस्की ने अपनी प्रथम पुस्तक **सिंटैक्टिक स्ट्रकचर्स** (1957) में एक अन्य रूपान्तर 'पदबन्ध संरचना घटक' का भी उल्लेख किया जिसके अन्तर्गत व्याकरण के पदबन्ध संरचना नियमों की चर्चा की जाती है। **आस्पेक्ट्स ऑफ द थ्योरी ऑफ सिन्टैक्स** (1965) नामक इनकी पुस्तक में उपरोक्त वर्णित आधार घटक एवं रूपान्तरण (उप-) घटक का विभेद निरूपित किया गया, किन्तु यहाँ इन दोनों के कार्य पूर्व प्रारूप से भिन्नता रखते हैं। ऑस्पेक्ट में आधार रूप में कोटिगत घटक (जो वा; सप; क्रिप; आदि कोटियों का उल्लेख करता है) तथा कोशीय घटक (जिसमें मानवीय, सजीव आदि अभिलक्षणों से निर्मित कोशीय प्रविशिष्टयाँ आती हैं) आते हैं। इन घटकों की सूचनाएँ साथ-साथ ग्रहण करने पर वाक्यों की अन्त:स्तलीय संरचना का उल्लेख करती है। प्रजनक व्याकरण के आधुनिक प्रारूपों में आधार घटक के प्रकार्य में और अधिक परिवर्तन हुआ तथा इसके अन्तर्गत वाक्यरचना एवं अर्थ के पारस्परिक सम्बन्ध को ज्ञात करने का प्रयास किया गया।

आधार भाषिका basilect

समाजभाषाविज्ञान के अन्तर्गत क्रियोल भाषाओं के विकास से सम्बन्धित अध्ययनों में प्रयुक्त एक पारिभाषिक शब्द जो भाषा/बोली के ऐसे रूप को सन्दर्भित करता है जो प्रतिष्ठित भाषा (उच्च भाषिका) से सर्वथा भिन्न होती है।

आपूरक filler

संरचना के किसी निश्चित स्थान या प्रकार्य-स्थान (slot) में जिस रूप का प्रयोग किया जा सके उसे टैग्मीमिक्स (बंधिम विज्ञान) में आपूरक की संज्ञा दी गई।

आभासी खण्ड वाक्य pseudo cleft sentence

खण्ड वाक्य के सदृश प्रतीत होने वाले वाक्य व्याकरणिक विश्लेषण में आभासी खण्ड वाक्य कहलाते हैं। इसमें एक उपवाक्य को दो ऐसे स्वतन्त्र वर्गों में विभाजित किया जाता है जिनकी अपनी क्रियाएँ होती हैं और जिनके मध्य मुख्य उपवाक्य एवं आश्रित उपवाक्य का सम्बन्ध होता है, जैसे - 'यह हीरा है और क्या है?'

आभासी प्रक्रिया pseudo procedure

ऐसी प्रक्रिया जो किसी निश्चित प्रकार से कार्य करने की घोषणा तो करे किन्तु

उसे करने में समर्थ न हो, जैसे - यह मानना कि व्याकरणिक विश्लेषण अर्थ अध्ययन से बिना सहायता लिए किया जा सकता है।

आरम्भिक प्रतीक initial symbol

प्रजनक व्याकरण का प्रथम अपरिभाषित/अनिर्धारित पारिभाषिक शब्द जो पुनर्लेख नियम के बाएँ ओर लिखा जाता है। व्याकरण की सर्वोच्च संरचना वाक्य द्वारा इसकी अभिव्यक्ति होती है और इसका चिह्न S या S या वा. होता है। कतिपय विद्वानों ने वाक्य के अतिरिक्त अन्य इकाइयों को प्रारम्भिक प्रतीक रूप में प्रस्तावित किया।

आरोही rising

स्वराघात का एक प्रकार जो अक्षरांत में, प्रारम्भ की तुलना में, उच्च स्तरीय होता है। संस्कृत में आरोही स्वराघात उदात्त कहलाता है। आरोही स्वराघात [/] संकेत द्वारा चिह्नित किया जाता है। तान प्रधान भाषाओं या अनुतान व्यवस्था सम्बन्धी अध्ययन में आरोही स्वराघात के भी कई वर्ग मिलते हैं, जैसे - उच्च आरोही, निम्न आरोही अथवा आरोही-अवरोही। ऐसा संयुक्त स्वर जिसका पहला स्वर गौण और दूसरा प्रमुख होता है **आरोही संयुक्त स्वर** कहलाता है, जैसे - अंग्रेजी /*yi*/।

आर्की स्वनिम archi phoneme

स्वनप्रक्रिया में प्रयुक्त शब्द जो निर्विषमीकरण (अर्थात् जब किसी निश्चित परिवेश में दो स्वनिमों के मध्य व्यतिरेक समाप्त हो जाए) की समस्या के समाधान का उपाय बताता है। प्राग्सम्प्रदाय के स्वनशास्त्री त्रुबेत्स्कॉय ने आर्की स्वनिम की संकल्पना दी। यह निर्विषमीकरण की स्थिति में आगत दो स्वतंत्र स्वनिमों का एकीकृत रूप है। इसे कैपिटल वर्ण में लिखा जाता है।

आलेख graph

जिस प्रकार स्वनविज्ञान की लघुतम इकाई स्वन कहलाती है उसी प्रकार लिखित या मुद्रित कथन में आगत लघुतम भेदक खण्ड आलेख कहलाता है। लेख विज्ञान के अन्तर्गत आलेख, लेखिम आदि का भाषिक विश्लेषण किया जाता है।

आलोचनात्मक भाषाविज्ञान critical linguistics

1970 में East Anglia के कुछ विद्वानों ने इस शब्द का प्रयोग किया। इसका

उद्देश्य भाषिक पाठों में कार्यरत सम्बन्धों और सिद्धान्तवादी प्रक्रियाओं को अनावृत करना है। इस मत के अनुयायी स्वयं को प्रोक्ति विश्लेषक या समाजभाषाविद् भी कहते हैं। सामाजिक सिद्धान्त में भाषा के महत्त्व के कारण ही इसका आविर्भाव हुआ।

आवृत covered

चॉमस्की एवं हॉले द्वारा स्वनप्रक्रिया के भेदक सिद्धान्त में, स्वन के एक अभिलक्षण को आवृत नाम दिया गया। वे ध्वनियाँ जिनके उच्चारण में ग्रसनी में संकीर्णता एवं तनाव होता है तथा स्वरयन्त्र ऊपर उठा हो, आवृत कहलाती हैं। पश्चिमी अफ्रीका की भाषाओं में प्राप्त दृढ़ स्वरों में यह विशेषता मिलती है। जब ग्रसनी में संकीर्णता एवं तनाव नहीं होता तो ध्वनियाँ अनावृत कहलाती हैं।

आवृत्ति frequency

सामान्यत: किसी भी स्वन, शब्द या रूप आदि का एक से अधिक बार प्रयोग आवृत्ति कहलाता है। भौतिक स्वनविज्ञान में आवर्त गति में एक सेंकड में पूरे होने वाले पूर्ण आवर्तनों, दोलनों या चक्रों की संख्या आवृत्ति कहलाती है।

आशय[1] content

प्रारम्भ में इस शब्द का सामान्य अभिप्राय किसी अभिव्यक्ति के अर्थ के सन्दर्भ में लिया गया किन्तु कतिपय परवर्ती भाषाविदों ने इसे पारिभाषिक रूप दिया और भाषा विश्लेषण के प्रमुख दो आधारों की चर्चा की - (i) आशय धरातल (content plane), (ii) अभिव्यक्ति धरातल (expression plane) यह फर्दिनान्द डी सेस्यूर द्वारा प्रतिपादित भाषिक प्रतीक के वर्गीकरण रूप एवं अर्थ के सदृश है।

आशय[2] sense

अर्थ की अवधारणा के विश्लेषण में आशय तथा सन्दर्भ के मध्य व्यतिरेक मिलता है। आशय से तात्पर्य भाषिक सम्बन्धों की उस अवस्था से है जिसके द्वारा एक कोशीय मद एवं अन्य कोशीय मदों के मध्य घटित पर्यायवाचकता, विलोमता आदि के सारणिक सम्बन्ध या अन्वित विन्यास लक्षित होते हैं जबकि सन्दर्भ में बाह्य जगत की वे वस्तुएँ एवं घटनाएँ आती हैं जिनके लिए भाषिक अभिव्यक्तियों का प्रयोग किया जाता है।

आश्रयता व्याकरण dependency grammar

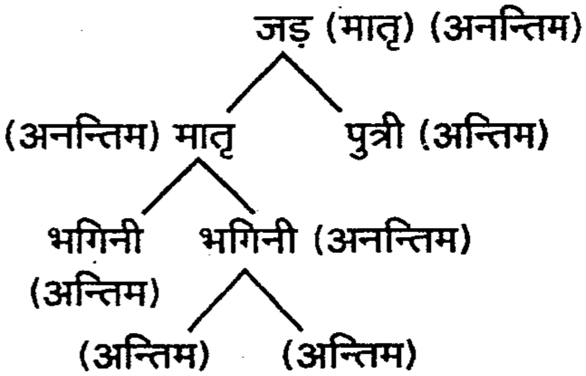
1950 के लगभग विद्वानों द्वारा विकसित रूपात्मक व्याकरण का एक प्रकार। यह व्याकरण किसी रचना के तत्त्वों के मध्य प्राप्त विविध प्रकार की आश्रयताओं की स्थापना व्याकरणिक सम्बन्धों की व्याख्या के लिए करता है। वाक्यीय संरचना का प्रतिरूपण आश्रयता वृक्षों द्वारा किया जाता है। आश्रयता वृक्ष से तात्पर्य आसंधियों के समुच्चयों से है जिनके अन्तर्सम्बन्ध संरचनात्मक सम्बन्धों द्वारा सुनिश्चित किए जाते हैं। प्रत्येक वृक्ष में एक नियन्त्रक तथा एक आश्रितों का समुच्चय होता है तथा प्रत्येक आश्रित का नियन्त्रक से निश्चित सम्बन्ध होता है, उदाहरणार्थ - उपवाक्य में क्रिया नियन्त्रक होती है तथा संज्ञा-पदबन्ध आश्रित। अंग्रेजी के परसर्गीय पदबन्ध `on the box' में परसर्ग संज्ञा को नियंत्रित करता है और संज्ञा उपपद (article) को।

आश्रयान्वय hypotactic

ऐसी आश्रित रचनाएँ जिसके घटक समुच्चयबोधक द्वारा संयोजित होते हैं। इनकी व्यतिरेकी रचनाएँ संयोजकहीन समन्वय कहलाती हैं और उनकी सम्बद्धता सन्निधि और विराम द्वारा अभिव्यक्त होती है, यथा - राजा मरा तब प्रजा ने घी के दिए जलाए।

आसंधि node

प्रजनक व्याकरण में वृक्ष आरेख के नामपत्रित शाखन के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। इस सन्दर्भ में प्राय: परिवार रूपक की चर्चा की जाती है। किसी आसन्धि के तत्काल ऊपर स्थित उसकी नियंत्रक आसन्धि मातृ आसन्धि कहलाती है तथा नियंत्रित आसन्धि पुत्री। एक आसन्धि द्वारा शासित/नियंत्रित आसन्धियों को भगिनी कहते हैं। वृक्ष आरेख की सर्वोच्च आसन्धि जड़ (root) कहलाती है। किसी अन्य को नियंत्रित न करने वाली आसन्धि अन्तिम आसन्धि और किसी अन्य को नियंत्रित करने वाली अनन्तिम आसन्धि कहलाती है।



इ

इकाई unit

आरम्भ में सामान्य अर्थ में किसी अध्ययन के केन्द्र का निर्माण करने वाला सत्व इकाई कहलाया। हैलिडे के सिद्धान्त में इसका विशेष महत्त्व है इस सिद्धान्त द्वारा निरूपित चार प्रमुख कोटियों में एक इकाई भी है अन्य तीन-संरचना, वर्ग और व्यवस्था है। इकाई से तात्पर्य - व्याकरणिक अभिरचना से युक्त भाषा का कोई विस्तार जिसके अन्तर्गत चयन कार्य करता है, जैसे - वाक्य इकाई एकाधिक उपवाक्यों से निर्मित होती है तथा उपवाक्य इकाई एकाधिक पदबंधों से। ये इकाइयाँ एक दूसरे से सम्बद्ध होती हैं तथा एक श्रेणी मान पर सोपानिक क्रम में व्यवस्थित होती हैं।

इच्छार्थक desiderative

वाक्य का एक प्रकार जो आज्ञार्थक, निश्चयार्थक आदि से भिन्न एक अलग वर्ग बनाता है।ऐसे क्रिया रूप या वाक्य अथवा उपवाक्य जो इच्छा या कामना की अभिव्यक्ति करते हैं इस वर्ग में आते हैं, यथा - मैं बड़े होकर अध्यापक बनना चाहता हूँ।

उ

उक्ति utterance

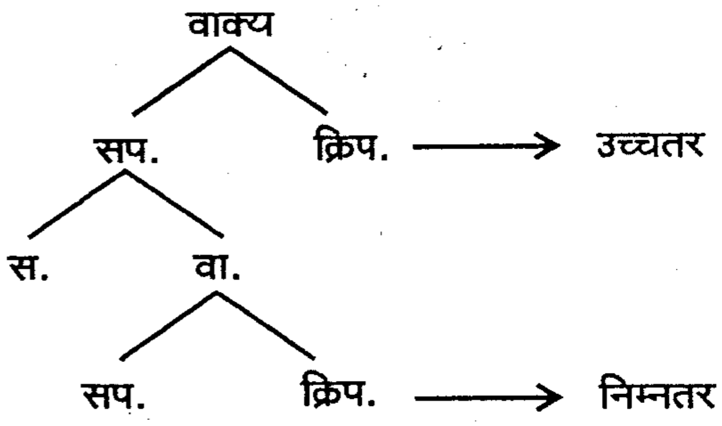
भाषाविज्ञान एवं स्वनविज्ञान में व्यवहृत पारिभाषिक शब्द जो वाक् के ऐसे विस्तार की ओर संकेत करता है जिसके विषय में भाषिक सिद्धान्त के आधार पर कोई अनुमान नहीं लगाया जा सकता है। सामान्यत: जिसे भौतिक दृष्टि से परिभाष्य व्यवहार की इकाई के रूप में स्वीकार किया जाता है जिसके पूर्व एवं पर में शांति या 'वक्ता का परिवर्तन' होता है। कतिपय विद्वानों ने उक्ति को विराम, लय, श्वास अभिरचनाओं एवं स्वराघात संचलन आदि अभिलक्षणों के आधार पर परिभाषित करने का प्रयास किया। लिखित भाषा में इसका समकक्ष शब्द पाठ (text) कहा जाता है।

उच्च high

चॉमस्की एवं हॉले द्वारा प्रतिपादित स्वनप्रक्रिया के प्रभेदक सिद्धान्त में परिगणित स्वन अभिलक्षणों में एक उच्च है। इस स्वन का उच्चारण जिह्वा की तटस्थ स्थिति से ऊपर उठने पर होता है। व्यंजनों में मूर्धन्य, तालव्य, कोमलतालव्य उच्च स्वन हैं और स्वरों में इ तथा उ। इसका विलोम अनुच्च स्वन होता है जिसके उच्चारण में जिह्वा तटस्थ स्थिति से ऊपर नहीं उठती है। द्वयोष्ठ्य, दन्त्योष्ठ्य, दंत्य, वर्त्स्य, अलिजिह्वीय अनुच्च स्वन हैं और स्वरों में ऐ, ओ, औ, अ तथा आ।

उच्चतर higher

वाक्य की व्युत्पत्ति में किसी कोटि की प्रस्तुति के पूर्व उस कोटि के उल्लेख को प्रजनक भाषाविज्ञान में उच्चतर कहा जाता है। व्युत्पत्ति के वृक्ष आरेख प्रतिरूपण में किसी कोटि का प्रथम दृष्टान्त उस कोटि के अन्य दृष्टान्तों से उच्चतर माना जाता है, यथा - हिन्दी के निम्नलिखित वाक्य की (आंशिक) व्युत्पत्ति दर्शाने के लिए निम्न वृक्ष आरेख सक्षम है - यह विचार कि वह झूठ बोलेगा, मुझे अचम्भित करता है।



इस वाक्य में 'अचम्भित करता है' क्रिया उच्चतर है तथा 'यह विचार अचम्भित करता है' उच्चतर उपवाक्य या उच्चतर वाक्य है।

उच्च भाषिका acrolect

इस शब्द का प्रयोग कतिपय समाजभाषावैज्ञानिकों द्वारा क्रियोल भाषाओं के विकास सम्बन्धी अध्ययनों में उस भाषा रूप के लिए किया गया जो मानक एवं प्रतिष्ठित है तथा जिससे अन्य रूपों की तुलना सम्भव हो। इस शब्द के व्यतिरेकी रूप मध्य भाषिका (mesolect) तथा आधार भाषिका (basilect) नाम से अभिहित किए जाते हैं।

उच्चारण[1] articulation

विविध वाक्ध्वनियों के उत्पादन में जो शारीरिक क्रिया वायु-प्रवाह में परिवर्तन घटित करती है, उसे स्वनविज्ञान में उच्चारण की संज्ञा दी जाती है। ध्वनियों का वर्गीकरण उच्चारण स्थान एवं उच्चारण प्रयत्न के आधार पर किया जाता है। उच्चारण की पूर्ण चर्चा प्राय: वायु प्रवाह-तन्त्र की प्रकृति, सुरतन्त्रियों की कार्यकारिता, कोमलतालु, ओष्ठ, जिह्वा आदि मुखविवर स्थित अवयवों की स्थिति पर निर्भर करती है। ध्वनि के उत्पादन में जब कोई सचल अंग वायु-प्रवाह में बाधा उत्पन्न करता है, तो उसे उच्चारक कहते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं - प्रत्यक्ष एवं परोक्ष, यथा - हिन्दी 'व' का प्रत्यक्ष उच्चारक ओष्ठ तथा परोक्ष उच्चारक फेफड़े एवं कोमलतालु है। संस्कृत में उच्चारक को करण कहते हैं, यथा - हिन्दी 'प' में ओष्ठ उच्चारक होने के साथ-साथ स्थान भी है। उच्चारण अवयव किस प्रकार वायु-प्रवाह बाधित करता है उसे उच्चारण प्रयत्न कहते हैं। उच्चारण के कई प्रकार मिलते हैं। ज्यादातर ध्वनियों का उच्चारण एक उच्चारण स्थान से होता है किन्तु कभी-कभी

कतिपय ध्वनियाँ दो उच्चारण स्थानों से भी उत्पन्न होती हैं ऐसी स्थिति में दो उच्चारणात्मक सम्भावनाएँ हो सकती हैं - (i) जब ध्वनि के उच्चारण में दोनों उच्चारण स्थानों का समान महत्त्व हो अथवा, (ii) एक उच्चारण स्थान प्रमुख एवं दूसरा गौण हो। उच्चारण प्रक्रिया की यह स्थितियाँ सह उच्चारण कहलाती हैं, उदाहरणार्थ - नासिक्य रंजन, तालव्य रंजन आदि के उच्चारण।

फ्रेंच भाषाविद् ऐन्द्रे मार्तिने ने अपने सिद्धान्त में **द्वि उच्चारण** (double articulation) पदबन्ध का प्रयोग किया। मार्तिने ने, संरचना के जिन दो स्तरों पर भाषा व्यवस्थित है, उन्हें सन्दर्भित करने के लिए इसका प्रयोग किया। प्रत्येक भाषा जहाँ सार्थक रूपों (रूपिम, शब्द) में विश्लेषित की जा सकती है वहीं इन रूपों को निरर्थक ध्वनियों (स्वनिम) में भी विश्लेषित किया जा सकता है। मार्तिने द्वारा प्रतिपादित यह विशेषता आज संरचनात्मक द्वैत नाम से प्रचलित है।

उच्चारण² pronunciation

भाषिक इकाई को बोलने का विधान उच्चारण कहलाता है। किसी भाषिक इकाई को स्वीकृत रूप में ठीक-ठीक किस प्रकार बोला जाए इसका लिप्यांकन प्राय: कोशों में, स्वनिम वर्णमाला में, दिया जाता है ताकि भाषा-भाषी शुद्ध उच्चारण सीख सकें।

उच्चारण स्थान place of articulation

स्वनों के उच्चारण के लिए जिस स्थान पर वायु बाधित होती है उसे उच्चारण स्थान कहते हैं, यथा - 'प' स्वन के उच्चारण में ओष्ठ करण (उच्चारक) होने के साथ-साथ स्थान भी है। संस्कृत विद्वान करण को चल तथा स्थान को ध्रुव मानते हैं। प्रमुख उच्चारण स्थान - ऊपरी ओष्ठ, ऊपरी दाँत, वर्त्स्य, कठोर तालु, मूर्धा, कोमल तालु, अलिजिह्वा, ग्रसनी एवं स्वरतन्त्रियों का मुख है।

उच्चारणात्मक विन्यास articulatory setting

वार्तालाप के समय उच्चारक जिस अवस्था में हो और जिस अवस्था को ग्रहण कर उसमें रहे, इनके पारस्परिक सम्बन्ध के आधार पर समस्त उच्चारकों की एक सामान्य अवस्था उच्चारणात्मक विन्यास कहलाती है। इनका अध्ययन भाषाओं एवं बोलियों के मध्य प्राप्त स्थूल गुणात्मक भेदों पर प्रकाश डालता है, यथा - कतिपय बोलियों में स्पष्ट नासिक्य रंजन तथा जिह्वा वर्तुल की विशेषता उन्हें अन्य से भिन्न बनाती है।

उच्चारणमूलक स्वनविज्ञान articulatory phonetics

स्वनविज्ञान की एक शाखा जिसके अन्तर्गत उच्चारण अवयवों द्वारा कैसे ध्वनि बोली जाती है इसका अध्ययन किया जाता है अर्थात् विभिन्न भाषायी ध्वनियों के उच्चारण में कौन से अंग किस प्रकार सहायता करते हैं यह इसका विषय क्षेत्र है। इसकी पारिभाषिक शब्दावली शरीर रचना विज्ञान एवं शरीर क्रिया विज्ञान से ली गई है इसे कभी-कभी शरीर क्रियात्मक स्वनविज्ञान भी कहते हैं। परम्परा से स्वनशास्त्रियों के शिक्षण में इस शाखा को केन्द्रीय महत्त्व दिया गया।

उत्क्षिप्त flapped

वह व्यंजन जिसके उच्चारण में करण (जिह्वाग्र) पीछे खिंचकर उच्चारण-स्थान (वर्त्स्य या कठोर तालु) की ओर मुड़ता है और अंततः झटके से अपनी सामान्य स्थिति में आ जाता है, यथा - हिन्दी ड़् और ढ़्।

उत्तरवर्ती चक्रिक नियम post-cyclic rule

प्रजनक व्याकरण के विस्तारित मानक सिद्धान्त के अन्तर्गत उल्लिखित एक नियम जो एक प्रकार के रूपान्तरण की ओर संकेत करता है और चक्रिक रूपान्तरण के बाद लागू होता है। यह नियम अंग्रेजी के प्रश्नवाचक उपवाक्यों में होने वाले उद्देश्य एवं सहायक क्रिया के क्रम-विपर्यय पर लागू होता है।

उत्थापन raising

रूपान्तरण व्याकरण के कतिपय प्रारूपों में निरूपित एक प्रकार का नियम। यह उत्थापन कर्ता या कर्म दोनों का हो सकता है। कर्म-उत्थापन नियम में किसी श्रृंखला के रेखीय घटकों में से मुख्य उपवाक्य एवं पूरक का कर्ता 'उठकर' उच्चतर उपवाक्य का कर्म बन जाता है। कर्ता-उत्थापन नियम में पूरक उपवाक्य के कर्ता को 'उठाकर' मुख्य उपवाक्य का कर्ता बना दिया जाता है, जैसे - लड़का मुझे ऐसा लगा कि बहुत दुखी है, इस वाक्य के पूरक उपवाक्य 'लड़का बहुत दुखी है' का कर्ता 'उठाकर' मुख्य उपवाक्य का कर्ता बना दिया गया है। इस नियम का निर्माण एवं अनुप्रयोग दोनों ही विवादास्पद हैं।

उत्पादकता productivity

वक्ता की असंख्य वाक् राशि के उत्पादन एवं अवबोधन की सृजनात्मक क्षमता

भाषा की उत्पादकता कहलाती है। भाषा की यह विशेषता उसे अन्य सम्प्रेषण माध्यमों से भिन्न निरूपित करती है।

उत्पादन production

वाक् व्यवहार के नियोजन एवं निष्पादन का प्रक्रम उत्पादन कहलाता है। वाक् उत्पादन को प्राय: वाक् प्रत्यक्षीकरण एवं बोधन से भिन्न रूप में प्रतिपादित किया जाता है।

उदात्त acute

यकोब्सन एवं हॉले ने स्वनप्रक्रिया के अपने प्रभेदक अभिलक्षण सिद्धान्त में उच्चारण स्थानगत भिन्नताओं के वर्णन के लिए ध्वनि का उदात्त नामक एक अभिलक्षण प्रतिपादित किया जिसका व्यतिरेकी रूप अनुदात्त कहलाता है। उच्चारणात्मक एवं ध्वानिक दृष्टि से जो वाक् पथ के मध्य भाग में उच्चरित हो एवं जिनमें एक ध्वानिक ऊर्जा का स्पैक्ट्रम की उच्च आवृत्तियों में संकेन्द्रण हो ऐसी ध्वनियों को उदात्त कहते हैं, उदाहरणार्थ - अग्र स्वर तथा दन्त्य, तालव्य एवं वर्त्स्य व्यञ्जन।

उद्देश्य / कर्ता subject

व्याकरणिक प्रकार्यों के विश्लेषण में किसी प्रक्रिया को करने वाला वाक्य का कोई घटक अथवा उपवाक्य कर्ता / उद्देश्य कहलाता है, यथा - राम पत्र लिखता है। पारम्परिक दृष्टि से वाक्य का दो वर्गों में विभाजन किया गया - उद्देश्य एवं विधेय। यह वर्गीकरण आज भी प्रचलित है साथ ही अन्य दृष्टिकोण कर्ता / उद्देश्य को कर्म, क्रिया, पूरक आदि से भिन्न स्थापित करने का प्रयास करते हैं। भाषिक विश्लेषणों में इस संकल्पना की जटिलता पर बल दिया गया। भाषाविद् प्राय: व्याकरणिक कर्ता / उद्देश्य को तार्किक या मूलाधार से भिन्न प्रतिपादित करने का प्रयास करते हैं, यथा - पत्र राम द्वारा लिखा गया; इस वाक्य में 'पत्र' व्याकरणिक उद्देश्य तथा 'राम' तार्किक उद्देश्य है। यह भी ध्यान देने योग्य तथ्य है कि समस्त उद्देश्य सदैव कार्य के कर्ता के रूप में विश्लेषित नहीं किए जा सकते हैं, यथा - किताबें खूब बिकीं।

उद्वाचन decipherment

पूर्व में प्रचलित तथा वर्तमान में अबोधनीय लिपि व्यवस्था का विकोडीकरण उद्वाचन कहलाता है। यह **कूटलिपि वाचन** से भिन्न होता है क्योंकि कूटलिपि वाचन का उद्देश्य

विशिष्ट लिपि में कोडीकृत गूढ़ सूचना के अर्थ को समझना / स्पष्ट करना होता है। इसी प्रकार यदि किसी प्राचीन / लुप्त भाषा का पाठ किसी ज्ञात लिपि (जैसे - ग्रीक) में लिखा हो तो उसे पढ़ना **निर्वचन** कहलाता है उद्वाचन नहीं। इस शब्द का प्रयोग उस लिपि में अंकित पाठ के सन्दर्भ में किया जाता है जिसका प्रयोग लुप्त हो गया हो। लिपि - प्रयोग समाप्त होने के कई कारण हो सकते हैं - भाषा का मृत हो जाना; साक्षरता समाप्त हो जाना अथवा प्राचीन लिपि के स्थान पर नवीन लिपि का प्रयोग आरम्भ होना।

उपकरण device

प्रजनक भाषाविज्ञान में प्रयुक्त एक पारिभाषिक शब्द जो विश्लेषण के लिए उपयोगी विशेष रूप से निर्मित एक अमूर्त रूपरेखा की ओर संकेत करता है। प्रजनक भाषाविज्ञान में व्याकरण को वाक्य प्रजनित करने वाले उपकरण के रूप में देखा जाता है।

भाषार्जन सम्बन्धी अध्ययनों में **भाषार्जन उपकरण** (language acquisition device) का भी प्रयोग मिलता है। चॉमस्की के मतानुसार यह उपकरण बच्चों में ऐसी क्षमता उत्पन्न करता है कि जिससे वे वाक् सामग्री के आधार पर वाक्यों का सही व्याकरणिक विश्लेषण कर सकें।

उपकोटिकरण अभिलक्षण sub categorisation feature

प्रजनक व्याकरण में वाक्यीय कोटि के उपवर्ग के लिए प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द। चॉमस्की द्वारा प्रतिपादित 'आस्पेक्ट' प्रारूप में सुनिश्चित उपकोटिकरण अभिलक्षणों का कार्य आन्तरिक संरचना में क्रिया चयन सम्बन्धी प्रतिबन्धों को स्पष्ट करना है, यथा - हिन्दी में 'सप.+सप.+...' में सकर्मक क्रिया ही चुनी जाएगी (लड़का पानी पीता है) जबकि 'सप....' में अकर्मक का चयन होगा (पौधा बढ़ता है)।

उपपद article

शब्द के व्याकरणिक वर्गीकरण का एक उपवर्ग जिसका मुख्य कार्य संज्ञा के प्रयोगों के मध्य भिन्नता दिखाना है, जैसे - अंग्रेजी a/the। अनेक भाषाओं में उपपद नहीं होते हैं, जैसे - रूसी। उपपद के दो प्रकार मिलते हैं - निश्चायक (definite) एंव अनिश्चायक (indefinite) यह वर्गीकरण अंशत: आर्थी एवं अंशत: व्याकरणिक आधार पर किया गया। जहाँ अंग्रेजी में उपपद संज्ञा के पूर्व आते हैं वहाँ स्वीडिश में संज्ञा के बाद आते हैं। हिन्दी में निर्धारक संज्ञा पूर्व आता है। यहाँ निश्चायक अचिह्नित रहता है जबकि अनिश्चायक के

लिए 'एक' या 'कोई' का प्रयोग होता है। हिन्दी में जातीय निर्धारक नहीं मिलता है, जैसे - बाघ मांसाहारी होता है।

उपयुक्तता प्रतिबन्ध felicity condition

वाक् व्यवहार सिद्धान्त में वाक् व्यवहार को अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए जिन मानदण्डों को पूर्ण करना अनिवार्य होता है उन्हें उपयुक्तता प्रतिबन्ध कहते हैं। प्रारम्भिक प्रतिबन्ध से तात्पर्य यह है कि वाक् व्यवहार निष्पादित करने वाले व्यक्ति को वैसा करने का अधिकार है या नहीं (यथा - प्रत्येक व्यक्ति को जुर्माना मांगने, दण्ड देने का अधिकार नहीं होता)। निष्ठा प्रतिबन्ध का सम्बन्ध है, वाक् व्यवहार निष्ठापूर्वक निष्पादित हुआ है, इससे होता है (यथा - वक्ता झूठ तो नहीं बोल रहा है)। मुख्य प्रतिबन्ध का सम्बन्ध उन तरीकों से होता है जिस वाक् व्यवहार निष्पादन के कारण वक्ता किसी विशेष प्रकार का व्यवहार या विश्वास करने के लिए बाध्य हो (यथा - व्यक्ति द्वारा अनुरोध किए जाने पर किसी वस्तु को स्वीकार कर लेना)।

उपरिखण्डीय अभिलक्षण supra segmental features

वह मौखिक प्रभाव जो कथन के एकाधिक स्वनखण्ड तक प्रसारित हो, जैसे - मात्रा, बलाघात, संहिता आदि से सम्बद्ध अभिलक्षण। ये अभिलक्षण स्वतन्त्रत: प्रयोग की क्षमता नहीं रखते हैं। स्वनिम स्तर पर सिद्ध ऐसे लक्षण अधि/उपरिखण्डीय स्वनिम कहलाते हैं, यथा - हिन्दी में मात्रा एवं अनुनासिकता। 'अधिखण्डात्मक' शीर्षक के अन्तर्गत इसकी विस्तृत चर्चा हो चुकी है।

उपरितल super stratum

भाषा का एक प्रकार अथवा ऐसे भाषिक रूपों का समुच्चय जो किसी समुदाय की अल्पप्रचलित भाषा की संरचना या उसके प्रयोग को प्रभावित करे। प्राय: भाषिक उपरितल राजनैतिक, आर्थी या सांस्कृतिक प्रभुता का परिणाम होता है, यथा - विश्व की विभिन्न भाषाओं पर अंग्रेजी या फ्रेंच का प्रभाव। उपरितल प्रभाव के कारण ही आज भाषाओं में आगत शब्दों का आधिक्य है।

उपलब्ध attested

ऐसे भाषायी रूप जिनके प्रयोग से सम्बन्धित प्रमाण भूतकाल या वर्तमान काल में

मिलते हैं, उपलब्ध रूप कहलाते हैं। ऐतिहासिक भाषाविज्ञान में लिखित सामग्री में प्राप्त रूपों को उपलब्ध/प्रभावित रूप मानते हैं जबकि निगमनात्मक प्रक्रिया के आधार पर प्राप्त रूप पुनर्गठित रूप कहलाते हैं। समसामयिक भाषिक अध्ययनों में इस शब्द का प्रयोग यथार्थ में लिपिबद्ध प्रयोग के लिए किया जाता है।

उपवाक्य clause

व्याकरण के कतिपय प्रारूप वाक्य से छोटी व्याकरणिक व्यवस्था की एक इकाई को स्वीकृत करते हैं जो शब्द, पदबन्ध एवं रूपिम से बड़ी होती है। पारम्परिक दृष्टि से इसका वर्गीकरण मुख्य एवं आश्रित दो वर्गों में होता है, यथा - बम फटने के बाद/इमारत ढह गई। कतिपय विद्वान प्रयुक्त क्रिया के आधार पर विधेय रूप उपवाक्य एवं अविधेयरूप उपवाक्य इन दो वर्गों की चर्चा करते हैं। कुछ अन्य विद्वान प्रकार्य के आधार पर विशेषण उपवाक्य, संज्ञा उपवाक्य आदि का उल्लेख करते हैं। कुछ व्याकरण (यथा - प्रजनक) उपवाक्य की अवधारणा को नहीं स्वीकारते हैं क्योंकि वहाँ जटिल वाक्य का विश्लेषण रूपान्तरणों द्वारा होता है। ये रूपान्तरण एक सरल वाक्य को दूसरे वाक्य में आधायित कर देते हैं जिससे जटिल वाक्य बनता है।

उपवाक्य भित्ति clause wall

इस शब्द का प्रयोग अविविक्त व्याकरण (non-discrete grammar), में उपवाक्यों के मध्य प्राप्त भिन्न अंशांकों की आश्रयता को सन्दर्भित करने के लिए किया गया। जिन उपवाक्यों के मध्य सापेक्षतः उच्च उपवाक्य भित्ति होती है वे सापेक्षतः निम्न वाक्य भित्ति वाले उपवाक्यों से अधिक स्वतन्त्र होते हैं।

उपांत margin

किसी अक्षर की सीमाओं का निर्माण करने वाला ध्वनि खण्ड, यथा - 'कमल' शब्द में [क] तथा [ल] व्यंजन अक्षर उपान्त है। इसी प्रकार अंग्रेजी cup में [k] [p] अक्षर उपान्त है जबकि स्वर अक्षर केन्द्र हैं।

उभय अनन्यता biuniqueness

स्वनिमों का कोई भी क्रम स्वनों के विशिष्ट क्रम द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है। स्वनप्रक्रिया के कतिपय उपागमों में स्वीकृत यह सिद्धान्त ही उभय अनन्यता कहलाता है।

दूसरे शब्दों में स्वनों एवं स्वनिमों के मध्य एक से एक का सम्बन्ध प्राप्त होता है, उदाहरणार्थ - अंग्रेजी शब्द bin में दो स्तरों के मध्य का सम्बन्ध निम्नवत दिखाया जा सकता है-

/b/+/i/+/n/

[b] [i] [n]

किन्तु ऐसे भी अनेक उदाहरण मिलते हैं जहाँ इस प्रकार का सीधा सम्बन्ध लक्षित नहीं होता है। अत: उपरोक्त अवधारणा सभी स्थितियों में प्रामाणिक नहीं कही जा सकती है। कई स्थितियों में सन्दर्भ के आधर पर एक स्वन एकाधिक स्वनिम से सम्बन्धित होता है। उभय अनन्यता की यह स्थिति रेखीयता एवं निश्चरता पर निर्भर करती है जिसकी, आधुनिक प्रजनक स्वनशास्त्रियों ने, वर्गिकीय स्वनविज्ञान की आलोचना करते समय, बहुत निन्दा की।

ऊ

ऊष्म sibilant

उच्चारण प्रयत्न के आधार पर किए गए ध्वनि वर्गीकरण का एक वर्ग। एक प्रकार का धर्षी व्यंजन जिसके उच्चारण में जिह्वा फलक ऊपर उठकर नलक जैसा बनाती है और ध्वनि उसी नलक से बाहर निकलती है जैसे - स, श, ष। इनके दो भेद होते हैं - दन्त्योष्म, तालव्योष्म।

ए

एककालिक synchronic

स्विस् विद्वान फर्दिनान्द डी सेस्यूर द्वारा निरूपित भाषिक अन्वेषण के दो आयाम- एककालिक एवं द्विकालिक कहलाते हैं। एककालिक अध्ययन में किसी एक काल बिन्दु में भाषा में प्राप्त विशेषताओं का वर्णन किया जाता है। इसे काल विशेष में भाषा की स्थिति भी कह सकते हैं। यह अध्ययन भाषा के स्वरूप में समय के साथ घटित परिवर्तनों को महत्त्व नहीं देता है। प्राय: समकालीन भाषाओं के वर्णन के लिए इसका प्रयोग किया जाता है किन्तु सेस्यूर ने ऐतिहासिक (द्विकालिक) वर्णन के लिए एककालिक अध्ययन की अनिवार्यता पर बल दिया।

एकरूपिमिक शब्द monomorphemic

ऐसे शब्द जो एक रूपिम द्वारा निर्मित हों, इनके विलोम बहुरूपिमिक शब्द होते हैं, जैसे - पेड़, घर, लड़का आदि एक रूपिमिक शब्द हैं और पेड़ों, घरौंदा तथा लड़कपन बहुरूपिमिक शब्द हैं।

एकल प्रतियोग isolated opposition

इसका व्यतिरेकी समानुपातिक प्रतियोग होता है। अंग्रेजी के /v/ तथा /l/ में एकल प्रतियोग है क्योंकि जिस प्रकार इन दोनों में भिन्नता है वैसी किसी अन्य खण्ड में नहीं मिलती है अर्थात् सघोष दंतोष्ठ्य संघर्षी बनाम सघोष पार्श्विक जबकि /f/ और /v/ का प्रतियोग समानुपातिक है क्योंकि अंग्रेजी में अन्य कई प्रतियोग इसके समानान्तर रूप में कार्यरत मिलते हैं, जैसे - /s/ बनाम /z/।

एकल रूपान्तरण sigularly transformation

ऐसा रूपान्तरण जो एक अन्त्यमाला में होता है जैसे - सामान्य वाक्य से प्रश्नवाचक

या निषेधात्मक का निर्माण अथवा कर्मवाच्य वाक्य से कर्तृवाच्य का निर्माण। हिन्दी में इसे एकवाक्यीय नाम भी दिया गया।

एकश्वासी वर्ग breath group

एक ही वक्ष स्पंद के परिणामस्वरूप निकलती वायु के दौरान उच्चरित स्वन-समुच्चय, वाक्यांश अथवा वाक्य।

एकस्तरीय monostratal

व्याकरण के जिस भाषिक सिद्धान्त में प्रतिरूपण का सिर्फ एक स्तर होता है, जैसे - रूपान्तरण में सिर्फ बाह्य संरचना का उल्लेख होता है। प्रजनक व्याकरण एक से अधिक तलों की चर्चा करता है-आन्तरिक संरचना एवं बाह्य संरचना।

एकस्वरक monophthong

स्वर ध्वनियों के उच्चारण प्रयत्न के आधार पर किया गया वर्गीकरण-वह स्वर जिसके उच्चारण में आदि से लेकर अंत तक एक ही उच्चारण स्थिति और समध्वनिक लक्षण बना रहता है। सभी सामान्य स्वर इस वर्ग में आते हैं। यह संध्यक्षर का विलोम कहा जा सकता है। कभी-कभी भाषाओं में **एकस्वरीकरण** की प्रक्रिया मिलती है अर्थात् संध्यक्षर पुनः मूल स्वर में परिवर्तित हो जाता है, जैसे - भारत-ईरानी अए~अय-संस्कृत ए।

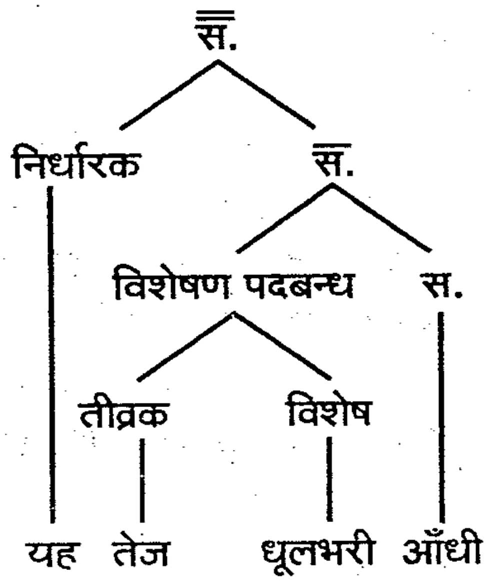
एकाक्षरी शब्द monosyllabic word

वह शब्द जो एक अक्षर से निर्मित हो, यथा - हिन्दी में आ, खा, ला आदि।

एक्स-बार x-bar ($\bar{x}$)

पारम्परिक पदबन्ध संरचना विश्लेषण के विकल्प के रूप में अधुनातन प्रजनक भाषाविज्ञान में विकसित विश्लेषण की व्यवस्था। विद्वानों का विचार है सम्यक् विश्लेषण के लिए पदबन्ध संरचना द्वारा प्रतिपादित पदबन्धीय कोटियाँ समर्थ नहीं होती हैं अतः संज्ञापदबंध के संदर्भ में ऐसी माध्यमिक कोटियों का होना आवश्यक है जो संज्ञा से बड़ी एवं पदबन्ध से छोटी हों, जैसे - 'ये तेज धूलभरी आँधी' पदबन्ध में 'तेज धूलभरी' अथवा

'तेज धूलभरी आँधी' दो कोटियां हो सकती हैं। एक्स-बार वाक्यरचना में एक्स-बार व्यवस्था द्वारा इन्हीं माध्यमिक कोटियों के संज्ञान की चर्चा की गई जिन्हें पदबन्ध संरचना व्याकरण महत्त्व नहीं देता है इस विश्लेषण में एक कोशीय कोटि प्रस्तुत किए जाने पर X, X^0 से तात्पर्य है कि X का कोई बार नहीं है और कोटि स्वयं अपने में पूर्ण है। $\bar{x}$ का तात्पर्य है x^1=x bar=x के साथ सिर्फ एक बार है; $\bar{\bar{x}}$ =x^2=x के साथ दो बार है; इसी प्रकार $\bar{\bar{\bar{x}}}$ =x^3=x के साथ तीन बार हैं। ये बार पदबन्धीय विस्तरण की सूचना देते हैं जैसे निम्न वृक्ष आरेख में संज्ञा के दो विस्तरण स्तर हैं स. बार तथा स. दो बार-



विद्वानों ने माध्यमिक कोटियों के विश्लेषण सम्बन्धी इस सुझाव का स्वागत किया किन्तु कोटियों की संख्या के सन्दर्भ में विद्वान एकमत नहीं हैं।

एटिक / एमिक इकाई etic/emic unit

भाषिक सामग्री के अध्ययन एवं विश्लेषण के दो व्यतिरेकी उपागम एमिक तथा एटिक कहलाते हैं। एटिक उपागम में भाषा की भौतिक अभिरचनाओं का वर्णन भाषिक व्यवस्था में उनके प्रकार्य को ध्यान में दिए बिना ही किया जाता है जबकि एमिक उपागम प्रकार्यात्मक सम्बन्धों के सम्पूर्ण वर्णन के आधार पर अमूर्त व्यतिरेकी इकाइयों की संवृत व्यवस्था की स्थापना करता है। एमिक शब्द की व्युत्पत्ति, फोनीम, मॉर्फिम शब्दों से हुई है जहाँ -eme का तात्पर्य 'लघुतम भेदक इकाई' है। इस प्रकार अनुतान के एमिक उपागम में स्वराघात अभिरचना के उन्हीं अभिलक्षणों का वर्णन होगा जो एक भाषा के लिए आर्थी

दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं जबकि एटिक उपागम में वाक्य के स्वराघात परिवर्तनों का सूक्ष्मातिसूक्ष्म वर्णन किया जाएगा चाहे वे अभिलक्षण आर्थी दृष्टि से महत्त्वपूर्ण (प्रभेदक) हो अथवा नहीं। यह भेद अमरीकी विद्वान के.एल. पाइक द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त टैग्मीमिक्स का केन्द्रीय अभिलक्षण है।

एडवर्ड सपीर Edward Sapir

यहूदी मूल वाले सपीर का जन्म यद्यपि जर्मनी में हुआ था किन्तु आरम्भिक अवस्था में ही इनका परिवार अमरीका में बस गया था। सपीर की प्रतिभा बहुदिशीय थी। वे अच्छे कवि, आलोचक तथा संगीतज्ञ भी थे। बोआज़ से प्रभावित हो, ये उनके शिष्य हो गए थे। 1921 में प्रकाशित पुस्तक Language तथा भाषा सम्बन्धित अनेक लेख उनके मनोसामाजिक विचारों की अभिव्यक्ति करते हैं। अपने लेख Sound Patterns in Language तथा Psychological Reality of Phonome द्वारा इन्होंने स्वनिम की अवधारणा को स्पष्ट कर उसकी मनोवैज्ञानिक सत्ता को स्वीकार किया। इन्होंने अपने शिष्य बी.एल. वूर्फ़ के साथ मिलकर **भाषिक सापेक्षवाद** का सिद्धान्त प्रतिपादित किया जिसे **सपीर वूर्फ़-परिकल्पना** नाम से अभिहित किया गया। सपीर ने भाषाविश्लेषण की निश्चित पद्धति तो नहीं दी किन्तु भाषा को पहचानने, उसे गहराई से समझने की दृष्टि अवश्य दी।

एम.ए.के. हैलिडे M.A.K. Halliday

हैलिडे जे.आर. फर्थ के अनुयायी थे, इन्होंने फ़र्थ के सिद्धान्त को न केवल भाषिक अध्ययन का आधार बनाया अपितु उसका विस्तार तथा स्पष्टीकरण करने का भी प्रयत्न किया। आरम्भ में हैलिडे ने अपने प्ररूप को Scale and Category Grammar नाम दिया परन्तु बाद में Systemic Grammar नाम दिया गया। इनके अनुसार भाषा और अर्थ इतने जटिलरूप में एक-दूसरे के साथ सम्पृक्त हैं कि कोई भी एकदिशीय या एकव्यवस्थीय विवरण भाषा के समस्त पक्षों की व्याख्या नहीं कर सकता है। अतः हैलिडे ने भाषा विश्लेषण के लिए चार व्यवस्थाओं की चर्चा की - स्वनिक, स्वनिमिक, व्याकरणिक तथा पारिस्थितिक या आर्थिक। हैलिडे ने प्रत्येक भाषिक व्यवस्था के तीन प्रमुख कार्यों की चर्चा की - संप्रत्ययात्मक (ideational), अन्तर्वैक्तिक (interpersonal) तथा पाठीय (textual)।

एल. हेल्मस्लेव Louis Hjelmslev

हेल्मस्लेव कोपेनहैगन सम्प्रदाय के सबसे उज्जवल नक्षत्र थे। 1926 में प्रकाशित

इनकी प्रथम पुस्तक **Principes de Grammaire** में व्याकरण सिद्धान्त की चर्चा की गई। 1953 में इनकी दूसरी पुस्तक **Prolegomena to a Theory of Language** प्रकाशित हुई जिसमें इन्होंने स्वनिमविज्ञान और रूपात्मक व्याकरण को एकीकृत कर भाषाविज्ञान का नवीन सिद्धान्त विकसित किया और पूर्ववर्ती सिद्धान्तों से भिन्न स्थापित करने के लिए इसे Glossematics नाम दिया। यह सिद्धान्त एल्गोरिथम की अमूर्त व्यवस्था के रूप में विकसित हुआ तथा समस्त प्रतीक व्यवस्थाओं के सार्वभौमिक सिद्धान्त के रूप में उभरा किन्तु अभी तक किसी भी प्राकृतिक भाषा का प्रभावकारी वर्णन-विश्लेषण इस व्याकरण द्वारा नहीं किया गया।

एस.एन. त्रुबेत्स्कॉय S.N. Trubetzkoy

प्राग् सम्प्रदाय के प्रमुख भाषाविद् ज़िनका भाषाविज्ञान जगत में महत्त्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने कई पुस्तकें लिखीं जिनमें सर्वाधिक प्रसिद्ध Grundzuge der Phonologie है, जिसका प्रतिपाद्य स्वनशास्त्र था। त्रुबेत्स्कॉय स्वनप्रक्रिया, रूपरचना, वाक्यरचना तथा अर्थ के स्तरों को अन्तर्सम्बन्धित मानते थे। अपनी पुस्तक में इन्होंने लगभग दो सौ भाषाओं की ध्वन्यात्मक संरचना का वर्णन किया।

ऐ

ऐतिहासिक भाषाविज्ञान historical linguistics

समय के साथ भाषा में घटित परिवर्तन या विकास का अध्ययन, विश्लेषण भाषाविज्ञान की जिस शाखा के अन्तर्गत किया जाता है उसे ऐतिहासिक भाषाविज्ञान कहते हैं। इसे द्विकालिक अध्ययन भी कहते हैं तथा इसके विश्लेषण में तुलनात्मक भाषाशास्त्र में प्रयुक्त सामग्री का प्रयोग किया जाता है अर्थात् दोनों में ही प्राचीन भाषाओं के लिखित रूप का महत्त्व है किन्तु इनकी पद्धतियाँ एवं उद्देश्य भिन्न-भिन्न हैं। विविध संकालिक भाषिक अध्ययनों (यथा - समाजभाषाविज्ञान, मनोभाषाविज्ञान आदि) द्वारा प्रयुक्त पद्धतियों के प्रयोग द्वारा आज ऐतिहासिक स्वनप्रक्रिया/रूपरचना/वाक्यरचना जैसी उपशाखाओं पर कार्य हो रहे हैं।

ऐल्गोरिथ्म algorithm

एक जटिल संक्रिया को करने के लिए बनाया गया प्रक्रिया उपकरण जो संक्रिया को सुनिश्चित, स्पष्ट, सरलतर संक्रियाओं में खण्डीकृत करता है, एल्गोरिथ्म कहलाता है, यथा - कम्प्यूटर प्रोग्राम का फ्लो चार्ट (flow chart)। भाषाविज्ञान में इस तर्क का प्रयोग मुख्यत: प्रजनक व्याकरण के विश्लेषणात्मक कथनों में किया जाता है।

ऐल्फा अंकन alpha notation

प्रजनक भाषाविज्ञान की एक लिप्यांकन परम्परा जो एक नियम कथन को परिवर्त प्रयोग द्वारा सरल बनाती है, जैसे - प्रजनक स्वनप्रक्रिया में इसका प्रयोग उन स्थानों पर किया जाता है जहाँ अभिलक्षणों के समुच्चयों के बीच पारस्परिक पूर्वानुमेयता होती है। इसके कारण प्रत्येक अभिलक्षण की प्रयोग परिस्थिति के सन्दर्भ में स्वतन्त्र कथनों का प्रयोग अनिवार्य नहीं होता है, जैसे - सघोष स्पर्श सदैव वृत्ताकार होते हैं और अघोष अवृत्ताकार। यह प्रतिपादित करने के लिए हम दो नियमों का, ऐल्फा का प्रयोग कर, सम्मिश्रण करते हैं यह दो सहसम्बन्धों को द्योतित करता है यथा - [+घोष]~[+वृत्ताकार]

तथा [-घोष]~[-वृत्ताकार] viz [a घोष] r [∞ वृत्ताकार]। स्वनप्रक्रिया में इसके कई विकसित रूप भिन्न परिवर्तों के साथ मिलते हैं।

ऐल्फा संचलन alpha movement

प्रजनक वाक्य रचना में प्रयुक्त एक पारिभाषिक शब्द जो ऐसे सकल सार्वभौमिक संचलन नियम की ओर संकेत करता है जिसके अन्तर्गत सभी भाषाओं के समस्त विशिष्ट संचलन नियम आते हैं। यह नियम वाक्य के किसी घटक को वाक्य के एक अंग से दूसरे में जाने की आज्ञा देता है किन्तु कई प्रकार की बाद्धयता इसके प्रयोग को सीमित करती है।

ओ

ओष्ठ्य labial

वह स्वन जिनके उच्चारण में कोई एक ओष्ठ करण का कार्य करता है, जैसे - फ् अथवा दोनों ओष्ठ करण का कार्य करते हैं, जैसे - ब् । समस्त मौखिक ध्वनियों के उच्चारण में चूंकि वायु ओष्ठ से होकर निकलती है अत: सभी ध्वनियाँ ओष्ठ्य होती हैं किन्तु ओष्ठ्य ध्वनियों का महत्त्वपूर्ण गुण यह है कि इनके उच्चारण में ओष्ठ क्रियाशील होते हैं और करण का कार्य करते हैं।

यदि किसी स्वन के प्राथमिक उच्चारण के साथ-साथ ओठों को वर्तुलित किया जाए तो इसे **ओष्ठ्यीकरण** की संज्ञा दी जाती है, यथा - coup आरम्भिक [k] में वर्तुलित ओंठ। यहाँ यह विशेषता परवर्ती स्वर [u] के कारण आई है।

ऑगुस्ट श्लाइखर August Schleicher

श्लाइखर जेना विश्वविद्यालय में अध्यापक थे। इनकी प्रसिद्ध पुस्तक का नाम **Compendium** था जिसमें इन्होंने प्राचीन भारोपीय भाषाओं का एक वास्तविक तुलनात्मक अध्ययन सर्वथा नवीन अनुसंधान पद्धति द्वारा प्रस्तुत किया था। डार्विन द्वारा प्रतिपादित विकासवाद के सिद्धान्त के वह अनन्य समर्थक थे। इनके मतानुसार भाषाविज्ञान ऐतिहासिक विज्ञान नहीं प्राकृतिक विज्ञान है। तुलनात्मक पद्धति के आधार पर भारोपीय परिवार की मूलभाषा के पुनर्निमाण का कार्य श्लाइखर ने आरम्भ किया। इन्होंने भारोपीय परिवार की वंशावली को ज्ञात कर उसका वंशवृक्ष प्रस्तुत किया तथा इन भाषाओं के पारस्परिक संबंधों को चित्रवत स्पष्ट किया।

ऑस्ट्रो - एशियाटिक परिवार Austro-Asiatic family

दक्षिण-पूर्वी तथा पूर्वी एशिया का सर्वाधिक प्राचीन भाषा परिवार जिसे दो प्रमुख उपपरिवारों में विभाजित किया जाता है - **मोन-ख्मेर** इस वर्ग में लगभग सौ भाषाएँ आती हैं; **मुण्डा** यह एक छोटा परिवार है जिसकी भाषाएँ भारतवर्ष में मुख्यत: बिहार, उड़ीसा,मध्य

प्रदेश और आन्ध्र प्रदेश में बोली जाती हैं। मुण्डा के विशिष्ट प्रभेदक अभिलक्षण निम्नलिखित हैं - (i) संकेतवाचकों की विस्तृत व्यवस्था (ii) विस्तृत स्थिति निर्देशी कोटियों का व्यवहार (iii) द्वित्वीकरण, स्वर दीर्घीकरण और प्रतिध्वन्यात्मकता का बाहुल्य (iv) काल, पक्ष, वृत्ति से सम्बन्धित विभिन्न क्रिया कोटियाँ। कतिपय मुण्डा भाषाओं में सकर्मक एवं अकर्मक क्रिया वर्गों के लिए दो भिन्न प्रत्यय मिलते हैं।

औ

औचित्य appropriateness

किसी दी गई सामाजिक परिस्थिति के लिए सर्वाधिक अनुकूल भाषिक रूप भाषा का औचित्यपूर्ण प्रयोग कहलाता है। इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग भाषाविज्ञान, समाजभाषाविज्ञान तथा संकेत प्रयोग विज्ञान में मिलता है, उदाहरणार्थ - अनौपचारिक प्रयोग में लुप्तांश वाक्य या शिष्टेतर प्रयोग (जैसे - चल दिए, गंजिंग करने चलो आदि) औचित्यपूर्ण कहे जा सकते हैं जबकि औपचारिक वार्तालाप में इनका प्रयोग उचित नहीं माना जाता है। संकेतप्रयोगविज्ञान में वाक्यों की औचित्य पूर्ण परिस्थितियाँ प्रायः 'उपयुक्तता स्थिति' कहकर सन्दर्भित की जाती है।

क

कंठोष्ठ्य labio-velar

वह व्यञ्जन जिसके उच्चारण में ओठों को गोल किए जाने के साथ-साथ जिह्वा का पश्च भाग कोमल तालु की ओर उठता है। अंग्रेजी में कंठोष्ठ्य अर्धस्वर /w/ well, wasp शब्दों में मिलता है। इस वर्ग के स्वन पश्चिमी अफ्रीका की भाषाओं इग्बो, योरूबा आदि में मिलते हैं। इन स्वनों को दो वर्णों के ऊपर इस प्रकार ($\widehat{kp}$) चिह्नित किया जाता है। मूलभरोपीय का पुनर्गठित व्यञ्जन ($\widehat{kw}$) इसी वर्ग में आता है।

कंपित trilled

उच्चारण प्रयत्न के आधार पर किया गया व्यंजन ध्वनियों का एक स्वनिक प्रकार, जिनके उच्चारण में करण (सामान्यत: ओंठ, जिह्वाग्र अथवा अलिजिह्वा) प्रकंपित रहता है और जिसके फलस्वरूप वायु मार्ग दो या दो से अधिक बार तीव्रता से स्वयं खुलता और बंद होता है, यथा - हिन्दी 'र' ध्वनि। कभी-कभी इनका उच्चारण एक घर्षण के साथ सुनाई पड़ता है। ऐसी ध्वनियों को 'संघर्षी कम्पित व्यंजन' कहते हैं।

कठिन संचलन tough movement

किसी पूरक वाक्य के विधेय से संज्ञा पदबन्ध को संचलित करने वाला नियम प्रजनक व्याकरण में कठिन संचलन कहलाता है।

कठोर व्यञ्जन hard consonant

ऐसे व्यञ्जन जिनके उच्चारण में तालव्यीकरण का अभाव हो। रूसी भाषा में इस प्रकार के अनेक कठोर व्यञ्जन मिलते हैं। रूसी में ъ चिह्न (कठोरता का चिह्न) परवर्ती व्यंजन के तालव्यीकरणहीन होने की सूचना देता है।

कथ्य stheme

इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग वाक्य संरचना के विश्लेषण के सन्दर्भ में किया गया। कथ्य न केवल वाक्य की विषय वस्तु को सन्दर्भित करता है वरन् उससे सम्बन्धित तथ्यों के विषय में भी सूचना देता है। प्राग्सम्प्रदाय में वाक्य के दूसरे भाग को **पक्षपद** (rheme) नाम दिया गया अर्थात् वाक्य का वह भाग जिसके द्वारा नवीन अर्थ सम्प्रेषित हो।

क-प्रश्न wh-question

ऐसी प्रश्नवाचक रचनाएँ जिनमें कौन, कहाँ, कैसे, कब आदि प्रश्नवाचक शब्दों का प्रयोग किया जाए। हाँ-ना प्रश्न इनके व्यतिरेकी होते हैं। प्रजनक व्याकरण में इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग क-संज्ञापदबन्ध (wh-NP) में उस संज्ञापद के लिए किया जाता है जहाँ संज्ञा के साथ क-शब्द (wh-word) आता है, उदाहरणार्थ - कौन सी किताब? ज-वाक्यांश संचलन (wh-movement) एक प्रकार का रूपान्तरण नियम है जो क-संज्ञा पदबन्ध को वाक्य के प्रारम्भ में ले जाता है, उदाहरणार्थ - where did you see? वाक्य की गहन संरचना `you past tense see who' पर ज-वाक्यांश संचलन लागू किए जाने पर 'who you past seen' परिणाम आएगा। आधुनिक प्रजनक भाषाविज्ञान के अन्तर्गत ज-वाक्यांश संचलन के अन्तर्गत कई रूपान्तरणों की चर्चा की जा रही है। क-प्रश्न (शब्द) से आरम्भ रचना ज-उपवाक्य कहलाती है।

करण instrumental

विभक्तियों द्वारा व्याकरणिक सम्बन्ध अभिव्यक्त करने वाली भाषाओं के शब्द (प्राय: संज्ञा या सर्वनाम) का वह रूप जिससे क्रिया के साधन का बोध होता है, जैसे - हिन्दी में चोर रस्सी से लड़के को बांधता है। कारक व्याकरण में किसी घटना का भौतिक कारण या प्रेरक करण कहलाता है, जैसे - चाभी से दरवाजा खुला; भूकम्प से शहर नष्ट हो गया।

कर्ण अभ्यास ear-training

मानवीय वाक् ध्वनियों के मध्य भिन्नता स्थापित करने तथा उनको पहचानने के लिए स्वन-विज्ञान के प्रशिक्षार्थियों को कर्ण अभ्यास कराया जाता है। यह तकनीकी उन्हें ध्वनियों से परिचित कराती है और वे ध्वनियों के मध्य अन्तर करना सीखते हैं।

कर्ता कारक nominative case

जिन भाषाओं में विभक्तियाँ व्याकरणिक सम्बन्धों की अभिव्यक्ति करती है वहाँ कर्ता कारक संज्ञा या सर्वनाम के उस रूप को कहते हैं जो क्रिया के कर्ता के रूप में प्रयुक्त हो, जैसे - 'लड़का सोता है'; 'नौकर ने दरवाजा खोला'। शब्द कोश अथवा व्याकरणिक रूपावली में सूची बद्ध किया जाने वाला यह प्रथम रूप होता है और प्राय: अचिह्नित रहता है।

आधुनिक प्रजनक व्याकरण में यह शब्द एक परिमित उपवाक्य में आगत संज्ञापद उद्देश्य के निर्धारित कारक की ओर संकेत करता है।

कर्तृ-क्रिया-कर्म actor-action-goal

यह पदबन्ध अनेक भाषाओं में प्राप्त कथनों में घटित प्रकार्यों के विशिष्ट अनुक्रम को रेखांकित करता है। इसका प्रयोग वाक्य अभिरचना के व्याकरणिक एवं आर्थी विश्लेषण में किया जाता है, उदाहरणार्थ - अंग्रेज़ी वाक्य John saw a duck में John कर्ता, saw क्रिया और a duck कर्म है। भाषाओं में सदैव यही अनुक्रम नहीं होता है, यथा - हिन्दी में कर्तृ-कर्म-क्रिया का अनुक्रम तथा वेल्श में क्रिया-कर्ता-कर्म यह अनुक्रम प्रचलित है। यद्यपि इस पदबन्ध का बहुत प्रयोग किया जाता है किन्तु इसकी आलोचना भी की गई। The stone moves वाक्य का कर्ता (stone) उपर्युक्त अर्थ में कर्तृ (actor) नहीं कहा जा सकता है। अत: स्पष्ट है कि actor या action शब्द के आर्थी निहितार्थ सदैव व्याकरणिक तथ्यों के समान नहीं होते हैं।

कर्तृवाच्य active voice

वाच्य के व्याकरणिक विश्लेषण में प्रयुक्त शब्द जो ऐसे वाक्यों, उपवाक्यों या क्रिया रूपों को आर्थी दृष्टि से सन्दर्भित करता है जहाँ क्रिया के सम्बन्ध में व्याकरणिक कर्ता एवं वास्तविक कर्ता समान होता है, अर्थात् कर्तृवाच्य में कर्ता, क्रिया का व्याकरणिक कर्ता (जिसके विषय में विधान किया जाए) और वास्तविक कर्ता (जो क्रिया को करने वाला है) दोनों होता है, उदाहरणार्थ - लड़का सोया; राम ने पुस्तक पढ़ी; माँ ने बेटे को बुलाया। हिन्दी में तीन वाच्य माने जाते हैं - कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य तथा भाव वाच्य। अंग्रेजी में इनकी संख्या दो ही है।

कर्म object

वाक्य का एक प्रमुख घटक; पारम्परिक व्याकरण में क्रिया के व्यापार का फल संज्ञा के जिस रूप पर पड़े उसे कर्म कहते हैं, जैसे - मालिक ने नौकर को बुलाया, राम ने पुस्तक पढ़ी, वाक्यों में 'नौकर' तथा 'पुस्तक'। कर्म के दो वर्ग मिलते हैं मुख्य एवं गौण।

कारक व्याकरण में कर्म को अर्थात्मक दृष्टि से सर्वाधिक उदासीन कारक माना गया। वे संज्ञाएँ, व्यवहार में जिनकी भूमिका क्रिया के आर्थी प्रतिरूपण द्वारा ज्ञात होती है, कर्म कहलाती हैं।

कर्म कारक accusative case

जिन भाषाओं में विभक्तियाँ व्याकरणिक सम्बन्धों की अभिव्यक्ति करती हैं वहाँ यह कारक संज्ञा या सर्वनाम शब्द के उस रूप की ओर संकेत करता है जिस पर क्रिया के व्यापार का फल पड़ता है। हिन्दी में इसका बोध 'को' द्वारा होता है, यथा - मालिक ने नौकर को बुलाया। अंग्रेजी में यह प्रक्रिया शब्द क्रम पर निर्भर करती है, यथा - 'Dog bites postman'। यहाँ क्रिया का फल postman पर पड़ता है। कतिपय विद्वान postman को कर्म कारक मानते हैं किन्तु यह उचित नहीं प्रतीत होता क्योंकि इस शब्द के कर्तावत् या कर्मवत् प्रयोग में कोई रूपात्मक प्ररिवर्तन नहीं घटित होता (postman bites dog) है अत: भाषाविदों का मानना है कि इस अर्थ में कर्म कारक शब्द का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। अंग्रेजी के कतिपय सर्वनामों में कर्म कारक का शुद्ध रूप कहा जा सकता है. यथा - He hit him; She saw her; The man whom I saw. कुछ विद्वान पारम्परिक व्याकरण से भिन्नता दर्शाने के लिए objective case नाम का प्रयोग करते हैं।

कर्म वाच्य passive voice

वाच्य के व्याकरणिक विश्लेषण में प्रयुक्त शब्द जो ऐसे वाक्य, उपवाक्य या क्रियारूप की ओर संकेत करता है जहाँ व्याकरणिक कर्ता, क्रिया द्वारा निर्दिष्ट क्रियार्थ का लक्ष्य/ध्येय होता है। अर्थात् जहाँ कथन में कर्ता की अपेक्षा कर्म पर अधिक बल दिया जाता है, उदाहरणार्थ - पत्र लिखा गया, रोटी खाई गई। कर्म की उपस्थिति की अनिवार्यता के कारण हिन्दी में कर्म वाच्य केवल सकर्मक क्रिया में ही सम्भव है। प्रजनक व्याकरण में एक वाक्य का कर्तृ रूप से कर्म रूप में रूपान्तरण 'कर्मवाच्यीकरण' (passivization) कहलाता है।

काकल रंजित creaky

वे ध्वनियाँ जिनके उच्चारण में घोषतन्त्रियों का निचला भाग तन्त्रियों के एक-दूसरे से पूरी तरह सटे रहने से श्वासद्वारीय स्पर्श की स्थिति में और ऊपरी भाग निकट रहने के कारण प्रकंपित स्थिति में रहता है। कतिपय भाषाओं में ये ध्वनियाँ स्वन प्रक्रियात्मक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण होती हैं, यथा - हौसा भाषा में काकल रंजित स्पर्श एवं अकाकल रंजित स्पर्श के मध्य भिन्नता मिलती है।

काट slash

रूपान्तरण व्याकरण में तिरछी खड़ी रेखा वाला चिह्न उस परिवेश का द्योतक होता है जिसमें परिवर्तन नियम लागू होता है, उदाहरणार्थ - क→ख/ग से तात्पर्य होगा कि 'क' 'ख' में रूपान्तरित होगा 'ग' परिवेश में।

काप्यूला copula

व्याकरणिक विश्लेषण में संयोजक क्रिया के लिए काप्यूला शब्द का प्रयोग किया जाता है। काप्यूला अर्थात् वह क्रिया जिसका स्वयं का स्वतन्त्र अर्थ लगभग न हो तथा जिसका मुख्य प्रकार्य उपवाक्य के घटकों (विशेषत: कर्ता एवं पूरक) को जोड़ना होता है। अंग्रेजी में इसका प्रमुख उदाहरण 'be' क्रिया है किन्तु कुछ अन्य क्रियाएँ भी इस प्रकार्य को सम्पादित करती हैं, यथा - he feels angry; that looks nice। हिन्दी में है/था आदि काप्यूला क्रियाएँ कहलाती हैं। 'सप.×पूरक×काप्यूला' वर्ग के वाक्यों को 'काप्यूला वाक्य' नाम दिया जाता है।

कारक case

संज्ञा के जिस रूप से उसका सम्बन्ध वाक्य में आए अन्य पदों से अभिव्यक्त होता है उसे कारक कहते हैं। वाक्यान्तर्गत शब्दों/पदों के पारस्परिक सम्बन्ध को अभिव्यक्त करने वाली इस व्याकरणिक कोटि का प्रयोग शब्द वर्ग के विश्लेषण में किया जाता है। लैटिन, संस्कृत आदि व्याकरणों में प्राप्त कारक का पारम्परिक वर्गीकरण, शब्द के रूपरचनात्मक रूप के विकल्प पर आधृत था और प्रत्येक रूप का विश्लेषण सुनिश्चित अर्थ प्रसार के परिप्रेक्ष्य में किया गया जैसे- 'जिस वस्तु पर क्रिया के व्यापार का फल पड़ता है उसे कर्म कहते हैं।' जिन भाषाओं में इस प्रकार के रूपरचनात्मक विकल्प नहीं मिलते हैं

वहाँ इस पारम्परिक अर्थ की दृष्टि से कारक का उल्लेख नहीं किया जा सकता है, यथा - अंग्रेजी में सिर्फ सम्बन्ध कारक स्पष्टत: चिह्नित होता है (Ram's mother's) शेष रूपों में कोई चिह्न नहीं लगता है, वहाँ कारकीय अर्थों की अभिव्यक्ति पूर्वसर्ग (with a boy, to a boy) करते हैं।

परम्परा से एक संज्ञा पद आठ प्रकार के सम्बन्ध या अर्थ व्यक्त करता है - कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण और संबोधन। इन भिन्न-भिन्न अर्थों को अभिव्यक्त करने के लिए संयुक्त किए जाने वाले प्रत्यय कारक प्रत्यय/कारक परसर्ग/ विभक्ति चिह्न कहलाते हैं। संस्कृत में एक संज्ञापद के चौबीस रूप बनते हैं। पालि, प्राकृत में इनकी संज्ञा तेरह हो गई तथा अपभ्रंश में ये रूप केवल छ: रह गए। आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं तक आते-आते इन रूपों की संख्या केवल दो रह गई - (1) मूल रूप जो सामान्यतया कर्ता (कभी-कभी कर्म) का बोध करता है जिसमें कोई प्रत्यय नहीं लगता; (2) तिर्यक या विकृत रूप जिसमें कारक चिह्न लगाकर अन्य पदों के साथ अनेक प्रकार के सम्बन्ध अभिव्यक्त किए जाते हैं।

कारक व्याकरण case grammar

प्रजनक व्याकरण की स्टैन्डर्ड थ्योरी में वाक्यों का विश्लेषण करते समय कर्ता, कर्म को संज्ञापद एवं क्रियापद की तुलना में कम महत्त्व दिया गया। 1960 में, अमरीकी विद्वान चार्ल्स फिल्मोर ने, व्याकरणिक विश्लेषण का नवीन प्रारूप प्रस्तुत किया। इन्होंने अपने प्रारूप में अर्थ को समाहित किया तथा रूपान्तरण की संकल्पना को स्वीकार किया। वाक्यों की बहि:स्तलीय भिन्नताओं का वर्णन अन्त:स्तलीय संरचना के कारकीय सम्बन्धों द्वारा करने का प्रयास किया। चाभी से दरवाजा खुला; दरवाजा चाभी से खोला गया; आदमी ने चाभी से दरवाजा खोला। फिल्मोर के अनुसार सतही संरचना पर भिन्न होते हुए भी ये वाक्य अनेक स्थिर आर्थी भूमिकाएँ प्रदर्शित करते हैं। प्रत्येक इकाई में 'चाभी' 'करण' है और 'दरवाजा' वह इकाई है जो कार्य से प्रभावित है। कारक व्याकरण में इस अन्तर्दृष्टि को प्रारूप के आधार पर निश्चितता प्रदान की गई। इनके अनुसार एक वाक्य की अन्त:स्तलीय संरचना में दो घटक होते हैं - प्रकारता (modality) (अर्थात् सम्पूर्ण वाक्य से सम्बन्धित काल, वृत्ति, पक्ष आदि अभिलक्षण) और प्रतिज्ञप्ति (proposition) (जिसमें क्रिया केन्द्रीय है तथा क्रिया के सन्दर्भ में, वाक्य संरचना के घटकों की विविध आर्थी भूमिकाओं को क्रमबद्ध कर कारक की भाँति वर्गीकृत किया जाता है। फिल्मोर वाक्य के अन्य घटकों से क्रिया के सम्बन्ध को कारक सम्बन्ध कहते हैं। ये कारक सम्बन्धों को सार्वभाषिक मानते हैं। यद्यपि कतिपय भाषाओं में कारक सम्बन्धों को लक्षित करने

वाले चिह्नकों का अभाव होता है तथापि संकल्पनात्मक रूप में कारक वहाँ भी उपस्थित रहते हैं। ये कारकों की संख्या छह स्वीकारते हैं।

कार्तीय भाषाविज्ञान Cartesian linguistics

फ्रेंच दर्शनशास्त्री रेने देकार्ते (1596-1650) तथा पोर्ट रॉयल सम्प्रदाय से प्रभावित सिद्धान्तों और पद्धतियों के लिए कतिपय भाषाविदों ने इस पद का प्रयोग किया। प्रजनक भाषाविज्ञान में सार्वभौमों की चर्चा विशेषत: देकार्ते के भाषा एवं विचार के अन्तर्सम्बन्ध से प्रभावित है।

काल tense

व्याकरणिक कोटि के रूप में काल की सत्ता भाषा मात्र में निहित है। भाषा के बाहर जो काल है वह समय (time) कहलाता है। काल एक व्याकरणिक कोटि है जिसकी सत्ता व्याकरण से बाहर नहीं है जबकि समय एक लौकिक कोटि है जिसका सम्बन्ध लौकिक जगत से है। यह अविरल जलधारा के समान अखंडीय तथा अस्थिर है। समाज ने व्यवहार की सुविधा के लिए 'अभी' के शून्य बिन्दु को केन्द्र मानकर समय-प्रवाह को भूत, भविष्यत् तथा वर्तमान नामक कृत्रिम काल-खण्डों में बाँट दिया है। 'आज, कल, परसों आदि समय-सूचक क्रिया विशेषणों का मूल्य सापेक्षिक है क्योंकि उक्त-समय को केन्द्र मानकर ही इनके मूल्यों का निर्धारण सम्भव है।

कालावधि duration

किसी स्वन या अक्षर के उच्चारण में लगने वाला समय तात्विक दृष्टि से उसकी कालावधि कहलाती है। यह सम्भाषण की गति पर निर्भर करती है। गति द्रुत होने पर समय कम लगता है और विलम्बित होने पर अधिक लगता है और यदि सम्भाषण की गति मध्यम है तो सामान्य समय लगेगा। इस गति को प्रवेग (tempo) कहते हैं तथा कालावधि का सीधा सम्बन्ध प्रवेग से होता है। कालावधि का मापन मिली सेकण्ड, सेन्टीसेकण्ड में किया जाता है। सामान्यत: स्वर एवं सम्प्रवाही ध्वनियाँ स्पर्श की तुलना में अधिक कालावधि लेती हैं।

काव्यशास्त्र poetics

भाषिक सिद्धान्तों एवं पद्धतियों द्वारा कविता का विश्लेषण काव्यशास्त्र कहलाता

है। इस पारिभाषिक शब्द का विस्तृत विवेचन करते हुए रोमन यकोब्सन ने मौखिक या लिखित भाषा के सौन्दर्य या सर्जन सम्बन्धी भाषिक प्रयोग को भाषा का 'काव्यशास्त्रीय प्रकार्य' माना।

कि-उपवाक्य that-clause

व्याकरण के कतिपय प्रारूपों में एक प्रकार के आश्रित निर्देशक उपवाक्यों के लिए यह अभिधान प्रयोग में लाया गया।

कीलक pivot

1960 में भाषा अधिग्रहण सम्बन्धी अध्ययन में इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग हुआ। यह शब्द ऐसे प्राचीन शब्द वर्ग की ओर संकेत करता है जिसमें शिशु द्वारा प्रारम्भिक अवस्था में बोले गए दो शब्दों के संयोजन आते हैं। इन संयोजनों द्वारा यह पता चला कि बच्चे कुछ संयोजनों का प्रयोग अन्य की तुलना में अधिक करते हैं, जैसे - मेरी माँ, मेरा भइया, मेरी गुड़िया आदि इनमें समान तत्त्व को कीलक माना गया जिस पर शेष वाक्य आश्रित होता है।

कीलाक्षर cuneiform

वह आक्षरिक लेखन जिसमें शंक्वाकार संकेतों का प्रयोग किया जाता है। इसका विकास भावलिपि से ही माना जाता है। इसका आविष्कार सुमेरवासियों ने किया था तथा इसका व्यवहार असीरी, सुमेरी, ईरानी तथा अन्य जातियों द्वारा किया गया। ये संकेत गीली मिट्टी में अंकित किए जाते थे।

कूट / कोड code

किसी एक संकेत व्यवस्था को दूसरी संकेत व्यवस्था में रूपान्तरित करने के लिए प्रयोग किया गया रूढ़ि समुच्चय कोड कहलाता है। कोड शब्द का व्यवहार संकेत विज्ञान एवं सम्प्रेषण सिद्धान्त में, भाषाविज्ञान की तुलना में, अधिक किया जाता है। भाषाविज्ञान में स्वनविज्ञान के अन्तर्गत कोडीकरण एवं विकोडीकरण जैसे शब्द मिलते हैं।

मुख्यत: इस शब्द का व्यवहार समाज भाषाविज्ञान में भाषा से सम्बन्धित सम्प्रेषण व्यवस्था के लिए किया जाता है। सन्दर्भ एवं व्यवहार क्षेत्र की उपयुक्तता के अनुरूप जब वक्ता एक भाषा का प्रयोग करते-करते दूसरी भाषा का प्रयोग करे तो इसे **कोड परिवर्तन**

की संज्ञा देते हैं। यह परिवर्तन मानक रूप एवं प्रादेशिक रूप के मध्य, एक मानक से दूसरे मानक के बीच हो सकता है।

भाषा व्यवहार करते समय जब वक्ता किसी एक भाषा के वाक्यों में दूसरी भाषा के तत्त्व मिश्रित कर दे तो इसे **कोड मिश्रण** की संज्ञा देते हैं। यह मिश्रण शब्द, पदबन्ध, उपवाक्य एवं वाक्य किसी भी इकाई का हो सकता है।

कूट बोली argot

एक प्रकार की गुप्त भाषा, जिसका प्रयोग सीमित सम्प्रेषणात्मक नेटवर्क में किया जाता है। उन्नीसवीं शताब्दी में इस शब्द का प्रयोग मुख्यत: चोरों की वृत्ति भाषा (जार्गन) के सन्दर्भ में किया गया।

कृदंत विशेषण participle

वह शब्द जो क्रिया द्वारा निर्मित तथा विशेषणवत् व्यवहृत हो कृदन्त विशेषण कहलाता है, जैसे - डूबती हुई नाव; हँसता हुआ चेहरा। यह क्रियार्थक संज्ञा (gerund) से भिन्न होता है, जो क्रिया द्वारा व्युत्पन्न एवं संज्ञावत व्यवहार करती है, जैसे - कहना सरल है पर करना कठिन।

के.एल. पाइक K.L. Pike

पाइक द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त बंधिमविज्ञान कहलाता है, जिसका निरूपण Language in Relation to a Unified Theory of the Structure नामक ग्रन्थ के तीन खण्डों के माध्यम से किया गया। इनके अनुसार भाषा एक मानवीय व्यवहार है जो उस अखण्ड समग्रता का एक अंग है जिसमें भाषिक एवं अभाषिक व्यवहार एक घटना रूप में सम्मिलित हैं। पाइक भाषा को त्रिरूपीय मानते हैं जो स्वनप्रक्रिया, व्याकरण एवं शब्दकोश से संरचित है। भाषिक व्यवहार के विश्लेषण के लिए पाइक ने एटिक और एमिक तकनीकी की चर्चा की।

केन्द्र / मध्य center

जिह्वा अग्र एवं पश्च के मध्य का शीर्ष भाग जिसका प्रयोग विशेषत: केन्द्रीय स्वर (ə) के उच्चारण में किया जाता है। यह स्वर asleep शब्द के आरम्भ में तथा sofa शब्द के अन्त में सुना जा सकता है।

जब कोई स्वर जो सामान्यत: स्वर क्षेत्र की परिधि में उच्चरित होता हो और मुख के केन्द्रीय भाग से उच्चरित होने लगे तो उसे केन्द्रीकृत स्वर कहते हैं। अनेकानेक शहरी ब्रिटिश बोलियों में **केन्द्रीकृत स्वर** मिलते हैं।

ऐसा सन्ध्यक्षर जिसका द्वितीय अंश केन्द्रीय स्वर होता है अभिकेन्द्री संध्यक्षर कहलाता है। बाहर से केन्द्र की ओर अभिमुख होने के कारण इसे अभिकेन्द्री कहते हैं, यथा - अंग्रेजी में [uə] poor, [εe] boar।

अन्त:केन्द्रिक रचनाओं में केन्द्र शब्द का प्रयोग पदबन्ध के उस घटक के लिए किया जाता है जो रचना का शीर्ष होता है जिस पर पदबन्ध के शेष घटक आश्रित होते हैं, यथा - 'मेरी छोटी बहन' पदबन्ध में 'बहन' शब्द केन्द्र है।

केन्द्रक nucleus

ब्रिटिश परम्परा में कुछ अनुतान विश्लेषकों ने इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग तान इकाई में सर्वाधिक प्रमुखता वाले अक्षर के लिए किया। इस प्रमुखता का कारण स्वराघात परिवर्तन होता है। केन्द्रक अक्षर को तान अक्षर भी कहा गया।

कोटि category

भाषाविज्ञान में कई स्तरों पर इस शब्द का प्रयोग किया जाता है। व्याकरण के स्तर पर भाषा विश्लेषण की इकाइयों का वर्गीकरण किया जाता है। इस वर्गीकरण का आधार उनका समान वितरण होता है। कतिपय उपागमों में कोटि शब्द क प्रयोग शब्द वर्ग के लिए भी किया गया और इनके अन्तर्गत संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया आदि की गणना की गई। व्याकरणिक कोटि पारिभाषिक शब्द का भी प्रयोग मिलता है जिसमें संज्ञा, सर्वनाम द्वारा अभिव्यक्त व्याकरणिक अभिलक्षण यथा - लिंग, वचन, कारक आदि, आते हैं। कर्ता, कर्म आदि के लिए **प्रकार्यात्मक कोटि** पद का भी प्रयोग किया जाता है।

कोटिगत व्याकरण Categorical Grammar

व्याकरणिक विश्लेषण का एक प्ररूप; जिसके बीज रूप दर्शनशास्त्र एवं तर्कशास्त्रीय अन्वेषणों में मिलते हैं। यह व्याकरण वाक्यीय संरचना एवं उसके आर्थी प्रतिरूपण के मध्य संयोजनात्मक सम्बन्धों की चर्चा करता है।

कोपेनहैगन सम्प्रदाय Copenhagen school

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में स्कैन्डिनेविया में वी.ब्रांडल एवं एल. हेल्मस्लेव नामक विद्वानों ने अपने सिद्धान्त के माध्यम से भाषाविज्ञान को अधिक रूपात्मक एवं अमूर्त बनाने का प्रयास किया। 1934 में स्थापित इस सम्प्रदाय को कोपेनहैगन नाम दिया गया तथा 1939 में इस सम्प्रदाय का जरनल 'एक्टा लिंग्विस्टिका' प्रकाशित होना प्रारम्भ हुआ। दर्शन और विशेषत: तर्कशास्त्र में रूचि होने के कारण इन विद्वानों ने भाषिक विश्लेषण में तार्किक संकल्पनाओं का प्रयोग किया। बीजगणितीय पद्धति का अनुपालन इनके सिद्धान्त को जटिल बनाता है।

कोमल तालव्य velar

व्यञ्जन के स्वनिक वर्गीकरण में उच्चारण स्थान के आधार पर किया गया एक स्वन भेद जिसके उच्चारण में कोमल तालु उच्चारण स्थान तथा जिह्वा-पश्च करण का काम करता है, जैसे - हिन्दी के क् ख् ग् घ् ङ् स्वन इन्हें कंठ्य भी कहते हैं। कोमल तालव्य स्वन velaric स्वनों से भिन्न होते हैं। 'विलरिक' स्वनों के उच्चारण में वायु अन्तर्गामी होती है तथा जिह्वा का पश्च भाग कोमल तालु के साथ स्पर्श करने के साथ-साथ जिह्वा के पीछे और नीचे की ओर आने के कारण मुँह में हवा विरलित होती है। इस प्रक्रिया से उच्चरित स्वन क्लिक कहलाते हैं। जुलू भाषा में इन स्वनों की अर्थभेदक भूमिका होती है।

कभी-कभी किसी स्वन के प्राथमिक उच्चारण के साथ-साथ जिह्वा पश्च को ऊपर उठाने के कारण उसका **कोमलतालव्यीकृत** उच्चारण होता है। यह सह-उच्चारण का एक भेद है। व्यंजन ही नहीं स्वरों में भी यह विशेषता दिखाई पड़ती है। कोमलतालव्यीकृत स्वनों के लिप्यांकन के लिए [~] प्रतीक लिपि चिह्न के मध्य में लगाया जाता है, जैसे - [ɫ], [ã]।

कोशीम lexeme

भाषा की आर्थी व्यवस्था की लघुतम प्रभेदक इकाई कोशीम कहलाती है। मुख्यत: इसका प्रयोग शब्द से जुड़ी स्वनप्रक्रियात्मक / लेखिक, व्याकरणिक अथवा कोशीय स्तरों पर प्राप्त संदिग्धार्थकता कम करने के लिए किया गया। विद्वानों ने इसका प्रयोग किसी भाषा के शब्द समूह की व्याख्या के लिए, अधिक उपयुक्त पारिभाषिक शब्द की खोज के परिणामस्वरूप, प्रारम्भ किया। इस प्रकार कोशीम व्याकरणिक परिवर्तों के समुच्चय

(चल, चला, चलता, चलो) की अमूर्त मूलाधार इकाई के रूप में स्वीकार किया गया। पारम्परिक दृष्टि से कोशीम वे इकाइयाँ हैं जो कोश में स्वतन्त्र प्रविष्टि के रूप में प्राप्त होती हैं।

कोशीय संज्ञापदबन्ध lexical noun phrase

प्रजनक व्याकरण में प्रयुक्त एक प्रकार का संज्ञापदबन्ध जिसका अनुबन्धन सिद्धान्त में विशेष महत्त्व है। वाक्य की समस्त स्थितियों में ये पदबन्ध मुक्त होते हैं अन्वादेशों और सार्वनामिक पदबन्धों की भांति बद्ध नहीं होते हैं।

कोष्ठक / कोष्ठन bracket / bracketing

किसी श्रृंखला के तत्त्वों की आन्तरिक संरचना को प्रदर्शित करने वाली एक तकनीकी जिसका प्रयोग गणित एवं तर्कशास्त्र की भांति भाषाविज्ञान में भी होता है। एक वाक्य 'राम बाजार जाता है' का वर्गीकरण हिन्दी भाषी अपनी अन्तःप्रज्ञा से प्रेरित हो राम, बाजार, जाता है इस प्रकार करता है। यहाँ (राम) (बाज़ार) (जाता है) यह प्रतिरूपण कोष्ठक के माध्यम से किया जा सकता है। प्रत्येक कोष्ठक को एक नाम पत्र (label) भी दिया जा सकता है जो उसके व्याकरणिक महत्त्व को स्पष्ट करता है, यथा-

(राम) कर्ता (बाजार) कर्म (जाता है) क्रिया

सप. सप. क्रिप.

पदबन्ध संरचना व्याकरण में जिस क्रम में कोष्ठकों के युग्म प्रयुक्त हो रहे हैं उसे अधिक सुनिश्चित एवं स्पष्ट रूप में प्रस्तुत किया जाता है, यथा -

वाक्य (राम बाजार जाता है)

कर्ता / कर्म (सप.+क्रिप.) ((राम) (बाजार जाता है))

कर्ता / कर्म / क्रिया ((राम) ((बाजार) (जाता है)))

कह सकते हैं कि जैसे-जैसे वाक्य जटिल होते जाते हैं कोष्ठक के अन्दर आने वाले कोष्ठकों को समझना कठिन हो जाता है। प्रजनक व्याकरण में निम्नलिखित प्रकार के कोष्ठकों का प्रयोग व्याकरण लिखने के लिए किया गया-

(i) निक्षेप संकेतन (वृत्ताकार कोष्ठक) ( ) इनमें वैकल्पिक तत्त्व रखे जाते हैं, यथा - (वि.) स. नियम के अनुसार दो स्थितियाँ हो सकती हैं क. पद में विशेषण एवं संज्ञा दोनों हैं, जैसे 'अच्छा लड़का' ख. सिर्फ संज्ञा हो 'लड़का'।

(ii) मंझला संकेतन (धनु कोष्ठक) { } इसके अन्तर्गत आने वाले तत्त्वों में से किसी एक का प्रयोग किया जाता है, यथा - नि. {वि.स.} स. नियम के आधार पर दो संरचनाओं में से एक का चयन किया जा सकता है 'नि.वि.स.' या 'नि.स.स.'।

(iii) कोष्ठक संकेतन [ ] इस तथ्य की ओर संकेत करते हैं कि इसमें आने वाले तत्त्वों के समकक्ष क्षितिज रेखा पर अन्य तत्त्व हैं, यथा -

$\begin{bmatrix} \text{क} \\ \text{ख} \end{bmatrix} \rightarrow \begin{bmatrix} \text{ग} \\ \text{घ} \end{bmatrix}$ से तात्पर्य है कि 'क ग हो जाता है' तथा 'ख घ हो जाता है'।

(iv) कोष्ठीय कोष्ठक संकेत <>

प्रजनक स्वन प्रक्रिया में वैकल्पिक अभिलक्षणों की पारस्परिक निर्भरता का संकेतक है, यथा - $\begin{bmatrix} \text{+क} \\ \langle \text{+ख} \rangle \end{bmatrix} \rightarrow \begin{bmatrix} \text{+ग} \\ \langle \text{+घ} \rangle \end{bmatrix}$

अर्थात् अभिलक्षण क अभिलक्षण ग हो जाता है और यदि अभिलक्षण ख उपस्थित है तो वह अभिलक्षण घ हो जाएगा। अन्य उपागमों में इन कोष्ठकों का प्रयोग लेखिम की ओर संकेत करने के लिए भी किया गया।

ध्वनिविज्ञान में कोष्ठक के दो मुख्य प्रकार्य होते हैं- वर्ग कोष्ठक [ ] के अन्तर्गत खण्डीय ध्वन्यात्मक प्रतिलेखन अथवा प्रभेदक अभिलक्षण संकेतन रखा जाता है, यथा - [+अघोष]; काट या स्लैश // के अन्तर्गत स्वनिग्रामिक प्रतिलेखन रखा जाता है। वर्ग कोष्ठकों का प्रयोग व्याकरणिक या आर्थी अभिलक्षणों को परिबद्ध करने के लिए भी होता है, यथा - [+चेतन], [+पुर्लिंग], [+स्त्रीलिंग]।

क्रम order

भाषिक इकाइयों में निहित रेखीय अनुक्रम के सम्बन्धों की अभिरचना की अभिव्यक्ति भाषाविज्ञान में इस पारिभाषिक शब्द द्वारा होती है। कभी-कभी परीक्षणीय रूपात्मक तत्त्वों के अनुक्रमिक विन्यास एवं बाह्य / सतही विन्यास के मूल में निहित अमूर्त सम्बन्धों की अभिरचना के बीच अन्तर नहीं किया जाता है। प्राय: अनुक्रम एवं क्रम के मध्य भेद स्थापित कर दो स्तरों पर विश्लेषण किया जाता है। बाह्य संरचना में प्राप्त अनुक्रम तथा आधारभूत क्रम के बीच सदैव एक से एक का संवाद नहीं होता है, जैसे - राम कल स्कूल नहीं जाएगा; कल राम स्कूल नहीं जाएगा; राम स्कूल नहीं जाएगा कल। इन वाक्यों में समान कर्ता, कर्म एवं क्रिया का क्रम विभिन्न सतही अनुक्रमों के रूप में प्रतिफलित हुआ है। रूपान्तरण व्याकरण की तात्विक अन्तर्दृष्टि के अनुसार किन्हीं निश्चित तत्त्वों के मूलभूत अमूर्त क्रमण द्वारा अनेक बाह्य विन्यास व्युत्पन्न हो सकते हैं। इस उपागम में नियम अनुप्रयोग सम्बन्धी क्रमण की चर्चा भी मिलती है अर्थात् अस्वीकृत एवं अग्राह्य

श्रृंखलाओं के प्रजनन को बाधित करने के लिए व्याकरण के नियमों को किस क्रम में अनुप्रयुक्त किया जाए। विद्वानों ने अनेक प्रकार की क्रमण रूढ़ियों का सुझाव दिया, जैसे - रेखीय, चक्रीय, संयोजक, वियोजक, बाधक क्रम आदि।

क्रमचय permutation

एक प्रकार की आधारिक रूपान्तरण संक्रिया। क्रमचय रूपान्तरणों का प्रभाव घटकों के, पदबन्ध चिह्नक के एक भाग से दूसरे भाग में, संचलन द्वारा देखा जा सकता है जैसा कर्मवाच्य या नकारात्मक और प्रत्ययों के स्थापन में दृष्टिगत होता है। संचलन एवं क्रमान्तरण (reordering) इसके वैकल्पिक शब्द हैं। कुछ आधुनिक उपागमों में क्रमचय को अनुबन्धी एवं विलोपन जैसी मूलभूत संक्रियाओं में विभाजित किया गया।

इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग शब्द में स्वनों के क्रम परिवर्तन के लिए भी किया गया।

क्रमपरक positional

वाक्यात्मक सम्बन्ध को अभिव्यक्त करने वाला वह लक्षण जो किसी वाक्यीय रचना में आगत पदों के पारस्परिक क्रम पर निर्भर करता है। अनेक भाषाओं में भाषिक तत्त्वों का क्रम प्रभेदक का कार्य करता है, यथा - अंग्रेजी में पदक्रम परिवर्तन द्वारा प्रश्नवाचकता की अभिव्यक्ति होती है।

क्रमबद्धता concatenation

प्रजनक व्याकरण में भाषिक संरचनाओं के रूपात्मक प्रतिरूपण में प्रयुक्त एक शब्द अर्थात् तत्त्वों की श्रृंखला निर्मित करने की एक प्रक्रिया, इन तत्त्वों के मध्य रैखिक अनुक्रम मिलता है, यथा क+ख+ग अथवा क-ख-ग (अर्थात् क ख के साथ श्रृंखलाबद्ध है)।

क्रम-विपर्यय inversion

वाक्य परिवर्तन की वह प्रक्रिया या परिणाम जिसमें घटकों का एक विशिष्ट अनुक्रम दूसरे के प्रतिलोम रूप में घटित दिखाई दे, यथा - अंग्रेजी में मुख्यत: प्रश्नवाचकता की अभिव्यक्ति कर्ता एवं सहायक क्रिया के प्रतिलोम क्रम द्वारा होती है - 'Is he coming?'

क्रमांतरण reordering

एक आधारिक रूपान्तरण संक्रिया जिसके प्रभावस्वरूप घटकों का संचलन एक-एक कर पदबन्ध चिह्नक के एक भाग से दूसरे भाग में किया जाता है, जैसे - नकारात्मक शब्दों का प्रयोग।

भाषा-परिवर्तन के रूपान्तरण विश्लेषण में भी इसका प्रयोग मिलता है। वहाँ यह शब्द बोलियों के मध्य प्राप्त भिन्नता की व्याख्या के लिए अनुमानित नियमों के ऐतिहासिक अनुक्रम में प्राप्त अन्तर की ओर संकेत करता है, जैसे - बाधक-नियम-क्रम एवं साधक-नियम-क्रम में प्राप्त अन्तर।

क्रमिक gradual

प्राग सम्प्रदाय में स्वीकृत एक प्रतियोग जो वैयक्तिक एवं समतुलित से भिन्नता स्थापित करता है। जहाँ भाषा में भिन्नता की मात्रा किसी प्रकार के मापक द्वारा ज्ञात की जाए उसे क्रमिक प्रतियोग की संज्ञा देते हैं; जैसे - जिन भाषाओं में चार अग्र स्वर /i/, /e/, /ɛ/ और /a/ हों वहाँ स्वर उच्चता की चार डिग्रियों को उच्च बनाम निम्न जैसे वैयक्तिक युग्मों में विश्लेषित करना उपयुक्त नहीं होगा।

क्रमिक सम्बन्ध serial relationship

वह सिद्धान्त जो वाक्यीय कोटियों के मध्य उपस्थित क्रमिकता को महत्त्व देता है। निम्नलिखित मैट्रिक्स में ख, क-ग से क्रमिक सम्बन्ध में माना जाएगा-

	क	ख	ग
क	+	-	-
ख	+	+	-
ग	+	+	+

क्रमीयता gradability

कोशीय मदों के मध्य घटित आशय सम्बन्धों को सन्दर्भित करने वाला पारिभाषिक शब्द। अर्थ विज्ञान में क्रमीय शब्द विपरीतार्थकों (छोटा / बड़ा, मोटा / पतला) द्वारा भली-भाँति स्पष्ट किया जाता है, जब कि अक्रमीय शब्द विवाहित / अविवाहित; उत्तर / दक्षिण

क्ष

क्षमता capacity

प्रजनक भाषाविज्ञान में किसी व्याकरण की प्रजनक शक्ति के विषय में ज्ञान कराने वाला पारिभाषिक शब्द। यदि कोई व्याकरण समान वाक्य समुच्चय का प्रजनन करे तो उसे दुर्बल प्रजनक क्षमता वाला माना जाता है किन्तु यदि व्याकरण वाक्यों के लिए समान संरचनात्मक वर्णन नियत करते हैं तो उन्हें सबल प्रजनक क्षमता युक्त मानते हैं।

क्षेत्र[1] area

कोई भौगोलिक प्रदेश जब भाषिक विशेषताओं के आधार पर अलग किया जाता है तो बोली विज्ञान में उसे क्षेत्र कहते हैं। विभिन्न क्षेत्रों की भाषिक विशेषताएँ, वहाँ बोले जा रहे विविध रूपों का विश्लेषण तथा रूपों का ऐतिहासिक महत्त्व आदि **क्षेत्रीय भाषाविज्ञान** का अध्ययन विषय है। जिस क्षेत्र विशेष से भाषिक विशेषताएँ चतुर्दिक समस्त क्षेत्रों में फैले उसे **केन्द्रीय क्षेत्र** कहते हैं। जब कोई क्षेत्र दो विभिन्न केन्द्रीय क्षेत्रों के मध्य आ जाता है और उस क्षेत्र में दोनों केन्द्रीय क्षेत्रों में प्रचलित रूप मिलते हैं तो वह क्षेत्र **संक्रमण क्षेत्र** कहलाता है। वह क्षेत्र जहाँ प्राचीन प्रचलित रूप सुरक्षित हो **अवशिष्ट क्षेत्र** कहलाता है।

क्षेत्र[2] field

अर्थविज्ञान में किसी भाषा की शब्दावली को स्वतन्त्र मदों की तालिका के रूप में नहीं वरन् अन्तर्सम्बन्धित कोशीय जालक्रम (नेटवर्क) की एक व्यवस्था के रूप में देखा गया। यूरोप में, 1930, में आर्थी क्षेत्र सिद्धान्त का विकास हुआ। संकल्पनात्मक क्षेत्रों को (जैसे रंग, बंधुतावाची) अलग कर इन क्षेत्रों के विविध अभिलक्षणों को सन्दर्भित करने वाले कोशीय मदों का विश्लेषण आशय सम्बन्धों के नेटवर्क रूप में किया गया। यह नेटवर्क आर्थी या कोशीय क्षेत्र की कोशीय संरचना का निर्माण करता है। तत्कालीन आर्थी अध्ययनों में इस अवधारणा की अनेक व्याख्याएँ मिलती हैं।

जिन सिद्धान्तों एवं प्रक्रियाओं द्वारा सूचकों से, उनके अपने परिवेश में, भाषिक सामग्री एकत्रित की जाए उसे **क्षेत्रीय अध्ययन / क्षेत्रीय कार्य** कहते हैं।

हैलिडे के सिद्धान्त में प्रोक्ति क्षेत्र से तात्पर्य विषय-वस्तु के आधार पर प्रयुक्तियों के वर्गीकरण से लिया जाता है, जैसे - धर्म, विज्ञापन या रसायनशास्त्र के क्षेत्र।

क्षेत्र पद्धति field method

जिन सिद्धान्तों एवं प्रक्रियाओं द्वारा सूचकों से, उनके अपने परिवेश में, भाषिक सामग्री एकत्रित की जाए उसे क्षेत्रीय पद्धति कहते हैं। यह कार्य भाषिक सर्वेक्षण (linguistic survey) भी कहलाता है। इसके द्वारा ज्ञात, अज्ञात, मृतप्राय, अलिखित (मौखिक स्वरूप वाली) बोलियों / भाषाओं का अध्ययन विश्लेषण किया जाता है। भाषा सर्वेक्षण व्यक्तिगत सम्पर्क पर निर्भर करता है अत: कतिपय विद्वान इसे सम्पर्क पद्धति (contact method) नाम भी देते हैं।

क्षेत्रीय भाषाविज्ञान areal linguistics

किसी क्षेत्र विशेष की बोली की भाषिक विशेषताओं का अध्ययन विश्लेषण क्षेत्रीय भाषा-विज्ञान का अध्ययन विषय है। क्षेत्र पर बल होने के कारण इसे यह अभिधान दिया गया। यह अध्ययन संकालिक एवं द्विकालिक दोनों होता है।

ख

खण्ड segment

वाक् धारा की कोई भी पृथक/असतत् इकाई जिसे भौतिक या श्रवणात्मक रूप में पहचाना जा सके भाषाविज्ञान तथा स्वनविज्ञान में खंड कहलाती है। वाग्धारा का लघुतम खंडीय स्वनिमों या रूपिमों में विभाजन खंडीकरण कहलाता है। स्वनविज्ञान के क्षेत्र में खंड शब्द का विशेष महत्त्व है वहाँ लघुतम पृथक इकाई स्वन या स्वनिक खंड है। स्वनप्रक्रिया के क्षेत्र में खंडीय एवं खण्डेतर कोटियों के दो प्रमुख वर्ग मिलते हैं। खंडीय स्वनप्रक्रिया वाक् को प्रभेदक इकाइयों अथवा स्वनिमों के रूप में विश्लेषित करती है जिनका स्वनिक खण्डों से स्पष्ट एवं प्रत्यक्ष सम्वाद होता है। खण्डेतर स्वनप्रक्रिया वाक् के उन अभिलक्षणों का विश्लेषण करता है जो एकाधिक खंडों को प्रभावित करते हैं।

खण्ड वाक्य cleft sentences

व्याकरणिक विश्लेषण में उस रचना को खंड वाक्य की संज्ञा दी जाती है जहाँ एक स्वतन्त्र उपवाक्य को दो अलग-अलग वर्गों में विभाजित किया जाए तथा प्रत्येक वर्ग की क्रिया भी अलग हो, उदाहरणार्थ - 'गाय मीठा दूध देती है' इस वाक्य के कई खंड किए जा सकते हैं- यह गाय है और इसका दूध मीठा होता है अथवा यह दूध मीठा है जो इस गाय ने दिया है। किसी वाक्य के परिवर्त वाक्यान्तर्गत बल के वितरण को प्रभावित करते हैं। रूपान्तरण व्याकरण में खंड उपवाक्यों से सम्बन्धित व्युत्पत्यात्मक समस्याओं पर विशेष ध्यान दिया गया।

खाँचा slot

किसी रचना का वह स्थान जहाँ किसी वर्ग के सदस्यों में से किसी एक का प्रयोग किया जा सके, उदाहरणार्थ - लड़का----है यहाँ रिक्त स्थान की पूर्ति 'आता, खाता, जाता, सोता' आदि क्रियाओं से की जा सकती है। वे प्रारूप जो इस उपागम का प्रयोग करते हैं उन्हें 'खाँचा एवं भरक' प्रारूप नाम दिया गया। बंधिम व्याकरण की यह एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है वहाँ भरक को कर्ता, कर्म आदि मदों में विभाजित किया जाता है।

खोज प्रक्रिया discovery procedure

विश्लेषण के लिए प्रयुक्त एक प्रक्रिया। यह तकनीकियों का एक ऐसा समुच्चय है जिसका अनुप्रयोग भाषा के किसी नमूने पर स्वत: या यान्त्रिक रूप से किया जा सकता है। अनेक ब्लूमफील्डियन भाषाविदों ने इस प्रकार की खोज प्रक्रिया विकसित करने का प्रयास किया, आरम्भिक प्रजनक भाषाविदों ने इसकी कटु आलोचना की। प्रजनकशास्त्रियों के मतानुसार भाषाविद् को किसी विशिष्ट विश्लेषण की दिशा में ले जाने वाले समस्त तत्त्वों की निश्चित पहचान कभी सम्भव नहीं होती है और न ही इस प्रकार की प्रक्रिया की खोज उचित है।

ग

गणनावाची संख्यावाचक शब्द cardinal numeral

व्याकरणिक वर्णन के कतिपय पारम्परिक प्रारूपों में इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग संख्यासूचक शब्दों के लिए किया जाता है, जैसे - एक, दो, तीन आदि। इसके विपरीत पहला, दूसरा, तीसरा संख्यावाची शब्द **क्रमसूचक** (ordinal) कहलाते हैं।

गणितीय भाषाविज्ञान mathematical linguistics

भाषाविज्ञान की एक शाखा जो भाषा के गणितीय अभिलक्षणों का अध्ययन सांख्यिकी एवं बीजगणितीय अवधारणाओं द्वारा करती है। इस दिशा में सूचना सिद्धान्त एवं संगणक विश्लेषण का विशेष महत्त्व है। गणितात्मक संकल्पनाओं का अनुप्रयोग भाषिक सिद्धान्त को रूपात्मक सुव्यवस्था देने के लिए किया गया। भाषिक मदों के वितरण तथा आवृत्ति के सांख्यिकी अध्ययनों द्वारा अनेक आनुभाविक नियम एवं विशिष्ट तकनीकियाँ विकसित हुईं, यथा - रचनाकार सम्बन्धी अध्ययनों में (शैली सांख्यिकी) और तुलनात्मक भाषा अध्ययन (शब्द सांख्यिकी)।

गतिक स्वनविज्ञान motor phonetics

स्वनविज्ञान की वह शाखा जिसमें वाक्-ध्वनियों के उच्चारणतन्त्र के अध्ययन के साथ-साथ स्वनों की उच्चारण-प्रक्रिया का अध्ययन भी किया जाता है।

गम्भीरता प्राक्कल्पना depth hypothesis

1960 में अमरीकी भाषाविद् विक्टर यन्गवी ने भाषिक रचना की दो कोटियों **वाम शाखन** (यथा - the girl's frock) और **दक्षिण शाखन** (यथा - the frock of the girl) के मध्य प्राप्त मनोवैज्ञानिक भिन्नताओं की व्याख्या के लिए एक प्राक्कल्पना प्रस्तुत की। उन्होंने तर्क दिया कि वाम शाखन रचनाएँ वाक्य में मनोवैज्ञानिक जटिलता या रूपान्तरणपरक

गम्भीरता लाती हैं क्योंकि इन संरचनाओं का संसाधन (processing) दक्षिण शाखन की तुलना में, सीमित स्मृति में अधिक स्थान लेता है। इस प्राक्कल्पना की कई बिन्दुओं पर आलोचना हुई।

गुच्छ cluster

दो या दो से अधिक स्वनों का अनुक्रम जो योजित-वाक् में प्राप्त होता है। ये प्राय: किसी अक्षर के आरम्भ या अन्त में मिलते हैं, यथा - कृत्स्न के अक्षर त्स्न में त्+स्+न का योग है। यह व्यञ्जन गुच्छ का उदाहरण है। व्यञ्जनों के समस्त सम्भावित संयोग किसी एक भाषा में नहीं घटित होते हैं। अंग्रेजी में प्राय: आरम्भिक स्थिति में तीन व्यञ्जनों के गुच्छ [spr-], [skw-], [spl-] तथा अन्त में चार व्यञ्जनों के गुच्छ [-mpst], [lfos] मिलते हैं।

गुणवत्ता quality

किसी ध्वनि की अनुनाद सम्बन्धी विशेषता जो ध्वनि को पहचान देने वाली आवृत्तियों के प्रसार का परिणाम होती है। स्वर तथा व्यंजन दोनों के भेद गुणवत्ता के आधार पर वर्णय होते हैं, जैसे - इ एवं ए का अन्तर गुणवाची है।

गुणवाचक attribute / attributive

श्रवणात्मक स्वनविज्ञान में स्वन संवेदन की ऐसी विशेषता के लिए प्रयुक्त शब्द जिसे विसम्पर्कित किया जा सकता है और जिसका ज्ञान श्रवणात्मक तथ्यों पर निर्भर करता है, यथा - सुर, रणन (timbre), प्रबलता (loudness) आदि श्रावणिक संवेग के गुण।

व्याकरणिक अध्ययन में इस शब्द का प्रयोग विशेषण के एक प्रकार गुणवाचक विशेषण तथा ऐसी संज्ञाओं के लिए किया जाता है जो किसी संज्ञापदबन्ध के शीर्ष के विशेषण के रूप में प्रयुक्त होती है, यथा - हिन्दी के 'लाल साड़ी' पदबन्ध में लाल शब्द का गुणवाचक प्रकार्य है इसी प्रकार 'राम की गाड़ी' में 'राम की' का।

गुणार्थ intentional meaning

अर्थविज्ञान के सैद्धान्तिक प्रारूप में प्रयुक्त एक पारिभाषिक शब्द जो किसी शब्द

के प्रयोग सम्बन्धी गुणों को निर्धारित करता है, जैसे - सुगन्धित, लाल फूल गुलाब के गुणार्थ का संकेत करता है और इसकी परिभाषा इस प्रकार की जा सकती है 'वह फूल जो लाल और सुगन्धित हो गुलाब कहलाता है।'

गौण अनुक्रिया secondary response

अमरीकी भाषाविद् ब्लूमफील्ड ने भाषाविज्ञान जगत में इस शब्द का प्रयोग उन कथनों के लिए किया जिनका प्रयोग वक्ता अपनी भाषा के लिए करता है अर्थात् किसी व्यक्ति द्वारा अपनी भाषा के विषय में दिए गए वक्तव्य। साथ ही 'अशुद्ध व्याकरण' शुद्ध उच्चारण, मीठी बोली जैसी अभिव्यक्तियाँ जिनका प्रयोग प्राय: भाषा के सन्दर्भ में किया जाता है, गौण अनुक्रिया कहलाती है। भाषा का प्रयोग मुख्य अनुक्रिया है जो गौण से भिन्न होता है।

गौण रंध्र secondary apertures

चॉमस्की एवं हॉले ने अपने स्वन प्रक्रिया के भेदक अभिलक्षण सिद्धान्त में उच्चारण स्थान (विवर अभिलक्षणों) सम्बन्धी विविधता के वर्णन के लिए स्वन अभिलक्षणों की स्थापना की जिनमें से एक गौण रंध्र कहलाता है।

ग्रसनीय pharyngeal

उच्चारण स्थान के आधार पर व्यंजन स्वनों के स्वनिक वर्गीकरण का एक वर्ग जिसमें मुख के एकदम पीछे काकल से लेकर नासा द्वार तक फैले हुए विवर ग्रसनी द्वारा उच्चरित व्यंजन समाहित हैं। ग्रसनीय व्यंजन ग्रसनी को संकीर्ण करके उच्चरित किया जाता है इसके उदाहरण हिन्दी या अंग्रेजी भाषाओं में नहीं मिलते। ये व्यंजन अरबी भाषा में मिलते हैं। जब किसी स्वन के प्राथमिक उच्चारण के साथ-साथ ग्रसनी संकीर्ण कर उच्चारण किया जाए तो उसे **ग्रसनी रंजन** कहते हैं। इन स्वनों का लिप्यंकन अक्षर के बीच [~] चिह्न लगाकर किया जाता है, जैसे - [ꞩ] ग्रसनी रंजित [s] स्वन हैं।

ग्लॉसीम glosseme

ग्लॉसेमैटिक्स सम्प्रदाय में इस पारिभाषिक शब्द की रचना उन अमूर्त लघुतम अपरिवर्त्य रूपों के लिए की गई जिनकी स्थापना यह सिद्धान्त भाषिक विश्लेषण के समस्त क्षेत्रों की व्याख्या के लिए आधार रूप में करता है।

ग्लॉसेमैटिक्स glossematics

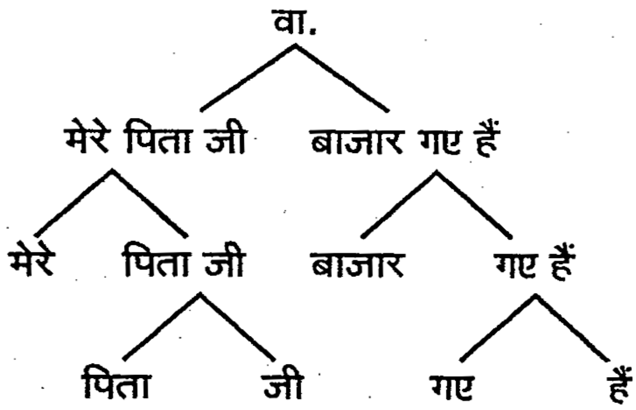
कोपेनहैगेन सम्प्रदाय के एक प्रमुख विद्वान हेल्मस्लेव ने इस सैद्धान्तिक उपागम की स्थापना की तथा अन्य सिद्धान्तों से भिन्न एवं मौलिक होने के कारण इसे यह नवीन नाम दिया। इनके अनुसार भाषा समग्रता अंशों द्वारा नहीं वरन् सम्बन्धों द्वारा निर्मित होती है और भाषा एक प्रकार की प्रतीकात्मक व्यवस्था है जिसके विशिष्ट अभिलक्षणों का वर्णन अन्य भाषेतर प्रतीकात्मक व्यवस्थाओं (यथा - नृत्य, तर्कशास्त्र आदि) से उनकी तुलना के आधार पर किया जा सकता है।

घ

घटक[1] / अवयव constituent

ऐसी कोई भी भाषिक इकाई जो बृहत्तर रचना का अंग होती है घटक कहलाती है। सहजबोधनीयता और रूपात्मक (अर्थात् वितरणात्मक) सम्बन्ध के आधार पर एक वाक्य घटकों के एक अनुक्रम में विश्लेषित किया जाता है, यथा - उद्देश्य + विधेय या संज्ञापद + क्रियापद आदि। इन इकाइयों को पुन: इनके घटकों में विश्लेषित किया जा सकता है, यथा - सप. में संज्ञा और निर्धारक होता है। घटक विश्लेषण की यह प्रक्रिया उस समय तक जारी रखी जा सकती है जब आगे उपविभाजन सम्भव न हो।

किसी भी स्तर पर एक रचना के मुख्य विभाजक उस रचना के **आसन्न घटक** (immediate constituents) कहलाते हैं। इस प्रकार के विश्लेषण द्वारा प्राप्त अन्तिम अविभाज्य घटक रचना के **चरम घटक** (ultimate constituents) कहलाते हैं, यथा - मेरे पिता जी बाजार गए हैं वाक्य के दो आसन्न घटक होंगे 'मेरे पिता जी' एवं 'बाजार गए हैं'। 'मेरे पिता जी' रचना के दो आसन्न घटक 'मेरे' एवं 'पिता जी' तथा 'बाजार गए हैं' रचना के आसन्न घटक 'बाजार' एवं 'गए हैं'। इस प्रक्रिया को वृक्ष आरेख द्वारा भी अंकित किया जा सकता है -



इस विश्लेषण को कोष्ठक द्वारा भी प्रतिरूपित किया जा सकता है।

प्रजनक व्याकरण में आधायित वाक्य के लिए **घटक वाक्य** (constituent sentence) अभिधान मिलता है अर्थात् जहाँ एक वाक्य में कोई मूलाधार वाक्य समाविष्ट किया गया हो, यथा - लड़का छत पर खड़ा शोर मचा रहा है। 'छत पर खड़ा हुआ' उपवाक्य 'लड़का छत पर खड़ा है, मूलाधार वाक्य से व्युत्पन्न है और इसे 'लड़का शोर मचा रहा है' वाक्य में अन्तर्निविष्ट किया गया है। उपयुक्त रूपान्तरण द्वारा यह एक घटक वाक्य हो जाएगा।

घटक² component

एक प्रजनक व्याकरण जिन प्रमुख अंशों में व्यवस्थित होता है प्रजनक भाषा-विज्ञान में उन्हें घटक कहते हैं। नोअम चॉमस्की ने अपनी प्रथम पुस्तक syntactic structures (1957) में तीन घटकों की स्थापना की। (1) **पदबन्ध संरचना घटक** (जो मूलाधार शृंखलाओं के एक समुच्चय को प्रजनित करता है) (2) **रूपान्तरण घटक** (जो इन शृंखलाओं पर वैकल्पिक या अनिवार्य रूप से कार्य करता है, अर्थ परिवर्तनों को समाविष्ट करता है) तथा (3) **रूपस्वनिमिकी घटक** (जो प्रत्येय वाक्यीय शृंखला को स्वनप्रक्रियात्मक इकाइयों में रूपान्तरित करता है।

1965 में चॉमस्की की द्वितीय पुस्तक Aspects of the theory of syntax में प्रारूप काफी बदल गया। पदबन्ध संरचना घटक का स्थान **आधार घटक** ने लिया जो वाक्यों की अन्तस्तलीय संरचना का प्रतिरूपण करने वाले मूलाधार पदबन्ध चिह्नकों का प्रजनन करता है (इसके अन्तर्गत आर्थी दृष्टि से महत्त्वपूर्ण समस्त अवधारणाएँ समाविष्ट की गई।) आधार घटक में व्याकरण के **कोटिक एवं कोशीय** उपघटक भी आते हैं। तत्पश्चात् इन चिह्नकों पर दो प्रक्रियाएँ होती हैं। आर्थी घटक के नियमों की सहायता से उनका आर्थी प्रतिरूपण तथा रूपान्तरण घटक द्वारा बाह्य संरचना में परिवर्तन किया जाता है (इसमें अधिकांश नियम अनिवार्य होते हैं)। अन्त में, **स्वनप्रक्रियात्मक घटक** बाह्य संरचना पर लागू हो स्वनिक प्रतिरूपण प्रस्तुत करता है।

अर्थविज्ञान में घटक शब्द से तात्पर्य उस अलघुकरणीय अभिलक्षण से है जो कोशीय मदों के आशय को विश्लेषित करता है, यथा - लड़की शब्द मानवीय; स्त्रीलिंग; बच्ची इन घटकों में विश्लेष्य है। 1950, में अमरीकी नृविदों ने बंधुतासूचक शब्दावली के विश्लेषण के लिए एक तकनीकी की खोज की जिससे अर्थविज्ञान **घटकीय विश्लेषण सिद्धान्त** का विकास हुआ। इनके अनुसार समस्त कोशीय मदों का विश्लेषण एक निश्चित घटकों के समुच्चय (या आर्थी अभिलक्षणों) द्वारा किया जा सकता है, जिन्हें सार्वभौमिक कहा जा सकता है।

यूरोप में इस विश्लेषण का प्रयोग ध्वनि, व्याकरण, अर्थ सभी क्षेत्रों में हुआ तथा जो उपागम भाषिक इकाइयों को उनके खण्डों या घटकों में विश्लेषित करे वही घटकीय विश्लेषण कहलाया। इस दृष्टि से प्राग् सम्प्रदाय का स्वनप्रक्रियात्मक अध्ययन भी घटकीय है तथा शब्द और रूपावली (word and paradigm) रूपरचना विश्लेषण भी।

घर्षणरहित frictionless

उच्चारण प्रयत्न के आधार पर किया गया ध्वनि का एक वर्गीकरण। इन स्वनों के उच्चारण में स्थानीय घर्षण नहीं होता है, जैसे - य् , व् । स्वनिक दृष्टि से समस्त स्वर तथा स्वरवत् ध्वनियाँ प्रवाही और घर्षणरहित होती हैं किन्तु इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग व्यंजन स्वनों के लिए ही किया जाता है।

घर्षी strident

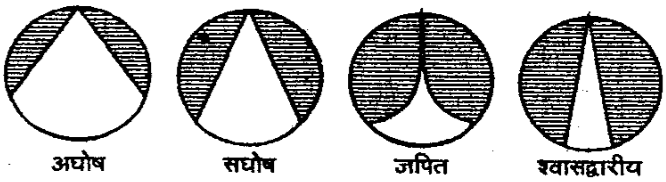
स्वनप्रक्रिया के भेदक अभिलक्षण सिद्धान्त में चॉमस्की एवं हॉले द्वारा प्रतिपादित स्वन के अभिलक्षणों में से एक, जो स्वन की ऊष्मता सम्बन्धी विविधता के आधार पर निर्धारित किया जाता है। उच्चारणात्मक दृष्टि से ये अधिक रवयुक्त होती हैं।

घोष voice

घोषतन्त्रियों के कम्पन के कारण वाक् स्वनों में उत्पन्न श्रवणात्मक विशेषता घोषता कहलाती है। ऐसे स्वन जो घोषतन्त्रियों के कम्पन के समय उच्चरित होते हैं उन्हें घोष कहते हैं, जैसे - [ब, अ, इ] तथा जिसके उच्चारण में कम्पन नहीं होता है उन्हें अघोष या घोषहीन कहते हैं, जैसे - [प, स, ठ]। चॉमस्की एवं हॉले के स्वनप्रक्रियात्मक सिद्धान्त में घोष एवं अघोष एक महत्त्वपूर्ण भेदक अभिलक्षण माना गया। किसी स्वन के उच्चारण में लगने वाला समय, अर्थात् घोषतन्त्रियों में जब से कम्पन प्रारम्भ होता है **VOT** (voice on set time / **घोषत्व प्रारम्भ समय**) कहलाता है। कुछ भाषाओं में व्यञ्जन उच्चारण में घोषत्व की स्थिति सापेक्षतया शुरू से ही बनी रहती है, जैसे - हिन्दी 'ब' और कुछ में यह स्थिति बहुत बाद में उत्पन्न होती है, जैसे - अंग्रेजी b। घोषतन्त्रियों के कम्पन के कारण स्वन में उत्पन्न श्रवणात्मक अभिलक्षण घोषत्व कहलाता है। अघोष व्यंजन का घोष रूप में परिवर्तन घोषीकरण कहलाता है, जैसे - संस्कृत काक>काग।

घोषतंत्री vocal cords

सुरयन्त्र के चारों ओर उपास्थी एवं उतक होते हैं तथा मध्य का स्थान खाली होता है, जिसके दोनों ओर लम्बी पतली छिल्लियाँ ओंठ की भांति स्थित रहती हैं। इन छिल्लियों में सिकुड़ने एवं फैलने की क्षमता होती है जिससे मार्ग संकीर्ण एवं विस्तृत होता है और ध्वनि में घोषत्व उत्पन्न होता है। घोषतन्त्रियों की चार स्थितियाँ हो सकती हैं जो निम्न अंकित रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट हैं-



जब घोषतन्त्रियाँ पूर्णत: निष्क्रिय हों तथा मध्य मार्ग खुला होने के कारण वायु निर्बाध रूप से बाहर जाए तो इस स्थिति में अघोष स्वन उच्चरित होता है। जब घोषतन्त्रियों की निकटता एवं उनके तनाव के कारण वायु प्रकम्पित होकर निकले तो उच्चरित स्वन सघोष कहलाता है। जब घोषतन्त्रियों में अधिक तनाव हो और वह एक दूसरे से अधिक सन्निकट हों तथा तनाव की अधिकता के कारण कम्पन भी न हो ऐसी स्थिति में उच्चरित स्वन फुसफुसाहट / जपित कहलाती है। जब घोषतन्त्रियों के ऊपर का भाग एक दूसरे के साथ पूरी तरह जुड़ जाए और बीच का मार्ग पूर्णत: अवरूद्ध हो तथा बाहर की वायु बाहर एवं अन्दर की वायु अन्दर रहे ऐसी ध्वनियों को श्वासद्वारीय कहते हैं। घोषतन्त्रियों के कारण भाषा में लय, सुर, तान, स्वराघात आदि विशेषताएँ उत्पन्न होती हैं।

च

चक्र cycle

किसी नियम के अनुसार उत्तरोत्तर होने वाले परिवर्तनों का ऐसा क्रम जिसके अंत में प्रारम्भिक अवस्था पुन: प्रकट हो जाए चक्र या आवर्तन कहलाता है।

चयनपरक selectional

वाक्यात्मक सम्बन्ध को अभिव्यक्त करने वाला ऐसा लक्षण जो वाक्यीय रचना के निर्मायक घटकों की पारस्परिक प्रयोग संभाव्यता पर निर्भर हो चयनपरक कहलाता है। हिन्दी में निजवाजीकरण हेतु वाक्य में निजवाचक सर्वनाम का वाक्य के संज्ञापद का समसंकेतक होना अपेक्षित होता है, यथा - तुमने मोहन को अपनी किताब क्यों दी?

चयनपरक प्रतिबन्ध अभिलक्षण selectional constraint feature

किसी एक निश्चित सन्दर्भ में कौन सा कोशीय मद (शब्द) या कोशीय मदों के कौन-कौन से संयोजन प्रयुक्त हो सकते हैं यह तथ्य कतिपय चयनपरक लक्षणों द्वारा प्रतिबन्धित होता है। हिन्दी के *मेज सोती है; *कुर्सी खाती है वाक्यों में सोती और खाती क्रिया का चयन मेज एवं कुर्सी संज्ञाओं की दृष्टि से उपयुक्त नहीं है। यहाँ केवल सजीव संज्ञाएँ आ सकती हैं। संज्ञा एवं क्रिया के अतिरिक्त अन्य पदवर्गों के साथ भी ये लक्षण कार्य करते हैं, जैसे - पागल आदमी या पागल हाथी प्रयोग किया जा सकता है *पागल किताब नहीं। काव्य भाषा प्राय: इन अभिलक्षणों की सीमा तोड़ 'लक्षणा' के क्षेत्र में प्रवेश करती है और परिणामत: वहाँ 'पागल हवाएँ' प्रयोग उपयुक्त माना जाता है।

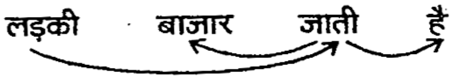
चयनात्मक श्रवण selective listening

मनोभाषाविज्ञान में प्रयुक्त एक पारिभाषिक शब्द जो **चयनात्मक ध्यान** की अवधारणा द्वारा व्युत्पन्न हुआ है। प्राय: लोग उन्हीं भाषिक संकेतों को ग्रहण करते हैं जिन्हें सुनना चाहते हैं और अन्य को नजरअन्दाज कर देते हैं, जैसे - किसी सभा में होने वाली

अनेक चर्चा या वार्तालापों में से व्यक्ति उन्हीं संकेतों को सुनता है जिन्हें आवश्यक समझता है या जिन्हें सुनना चाहता है। वाक् प्रत्यक्षीकरण के सिद्धान्त के विकास में इन तथ्यों का महत्त्व होता है।

चाप arc

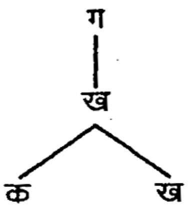
सम्बन्धपरक व्याकरण में किसी वाक्यीय इकाई का 'अन्य एकदिशिक इकाइयों से' आश्रयात्मक सम्बन्ध स्पष्ट करने के लिए तीर वाले चाप बनाए जाते हैं, यथा -



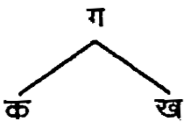
1970 में वाक्य के अन्तर्सम्बन्धों की व्याख्या चाप युग्मों द्वारा करने का प्रयास किया गया। यह उपागम **चाप-युग्म-व्याकरण** नाम से प्रसिद्ध हुआ।

चॉमस्की अनुबन्धन Chomskyan adjunction

रूपान्तरण व्याकरण में प्रयुक्त एक वाक्यीय संक्रिया, जो ऐसे नियम की ओर संकेत करती है जो संरचना के कतिपय तत्त्वों को सहवर्ती स्थिति में यह ज्ञात करने के उद्देश्य से रखती है कि कैसे ये संरचनाएँ बृहत्तर इकाई में एक साथ जाती है। इसमें नवीन आसन्धि 'ख' का निर्माण कर एक घटक 'क' को 'ख' से संयुक्त किया जाता है। यह नवीन आसंधि 'ख' 'क' और 'ख' को शासित करता है और स्वयं ग से शासित होता है, यथा -



इसके व्यतिरेकी अनुबन्धन में निम्नलिखित स्थिति होती है-



चित्र लिपि pictography

लिपि का वह आद्य रूप जिसमें प्रत्येक प्रतीक किसी वस्तु, उपादान या विचार की अभिव्यक्ति करता है ये प्रतीक चित्र रूप में होते हैं, यथा -  सूर्य,  वृक्ष।

चिह्नक marker

कोशीय मदों के आर्थी घटक के द्विविधात्मक वर्गीकरण के लिए प्रजनक भाषाविदों ने इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग किया। चिह्नक किसी कोशीय मद के अर्थ का वो घटक होता है जिसके सम्बन्ध व्यवस्थित होते हैं, जैसे - (सजीव) एक चिह्नक है जो (+सजीव) कोशीय मद के (-सजीव) कोशीय मदों के साथ सहप्रयोग सम्बन्धी चयनपरक प्रतिबन्ध में लक्षित होता है, जैसे - हिन्दी का वाक्य *कुत्ता पढ़ रहा है। अर्थ के वे घटक जो इस प्रकार कार्य नहीं करते हैं भेदक कहलाते हैं।

चिह्नितता markedness

भाषाविज्ञान के एक विश्लेषणात्मक सिद्धान्तान्तर्गत प्रतियोग माने जाने वाले भाषिक अभिलक्षण के युग्मों को घनात्मक (चिह्नित), तटस्थ तथा ऋणात्मक (अचिह्नित) ये भिन्न-भिन्न मूल्य दिए जाते हैं। सामान्य शब्दों में कह सकते हैं कि यह भेद किसी भाषिक अभिलक्षण की उपस्थिति या अनुपस्थिति की सूचना देता है।

प्राग् सम्प्रदाय के स्वनप्रक्रियात्मक अध्ययन में इस अवधारणा का प्रयोग मिलता है। इस सिद्धान्त में किसी ध्वनि में विशिष्ट भेदक अभिलक्षण युक्त होने पर उसे चिह्नित (यथा - घोषता) तथा लक्षण का अभाव होने पर अचिह्नित कहा गया। [+घोष] चिह्नित के लिए तथा [-घोष] अचिह्नित के लिए लिखा जाता है। आधुनिक प्रजनक भाषाविज्ञान में सामान्य **चिह्नितता सिद्धान्त** अधिक उभर कर सामने आया। इनके मतानुसार समस्त भाषाओं में प्राप्त सामान्य प्रवृत्तियाँ चिह्नित वर्ग में आती हैं तथा इन सामान्य प्रवृत्तियों से भिन्न प्रवृत्ति अचिह्नित कहलाती हैं अर्थात् यह अपवाद रूप में मिलती है।

ज

जपित whisper

सुरतन्त्रियों की वह स्थिति जब उनके ऊपर का भाग एक दूसरे के साथ पूरी तरह सट जाए जिससे उनमें कम्पन नहीं होता है तथा नीचे की सुरतन्त्रियाँ इतनी खुली होती हैं कि इस भाग में भी प्रकंपन संभव नहीं होता है।

जपित स्वर whispered vowel

स्वरों का ऐसा अघोषवत उच्चारण जिसमें स्वर स्वतन्त्रियाँ इतनी दूर रहती हैं कि उनके बीच से आने वाली हवा बिना किसी घर्षण अथवा कम्पन के निकल जाती है। हिन्दी की बोली अवधी के विशिष्ट इ, उ, ए के अघोष रूप जपित स्वर कहलाते हैं और घोष रूप से इनकी भिन्नता प्रदर्शित करने के लिए इनके नीचे छोटा-सा वृत बना देते हैं।

जनभाषा lingua franca

विविध मातृभाषाभाषी किसी समुदाय के सदस्य रूप में वाक् व्यवहार के लिए जिस बोलचाल की भाषा का प्रयोग करते हैं उसे समाजभाषाविज्ञान में जनभाषा का नाम दिया जाता है। सम्प्रति अंग्रेजी विश्व की सर्वाधिक प्रयुक्त जनभाषा है इस शृंखला में आने वाली दूसरी भाषा फ्रेंच है। भारतवर्ष के सन्दर्भ में हिन्दी को जनभाषा कहा जा सकता है।

ज-ह विलोपन whiz deletion

प्रजनक व्याकरण में उल्लिखित एक प्रकार का रूपान्तरण जो सम्बन्धवाचक सर्वनाम एवं उससे सम्बन्धित क्रिया को सम्बन्धपरक उपवाक्य से हटाता है जिसके फलस्वरूप उत्तरवर्ती-विकृत-पदबन्ध व्युत्पन्न होता है, उदाहरणार्थ - आदमी जो पेड़ से गिरा वाक्य में जो। 'जो' का लोप होकर आदमी पेड़ से गिरा वाक्य बनता है।

जातिवृत्त phylogeny

किसी भाषा विशेष के ऐतिहासिक विकास एवं ह्रास का अध्ययन विश्लेषण उसका जातिवृत कहलाता है। यह अध्ययन एक भाषिक समुदाय की भाषा या प्राचीन लिखित सामग्री से सम्बन्धित हो सकता है।

जिह्वा tongue

वाक्ध्वनियों के उच्चारण में संलग्न वाक् अंगों में एक प्रमुख अंग जिह्वा है जो मुख में तालु के नीचे चपटी, लम्बी व लचीली होती है। जिह्वा को ही पाँच भागों में विभक्त किया जाता है - जिह्वाग्र, जिह्वाफलक, जिह्वामध्य, जिह्वापश्च एवं जिह्वामूल।

जिह्वाग्र tip of the tongue

जिह्वा का सबसे आगे का भाग या नोंक जिसका प्रयोग कतिपय स्वनों के उच्चारण में किया जाता है। हिन्दी दन्त स्वनों के उच्चारण के लिए जिह्वाग्र का दांतों से स्पर्श कराया जाता है।

जिह्वा-फलकीय coronal

चॉमस्की एवं हॉले द्वारा प्रतिपादित स्वनप्रक्रिया के प्रभेदक अभिलक्षण सिद्धान्त में ध्वनि के जिन अभिलक्षणों की चर्चा मिलती है उनमें से एक जिह्वाफलकीय है। इन ध्वनियों का उच्चारण जिह्वा फलक को तटस्थ स्थिति से ऊपर उठा कर होता है। वर्त्स्य दन्त तथा तालु वर्त्स्य व्यञ्जन (त्, द्, स्) जिह्वाफलकीय हैं। इसकी विलोम **अजिह्वाफलकीय** ध्वनियाँ होती हैं जिनका उच्चारण जिह्वाफलक को तटस्थ स्थिति में रखकर होता है, यथा - कोमल तालव्य तथा ओष्ठ व्यञ्जन। प्रथम को (+ जिह्वाफलकीय) तथा द्वितीय को (-जिह्वाफलकीय) कहते हैं।

जिह्वा-स्खलन slip of tongue

एक प्रकार की वाग्ध्वनि उच्चारण त्रुटि जिसका अध्ययन स्वनविज्ञान एवं मनोभाषाविज्ञान के अन्तर्गत किया जाता है। विद्वानों का मानना है कि इसका मानसिक या स्नायविक कारण भी होता है, जैसे - दावल चाल (चावल दाल) अथवा Is the bean dizzy? (Is the dean busy?) आदि प्रयोग।

जिह्वीय lingual

सामान्यत: जिह्वा से उच्चरित स्वन जिह्वीय कहलाते हैं। यहाँ जिह्वा करण के रूप में दंत, वर्त्स या मूर्धा को स्पर्श करने पर स्वन उच्चरित होता है।

जे.आर. फ़र्थ J.R. Firth

फ़र्थ 1944 से 1956 तक लंदन विश्वविद्यालय के `स्कूल ऑफ ओरिएण्टल एण्ड एफरीकन स्टडीज़' में सामान्य भाषाविज्ञान के आचार्य रहे। उन्हें भाषाविज्ञान के लंदन सम्प्रदाय के प्रमुख सिद्धान्तशास्त्री होने का गौरव प्राप्त था। फ़र्थ पर मानवविज्ञानी वी. मैलिनोफस्की के विचारों का गहरा प्रभाव था। अमरीकी संरचनात्मक भाषाविदों के विपरीत फ़र्थ ने भाषिक अध्ययन में अर्थ को केन्द्रीय महत्त्व दिया। इन्होंने मैलिनोफस्की द्वारा रचित **स्थिति - संदर्भ** (context of situation) पद को विस्तृत अर्थ में ग्रहण किया। मैलिनोफस्की के लिए `स्थिति-संदर्भ' किसी उक्ति का वास्तविक भौतिक परिवेश था तो फ़र्थ के लिए वह सम्बन्ध-क्षेत्र था। जिसके अन्तर्गत वे सम्बन्ध आते हैं जो वक्ता द्वारा बोले हुए शब्दों तथा उनसे सम्बन्धित वस्तुओं, घटनाओं आदि के मध्य घटित होते हैं।

जेनेवा सम्प्रदाय Geneva school

स्विस भाषाविद् फर्दिनान्द डी सेस्यूर के विचारों से प्रभावित हो जेनेवा विश्वविद्यालय में 1906 से 1911 के मध्य कतिपय विद्वानों ने भाषाविज्ञान का अध्यापन किया। विद्वानों के इस वर्ग को जेनेवा सम्प्रदाय नाम दिया गया। इस सम्प्रदाय के चार्ल्स बेली आदि विद्वानों ने सेस्यूर के सिद्धान्तों की स्थापना कर अनेकानेक क्षेत्रों में उनका अनुप्रयोग किया।

जैव भाषाविज्ञान bio-linguistics

भाषाविज्ञान की एक प्रगतिशील शाखा जिसमें मानव में भाषा के विकास एवं प्रयोग से सम्बन्धित अनिवार्य जैविक पूर्व शर्तों का अध्ययन किया जाता है। यह अध्ययन किसी जाति में हुए भाषा विकास के इतिहास अथवा व्यक्ति विशेष के भाषा विकास दोनों सन्दर्भों में किया जा सकता है। जैव भाषाविज्ञान में मुख्यत: भाषा का अनुवांशिक प्रसार, भाषा की उत्पत्ति से सम्बन्धित तंत्रिका शरीरवैज्ञानी प्रारूप आदि विषयों पर चर्चा की जाती है।

ट

टॉपिक topic

वाक्य संरचना को पारम्परिक वर्गीकरण उद्देश्य एवं विधेय से भिन्न दो वर्गों में विभाजित किया गया टॉपिक एवं कमेन्ट। वाक्यान्तर्गत जिस वस्तु या व्यक्ति के विषय में कुछ निर्देश हो उसे टॉपिक की संज्ञा देते हैं जबकि वस्तु / व्यक्ति के विषय में कहा गया कथन/निर्देश कमेन्ट कहलाता है। यह वर्गीकरण वाक्यों के मध्य प्राप्त सम्बन्धों की सामान्य चर्चा करने में समर्थ है। किन्तु कभी-कभी वाक्य में इस प्रकार का विभेद स्थापित करना कठिन हो जाता है।

टिप्पणी comment

पारम्परिक दृष्टि से वाक्य संरचना को उद्देश्य एवं विधेय दो वर्गों में विभाजित किया गया। इसी प्रकार का एक अन्य द्विचर वर्गीकरण व्याकरण तथा अर्थ विज्ञान में प्राप्त होता है जिसे टॉपिक एवं कमेंट की संज्ञा देते हैं। एक वाक्य का टॉपिक वह व्यक्ति या वस्तु होती है जिसके बारे में कुछ कहा जाए जबकि कमेंट वाक्य का वह अंश है जो इस सन्दर्भ में आगे कुछ कहता है। 'राम बाजार जाता है' वाक्य में 'राम' टॉपिक तथा वाक्य का शेष अंश कमेंट हैं। इसी के सदृश एक अन्य वर्गीकरण थीम (कथ्य) तथा रीम (पक्ष पद) नाम से भी किया जाता है।

व्याकरणिक विवरण के कुछ प्रारूपों में **कमेंट उपवाक्य** नामक एक प्रकार की चर्चा की जाती है। इससे तात्पर्य एक वैकल्पिक संरचना से है जिसका कार्य किसी अन्य उपवाक्य में निक्षिप्त कमेंट योजित करना होता है। अंग्रेजी में अनेक प्रकार के कमेंट उपवाक्य मिलते हैं, यथा - You know, to be honest, generally speaking। प्रायः इनका प्रयोग बातचीत के मध्य खाली स्थान की पूर्ति के लिए होता है और इनके अनेक जटिल कार्य भी होते हैं, यथा - You see, mind you, I see आदि। 'मेरा मतलब यह है कि'; 'वास्तविकता में' आदि रचनाएँ हिन्दी कमेंट उपवाक्य के उदाहरण हैं।

ड

डब्लू.डी. विह्टने W.D. Whitney

भाषाविज्ञान की जर्मन परम्परा को अमरीकी शिक्षण संस्थाओं तक पहुंचाने का श्रेय विह्टने को जाता है, जो स्वयं संस्कृत के शिक्षक थे। इनकी पुस्तकें Sanskrit Grammar, Language and the Study of Language तथा Life and Growth of Language आदि थीं। अपनी पुस्तकों में इन्होंने जिस मनोदृष्टि एवं भाषिक पद्धति की चर्चा की उसका अनुपालन तत्कालीन अमरीकी शिक्षण संस्थानों में नहीं मिलता है। इन्होंने भाषा को मानवीय सामाजिक संस्था माना, जो मनुष्य को सभ्यता और संस्कृति के पथ पर अग्रसर करती है। इनके अनुसार भाषा गत्यात्मक है और भाषाविज्ञान ऐतिहासिक विज्ञान।

डमी dummy

विश्लेषण के लिए प्रतिपादित किया गया एक रूपात्मक व्याकरणिक तत्त्व जो व्याकरणिक वाक्य की उत्पत्ति सुनिश्चित करता है। रूपात्मक भूमिका के अतिरिक्त डमी तत्त्वों का कोई अर्थ नहीं होता है अत: वे आर्थी दृष्टि से रिक्त होते हैं, यथा - 'वहाँ स्कूल में बहुत से बच्चे थे' या 'यहाँ कमरे में बहुत ठंड है' इन वाक्यों में आगत 'वहाँ' तथा 'यहाँ' शब्द। कुछ विद्वान शून्य रूपिम की अवधारणा को भी डमी का एक भेद मानते हैं।

रूपान्तरण व्याकरण में भी वाक्य प्रकारों की व्युत्पत्ति स्पष्ट करने के लिए आन्तरिक संरचना में डमी चिन्हों का प्रयोग किया जाता है, जैसे- विविध प्रकार के सीमा चिह्न या डेल्टा (△) प्रतीक जो कोशीय मदों के लिए स्थान-धारक का कार्य करते हैं।

डेल्टा delta

रूपात्मक व्याकरण के प्रादर्शों में प्रयुक्त एक प्रतीक जो आन्तरिक संरचना के प्रजनन में मूक तत्त्व की भाँति कार्य करता है। डेल्टा प्रतीक का उद्देश्य आरम्भिक पदबन्ध

चिह्नक में ऐसे स्थान को चिह्नित करना है जहाँ बाद में कोशीय मदों को जोड़ा जाए। तत्पश्चात कोशीय निवेश नियम प्रत्येक रिक्त डेल्टा के स्थान पर वाक्यीय अभिलक्षणों से युक्त एक जटिल प्रतीक को प्रतिस्थापित करते हैं। ये वाक्यीय अभिलक्षण व्याकरण की आन्तरिक संरचनाओ की व्याख्या में सहायक होते हैं।

त

तंत्रिका भाषाविज्ञान neurolinguistics

भाषाविज्ञान की एक शाखा जो मानवीय भाषा विकास एवं प्रयोग के तंत्रिका-वैज्ञानिक आधारों का अध्ययन करती है। साथ ही वाक्व्यवहार एवं लेखन प्रक्रिया पर मस्तिष्क नियन्त्रण सम्बन्धित अध्ययन विश्लेषण करती है। नैदानिक भाषिक परिस्थितियों (उच्चारण वैकल्य, हकलाहट, भाषाघात) का अध्ययन तथा प्राचलिक (para-metric) स्वनिक पारिभाषिक शब्दों में वाक् उच्चारण का अध्ययन (जिह्वा स्खलन, झिझकना आदि सामान्य वाक् त्रुटियों के सन्दर्भ में) तंत्रिका भाषाविज्ञान के दो प्रमुख केन्द्रीय क्षेत्र हैं।

तटस्थ स्थिति neutral position

बोलने के तत्काल पूर्व वाक् पथ की अवस्था। इस अवस्था में ओष्ठ शिथिल स्थिति में दिखाई पड़ते हैं, अलिजिह्वा के उठे रहने के कारण नासिका विवर बन्द रहता है, निचला जबड़ा थोड़ा सा नीचे होता है, जिह्वा उस ऊँचाई पर आती है जहाँ से अंग्रेजी स्वर [e] का उच्चारण होता है।

तटस्थ स्वर neutral vowel

ऐसा स्वर जिसके उच्चारण में जिह्वा मध्यवर्ती स्थिति में हेती है अर्थात् उसका अग्र या पश्च भाग उठता नहीं है, वह मुख में विश्राम की स्थिति में होती है। प्रायः इसे श्वा schwa [ə] कहते हैं। अंग्रेजी asleep, about शब्दों का प्रथम स्वर तथा mother, cover का अन्तिम स्वर इस वर्ग में आता है।

तत्त्व element

भाषाविज्ञान के क्षेत्र में सामान्य अर्थ में, इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग अंश के लिए किया जाता है किन्तु व्याकरणिक विश्लेषण में, सीमित अर्थ में, सोपानिकी में किसी इकाई के आसन्न / सन्निहित घटकों को तत्त्व की संज्ञा दी जाती है, यथा - कर्ता, क्रिया आदि

उपवाक्य संरचना के तत्त्व हैं और प्रत्यय शब्द संरचना के।

तत्सम शब्द tatsam

भाषा में शब्द किस स्रोत से आया है इस आधार पर भारतीय परम्परा में, शब्दों के चार वर्ग किए गए - तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशी। तत्सम का शाब्दिक अर्थ है 'उसके समान' अर्थात् हिन्दी के परिप्रेक्ष्य में, 'संस्कृत के समान' जैसे हिन्दी के कृष्ण, वधू, कर्म, सपत्नी मूलत: संस्कृत के शब्द हैं। उल्लेखनीय है कि ये शब्द सदा संस्कृत के ही नहीं होते हैं बल्कि, अन्य भाषाओं से संस्कृत में आए और वहाँ से हिन्दी में प्रयुक्त हुए, जैसे - गो और लौह सुमेरी शब्द हैं।

तद्भव शब्द tadbhav

वे शब्द जो संस्कृत से उत्पन्न या विकसित हुए हैं, वे तद्भव कहलाते हैं, जैसे - काम (कर्म); दूध (दुग्ध); नाच (नृत्य) आदि।

तरंग wave

भाषा परिवर्तन के गत्यात्मक प्रारूप में तरंग सिद्धान्त की चर्चा की गई। इस सिद्धान्त के अनुसार किसी विशिष्ट भाषिक क्षेत्र से भाषा परिवर्तन जब आगे फैलता है तब उसका सर्वाधिक प्रभाव निकटवर्ती भाषाओं पर होता है तथा दूरस्थ स्थित भाषाएँ कम प्रभावित होती हैं। यह प्रक्रिया ठीक उसी प्रकार कार्य करती है जैसे तरंग का जल केन्द्रीय सम्पर्क बिन्दु से चारों तरफ फैलता है।

तरल liquid

घर्षणरहित व्यंजन जिसका उच्चारण स्वर की तरह प्रलंबित हो सकता है। यह कंपित या रिफित और पार्श्विक अनुनादी व्यंजन दोनों का समावेशक नाम है (ल) और (र) इसी प्रकार के स्वन हैं।

ताड़ित tapped

उच्चारण प्रयत्न के आधार पर किया गया व्यञ्जन स्वनों का एक वर्ग, जिसके उच्चारण में करण (सामान्यत:जिह्वाग्र अथवा जिह्वाफलक) एक झटके के साथ उच्चारण

स्थान पर सिर्फ एक आघात करता है। ताड़ित व्यंजन के उच्चारण की प्रक्रिया ताड़न (tap) कहलाती है। अमरीकी अंग्रेजी में writer, rider जैसे शब्दों के मध्यवर्ती / t / या / d / में यह उच्चारण सुना जा सकता है।

तात्कालिक instantaneous

स्वनप्रक्रिया के प्रभेदक लक्षण सिद्धान्त में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द जिसका प्रयोग `तात्कालिक विमोचन' पदबन्ध में किया जाता है। अचानक मुख से छोड़ी / निसृत वायु जिसमें संघर्षी स्वनों की भाँति ध्वानिक संघर्षण / प्रक्षोभ नहीं होता को तात्कालिक विमोचन कहते हैं। व्, त्, क् तात्कालिक विमोचन वाली ध्वनियाँ हैं। यदि वायु का विमोचन इस प्रकार देर से हो कि वायु प्रवाह किसी संघर्षण या प्रक्षोभ के साथ निकले तो इन स्वनों को विलंबित मोचन वाले स्वन कहते हैं। सभी स्पर्श-संघर्षी स्वन च् छ् ज् झ् ञ् इसी वर्ग में आते हैं।

तान tone

किसी अक्षर के भेदक सुर स्तर को सन्दर्भित करने वाला पारिभाषिक शब्द। तान अभिव्यक्ति के दो स्तर हैं **परिरेखा तान** (contour tone) एवं **समतान** (register tone)। तान का वह रूप जिसमें सुर अपेक्षाकृत परिवर्तनशील होता है परिरेखा तान कहलाता है, जैसे - चीनी, थाई, वियतनामी भाषाओं में। किसी तान प्रधान भाषा की वह तान-व्यवस्था जिसमें एक तान को दूसरी तान से अलग चिह्नित रूप में पहचाना जा सके समतान कहलाती है। तान की यह प्रकृति लुगांडा, जुलु और योरूबा आदि अफ्रीकी भाषाओं में मिलती है। तान के धरातल का स्वनिम **तान स्वनिम** (toneme) कहलाता है।

तारांकित रूप starred form

किसी अग्राह्य या अव्याकरणिक रचना (शब्द, पदबंध, वाक्य) को चिह्नित करने के लिए उसके पूर्व तारक चिह्न अंकित किया जाता है, जैसे- *वह कुत्ते किताब खायेंगे। ऐतिहासिक भाषाविज्ञान में तारांकित रूप पुनर्गठित रूप की ओर संकेत करता है अर्थात् जिसका दो या अधिक सम्बद्ध भाषाओं के आधार पर गठन किया गया हो किन्तु जो लिखित पाठ द्वारा प्रमाणिक सिद्ध नहीं हुआ हो, जैसे - संस्कृत, ग्रीक, लैटिन के आधार पर मूल भारोपीय भाषा के शब्दों का पुनर्गठन किया गया किन्तु तत्कालीन लिखित सामग्री के अभाव में उनकी सत्यता जाँची नहीं जा सकती *तार्तर।

तारकचिह्न asterisk

प्रजनक भाषाविज्ञान में अव्याकरणिक एवं अस्वीकार्य भाषिक रचनाओं (वाक्य, पदबन्ध) को, प्रारम्भ में तारक चिह्न लगा कर चिह्नित किया जाता है, यथा - *जाता बाजार मेरा है भाई। तुलनात्मक एवं ऐतिहासिक भाषाविज्ञान विषयक अध्ययन में शब्दों के पूर्व इसे लगाने पर यह घोषित होता है कि वह शब्द या वाक्य भाषा में वस्तुत: उपलब्ध नहीं है, परन्तु उसे ज्ञात सामग्री और भाषावैज्ञानिक नियमों के आधार पर पुनर्गठित किया गया है, यथा - मूल भारोपीय भाषा के लिए गठित रूप *bheudh।

तालव्य palatal

वह स्वन जिसके उच्चारण में कठोर तालु उच्चारण स्थान का तथा जिह्वा का अग्र भाग करण होता है, जैसे - हिन्दी च् छ् । आधुनिक भाषाविदों के अनुसार यह कोटि स्वर विभाजन के लिए भी प्रयुक्त होनी चाहिए, जैसे - हिन्दी इ तालव्य स्वर है। किसी अतालव्य स्वर का ऐतिहासिक सन्दर्भ में तालव्य हो जाना **तालव्यीकरण** कहलाता है। इस स्थिति में, किसी स्वन के प्राथमिक उच्चारण के साथ-साथ तालव्य स्वन का उच्चारण उस पर आरोपित हो जाता है। स्वन्यात्मक प्रतिलेखन में तालव्यीकरण का प्रतिरूपण कई तरह से किया जाता है, जैसे - [t̡], [t], [tʲ] और [t']।

तालिका inventory

भाषा के किसी स्तर या क्षेत्र से सम्बन्धित मदों की अक्रमित सूची तालिका कहलाती है, यथा - हिन्दी भाषा के स्वनिमों की सूची हिन्दी भाषा की 'स्वनिमिक तालिका' नाम से अभिहित की जायेगी।

तालु palate

मुंह के भीतर अर्धवृत्ताकार छत जैसा भाग जिसका वाक् ध्वनियों के उच्चारण में विशेष योगदान होता है। यह मुँह के ऊपरी दंतमूल से लेकर (अलिजिह्वा) कौए तक फैला होता है। इसे दो वर्गों में विभाजित किया जाता है **कठोर तालु** वर्त्स्य प्रदेश के ठीक पीछे से लेकर अर्धवृत्ताकार छत का सबसे ऊँचा भाग अर्थात् मूर्धा के बीच का अचलायमान क्षेत्र: तथा **कोमल तालु** मूर्धा से लेकर अलिजिह्वा तक का चलायमान माँसीला क्षेत्र। ध्वनि उत्पादन में कोमल तालु का विशेष महत्त्व होता है क्योंकि इसको नियन्त्रित करने वाली माँसपेशियाँ इसको ऊपर नीचे उठा कर गिरा सकती हैं जिससे मौखिक या नासिक्य

ध्वनियाँ उच्चरित होती हैं। यह जानना कठिन होता है कि किस स्वन के उच्चारण में मुँह के अन्दर जिह्वा तालु के किस स्थान से सम्पर्क कर रही है। अनेक प्रकार की तकनीकियों द्वारा इस तथ्य को उद्‌घाटित करने का प्रयास किया गया। कृत्रिम तालु का चित्र एवं तदनुसार रेखांकन **तालु लेख** कहलाता है।

तालु-वर्त्स्य palato-alveolar

वर्त्स्य एवं तालव्य दो स्वनों की विशेषताओं से युक्त स्वन जिसके उच्चारण में वर्त्स और तालु के बीच का कोई बिन्दु उच्चारण स्थान और जिह्वा फलक करण होता है, जैसे - अंग्रेजी के shoot एवं child शब्दों की प्रथम ध्वनियाँ।

तिर्यक् oblique

ऐसी भाषाएँ जिनमें व्याकरणिक सम्बन्धों की अभिव्यक्ति विभक्ति द्वारा होती है। तिर्यक् शब्द संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप कहलाता है जो अचिह्नित या कर्ता कारक के अतिरिक्त शब्द के समस्त कारकीय रूपों का द्योतक होता है, जैसे - हिन्दी 'लड़का' शब्द कारक चिह्न लगाने के पूर्व परिवर्तित हो जाता है लड़के-लड़कों ने /को/ से आदि जबकि सामान्य स्थिति में बहुवचन रूप 'लड़के' होता है।

तीक्ष्ण sharp

यकोब्सन एवं हॉले द्वारा प्रतिपादित स्वनप्रक्रिया के भेदक अभिलक्षण सिद्धान्त में निरूपित ध्वनि का एक लक्षण जो सह उच्चारण का वर्णन करने में सहायक होताहै। सह उच्चारण के रूप में यहाँ तालव्यीकरण की प्रक्रिया महत्त्व रखती है। इन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा कठोर तालु की ओर उठी होती है तथा निकोच के पीछे चौड़ा क्षेत्र होता है। सभी तालव्यीकृत व्यंजन+तीक्ष्ण होते हैं। इन विशेषताओं से हीन व्यंजन अतीक्ष्ण कहलाते हैं।

तीव्रक intensifier

अंग्रेजी में क्रिया विशेषण का एक वर्ग जो वाक्य के अन्य घटकों के अर्थ में वृद्धि या उनका ह्रास करता है, यथा - very, difinitely, kind of इत्यादि। हिन्दी की संयुक्त क्रियाओं की द्वितीय क्रिया कोई स्वतन्त्र कोशीय अर्थ नहीं व्यक्त करती है और प्रथम क्रिया के ही अर्थ को विकसित, सीमित या रंजित करती है अतः इन्हें तीव्रक कहते हैं, जैसे

- 'कर लेना', 'भाग जाना', 'रो पड़ना' आदि। इन दृष्टान्तों में प्रयुक्त 'लेना, जाना, पड़ना' का अन्यत्र स्वतन्त्र अर्थ होता है लेकिन संयुक्त क्रियाओं में यह तीव्रक के रूप में प्रयुक्त होने पर अपने मूल कोशीय अर्थ से विहीन हो जाते हैं।

तुलनात्मक comparative

भाषाविज्ञान की एक प्रमुख शाखा जिसके अन्तर्गत दो या दो से अधिक भाषाओं और बोलियों के मध्य प्राप्त विषमताओं का अध्ययन किया जाता है या एक ही भाषा की विविध ऐतिहासिक अवस्थाओं की तुलना की जाती है। 19वीं शताब्दी में तुलनात्मक विश्लेषण पूर्णत: ऐतिहासिक था और भाषाविदों ने संस्कृत, ग्रीक, लैटिन आदि भाषाओं के पारस्परिक सम्बन्धों की स्थापना कर भाषा परिवार का प्रतिपादन एवं इनके मूल रूप (अर्थात् वह भाषा जिससे ये परिवार विकसित हुए) की परिकल्पना की। प्रारम्भ में इस प्रकार के अध्ययन **तुलनात्मक वाङ्मीमांसा** या **तुलनात्मक व्याकरण** नाम से प्रसिद्ध हुए।

तुलनात्मक पद्धति से तात्पर्य एक ऐसी मानक तुलनात्मक वाङ्मीमांसा तकनीकी से है जो सजात भाषाओं से ग्रहीत रूपों के निश्चित समुच्चय की तुलना उनके मध्य प्राप्त ऐतिहासिक सम्बन्धों के निर्धारण हेतु करती है। भाषाओं के मध्य सम्बन्ध स्थापित हो जाने पर इस विश्लेषण के आधार पर पूर्वज भाषा की उन विशेषताओं का भी निगमन किया जा सकता है जिनके आधार पर सम्बन्धित भाषाओं की उत्पत्ति का अनुमान लगाया जाए। इस प्रक्रिया को **तुलनात्मक पुनर्निर्माण** की संज्ञा देते हैं।

बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में भाषाविदों ने द्विकालिक के स्थान पर संकालिक विश्लेषण पर अधिक बल और सम्प्रति तुलनात्मक भाषाविज्ञान में जीवित भाषाओं के मध्य प्राप्त संरचनात्मक संवादिता का सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक विश्लेषण किया जाता है तथा इतिहास पर ध्यान न देते हुए भाषा के सामान्य प्रकारों की स्थापना (प्ररूपविज्ञान) और अन्तत: मानवीय भाषा के सार्वभौमिक गुणों का प्रतिपादन ही इसका उद्देश्य है।

तुल्यता equivalence

ऐसे व्याकरण जो समान वाक्य समुच्चय प्रजनित करें, समतुल्य या दुर्बल तुल्यता वाले कहलाते हैं तथा जो व्याकरण समान पदबन्ध चिह्न समुच्चय प्रजनित करें वह प्रबल तुल्यता वाले होते हैं क्योंकि ऐसे व्याकरण न केवल समान वाक्य प्रजनित करते हैं वरन् उनके लिए समान संरचनात्मक वर्णन भी नियत करते हैं। ऐसे व्याकरण जो असमान वाक्य समुच्चय प्रजनित करें अथवा जिनका संरचना सम्बन्धी कोष्ठीकरण नामांकन

भिन्न हो उन्हें असमतुल्य कहते हैं। तुल्यता का प्रयोग वाक्यीय एवं आर्थी सन्दर्भों में भी मिलता है, यथा- वितरणात्मक तुल्यता अर्थात् समान वितरण वाली इकाइयों के बीच प्राप्त तुल्यता या आर्थी समतुल्यता अर्थात् समानार्थकता।

तुल्य--सप लोप equi-NP deletion

यह रुपान्तरण वाक्य रचना का एक अनिवार्य नियम है जो किसी वाक्य के पूरक उपवाक्य में आगत संज्ञा को उस स्थिति में लुप्त करता है, जबकि वह उसी वाक्य के मुख्य उपवाक्य में आगत संज्ञा से, अर्थ में समरूप हो, उदाहरणार्थ - 'राम आम खाना चाहता है' वाक्य की व्युत्पत्ति दो मूलाधार वाक्यों 'राम कुछ चाहता है'; `राम आम खाता है' द्वारा विश्लेषित की जा सकती है। इन वाक्यों को साथ रखने पर इनकी परिणामी संरचना, द्वितीय राम शब्द के लोप की आकांक्षा करती है।

तृतीयक प्रतिक्रिया tertiary response

भाषाविज्ञान के क्षेत्र में इस शब्द का प्रयोग अमरीकी भाषाविद् एल. ब्लूमफील्ड द्वारा किया गया। जब कोई वक्ता अपनी भाषा उक्तियों को स्वयं मूल्यांकित करे तो यह दृष्टिगोचर तृतीयक प्रतिक्रिया होगी, उदाहरणार्थ - 'बंगला भाषा मीठी होती है' कहने वाला वक्ता-द्वितीय प्रतिक्रिया कर रहा है। इस कथन पर विवाद उठने पर यदि वही वक्ता अपने कथन के पक्ष में कुछ कहे या उसकी व्याख्या करने का प्रयास करे तो यह उसकी तृतीयक प्रतिक्रिया होगी।

त्रिस्वर संध्यक्षर tripthong

उच्चारण प्रयत्न के आधार पर किया गया स्वन ध्वनियों का एक वर्गीकरण, जो ऐसे स्वर की ओर संकेत करता है जहाँ एक अक्षर के उच्चारण में दो उल्लेखनीय गुण परिवर्तन होते हैं, जैसे - अंग्रेजी के dire और hire [ai]। यह एकाक्षरी तीन स्वरों का समूह भी कहा जा सकता है।

त्रुटि error

मस्तिष्क द्वारा दिए गए आदेशों के पालन में यदि तंत्रिका पेशीय अपक्रिया के कारण सहज बोलने या लिखने में गलती हो तो उसे मनोभाषाविज्ञान में त्रुटि कहते हैं। यह

त्रुटि की पारम्परिक अवधारणा से भिन्न है जो वक्ता की मानक अभिव्यक्तियों के अनुरूप भाषा प्रयोग न होने के कारण घटित होती है। इस प्रकार की अनेकों मनोभाषिक त्रुटियों की आज चर्चा की जाती है, यथा - मस्तिष्क द्वारा दिए गए आदेश पालन के समय या अनुक्रम से सम्बन्धित कठिनाइयाँ स्वनिम या रूपिम आगम, लोप या स्थानापत्ति का कारण बनती हैं। एक बहुप्राप्त त्रुटि **जिह्वा स्खलन** है जिसे मनोभाषाविज्ञान में **मस्तिष्क स्खलन** कहते हैं। साथ ही गलत प्रारम्भ (समय के पहले स्वनिम/रूपिम का उच्चारण) अवरोध आदि दैनिक बोलचाल की भाषा में प्राप्त अन्य सामान्य त्रुटियाँ हैं। भाषार्जन के समय श्रोता सम्बन्धी त्रुटियाँ भी होती हैं, यथा - भूख > भूक, छोटा > छोता, हाथ > हात शब्दों का उच्चारण। **त्रुटि विश्लेषण** भाषा शिक्षण एवं अर्जन में प्रयुक्त ऐसी तकनीकी है जो भाषा-विज्ञान द्वारा प्रतिपादित किसी सिद्धान्त एवं प्रक्रिया के आधार पर विदेशी भाषा शिक्षण में वक्ता द्वारा उच्चरित अग्राह्य रूपों का निर्धारण, वर्गीकरण कर उनकी, व्यवस्थित व्याख्या करती है। विद्वानों की मान्यता है कि त्रुटियाँ किसी शिक्षार्थी द्वारा प्राप्त दक्षता स्तर को व्यवस्थित रूप में प्रतिबिम्बित करती हैं। इन त्रुटियों और गलती में अन्तर है गलतियाँ भाषिक प्रयोग की सीमाएँ हैं जिन्हें शिक्षार्थी दूर करने में समर्थ होता है।

द

दंतोष्ठ्य labio-dental

वह व्यञ्जन जिसके उच्चारण में ऊपर के सामने वाले दाँत उच्चारण-स्थान का और नीचे का ओंठ करण का कार्य करता है, जैसे - अंग्रेजी f, v तथा हिन्दी फ़ और चावल, आवाज़, संवाद का 'व'।

दंत्य dental

ऐसी ध्वनियाँ जिनके उच्चारण में दाँत उच्चारण स्थान का तथा जिह्वाग्र करण का कार्य करता है, दंत्य कहलाती हैं। प्राय: ऊपर के दाँत ही ध्वनि उच्चारण में संलग्न होते हैं, यथा - भारतीय भाषाओं का तवर्ग, फ्राँसीसी का t, d आदि। दंत्य उच्चारण का स्वनिक प्रतीक [̪] सम्बद्ध व्यञ्जन के नीचे लगाया जाता है, जैसे- [t̪]।

दक्षिण शाखन right branching

वह रचना जिसकी व्युत्पत्ति संरचनात्मक संक्रियाओं के जटिल अनुक्रम द्वारा हो और आरेख पर जिसका प्रतिरूपण दक्षिण शाखा पर उत्तरोत्तर बढ़ती हुई जटिलता द्वारा किया जाए, उदाहरणार्थ - the pen of the sister of the teacher.... दक्षिण शाखन ऐसी दक्षिण पुनरावर्ती संरचना है जो the teacher's sister's pen से व्यतिरेक प्रदर्शित करती है जिसमें वाम शाखन हुआ है।

दर्शनशास्त्रीय भाषाविज्ञान philosophical linguistics

भाषाविज्ञान की एक अल्पविकसित शाखा जो एक तरफ दार्शनिक प्रमेयों एवं अवधारणाओं की व्याख्या में भाषा की भूमिका का उल्लेख करती है तो दूसरी ओर भाषिक सिद्धान्तों, पद्धतियों एवं निरीक्षणों के दार्शनिक आधार जानने का प्रयास करती है। दर्शनशास्त्री द्वारा इन बिन्दुओं पर चर्चा किए जाने पर इस विषय को **भाषिक दर्शन** या **भाषा का दर्शन** नाम दिया जाता है।

दाब pressure

चॉमस्की एवं हॉले द्वारा प्रतिपादित स्वनप्रक्रिया के भेदक अभिलक्षण सिद्धान्त के उच्चारण प्रयत्नों के परिवर्तों की चर्चा में स्वन का एक अभिलक्षण दाब भी स्वीकार किया गया। यह काकल के उन उच्चारणात्मक संचलनों की ओर संकेत करता है जहाँ वायु प्रवाह बाहर की ओर निर्देशित होता है, जैसे - हिक्कित व्यंजन के उच्चारण में।

दीर्घता length

समस्त वाक्‌व्यवहार समय की रेखा पर घटित होता है किन्तु हर भाषा इस समय का अपने ढंग से प्रयोग करती है। भाषिक स्वरों एवं अक्षरों के उच्चारण में लगने वाली सापेक्षिक कालावधि जब भेदक का कार्य करे तो उसे दीर्घता की संज्ञा देते हैं, इसे ही मात्रा भी कहते हैं। दीर्घता के आधार पर स्वन का हृस्व-दीर्घ भेद करना संभव है। सामान्यत: मात्रागत यह भेद स्वर ध्वनियों में मिलता है। कतिपय विद्वान द्वित्व व्यंजन को दीर्घ कहते हैं, यथा - पटा : पट्टा। दीर्घता प्रकट करने के लिए निम्नलिखित चिह्नों का प्रयोग किया जाता है -

[:] यथा /अः/
[¯] यथा /अ̄/

हिन्दी अंग्रेजी में जहाँ इन दो वर्गों की चर्चा मिलती है वहाँ संस्कृत वैयाकरण तीन कोटियाँ निर्धारित करते हैं - हृस्व, दीर्घ एवं प्लुत।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि संभव है कि किसी स्वन की (काल) मात्रा समान हो किन्तु भाषिक बोध के धरातल पर अन्य कारणों से वह हृस्व या दीर्घ रूप में प्रतीत हो। स्वन अवरोही तान के साथ युक्त होकर दीर्घ प्रतीत होता है जबकि वही स्वन उसी (काल) मात्रा के साथ उस समय हृस्व प्रतीत होता है जब वह आरोही तान के साथ युक्त हो।

दुर्बल रूप weak form

किसी शब्द का बलाघात हीन उच्चरित रूप दुर्बल तथा बलाघात युक्त उच्चरित रूप सबल रूप कहलाता है। कुछ शब्दों के एकाधिक दुर्बल रूप हो सकते हैं, जैसे - अंग्रेजी [ænd] का [ənd], [ən], [n] आदि।

दृढ[1] fortis

उच्चारण प्रयत्न के आधार पर किया गया व्यंजन ध्वनि का एक वर्ग जिनके

इस मान्यता की समर्थक है, यथा - कोई एक रूप रूपिम का द्योतक होता है और कोई भी एक स्वन स्वनिम का या एक विशिष्ट रचक किसी वाक्यीय कोटि का द्योतक होता है।

द्रविड़ परिवार Dravidian family

इस परिवार के चार उपवर्ग किए जाते हैं - केन्द्रीय, उत्तरी; दक्षिण केन्द्रीय तथा दक्षिणी। तमिल, तेलगु, कन्नड़, मलयालम इसकी प्रमुख भाषाएँ हैं। प्राचीन भारतीय आर्यों एवं द्रविड़ों के बीच ईसा से 2000 वर्ष पूर्व से सम्पर्क रहा है। वर्षों से चली आ रही द्विभाषिकता के कारण इन भाषाओं में न केवल कोशीय आदान हुआ वरन् इनमें अनेक स्वनप्रक्रियात्मक, रूपरचनात्मक एवं वाक्यीय अभिलक्षणों का अभिसरण भी हुआ। परवर्ती आर्य भाषाओं में विकसित मूर्धन्य ध्वनियाँ द्रविड़ भाषाओं का ही प्रभाव माना जाता है।

द्वि-अक्षरी disyllabic

स्वनविज्ञान एवं स्वनप्रक्रिया में प्रयुक्त एक पारिभाषिक शब्द जो दो अक्षरों से निर्मित अथवा दो अक्षरों से युक्त इकाई को सन्दर्भित करता है, यथा - हिन्दी में नदी, पथिक आदि। प्राय: द्विअक्षरी रूप द्वारा एकाक्षरी या त्र्याक्षरी के मध्य भेद स्थापित किया जाता है।

द्वि आधारी double base

जब कोई नियम दो या अधिक अन्त्य मालाओं द्वारा प्राप्त निर्गमों पर कार्य करे तो उसे द्विआधारी कहते हैं। प्रजनक व्याकरण के प्रारम्भिक प्रारूप में रूपान्तरण नियम के इस भेद की चर्चा मिलती है। इसे ही सामान्यीकृत रूपान्तरण भी कहते हैं। रूपान्तरण का एक अन्य भेद **एक आधारी** कहलाता है और वहाँ सिर्फ एक अन्त्य माला ही प्रभावी होती है।

द्वि-ओष्ठ्य bilabial

व्यञ्जन ध्वनियों के वर्गीकरण में उच्चारण स्थान के आधार पर प्रयुक्त एक पारिभाषिक शब्द यह उन ध्वनियों की ओर संकेत करता है जिनके उच्चारण में दोनों ओंठ एक दूसरे का स्पर्श करें अथवा निकट आ जाएँ, यथा - पक्का, फाँक, भाला, माला शब्दों की आरम्भिक ध्वनियाँ।

द्वि कर्मक क्रिया ditransitive verb

जिस क्रिया के दो कर्म होते हैं उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं, जैसे - राम सीता को हिन्दी पढ़ाता है यहाँ 'सीता को' तथा 'हिन्दी' दो कर्म है अत: 'पढ़ाता' द्विकर्मक क्रिया है।

द्विकालिक diachronic

स्विस भाषाविद् फर्दिनान्द डी सेस्यूर द्वारा भाषिक विश्लेषण के लिए प्रस्तुत किए गए दो पारिभाष्यों में से एक द्विकालिक तथा दूसरा संकालिक है। द्विकालिक भाषाविज्ञान में भाषाओं का अध्ययन उनके ऐतिहासिक विकास के आधार पर किया जाता है, उदाहरणार्थ - प्राचीन हिन्दी से लेकर आधुनिक हिन्दी काल तक भाषा के स्वरूप में घटित स्वनप्रक्रियात्मक, व्याकरणिक एवं आर्थी विकास इसके अध्ययन क्षेत्र में समाहित है। द्विकालिक के लिए ही ऐतिहासिक भाषाविज्ञान शब्द का भी प्रयोग किया जाता है। प्रारम्भ में ऐतिहासिक दृष्टिकोण से किए गए अध्ययनों को तुलनात्मक वाङ्मीमांसा नाम दिया गया।

यद्यपि इन दोनों का विषय क्षेत्र समान था तथापि दोनों के उद्देश्य एवं पद्धति में भिन्नता थी। भाषाविज्ञान के परवर्ती अध्ययनों में द्विकालिक की तुलना में संकालिक अध्ययन को अधिक उपयोगी माना गया तथा सामान्य भाषिक सिद्धान्त के लिए ऐतिहासिक अध्ययन का क्या महत्त्व है यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया।

द्विचर अभिलक्षण binary feature

वह अभिलक्षण जो भाषिक इकाइयों को दो पारस्परिक विशिष्ट सम्भावनाओं के आधार पर वर्गीकृत करे, यथा - स्वनप्रक्रिया में सुरतन्त्रियों के कम्पन की उपस्थिति बनाम अनुपस्थिति की स्थिति। ये द्विचर अभिलक्षण ही स्वनप्रक्रिया के प्रभेदक अभिलक्षण सिद्धान्त के मुख्य व्यवस्थापरक सार तत्त्व हैं जहाँ इन्हें + / - द्वारा चिह्नित किया जाता है, यथा - एक ध्वनि का वर्णन (+घोष), (-घोष) इस प्रकार विशिष्ट गुण बताते हुए किया जाता है। प्रजनक व्याकरण में कोशीय मदों के व्याकरणिक एवं आर्थी विश्लेषण में भी द्विचर अभिलक्षण बताए जाते हैं, यथा - संज्ञा में (+चेतन), (-चेतन) यह विशेषता मिलती है।

द्वितीय अन्यपुरुष obviative

कतिपय अमरीकी जनजातियों की भाषाओं में अन्य पुरुष का एक ऐसा रूप मिलता है जिसे चतुर्थ पुरुष कहा जा सकता है। इसका प्रतिफलन सर्वनाम एवं क्रिया

पदवर्ग में, प्राय: अन्य पुरुष के व्यतिरेक के रूप में, दृष्टिगत होता है और वहाँ यह अन्य पुरुष द्वारा संकेतिक वस्तु से भिन्न वस्तु की ओर संकेत करता है, जैसे - कोई या कुछ और।

द्वित्व geminate

किसी रूपिम में आगत ध्वनि के समरूप निकटवर्ती खण्डों का अनुक्रम द्वित्व कहलाता है, यथा - इतालवी में notte/nott/'night' अक्षर विभाजन के कारण द्वित्व अनुक्रम को दीर्घ व्यञ्जन नहीं कहा जा सकता है। इनके मध्य की भिन्नता लिप्यंकन द्वारा स्पष्ट की जा सकती है, यथा - (-tt-) द्वित्व है और (-t :-) दीर्घ।

द्विपक्षीय bilateral

प्रागसम्प्रदाय के स्वनप्रक्रियात्मक अध्ययन में स्वीकृत एक प्रकार का प्रतियोग जिसे बहुपक्षीय से भिन्न स्थापित किया गया, यथा - अंग्रेजी के /t/ और /d/ का प्रतियोग द्विपक्षीय है क्योंकि सिर्फ यही इकाइयाँ वर्त्स्य / स्पर्श होती हैं और सिर्फ एक अभिलक्षण घोषत्व इन्हें भिन्न प्रतिपादित करता है जब कि /t/ और /v/ का प्रतियोग बहुविध है क्योंकि इन अभिलक्षणों से युक्त अन्य ध्वनियाँ भी अंग्रेजी-स्वनिम व्यवस्था में मिलती हैं। इस प्रकार दो विरोधी स्वनिमों में पाई जाने वाली वह समानता जो अभिलक्षण रूप में केवल दो विरोधी सदस्यों तक सीमित होती है **द्विपक्षीय प्रतियोग** कहलाती है तथा दो विरोधी स्वनिमों में पाई जाने वाली वह समानता जो अभिलक्षण रूप में दो से अधिक विरोधी सदस्यों में व्याप्त होती है **बहुविध प्रतियोग** कहलाती है।

द्विबोली bidialect

यदि कोई समाज अथवा व्यक्ति किसी भाषा की दो सामाजिक एवं प्रादेशिक बोलियों के व्यवहार की क्षमता अर्जित कर ले तो उसे द्विबोली भाषा कहते हैं। विद्वानों ने अनेक प्रकार की द्विबोली भाषी स्थितियों का अध्ययन किया, यथा - अनौपचारिक से औपचारिक भाषा रूप का प्रयोग (भाषा द्वैत)। द्विबोली भाषिकता के सिद्धान्त की स्थापना समाजभाषाविज्ञान एवं शैक्षणिक भाषाविज्ञान के अन्तर्गत की गई और विभिन्न बोलियों को समान भाषिक वैधता प्रदान की गई एवं उपयुक्त सामाजिक परिस्थितियों में उनके प्रयोग को संस्तुत किया गया। द्विबोली भाषिकता इस तथ्य पर विशेष बल देती है कि शैक्षणिक प्रक्रिया में मानक एवं अमानक दोनों बोली रूपों को बढ़ावा दिया जाय। साथ ही साथ

बच्चों की कोड परिवर्तन की क्षमता को भी प्रोत्साहन मिलना चाहिए जिससे वे अपनी भाषा के विविध रूपों को अच्छी तरह समझ सकें एवं उन रूपों पर बच्चों का पूर्ण अधिकार हो।

द्विभाषिकता bilingualism

एक व्यक्ति जो दो भाषाएँ बोल व समझ सके द्विभाषी कहलाता है और इस परिस्थिति को द्विभाषिकता की संज्ञा देते हैं। समाजभाषाविज्ञान और भाषाशिक्षण में इसका विस्तृत अध्ययन किया जाता है तथा इनके अध्ययन का केन्द्र विभिन्न प्रकार की द्विभाषिकता एवं भिन्न अंशांको की द्विभाषिकता की स्थितियाँ होती हैं। द्विभाषिकता वैयक्तिक ही नहीं वरन् राष्ट्रीय भी होती है अर्थात् जब किसी राष्ट्र में दो शासकीय भाषाएँ स्वीकृत हों (यह संख्या दो से अधिक भी हो सकती है।) कुछ राष्ट्रों की सीमाओं पर दो भाषाएँ बोली जाती हैं। शासकीय दृष्टि से द्विभाषी देशों में यह आवश्यक नहीं होता कि समस्त समुदाय दोनों भाषाओं का ज्ञाता हो क्योंकि आदर्श द्विभाषिकता दुर्लभ होती है, यथा - स्विट्जरलैण्ड में द्विभाषिकता की स्थिति तो है लेकिन प्रत्येक व्यक्ति चूँकि दोनों भाषाओं का ज्ञाता नहीं है अतः वह द्विभाषी नहीं है। द्विभाषिकता के दो प्रकार होते हैं स्थिति सापेक्ष-अर्थात् जब राष्ट्र स्तर पर द्विभाषिकता मिलें तथा प्रयोक्ता सापेक्ष-जब व्यक्ति, समाज, शिक्षा, अभिप्रेरणा, व्यवसाय आदि कारणों से द्वितीय भाषा का अधिग्रहण कर मातृभाषावत् उसका प्रयोग करें।

द्विमुखी janus-like

कतिपय विद्वानों ने भाषा की यह विशेषता मानी है कि वह द्विमुखी है एक तरफ वह ध्वनि द्वारा निर्मित और दूसरी तरफ अर्थ की अभिव्यक्ति करती है और इन दोनों को विलग नहीं किया जा सकता है। भाषिक प्रतीक में भी यह अभिलक्षण माना जाता है कि वह द्विमुखी होता है भाषिक प्रतीक का निर्माण ध्वनिबिम्ब व संकल्पना द्वारा होता है। ये दोनों परस्पर इस प्रकार संयोजित हैं कि एक से दूसरे को अलग करना सम्भव नहीं है।

द्विवर्ण diagraph

ऐसी लेखिक इकाई जिसमें दो चिह्न एक साथ जुड़कर भाषा व्यवस्था में एक अंश की भाँति कार्य करते हैं, उदाहरणार्थ - अंग्रेजी में shave का (sh) और spread का (ea)। अतः द्वि वर्ण दो अनुक्रमिक लेखिकों का ऐसा समूह है जिसका उच्चारण-मूल्य उस स्थिति विशेष में दो स्वनों का योग न होकर एक ही स्वन वाला होता है।

द्वैतवाद dualism

अर्थ के एक सिद्धान्त के अनुसार भाषिक रूप तथा उसके द्वारा संकेतित वस्तुओं एवं कार्य अवस्थाओं के मध्य प्रत्यक्ष, अन्योन्य (दुतरफा) सम्बन्ध होता है। यही विशेषता द्वैतवाद कहलाती है। एक अन्य सिद्धान्त इस सम्बन्ध को त्रयात्मक मानता है और भाषिक रूपों, प्रसंगार्थों एवं आशय के मध्य त्रिविध सम्बन्ध की चर्चा करता है।

ध

धातु root

शब्द का वह आधार रूप जो और आगे विश्लेष्य न हो। दूसरे शब्दों में, किसी शब्द संरचना से समस्त प्रत्ययों को हटाने के पश्चात् बचा हुआ शेष अंश धातु कहलाता है, जैसे - असुन्दरता शब्द से अ-,-ता हटाने पर बचा हुआ 'सुन्दर' शब्द धातु है। धातु को कई प्रकार से विभाजित किया गया। ये मुक्त रूपिम (जैसे - घर) या बद्ध रूपिम (जैसे - अंग्रेजी - cieve-recieve, deceive conceive) हो सकता है। एक अन्य आधार पर एक रूपिम धातु (बैठ, लड़का आदि) और एकाधिक रूपिम धातु (जैसे - विश्वविद्यालय, स्वनप्रक्रिया आदि) यह वर्गीकरण भी किया जाता है। वह चिह्न जो शब्द के धातु रूप को अभिव्यक्त करने के लिए प्रयोग किया जाता है [$\sqrt{\ }$] **धातु चिह्न** कहलाता है।

ध्येय goal

कतिपय भाषाविदों ने इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग किसी वाक्य के आर्थी विश्लेषण के अंग रूप में किया। ध्येय उस वस्तु की ओर संकेत करता है जो क्रिया के कर्म से प्रभावित होती है, यथा - शिकारी ने एक **शेर** पकड़ा। कारक व्याकरण में वह स्थान जिस ओर कोई वस्तु निर्देशित की गई हो या की जाती हो ध्येय कहलाता है।

ध्रुवता polarity

भाषा में प्राप्त व्यवस्था की सकारात्मक / नकारात्मक व्यतिरेकात्मकता के सन्दर्भ में कुछ भाषाविदों ने इस शब्द का प्रयोग किया। सकारात्मक ध्रुवता एवं नकारात्मक ध्रुवता की भिन्नता वाक्यीय, रूपरचना या कोशीय आधार पर स्पष्ट की जा सकती है, जैसे - वाक्यीय स्तर पर हिन्दी में इसकी अभिव्यक्ति न, नहीं द्वारा रूपरचना के स्तर पर अ - (असुन्दर) अन-(अनदेखा) द्वारा तथा कोशीय स्तर पर ऊँचा-नीचा, बड़ा-छोटा द्वारा होती है।

ध्वानिक लक्षण acoustic features

उच्चारण में निहित वे विशेषताएँ जिनका ज्ञान यंत्रों द्वारा तरंगों के रूप में होता है, यथा - मूल आवृत्ति, सन्नादी संरचना, (harmonic structure), विस्तर्णता आयाम। ये विश्लेषण ध्वानिकी के द्वारा किए जाते हैं। यकोब्सन तथा हॉले के प्रभेदक लक्षण सिद्धान्त के अन्तर्गत ध्वानिक अभिलक्षणों के बारह युग्म बताए गए, यथा - नासिक्य - निरानुनासिक्य; स्फोटी-प्रवाही; स्वरात्मक-अस्वरात्मक आदि।

ध्वानिकी acoustics

भौतिकी की वह शाखा जिसमें ध्वनियों का विश्लेषण-अध्ययन तरंगों के रूप में किया जाता है। इसे संवहन मूलक ध्वनिकी भी कहते हैं। ध्वनि का विवेचन इसका परिप्रेक्ष्य है। जैसे ही वायु में किसी भौतिक कारण से किसी एक बिन्दु पर कम्पन उत्पन्न होता है ध्वनि सभी दिशाओं में फैलना प्रारम्भ कर देती है। ध्वनि के प्रसारण के लिए वायु का होना अनिवार्य है किन्तु वायु कण ध्वनि को लेकर आगे नहीं बढ़ते वरन् ध्वनि तरंगे संपीडन एवं विरलन से प्रसारित होती है। ध्वनि तरंगों का विस्तार जल-तरंगों की भाँति वृत्ताकार होता है इनकी अनुमानित गति 1,100 फिट प्रति सेकण्ड होती है जो घटते-घटते शून्य में विलीन हो जाती है। निर्वात क्षेत्र (vaccum) में ध्वनि का प्रसारण नहीं होता है।

ध्वानिक विश्लेषण ध्वनि का स्पष्ट और वस्तुनिष्ठ विवरण (भौतिक तथ्य) प्रस्तुत करता है, किन्तु इस प्रकार के विवरण पर अत्यधिक निर्भरता उचित नहीं होती है क्योंकि यह विश्लेषण यान्त्रिक होता है और कभी-कभी विश्लेषण की एकाधिक व्याख्या की जा सकती है। औच्चारिक एवं श्रवणात्मक ध्वनिकी के सहयोगी के रूप में ये अध्ययन महत्त्वपूर्ण कहे जा सकते हैं।

न

नकारात्मक negative

वह प्रक्रिया जो वाक्य द्वारा अभिव्यक्त अर्थ का पूर्ण या आंशिक निषेध करती है। हिन्दी में नकारात्मक सूचक शब्दों (न, नहीं) द्वारा वाक्य में इसका भाव आता है। शब्दावली में अ - अन - आदि (असमय, अनचाहा) प्रत्यय संयोग द्वारा निषेधात्मकता द्योतित होती है।

नलक groove

संघर्षी ध्वनियों का एक प्रकार जहाँ जिह्वा की स्थिति ऐसी होती है कि मध्य भाग की अपेक्षा पार्श्व भाग उठे होते हैं, यथा - अंग्रेजी /s,z/।

नवशब्द निर्माण neologism

वह प्रक्रम जो किसी भाषा को विकसित कर सम्प्रेषण माध्यम के रूप में अन्य विकसित भाषाओं के समकक्ष ले आता है अर्थात् सम्प्रेषणपरक दूरी को समाप्त करने के लिए भाषा आधुनिक एवं विकसित समाज की आवश्यकतानुरूप नवीन शब्दों की रचना कर लेती है। **तात्कालिक शब्द** (nonce word) और नवनिर्मित शब्द में अन्तर होता है। तात्कालिक शब्द ऐसे कोशीम होते हैं जो सम्प्रेषण में आगत समस्या निवारण के लिए तत्काल रचे जाते हैं और जिनका शीघ्र ही लोप हो जाता है जबकि नवनिर्मित शब्द भाषिक समुदाय में प्रचलित हो प्रत्येक वक्ता की जुबान पर आ जाते हैं, जैसे - हिन्दी दिवस, मुक्ति वाहिनी आदि।

नवीन सूचना new information

सूचना संरचना के आधार पर उक्ति को दो वर्गों में विश्लेषित किया जाता है नवीन सूचना एवं प्राप्त सूचना। नवीन सूचना जैसा कि नाम से पता चलता है कथन के सन्दर्भ में

कुछ नया बताती है जो कुछ पहले से ज्ञात है, उसके अतिरिक्त सूचना मिलती है जब कि पहले से ज्ञात सूचना '**प्राप्त सूचना**' कहलाती है।

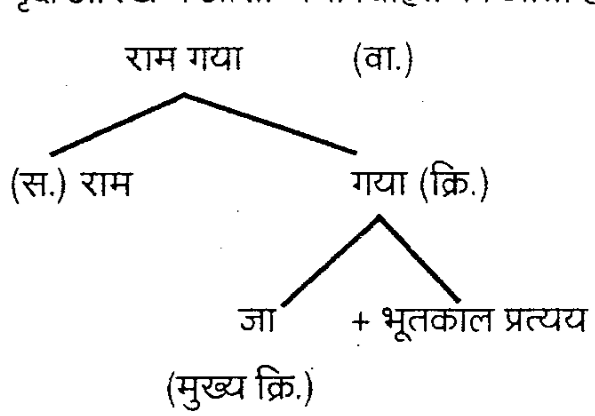
नव्य वैयाकरण Jung grammatiker

1870 में जर्मनी का लाइपजिग विश्वविद्यालय भाषा अध्ययन का प्रमुख केन्द्र था। इस केन्द्र से सम्बद्ध अनेक युवा विद्वानों ने तुलनात्मक भाषाविद् रास्क एवं ग्रिम के स्वन नियमों का पुनर्मूल्यांकन किया। पूर्वप्रचलित मान्यताओं का खण्डन कर नवीन अवधारणाओं की स्थापना करने वाले इन विद्वानों का प्रारम्भ में मखौल उड़ाया गया और इन्हें **नौसिखिए वैयाकरण** कहा गया किन्तु धीरे-धीरे इनकी प्रस्थापनाओं की सत्यता प्रमाणित होने पर इन विद्वानों की आलोचना होनी समाप्त हो गई। इस वर्ग के प्रमुख विद्वान आगुस्ट लेस्कीन, कार्ल फेर्नर, कार्ल ब्रुगमैन, हरमन पॉल, हरमन ओस्टहॉफ आदि थे।

नामपत्र label

संरचनात्मक व्याकरणिक विश्लेषण में वाक्य के अंशों को स्पष्टत: चिह्नित करने के लिए नामपत्र का प्रयोग किया जाता है, उदाहरणार्थ - 'राम गया' वाक्य का संरचनात्मक विभाजन कोष्ठक पद्धति या वृक्ष आरेख द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है, यथा - [[राम] [गया]] इस विश्लेषण को संरचनात्मक वर्णन के संयोजन द्वारा अधिक सार्थक बनाया जा सकता है, यथा - [[[राम] सं.] [[गया] क्रि.]] वा. यहाँ स. = संज्ञा, क्रि.= क्रिया तथा वा.= वाक्य है। इसे ही नामपत्रित कोष्ठक पद्धति कहते हैं जिसका प्रयोग **पदबन्ध संरचना व्याकरण** में किया जाता है।

वृक्ष आरेख में आसन्धियाँ चिह्नित की जाती हैं, यथा -



नामविज्ञान onomasiology

अर्थविज्ञान की एक शाखा जिसके अन्तर्गत सहचारी संकल्पनाओं के समुच्चयों

का अध्ययन उनको पदनाम देने वाले भाषिक रूपों के सम्बन्ध में किया जाता है। यह शाखा संस्थापित व्यक्तिवाचक या स्थान वाचक नामों का व्युत्पत्यात्मक अध्ययन करती है।

नामिक nominal

कतिपय व्याकरणिक वर्णनों में संज्ञा के लिए प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द। संकुचित अर्थ में वे शब्द जो संज्ञा की समस्त विशेषताओं से युक्त होते हैं, संज्ञा कहलाते हैं तथा जिन में संज्ञा की सभी विशेषताएँ नहीं मिलती हैं उन्हें नामिक कहते हैं। किसी अन्य पदवर्ग स्थित शब्द को संज्ञा बनाने की प्रक्रिया **नामिकीकरण** कहलाती है, जैसे - गरीब > गरीबी।

नासिक्य nasal

उच्चारण प्रयत्न के आधार पर किया गया वाक् ध्वनियों के स्वनिक वर्गीकरण का एक वर्ग नासिक्य कहलाता है, जिसके उच्चारण में अलिजिह्वा के गिरे रहने के कारण सारी वायु नासिका विवर से प्रवाहित होती है। इस प्रकार स्वर एवं व्यंजन दोनों का उच्चारण हो सकता है। जब मुख में मार्ग पूर्णतया अवरुद्ध होने के कारण सारी वायु नाक से निकले तो नासिक्य व्यंजन उच्चरित होते हैं, यथा - हिन्दी के न्, म्, ञ्, ङ्, ण्। नासिक्य या अनुनासिक स्वरों के उच्चारण में वायु प्रवाह नाक और मुख से साथ-साथ होता है, जैसे - हिन्दी अँ, आँ, इँ आदि। अंग्रेजी में स्पष्ट नासिक्य स्वर का अभाव है किन्तु प्राय: स्वरों के **नासिक्यीकरण** की प्रवृत्ति दृष्टिगत होती है। ऐसी स्थिति में स्वर आसन्न नासिक्य व्यंजन के उच्चारण से प्रभावित होता है जैसे - mat या hand। इसी प्रकार नासिक्यीकृत व्यंजन सामान्यत: भाषा में मुख से उच्चरित होता है जबकि किसी विशिष्ट परिस्थिति में आसन्न नासिक्य ध्वनि के प्रभाव के कारण नासिक्य प्रयत्न द्वारा उच्चरित होने लगता है। किसी नासिक्य स्वन का मूर्धन्यीकृत रूप **नत** (nata) कहलाता है, जैसे - संस्कृत नरा+नाम् = नराणाम् में 'न' का 'ण' रूप। स्वनप्रक्रिया के भेदक लक्षण सिद्धान्त में नासिक्य एवं अनासिक्य को एक प्रतियोग रूप में स्वीकारा गया। आज नासिक्य एवं अनुनासिक शब्द पर्याय रूप में मान्य है किन्तु परम्परागत स्वनविज्ञान में नासिक्य शब्द व्यंजनों के लिए तथा अनुनासिक स्वरों के लिए प्रयुक्त होता है।

निकटतावाची कारक adessive case

व्याकरणिक वर्णन में एक प्रकार के प्रत्यय के लिए प्रयुक्त शब्द जो किसी स्थान

से निकटता अथवा स्थान में उपस्थित अर्थ की अभिव्यक्ति करता है। यह कारक फिन्निश भाषा में मिलता है।

निकोच stricture

स्वनविज्ञान में प्रचलित एक पारिभाषिक शब्द जो एक प्रकार के उच्चारण को सन्दर्भित करता है जिसमें करण द्वारा वायु-प्रवाह पूर्ण अथवा आंशिक रूप में अवरुद्ध किया जाता है इनकी तीन मात्राएं (degrees) होती हैं-

(क) पूर्ण अवरोध - स्पर्श स्वन

(ख) प्रतिबन्धित अवरोध - घर्षी स्वन

(ग) अबाधित अवरोध - इसके दो भेद होते हैं (1) स्वरात्मक (2) अस्वरात्मक- प्रथम में सभी स्वर आते हैं द्वितीय में तरल और अर्ध स्वर आते हैं।

निघण्टु nighantu

संस्कृत भाषा में रचित महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ। वैदिक मन्त्रों की अर्थ शुद्धता को स्थिर बनाए रखने के लिए जिनका प्रणयन किया गया। इन्हें कोश का आरम्भिक रूप माना जाता है। आधुनिक कोश की भांति इसमें शब्दों के अर्थ नहीं दिए गए हैं, बल्कि वैदिक शब्दों को इस प्रकार पर्यायक्रम से सजाया गया है कि उनके अर्थ स्वत: स्पष्ट हो जाते हैं। सम्प्रति केवल एक निघण्टु उपलब्ध है, जिसके आधार पर महर्षि यास्क ने अपने निरुक्त की रचना की थी।

निजवाचक reflexive

व्याकरणिक वर्णन में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द जो एक ऐसी क्रिया या रचना की ओर संकेत करता है जिसमें कर्ता एवं कर्म समान सत्व से सम्बन्धित होते हैं। अंग्रेजी में निजवाचक सर्वनाम इन सम्बन्धों का द्योतन करते हैं, यथा - she hurt herself हिन्दी में वाक्य में उद्देश्य (कर्ता) स्थान पर प्रयुक्त संज्ञा अथवा सर्वनाम के बाद यदि उसका सम्बन्धकारक रूप प्रयोग में लाना होता है तो अपना / अपनी / अपने प्रयुक्त होता है। ये शब्द ही निजवाचक सर्वनाम वर्ग के सदस्य हैं, यथा - रमेश ने अपना कलम दिया; उसने अपनी पुस्तक फाड़ दी। कुछ भाषाओं में निजवाचकता का सूचन परप्रत्ययों, कारक विभक्तियों या शब्द-क्रम द्वारा होता है।

रूपात्मक व्याकरण में निजवाचकता से तात्पर्य उस नियम से है जो वाक्य में निजवाचक सर्वनाम समाहित करता है।

निदेशात्मक directive

ऐसा कथन जिसका उद्देश्य अन्य व्यक्तियों द्वारा वक्ता के लिए कुछ करवाना होता है। इसके भाषिक अभिप्राय व्याकरणिक (यथा - समादेश), आर्थी (उचित शब्दावली यथा - कृपया) या स्वनप्रक्रियात्मक (यथा - प्रभावी अनुतान अभिरचनाएँ) हो सकते हैं।

कतिपय व्याकरणिक प्रारूपों में बहि:केन्द्रिक रचना का एक प्रकार **निदेशक** नाम से पहचाना जाता है। ऐसी रचनाओं में एक अंश निदेशक तथा दूसरा निर्देशित अंश अक्ष या धुरी कहलाता है, उदाहरणार्थ - 'गेंद को फेंका' रचना में 'फेंका' निदेशक तथा 'गेंद' अक्ष है।

निपात particle

ये विशिष्ट व्याकरणिक प्रकार्य युक्त शब्द वर्ग अपरिवर्तनीय मद है। व्याकरणिक वर्णन में इन्हें पद-वर्ग के किसी वर्ग में सरलता से निविष्ट नहीं किया जा सकता है। हिन्दी में ये वाक्य के किसी भी शब्द के साथ जुड़ते हैं तथा आवश्यकतानुसार पृथक भी किए जा सकते हैं। इनके द्वारा शक्ति, बलात्मकता, विरोध, निषेध आदि की अभिव्यक्ति होती है, यथा - ही, तो , हाँ, भी, नहीं, केवल आदि।

निम्न low

स्वनप्रक्रिया के भेदक अभिलक्षण सिद्धान्त में चॉमस्की एवं हॉले द्वारा उच्चारण स्थान की विविधता के वर्णन के लिए निरूपित अभिलक्षणों में एक वर्ग निम्न / अनिम्न का है। जिह्वा को तटस्थ स्थिति से नीचे लाने पर इनका उच्चारण होता है। इस वर्ग में मुक्त स्वर तथा श्वासद्वारीय संघर्षी आते हैं। इसके व्यतिरेकी अनिम्न का उच्चारण जिह्वा तटस्थ स्थिति से बिना नीचे किए ही किया जाता है, यथा - ऐ, ओ एवं अधिकांश व्यंजन।

निम्नतर lower

वाक्य व्युत्पादन में यदि पहले प्रयुक्त कोटि को व्युत्पत्ति में पुन: प्रस्तुत किया जाए तो उसे प्रजनक व्याकरण में निम्नतर मानते हैं। व्युत्पत्ति के वृक्ष आरेख प्रतिरूपण में ये

कोटि बाद में प्रस्तुत होती है और वृक्ष में नीचे की ओर आती है जबकि उच्च कोटि ऊपर और पहले आती है।

निम्न स्वर low vowel

वह स्वर जिसके उच्चारण में जिह्वा स्वर उच्चता की निम्न स्थिति में हो, जैसे - a।

नियन्त्रण control

किसी वाक्य की आन्तरिक संरचना में कतिपय प्रकार के तत्त्वों की सह-समुद्दिष्टता निर्धारित करने वाली प्रक्रिया, अनुबन्धन सिद्धान्त में, नियन्त्रण कहलाती है, यथा - यदि कोई सर्व (PRO) एक आधायित उपवाक्य का उद्देश्य है तो उसे मुख्य उपवाक्य उद्देश्य के नियन्त्रण में माना जाएगा और मुख्य उपवाक्य का उद्देश्य नियन्त्रक कहलाएगा, जैसे - अंग्रेजी वाक्य I, promised Mohan PRO[1] to go किन्तु कतिपय स्थानों में क्रिया का कर्म यह कार्य करता है, जैसे - I persuaded $Mohan_2$ PRO_2 to go। कभी-कभी PRO अपने पूर्ववर्ती संज्ञापदबन्ध से नियन्त्रित नहीं होता है ऐसी स्थिति में PRO **अनियन्त्रित** कहलाता है।

नियत fixed

किसी भाषिक इकाई की संरचना के अपरिवर्तित पक्ष को सन्दर्भित करने वाला पारिभाषिक शब्द जिसका विलोम मुक्त या स्वतन्त्र कहलाता है। प्राय: इसका प्रयोग **नियत बलाघात** या जैसे पदबन्धों में किया जाता है।

नियत कार्य assignment

बोलचाल की भाषा में जो कार्य किसी के लिए निश्चित किया गया हो वह नियत कार्य कहलाता है। प्रजनक व्याकरण में नियमों के अभिलक्षण, कार्य, उनकी क्रिया के लिए इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग मिलता है। इस माडल में, पुनर्लेख नियम तत्त्वों की एक माला विभिन्न चरणों के अनुक्रम रूप में प्रस्तुत करते हैं और प्रत्येक चरण नामांकित कोष्ठकों से सम्बद्ध होता है, यथा -

वा.→ सप. + क्रिप. (सप. + क्रिप.)$_{\text{वा.}}$

क्रिप.→ मु क्रि. + स क्रि. (सप. + (मु क्रि. + स क्रि.)$_{\text{क्रिप.}}$)$_{\text{वा.}}$

सप.→ नि. + स. ((नि. + स.)$_{\text{सप.}}$+(मु क्रि. + स क्रि.)$_{\text{क्रिप.}}$)$_{\text{वा.}}$

इस आधार पर सप. एवं क्रिप. हिन्दी के ऐसे किसी भी वाक्य को नियत किये जा सकते हैं जिन पर ये नियम लागू हों, जैसे - ((वह लड़का) (दौड़ता है))।

नियतन indexing

किसी वाक्य के घटक मदों के समुच्चय से संलग्न संख्यावाची या शाब्दिक चिह्नकों का प्रयोग प्रजनक भाषाविज्ञान में नियतन कहलाता है। ये चिह्नक या तो मदों की पहचान कराते हैं या उनके सन्दर्भ की भिन्नता की सूचना देते हैं। समसामयिक कार्यों में नियतन नियम वाक्य के प्रत्येक संज्ञा पदबन्ध के लिए संख्यावाची सूचकांक निर्धारित करता है जिसका उद्देश्य यह निश्चित करना है कि सहसन्दर्भ के शुद्ध आर्थी सम्बन्धों का पुनः प्रस्तुतिकरण हो - यह प्रक्रिया **सह - नियतन** कहलाती है। नियतन नियमों के प्रयोग को रोकने वाली परिस्थितियाँ **बाद्धयता परिस्थिति** नाम से जानी जाती है।

नियत प्रतियोग constant opposition

प्राग सम्प्रदाय के स्वनप्रक्रियात्मक अध्ययनों में स्वीकार्य प्रतियोग का एक प्रकार जो निर्विषमीकरण से व्यतिरेक प्रदर्शित करता है। एक नियत प्रतियोग उस स्थिति में होता है जब उसके सभी सदस्य समस्त सम्भावित परिस्थितियों में प्रयुक्त हो व्यतिरेक प्रदर्शित करें, यथा - किसी भाषा में जहाँ भी /p/ का प्रयोग होगा वहाँ /b/ से व्यतिरेक भी अवश्य होगा। अंग्रेजी /t/ और /d/ के मध्य की भिन्नता निर्विषमीकरण की स्थिति है क्योंकि कतिपय परिस्थितियों में इनके मध्य प्राप्त व्यतिरेक समाप्त हो जाता है, यथा - जब अंग्रेजी में आरम्भिक /s/ के बाद /t/ आता है।

नियमवादी एवं अनियमवादी analogist and anomalist

ईसा पूर्व की दूसरी शताब्दी में भाषा के विषय में, यह विवाद उठा कि भाषा को कहाँ तक नियमित कहा जा सकता है। किसी भी भाषा में जितने उदाहरण नियमित व्यवस्था के मिलते हैं लगभग उतने ही अपवाद के भी दिए जा सकते हैं। जिन विद्वानों का विचार था कि भाषा व्यवस्थापरक नियमित है उन्हें नियमवादी कहा गया तथा जिन्होंने विपरीत दृष्टिकोण अपनाया उन्हें अनियमवादी वर्ग में रखा गया।

नियमित regular

ऐसे भाषिक रूप जो एक भाषा के सामान्य नियमों के अनुरूप हों नियमित कहलाते

हैं। हिन्दी के संज्ञा रूप कुर्सी, लड़का, लड़की, नियमित हैं इनमें बहुवचनत्व का द्योतन प्रत्यय विशेष द्वारा होता है जब कि घर, नौकर, फूल अनियमित या अपवाद हैं।

निरपेक्ष absolute

इस शब्द का प्रयोग सामान्यत: पारम्परिक व्याकरणिक विवरण तथा यदा कदा भाषाविज्ञान में उस वाक्यीय घटक के लिए होता है जो शेष वाक्य से या तो पृथक हो अथवा असामान्य रूप से जुड़ा हो। अंग्रेजी के कतिपय वाक्यों के प्रारम्भ में क्रिया विशेषण अथवा विशेषण का व्यवहार इसी विशेषता को दर्शाता है, उदाहरणार्थ - However, he arrived later; Happy, she went to sleep।

आधुनिक भाषिक सिद्धान्त में इस शब्द का व्यवहार एक प्रकार के सार्वभौम के लिए किया जा रहा है। समस्त भाषाओं में प्राप्त कोई विशेषता जिसका कोई विकल्प न हो **निरपेक्ष सार्वभौम** कहलाती है। इसके विपरीत रूप में विद्वान **सापेक्ष सार्वभौम** की चर्चा करते हैं।

निरपेक्षिक absolutive

एस्किमो, जार्जियन आदि कर्तृकारक व्यवस्था से युक्त भाषाओं के व्याकरणिक विवरण में इस शब्द का व्यवहार मिलता है। कर्तृ व्यवस्था से सकर्मक क्रिया के कर्म तथा अकर्मक क्रिया के उद्देश्य / कर्ता के मध्य रूपात्मक समानान्तरता प्राप्त होती है (जैसे - दोनों समान कारक में होते हैं)। इन्हें निरपेक्षिक कहकर तथा सकर्मक क्रिया के कर्ता को कर्तृकारक कहकर सन्दर्भित किया जाता है।

निरूक्त Nirukt

निरूक्त का अर्थ है निर्वचन या व्युत्पत्ति, अर्थात् यह बताना कि कोई शब्द किन-किन तत्त्वों के मिश्रण से निष्पन्न हुआ है। निरूक्त में ध्वनि, पद और अर्थ तीनों का समाहार था। वैदिक काल में निरूक्त विषयक साहित्य पर्याप्त समृद्ध एवं विकसित था, किन्तु आज एकमात्र यास्कीय निरूक्त ही उपलब्ध है।

निरूद्ध checked

यकोब्सन एवं हॉले द्वारा प्रतिपादित, ध्वनि अभिलक्षणों में से एक, निरूद्ध व्यञ्जनों को उच्चारणात्मक एवं ध्वानिक दोनों दृष्टियों से विश्लेषित किया जा सकता है। ध्वानिक

विवरण- ऐसी ध्वनियाँ जिनके उच्चारण के समय अल्प अवमंदन के साथ न्यून समयांतराल में ऊर्जा विसर्जन की उच्च दर होती है। उच्चारणात्मक विवरण-प्रश्वासद्वार में वायुधारा के अवरूद्ध होने के कारण अल्प वायु की स्थिति में उच्चरित स्वन। निरूद्ध स्वनिम तीन रूपों में उच्चरित होते हैं - श्वासद्वारीय रंजित व्यञ्जन, अंत:स्फोटी एवं क्लिक। इसके विपरीत स्थिति **अनिरूद्ध** ध्वनि का उच्चारण करती है।

निर्गत output

सामान्य आशय में किसी नियम अथवा नियम समुच्चय के अनुप्रयोग द्वारा प्राप्त वाक्य व्याकरण में निर्गत कहकर सन्दर्भित किया जाता है।

निर्देशक indexical

लिखित या मौखिक भाषा के ऐसे अभिलक्षण जो किसी वक्ता की व्यक्तिगत भाषिक विशेषताओं का उद्घाटन करें, यथा - हस्तलिपि या आवाज के गुण, बोलने का तरीका आदि। ये विशेषताएँ वक्ता की पहचान किसी विशिष्ट प्रादेशिक सामाजिक समूह के सदस्य रूप में भी कराती हैं।

निर्देशात्मक व्याकरण prescriptive grammar

उद्देश्य की पृथकता के आधार पर व्याकरण के स्वरूप में विविधता मिलती है। भाषा के साधु एवं मानक रूप का नियमन तथा तत्सम्बन्धी नियमों का उल्लेख निर्देशात्मक व्याकरण कहलाता है। इसका उद्देश्य भाषा के शुद्ध तथा मानक रूपों का परिज्ञान एवं स्थापना है। ये व्याकरण भाषा विशेष के सन्दर्भ में प्रयोग सम्बन्धी निर्देश देते हैं और वक्ता को नियम पालन करने के लिए बाद्धय करते हैं।

निर्धारक determine

व्याकरणिक वर्णन के कतिपय प्रारूपों में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द जो मदों के एक ऐसे वर्ग की ओर संकेत करता है जिसका प्रमुख कार्य, विस्तृत आर्थी व्यतिरेक प्रदर्शित करने के लिए, संज्ञा के साथ सहस्थित रहना है। आर्टिकल (अंग्रेजी the / a / an) निर्धारकों का मुख्य उपसमुच्चय है इसके अतिरिक्त each / every, this / that, some / any आदि-शब्द भी निर्धारक का कार्य करते हैं। इन शब्दों के वितरण में प्राय: आर्टिकल का भी प्रयोग होता है, यथा - the / this / some...cake।

निर्मोचन release

स्वनविज्ञान में स्वरयन्त्र द्वारा किया गया एक प्रकार का संचलन जिसमें करण उच्चारण-स्थान से विलग हो जाता है और विश्रांत हो जाता है तथा वायु छोड़ दी जाती है। चॉमस्की एवं हॉले द्वारा प्रतिपादित स्वनप्रक्रिया के भेदक अभिलक्षण उपागम में निर्मोचन के दो प्रकार **विलम्बित** एवं **तात्कालिक** निर्मोचन निरूपित किए गए।

निर्विषमीकरण neutralization

अन्यत्र सिद्ध दो स्वनिमों के बीच का व्यतिरेक यदि किसी विशिष्ट परिवेश में समाप्त हो जाए तो उस परिवेश को **निर्विषमीकृत** तथा प्रक्रिया को **निर्विषमीकरण** की संज्ञा देते हैं। इस परिवेश में प्रयुक्त दो स्वतन्त्र स्वनिमों का एकीकृत रूप **आर्की स्वनिम** कहलाता है, उदाहरणार्थ - अंग्रेजी अल्पप्राण अघोष स्फोट का व्यतिरेक प्राय: निर्णायक होता है tip: dip किन्तु यह व्यतिरेक उस स्थिति में समाप्त या निर्विषमीकृत हो जाता है जब इसके पूर्व /s/ आता है, जैसे - stop, skin, speech फलत: भाषा में skin: stim शब्द युग्म नहीं मिलते हैं।

निलय ventricular

घोषतन्त्रियों के समानान्तर ठीक ऊपर स्थित नियल पट्टियों या आभासी घोषतन्त्रियों के बीच से उच्चरित एक प्रकार की ध्वनि निलय कहलाती है। भाषाओं में प्राय: इस ध्वनि का प्रयोग नहीं होता है।

निवेश insertion

रूपान्तरण व्याकरण के ढाँचे में कार्यरत एक आधारिक वाक्यीय संक्रिया जिसका कार्य माला में नवीन संरचनात्मक तत्त्वों का संयोजन करना है। निवेश कई प्रकार के होते हैं, यथा - do- निवेश, नकारात्मक-निवेश आदि।

निश्चरता invariant

स्वनप्रक्रिया के कई उपागमों में इसकी चर्चा मिलती है। इसके अनुसार प्रत्येक स्वनिम निश्चित स्वनिक अभिलक्षणों के समुच्चय रूप में निरूप्य होता है अत: जब भी एक स्वनिम प्रयुक्त होगा उसके संवादी अभिलक्षण भी अवश्य घटित होंगे। वर्गिकीय स्वनमिकी

की आलोचना करते समय प्रजनक स्वनशास्त्रियों ने रैखिकता तथा उभय अनन्यता (biuniqueness) की भाँति निश्चरता सिद्धान्त द्वारा प्रतिपादित दृष्टिकोण की भी आलोचना की।

निश्चायक definite

व्याकरण एवं अर्थविज्ञान में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द, जो किसी विशिष्ट अभिज्ञेय वस्तु की ओर संकेत करता है। **अनिश्चायक** इसका विपरीतार्थी होता है। अंग्रेजी में प्राय: निर्धारक (this, my) या आर्टिकल (a,an) इसकी अभिव्यक्ति करते हैं। निश्चायक संज्ञा पदबन्ध दर्शनशास्त्री भाषावैज्ञानिक साहित्य में **निश्चायक वर्णन** भी कहलाता है।

निश्चयार्थक indicative

वाक्य का एक प्रकार। ऐसे क्रिया रूप या वाक्य, उपवाक्य जो प्रश्न या प्रकथन की अभिव्यक्ति करें, यथा - आदमी सो रहा है।

निष्कर्षण elicitation

वक्ता या सूचक से प्रामाणिक भाषिक सामग्री प्राप्त करने की पद्धति निष्कर्षण कहलाती है। ये सामग्री या तो वास्तविक कथन के रूप में होती है अथवा कथन के विषय में लिए गए निर्णय रूप में (जैसे - उनकी स्वीकार्यता)। सह सूचना सूचक से किस प्रकार अप्रत्यक्ष एवं संकोच रहित पद्धति से ग्रहण की जाए इसके लिए अनेक निष्कर्षण तकनीकियों के सुझाव विद्वानों ने दिए, उदाहरणार्थ - सूचक से ऐसा भाषिक कार्य करवाएँ जो विश्लेषण के लिए उपयोगी सूचनाओं पर प्रकाश डाले।

निष्पादन performance

प्रजनक व्याकरण के प्रणेता नोअम चॉमस्की ने भाषा की अवधारणा का स्पष्टीकरण दक्षता एवं निष्पादन दो शब्दों द्वारा किया। भाषिक दक्षता द्वारा व्यक्ति ज्ञानार्जन कर भाषा का उत्पादन एवं अवबोधन करता है अर्थात् भाषिक ज्ञान के आधार पर वक्ता द्वारा प्रयुक्त भाषा रूप निष्पादन कहलाता है। दक्षता अमूर्त नियम संहिता है जो व्यक्ति को असंख्य वाक्यों के उत्पादन एवं अवबोधन की क्षमता प्रदान करती है। निष्पादन प्रयोग मूर्त पक्ष है जो दक्षता की परिधि में घटित होता है निष्पादन के कथन ऐसे अभिलक्षणों से युक्त होते हैं जो अमूर्त नियम व्यवस्था के लिए अमहत्त्वपूर्ण हो, जैसे - आधे अधूरे वाक्य, मानसिक या

सामाजिक परिस्थिति के कारण उत्पन्न झिझक। आधुनिक भाषाविदों का मानना है कि ये अमहत्त्वपूर्ण प्रतीत होने वाले निष्पादन कथन मनोभाषाविज्ञान की दृष्टि से बहुत उपयोगी होते हैं।

निष्पादनवाची performative

जे.एल. आस्टिन नामक दर्शनशास्त्री द्वारा सर्वप्रथम प्रयुक्त इस शब्द का प्रयोग आज व्याकरणिक एवं आर्थी विश्लेषण में किया जाता है। वाक्य का एक प्रकार जिसमें वाक्य प्रयोग द्वारा किसी कार्य व्यापार का निष्पादन हो, यथा - मैं प्रतिक्षा करता हूँ..... मैं माँफी माँगता हूँ आदि। निष्पादन वाची उक्तियों एवं दृढ़तावाची उक्तियों के मध्य अन्तर होता है। **दृढ़तावाची** उक्तियाँ वर्णनात्मक कथन हैं जिनमें कहने का भाव होता है जबकि प्रथम में करने का भाव होता है। साथ ही दृढ़तावाची उक्तियाँ सत्यता-मानों पर विश्लेष्य नहीं होती हैं। निष्पादनवाची क्रियाएँ (प्रतिज्ञा करना, माँफी माँगना) वाक्व्यवहार में विशिष्ट महत्त्व रखती हैं।

निहित ज्ञान tacit knowledge

प्रत्येक भाषाभाषी का भाषा संरचना एवं प्रकार्य सम्बन्धी ज्ञान अचेतन होता है अर्थात् भाषा सम्बन्धी नियम प्रयोग के प्रति वह सचेत नहीं रहता है और अप्रत्यक्षत: ही उनका अर्जन एवं व्यवहार करता है। प्रजनक भाषाविज्ञान में इसे ही निहित ज्ञान कहा गया।

निहितार्थ implicature

वार्तालाप संरचना के अध्ययन में इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग मिलता है। किसी कथन के रूप से परिणामस्वरूप प्राप्त अर्थ उसके वार्तालाप सम्बन्धी निहितार्थ कहलाते हैं। इनका ज्ञान वार्तालाप की सामान्य ग्राह्यता एवं कुशलता को निर्दिष्ट करने वाले 'सहयोग सिद्धान्तों' से होता है, यथा - मेरी अंगूठी यहीं गिरी है का तात्पर्य 'तुम भी उसे ढूंढ़ो' से लिया जा सकता है।

नीड़न nesting

किसी अन्त:केन्द्रिक पदबन्ध की संरचना में एक या अधिक भाषिक इकाइयों (जैसे - पदबन्ध या उपवाक्य) का निवेश (insertion) नीड़न कहलाता है, उदाहरणार्थ -

'कोने में रखी चौकी जिस पर काला मेजपोश बिछा है जो मैंने बचपन में काढ़ा था' पदबंध में कई पदबन्ध नीड़ित हैं।

नृजाति कार्यप्रणाली ethnomethodology

अमरीकी समाजशास्त्रियों ने 1970 में एक आन्दोलन छेड़ा जिसके आधार पर भाषाविज्ञान में वार्तालाप विश्लेषण/सम्भाषण विश्लेषण का विकास हुआ। समाजशास्त्र द्वारा प्रवर्तित इस उपागम ने अनुसन्धान की पूर्वप्रचलित गुणात्मक तकनीकी को बदलने का सुझाव दिया। इस प्रणाली में सामाजिक संरचना के सामान्य प्रश्नों पर विशेष बल दिया गया और सामाजिक अन्तर्प्रक्रिया में संलग्न व्यक्तियों द्वारा स्वयं प्रयुक्त तकनीकियों का अध्ययन अनिवार्य माना गया। इनके अनुसार व्यक्ति विशेष अनुभवों एवं अन्तर्प्रक्रियाओं को कैसे प्रस्तुत करता है यह तथ्य महत्त्वपूर्ण है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सहज वार्तालाप की रिकार्डिंग एवं उससे सम्बन्धित लिप्यंकन पर विशेष बल दिया गया।

नृजाति भाषाविज्ञान ethno-linguistics

भाषाविज्ञान की शाखा जो नृजातियों के प्रकार एवं व्यवहार तथा भाषा के सम्बन्ध का अध्ययन करती है इसके और समाजभाषाविज्ञान के क्षेत्र में परस्पर आच्छादन मिलता है। सम्प्रति समाजभाषाविदों ने 'सम्प्रेषण का नृजाति विज्ञान' पदबन्ध की रचना की अर्थात् - सम्प्रेषण के सामाजिक आधार को निर्धारित करने वाले समस्त भाषाविज्ञान-बाह्य परिवर्त्यों के सन्दर्भ में किए गए भाषिक अध्ययन; इसमें भाषिक अन्तर्प्रक्रिया के वर्णन पर विशेष बल होता है। इन विषयों का अध्येता नृभाषाविद् कहलाता है।

नृवैज्ञानिक भाषाविज्ञान anthropological linguistics

भाषाविज्ञान की एक शाखा जिसमें भाषा वैविध्य एवं प्रयोग का अध्ययन सांस्कृतिक अभिरचनाओं एवं मानवीय विश्वासों के सम्बन्ध के आधार पर होता है तथा इस विश्लेषण के लिए नृवैज्ञानिक सिद्धान्तों एवं पद्धतियों का आश्रय लिया जाता है, उदाहरणार्थ - प्राचीन जाति के सदस्य द्वारा उच्चरित भाषिक अभिलक्षणों के आधार पर उसके सामाजिक, धार्मिक, व्यावसायिक एवं रिश्तेदार सम्बन्धी समूह की पहचान की जाए। नृविज्ञान, समाजशास्त्र एवं संस्कृतिशास्त्र अन्तर्सम्बन्धित विषय है अतः नृवैज्ञानिक भाषाविज्ञान, समाजशास्त्रविज्ञान एवं संस्कृतिभाषा-विज्ञान की विषयवस्तु में पारस्परिक अतिव्यापन मिलता है।

नेटवर्क व्याकरण network grammar

भाषा अवबोधन को किस प्रकार विकसित किया जा सकता है इस समस्या के समाधान हेतु संगणक भाषाविज्ञान तथा कृत्रिम मेधा की सहायता से विकसित व्याकरण नेटवर्क व्याकरण कहलाते हैं। एक नेटवर्क वाक्य का प्रतिरूपण स्थिति और मार्ग द्वारा होता है। स्थितियाँ वे बिन्दु हैं जहाँ रचना के निर्माण में कोई प्रतिबन्ध लगाया जा सके तथा स्थितियों के बीच का संक्रमण जो किसी प्रतिबन्ध की पूर्णता पर निर्भर करता है, मार्ग कहलाता है। दो प्रकार के नेटवर्क व्याकरणों का प्रस्ताव रख गया, (i) **प्रक्रियात्मक** व्याकरण तथा (ii) **संवर्धित** नेटवर्क व्याकरण। ये व्याकरण पाठ से सूचनाएँ निकाल कर संरक्षित रखते हैं तथा पाठ में कौन-कौन सी मुख्य व्याकरणिक एवं आर्थी संरचनाएँ हैं यह ज्ञात करने के लिए एकत्रित सूचना के निष्कर्षों का प्रयोग करते हैं। किसी पाठ का व्याकरणिक विभाजन पद व्याख्या कहलाता है जिसमें वाक्यीय, आर्थी एवं संदर्भपरक सूचनाएँ समाहित होती हैं।

नैदानिक भाषाविज्ञान clinical linguistics

भाषिक सिद्धान्तों, पद्धतियों एवं वर्णनात्मक निष्कर्षों का अनुप्रयोग जब किसी भाषा-विकास से सम्बन्धित चिकित्सकीय परिस्थितियों के विश्लेषण के लिए किया जाए तो उसे नैदानिक भाषा-विज्ञान का क्षेत्र कहा जाता है। इसके अन्तर्गत भाषाविद् उच्चरित एवं लिखित भाषा के उच्चारण और बोध से सम्बन्धित विकारों को समझने, पहचानने एवं सुधारने के लिए वाक् चिकित्सक, श्रवणविज्ञानी तथा अन्य की सहायता करता है। ये विकार शैक्षणिक व नैदानिक परिस्थिति में उत्पन्न हो सकते हैं।

नोअम चॉमस्की Noam Chomsky

1957 में प्रकाशित अपनी पुस्तक **Syntactic Structures** के माध्यम से चॉमस्की ने संरचनात्मक भाषाविज्ञान की उपलब्धियों को अस्वीकार कर सार्वभाषिक व्याकरण के महत्त्व को स्वीकारा। 1966 में उन्होंने **Cartesian Linguistics** नामक पुस्तक प्रकाशित की और भाषिक सिद्धान्त का दार्शनिक पक्ष निरूपित किया। 1965 में Aspects of the Theory of Syntax का प्रकाशन हुआ। अपनी पुस्तकों के माध्यम से चॉमस्की ने भाषा विषयक विचारों एवं अवधारणाओं को एक पूर्ण एवं सम्यक् सिद्धान्त के रूप में प्रस्तुत किया जो रूपान्तरण एवं प्रजनक व्याकरण नाम से प्रसिद्ध हुआ। भाषा निष्पादन एवं सामर्थ्य; अन्तस्तलीय संरचना एवं बहि:स्तलीय संरचना; मूल वाक्य आदि इनके द्वारा प्रतिपादित प्रमुख सैद्धान्तिक अवधारणाएँ हैं।

प

पक्ष aspect

क्रिया के व्याकरणिक वर्णन में प्रयुक्त कोटि। जहाँ काल, क्रिया द्वारा अभिव्यक्त घटना के कालक्रम को समय के आधार पर निर्धारित करता है वहाँ पक्ष, कार्य की प्रकृति एवं अवस्था की सूचना देता है। इस प्रकार कार्य की पूर्णता, अपूर्णता, निरन्तरता आदि की सूचना पक्ष द्वारा मिलती है। अंग्रेजी में इसके दो वर्ग और प्रत्येक के दो उपवर्ग मिलते हैं (निरन्तर / अनिरन्तर; पूर्ण / अपूर्ण)। रूसी भाषा में पूर्ण एवं अपूर्ण दो वर्ग मिलते हैं। इनमें से प्रथम कार्य की पूर्णता का सूचक है जब कि द्वितीय कार्य समाप्ति की चर्चा नहीं करता वरन् काम की अवधि बताता है।

पक्षपद rheme

प्राग सम्प्रदाय के उपागम में वाक्य को दो भागो में वर्गीकृत किया गया **पक्षपद / रीम** अर्थात् वाक्य का वह भाग जो नवीन सूचना दे तथा **कथ्य / थीम** अर्थात् वाक्य का वह भाग जो वाक्य के पूर्व के संदर्भ द्वारा कही गई बात या तथ्य को बताए। रीम ही सम्प्रेषित अर्थ के अतिरिक्त अन्य भाव एवं अर्थ को सम्प्रेषित करता है। इसमें सम्प्रेषणपरक गतिशीलता होती है।

पद-निरूपण parsing

पारम्परिक व्याकरण में वाक्य के अलग-अलग व्याकरणिक तत्त्वों का शैक्षणिक अभ्यास पद निरूपण कहलाता है, जैसे - कर्ता, उद्देश्य, विधेयक, भूतकाल, संज्ञा आदि। भाषाविज्ञान की दृष्टि से नामपत्र नहीं वरन् तत्त्वों की पहचान करने वाले विश्लेषण आधार महत्त्वपूर्ण होते हैं और भाषाविद् की रुचि यह ज्ञात करने में है कि किस प्रकार वक्ता इन तत्त्वों का प्रयोग वाक्य को भाषा समग्रता से सम्बन्धित करने के लिए करता है।

पद पाठ pada text

विश्लेषणात्मक पद्धति, जिस पर व्याकरण के मूलभूत सिद्धान्त आधृत थे। वैदिक

मन्त्रों के शुद्धातिशुद्ध उच्चारण को सुरक्षित बनाए रखने के लिए किए गए उपायों में सर्वप्रथम स्थान पञ्चविध पाठ का है। इनमें मन्त्रपाठ, पदपाठ, क्रमपाठ, जटापाठ और घनपाठ आते हैं। पदपाठ में सन्धिविच्छेद, समास-विग्रह तथा धातु उपसर्ग के नियमों का प्रयोग किया गया।

पदबन्ध phrase

व्याकरणिक विश्लेषण में एकाधिक शब्दों द्वारा निर्मित संरचना पदबन्ध कहलाती है। पदबन्ध में अपना उद्देश्य एवं विधेय नहीं होता है। संरचनात्मक विश्लेषण में इसे सोपानिक क्रम के एक चरण के रूप में निरूपित किया जाता है जो शब्द से उच्च तथा उपवाक्य से निम्न होता है। आगत शब्द वर्ग की प्रधानता के आधार पर या आन्तरिक रचना के आधार पर इसके अनेक प्रकार मिलते हैं। प्रजनक व्याकरण में इसे विस्तृत अर्थों में ग्रहण कर, विश्लेषण की आरम्भिक अवस्था (पदबन्ध चिह्नक) या विश्लेष्य इकाई (संज्ञा पदबन्ध, क्रिया पदबन्ध) के रूप में प्रतिपादित किया गया।

पदबन्ध चिह्नक phrase marker

प्रजनक व्याकरण में वाक्यों के संरचनात्मक प्रतिरूपण जो व्याकरणिक नियमों द्वारा दिए गए नामपत्रित कोष्ठन के आधार पर प्रस्तुत किए जाते हैं, पदबन्ध चिह्नक कहलाते हैं। यह व्युत्पत्ति की विभिन्न अवस्थाओं में वाक्य की सोपानिक संरचना को पूर्णत: स्पष्ट करता है तथा उन्हें रूपिमों या रचकों के रेखीय अनुक्रम के रूप में विश्लेषित करता है। पदबन्ध चिह्नक प्राय: वृक्ष आरेख द्वारा प्रस्तुत किए जाते हैं।

पदबन्ध संरचना व्याकरण phrase structure grammar

नोअम चॉमस्की ने अपनी प्रथम पुस्तक में इस व्याकरण की चर्चा प्रजनक उपकरण के रूप में की। पदबन्ध संरचना व्याकरण नियमों का ऐसा समुच्चय है जो न केवल भाषिक तत्त्वों की श्रृंखलाओं का प्रजनन करता है वरन् श्रृंखलाओं के लिए घटक विश्लेषण भी प्रस्तुत करता है अत: यह व्याकरण **परिमित-स्थिति-व्याकरणों** से अधिक सूचना देता है किन्तु यह व्याकरण रूपान्तरण व्याकरण की भाँति शक्तिशाली नहीं होता है।

पदव्याख्या paraphrase

किसी वाक्य या पाठ का बिना अर्थ परिवर्तन के वैकल्पिक रूप प्रस्तुत करने की

प्रक्रिया या परिणाम पदव्याख्या कहलाता है। किसी वाक्य की एकाधिक पदव्याख्याएँ हो सकती हैं, जैसे - मोहन पुस्तक पढ़ रहा है; पुस्तक मोहन के द्वारा पढ़ी गई; यही पुस्तक मोहन ने पढ़ी आदि। पूर्वमान्यता या फोकस में भिन्नता होने पर भी आर्थी सिद्धान्त इन्हें समान आर्थी प्रतिरूपण वाला स्वीकार करेंगे। भाषाविद् कई प्रकार के रूपान्तरण सम्बन्धों को प्रतिपादित करने के लिए वाक्यीय पदव्याख्या का प्रयोग करते हैं।

पदविभाग parts of speech

पारम्परिक व्याकरण में शब्द के वर्गों के लिए इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग किया गया। भाषाविद् शब्द वर्ग (word class) या रूप वर्ग (form class) नाम अधिक उपयुक्त मानते हैं। प्रत्येक भाषा के शब्द वर्ग अलग अलग होते हैं। संस्कृत वैयाकरण यास्क ने नाम, आख्यात, उपसर्ग एवं निपात चार वर्गों का उल्लेख किया। पाणिनि ने दो ही वर्गों का उल्लेख किया सुबन्त् (नाम) एवं तिङ्न्त (आख्यात)। व्यावहारिक दृष्टि से पाणिनि का वर्गीकरण अधिक उपयुक्त हैं क्योंकि उपसर्ग स्वतन्त्र शब्द नहीं होते वरन् शब्द से जुड़कर प्रयुक्त होते हैं। हिन्दी शब्द वर्ग अंग्रेजी के अनुकरण पर संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, क्रिया विशेषण, सम्बन्धसूचक, समुच्चय बोधक एवं विस्मयादि बोधक वर्गों की चर्चा करता है। वास्तव में इन आठ को तीन वर्गों में समाहित किया जा सकता है - नाम (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण) आख्यात (क्रिया), अव्यय (क्रियाविशेषण, सम्बन्ध सूचक, समुच्चय बोधक एवं विस्मयादि बोधक)।

पदिम taxeme

अमरीकी विद्वान ब्लूमफील्ड ने स्वनिम के समानान्तर व्याकरणिक विन्यास की लघुतम इकाई के रूप में पदिम की स्थापना की। इसके अन्तर्गत पदक्रम, अन्विति, सुर का व्याकरणिक प्रयोग आदि आते हैं। ऐसे पदिम संयोजन जो पारम्परिक व्याकरणिक इकाई के रूप में आते हैं **पद विन्यास रूप** कहलाते हैं।

पदिम विन्यास tactic

किसी भाषायी स्तर पर, रेखीय अनुक्रम में इकाइयों का व्यवस्थापरक विन्यास पदिमविन्यास कहलाता है। स्वनों के अनुक्रमिक विन्यास का अध्ययन स्वन विन्यास विज्ञान, रूपिमों का रूपविन्यास विज्ञान तथा रूपिम से उच्चस्तरी व्याकरणिक इकाइयों का वाक्यीय विन्यास विज्ञान में किया जाता है। स्तरपरक व्याकरण इसको विशेष महत्त्व देता है और प्रतिपादित तलों के आधार पर अनेक स्तरों की स्थापना करता है।

परश्रुति / पूर्वश्रुति off / on glide

जब वाक् अंग किसी स्वन उच्चारण की अवस्था से अगले स्वन उच्चारण अथवा विश्राम की अवस्था में जाते हैं तो यह संचलन पर श्रुति कहलाता है। यह स्वन उच्चारण की तीसरी अवस्था है, इसे निर्मोचन भी कहते हैं।

जब वागांग किसी स्वन उच्चारण के लिए अथवा विश्राम के पश्चात अथवा किसी स्वन उच्चारण के बाद अपने उद्देश्य की ओर अग्रसरित होते हैं तो यह संचलन पूर्व श्रुति कहलाता है। यह स्वन उच्चारण की तीन अवस्थाओं में से प्रथम अवस्था है। इन दोनों अवस्थाओं में कभी-कभी स्वन भी उच्चरित हो जाते हैं।

परसंस्कृतिग्रहण acculturation

एक प्रक्रिया जिसके कारण निरन्तर सम्पर्क में रहने वाले दो या अधिक भिन्न समाजों के मध्य सांस्कृतिक आदान होता है। यह दो प्रकार से घटित होता है - कभी-कभी सामाजिक समुदायों की मान्यताएँ, विश्वास एवं रीति रिवाज परस्पर विलयित हो एक संस्कृति का निर्माण करते हैं जबकि दूसरी स्थिति में एक समाज दूसरे समाज की सांस्कृतिक व्यवस्था को चयन एवं परिवर्धन के द्वारा पूर्णत: स्वीकार कर लेता है। किसी समाज की मान्यताओं, रीति रिवाजों के साथ-साथ तत्सम्बन्धी शब्दावली भी दूसरे समाज में ग्रहण कर ली जाती है। भाषा सम्बन्धी यह आदान सिर्फ शब्दावली स्तर तक ही नहीं सीमित रहता वरन् व्याकरण पक्ष को भी प्रभावित करता है यह प्रक्रिया **भाषायी परसंस्कृति ग्रहण** कहलाती है।

परस्मै पक्ष benefactive

कतिपय व्याकरणिक विवरणों में आगत एक पारिभाषिक शब्द, जो ऐसे कारक रूप या रचना को सन्दर्भित करता है, जिसका कार्य 'इसके बदले में' या 'इसके हित के लिए' इस अवधारणा को वाक्यान्तर्गत अभिव्यक्त करना है। अंग्रेजी में प्राय: 'अभीष्ट प्राप्तकर्ता' का यह अर्थ `for' पदबन्ध द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है, यथा - I have got a book for you. संस्कृत में परस्मैपद पारिभाषिक शब्द का प्रयोग मिलता है। वहाँ इसका अर्थ है - दूसरे के लिए प्रयुक्त वाच्य या क्रिया के दो रूपों में से (परस्मै तथा आत्मने) एक जिसमें संस्कृत की धातुओं के रूप चलते हैं। परस्मै का अर्थ है - जो दूसरे के लिए हो अत: ऐसी क्रियाएँ जिनका फल दूसरे के लिए हो, इस वर्ग में होनी चाहिए। व्याकरण में यह नियम निश्चित है किन्तु कोई भी इसका दृढ़ता से पालन नहीं करता है और कुछ धातुएँ परस्मैपद

और कुछ आत्मनेपद तथा कतिपय दोनों में विभक्त मिलती हैं।

पराभाषाविज्ञान paralinguistics

उपरिखण्डीय स्वन प्रक्रिया में व्यवहृत एक पारिभाषिक शब्द जो वाक् के स्वराघात सम्बन्धी ऐसे विभेदों की ओर संकेत करता है जो स्वनगुण से कम व्यवस्थित होते हैं, जैसे - श्वसित या काकलरंजित ध्वनि, ओष्ठ वर्तुलन या नासिक्यीकरण आदि गौण उच्चारणों द्वारा भाषा में प्रतिफलित विशेष प्रकार की अभिवृत्ति, सामाजिक भूमिका या विशिष्ट अर्थ का संकेतन। कतिपय विद्वान पराभाषिक अभिलक्षणों को भाषिक विश्लेषण से बाहर रखने के पक्ष में हैं वहीं कुछ अन्य विद्वान पराभाषा के क्षेत्र को विस्तृत कर अंगविक्षेप अभिलक्षणों को भी समाहित करना चाहते हैं।

परिणामवाचक illative

'किसी स्थान की दिशा में' इस अर्थ को व्यक्त करने वाली विभक्ति जिसका प्रयोग फिन्निश भाषा में मिलता है।

परिणामी resultant

व्याकरण एवं अर्थविज्ञान के अन्तर्गत उन उपवाक्यों या तत्त्वों को सन्दर्भित करने वाला शब्द जिनका अर्थ निष्कर्ष या प्रभाव की अवधारणा को अभिव्यक्त करता है, उदाहरणार्थ - हिन्दी के अन्तत:, निष्कर्षत: आदि शब्द; 'वह दु:खी हो गया, इस कारण उसका मन नहीं लगा' जैसी रचनाएँ; 'वह रोटी खा रहा है, सीता पुस्तक पढ़ रही है' वाक्य के कर्म आदि व्याकरणिक अभिलक्षण इस वर्ग में आते हैं।

परिपूर्णता exhaustiveness

किसी सामग्री विश्लेषण में भाषिक व्यतिरेकों को पूर्णरूपेण अभिव्यक्त कर अन्तत: भाषा समग्रता को प्रतिपादित करने वाला सिद्धान्त परिपूर्णता कहलाता है। भाषाविज्ञान में इसके अतिरिक्त प्रयुक्त अन्य सिद्धान्त **लाघव** और **आत्मसंगति** हैं।

परिमाणवाचक quantifier

परिमाण सम्बन्धी व्यतिरेक अभिव्यक्त करने वाले मदों का समुच्चय अर्थविज्ञान

में परिमाण वाचक कहलाता है, जैसे - सब, थोड़ा, प्रत्येक आदि। व्याकरणिक वर्णन के कुछ प्रारूप परिमाण सम्बन्धी व्यतिरेक प्रदर्शित करने वाले मदों के उस समुच्चय को परिमाणवाचक कहते हैं जो संज्ञापदबन्ध में प्रतिबन्धित वितरण में प्रयुक्त होता है, जैसे - बहुत, अनेक आदि। परिमाणवाचक-अस्थिरता का नियम, कुछ रूपान्तरण भाषाविदों ने, वाक्य में अस्थिर-परिमाणवाचकों की विशेषता की व्याख्या के लिए, प्रतिपादित किया, जैसे - 'सारा खाना खा लिया' बनाम 'खाना सारा खा लिया'।

परिमित स्थिति व्याकरण finite state grammar

1957 में प्रकाशित चॉमस्की की प्रथम पुस्तक सिंटैक्टिक स्ट्रक्चर्स में उन्होंने व्याकरण के सरल रूप की विवेचना की। उनके अनुसार यह "व्याकरण का सरलतम रूप है जो सीमित संख्यक उपकरणों द्वारा असीमित संख्यक वाक्यों का प्रजनन करता है"। इसे ही **मार्कोव प्रक्रिया व्याकरण** (रूसी सांख्यकीय शास्त्री मार्कोव) भी कहते हैं। यह व्याकरण वाक्य को बाएँ से दाएँ की ओर कार्य करते हुए प्रजनित करता है। सर्वप्रथम एक आरम्भिक तत्त्व का चयन किया जाता है तत्पश्चात् अन्य तत्त्वों के प्रयोग की सम्भावनाएँ पहले आने वाले तत्त्व की प्रकृति द्वारा पूर्णत: निर्धारित होती रहती है। चॉमस्की के मतानुसार यह सरल व्याकरण वाक्य निर्माण की अनेक महत्त्वपूर्ण प्रक्रियाओं की व्याख्या करने में असमर्थ है, उदाहरणार्थ - असंतत रचना 'जिन लड़कों ने नेता को मारा था पकड़े गये' में लड़कों और पकड़े के मध्य का व्याकरणिक सम्बन्ध इस व्याकरण द्वारा विवेचित नहीं किया जा सकता है।

परिरेखा contour

अमरीकी परम्परा में कार्य करने वाले स्वनप्रक्रियाशास्त्रियों ने अपने उपरिखण्डीय स्वनप्रक्रियात्मक अध्ययनों में इस शब्द का प्रयोग किया। शब्द, पदबन्ध या वाक्य में स्वराघात में आरोह, अवरोह या समस्थिति आदि को व्यक्त करने वाली रेखा या इन स्वराघात परिवर्तनों वाली अभिरचना परिरेखा कहलाती है। शब्द स्तर पर इसे **परिरेखा तान** कहते हैं और वाक्य स्तर पर **समतान**। इस प्रकार यह तान का वह रूप है जिसमें स्वराघात अपेक्षाकृत परिवर्तनशील होता है, जैसे - चीनी, थाई, वियतनामी भाषाओं में।

परवर्णी शब्द acronym

परिवर्णी शब्द उस सृजन प्रक्रिया के परिणाम होते हैं जिसमें दो या दो से अधिक

मिलता है। साथ ही स्वनप्रक्रिया अनुबन्धित परिवर्त या व्याकरण प्रतिबन्धित परिवर्त जैसे पारिभाषिक पदबन्ध शब्द भी प्रचलित हैं।

परिवर्तन conversion

जब कोई मद बिना किसी प्रत्यय संयोजन के नवीन पदवर्ग का सदस्य बन जाए तो शब्द निर्माण की यह व्युत्पादक प्रक्रिया परिवर्तन कहलाती है, जैसे - खेल (संज्ञा) / खेल (क्रिया; खाना (संज्ञा) / खाना (क्रिया)। कतिपय व्याकरण आंशिक एवं पूर्ण परिवर्तन इन दो वर्गों की चर्चा करते हैं। 'शून्य' की संकल्पना तथा 'प्रकार्यात्मक परिवर्त' पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग भी इसी अर्थ में किया जाता है।

परिवार family

कतिपय भाषाओं का एक समुच्चय जो समान स्रोत या पूर्वज से विकसित हुआ हो एक भाषा परिवार का निर्माण करता है, यथा - भारोपीय परिवार में संस्कृत, ग्रीक, लैटिन, अवेस्ता आदि दुहितृ भाषाएँ आती हैं जो सभी मूल भारोपीय भाषा से विकसित हुई हैं। 19वीं शताब्दी में तुलनात्मक भाषाविदों ने भाषाओं के मध्य प्राप्त सम्बन्धों का प्रतिरूपण **वंश वृक्ष** द्वारा किया।

परिवेश environment

किसी भाषिक इकाई का अपनी निकटवर्ती इकाइयों के साथ पूर्वापर संबंध। भाषिक परिवेश के अभिलक्षण किसी विशिष्ट इकाई के चयन को प्रभावित करते हैं और प्राय: कथन विशेष में इकाई के प्रयोग या वितरण को प्रतिबन्धित भी करते हैं, यथा - कोई व्यञ्जन स्वनिम ओष्ठ वर्तुलन वाला है या नहीं यह उसके स्वनिक परिवेश में उपस्थित वृत्ताकार स्वर पर निर्भर करता है। यह माना जाता है कि ध्वनियाँ अपने परिवेश से अनुबन्धित रहती हैं। इसी प्रकार व्याकरण में किसी रूपिम का प्रयोग उसके परिवेश में आगत अन्य रूपिमों पर निर्भर करता है। आजकल इस अर्थ में **सन्दर्भ** शब्द भी प्रचलित है।

समाजभाषाविज्ञान के अन्तर्गत भाषिक परिवेश से तात्पर्य उस भाषा रूप से है जो किसी वक्ता द्वारा प्रयुक्त हो रहा है, यथा - किसी बच्चे का भाषिक परिवेश अर्थात् वह भाषा जो बच्चा अपनी सामाजिक परिस्थिति में सुनता है।

परोल parole

स्विस् भाषाविद् फर्दिनान्द डी सेस्यूर ने भाषा की अवधारणा स्पष्ट करने के लिए तीन शब्दों का प्रयोग किया-परोल के अतिरिक्त अन्य दो **लैंगेज** एवं **लाँग** थे। परोल से तात्पर्य वक्ता द्वारा प्रयुक्त भाषिक कथनों से है जिसका प्रयोग एक वक्ता विशिष्ट परिस्थिति में करता है। परोल मूर्त एवं भौतिक है और लाँग से भिन्नता रखता है जो अमूर्त एवं मानसिक होता है तथा जो किसी भाषिक समुदाय की भाषा व्यवस्था का सामूहिक रूप है। इस प्रकार प्रत्येक परोल किसी न किसी लाँग की सीमा में घटित होता है और एक भाषिक समुदाय में निवसित व्यक्तियों के परोल भिन्न-भिन्न होते हुए भी लाँग द्वारा बँधे होते हैं। चॉमस्की ने इसके लिए **निष्पादन** शब्द का प्रयोग किया।

पर्याप्तता adequacy

भाषिक सिद्धान्त में लिखित व्याकरण के मूल्यांकन हेतु इस शब्द का प्रयोग किया गया। विद्वानों ने भिन्न-भिन्न आधार पर इसके कई भेद किए। **बाह्य पर्याप्तता** यह व्याकरण को इस आधार पर मूल्यांकित करती है कि भाषिक सामग्री से उसका संवाद कितना अच्छा है। **आन्तरिक पर्याप्तता** व्याकरण की आन्तरिक विशेषताओं, जैसे - सरलता, लालित्यपूर्णता आदि पर आधृत निर्णय है। अन्य दृष्टिकोण के मतानुसार यदि व्याकरण किसी इच्छित वाक्य समुच्चय को ही प्रजनित करता है तो वह **दुर्बल पर्याप्तता** वाला है किन्तु यदि व्याकरण इस कार्य के साथ-साथ वाक्यों का संरचनात्मक विश्लेषण भी प्रस्तुत करे तो वह **प्रबल पर्याप्तता** वाला होगा। चॉमस्की पर्याप्तता के तीन बिन्दुओं की चर्चा करते हैं। जो व्याकरण व्याकरणिक एवं अव्याकरणिक वाक्यों के मध्य अन्तर कर सके उसे **प्रेक्षणमूलक** बिन्दु पर उपयुक्त माना जाएगा। जब व्याकरण मातृभाषाभाषी की भाषिक अन्तःप्रज्ञा का सही लेखा-जोखा प्रस्तुत करे एवं भाषा की मूलाधार नियमितताओं को अभिव्यक्त करने वाले महत्त्वपूर्ण सामान्यीकरणों का प्रेक्षणीय आँकड़ों के सन्दर्भ में वर्णन करे तब उसे **वर्णनात्मक** दृष्टि से पर्याप्त माना जाता है। जिस व्याकरण में भाषिक सामग्री के परीक्षण तथा विश्लेषण की पर्याप्त क्षमता हो तथा जो प्राप्त सामग्री का वर्णन एवं सामग्रीगत नियमों की निर्भ्रम व्याख्या कर सके उसे **व्याख्यात्मक** पर्याप्तता से युक्त मानते हैं।

पश्च back

पश्च ध्वनियों के दो वर्ग मिलते हैं : (1) वे ध्वनियाँ जिनका उच्चारण मुख के पश्च

भाग में होता है तथा (2) वे ध्वनियाँ जिनके उच्चारण में जिह्वा का पश्च भाग करण का कार्य करता है। अनेक ध्वनियों में ये दोनों स्थितियाँ मिलती हैं, यथा - पश्च स्वर दोनों अर्थों में पश्च हैं। वे स्वर जिसके उच्चारण में जिह्वा का पश्च भाग कोमल तालु की ओर उठता है, पश्च स्वर कहलाते हैं, जैसे - हिन्दी ओ, उ, ऊ। व्यञ्जनों में कोमल तालव्य, अलिजिह्वीय, ग्रसनीय पश्च स्वन होते हैं। पारम्परिक वर्गीकरण में इनकी तुलना अग्र स्वन से की जाती है। प्रभेदक अभिलक्षण विश्लेषण में इनकी तुलना अपश्च स्वन से होती है। जिह्वा द्वारा अपनी तटस्थ स्थिति की अपेक्षा आकुंचित स्थिति में उच्चरित स्वन पश्च तथा निराकुंचित स्थिति में उच्चरित स्वन अपश्च कहलाता है।

पश्चाजिह्वीय dorsal

जिह्वा के पश्च भाग से उच्चरित स्वन जहाँ जिह्वा पश्च मुख की छत से सम्पर्क करती है, जैसे - कंठ्य या कोमल तालव्य स्वनों में। इनके उच्चारण में जिह्वा का पिछला भाग निष्क्रियता की अवस्था में कोमल तालु की ओर अभिमुख होता है।

पश्चपाशन back looping

बन्धिम (टेग्मीमिक) व्याकरण में प्रयुक्त एक पारिभाषिक शब्द। जब उच्च स्तर की रचना निम्न स्तरीय रचना के प्रकार्य-स्थान में समाविष्ट होती है तो इस प्रक्रिया को पश्चपाशन कहते हैं, यथा - संज्ञापदबन्ध के अन्तर्गत सम्बन्धवाचक उपवाक्य का प्रयोग (वह आदमी जो बात कर रहा था); कभी-कभी इसे **स्तर अवतरण** भी कहते हैं।

पश्चरचना back formation

शब्द निर्माण की एक प्रक्रिया। जब एक छोटा शब्द भाषा में विद्यमान एक बड़े रूप से काल्पनिक, प्रत्यय हटा कर, व्युत्पन्न होता है, उदाहरणार्थ - अंग्रेजी का televise शब्द television से बना है। इस व्युत्पत्ति का कारण सादृश्य होता है सम्भवत: मातृभाषी भाषा में प्रचलित शब्दों के सादृश्य पर इनका निर्माण करता है, तथा - supervision/supervise इसी प्रकार edit शब्द editor से व्युत्पन्न है। अंग्रेजी में credit/ creditor, act/ actor inspect/ inspector क्रिया से संज्ञा व्युत्पन्न होती है किन्तु edit और televise में प्रक्रिया उलट गई है। इसी प्रकार हिन्दी में 'अश्लील' से 'अ' हटा कर 'श्लील' और असुर से 'अ' हटाकर 'सुर' शब्द प्रचलित हुआ।

पश्च 'ल' dark 'l'

जिह्वा-पश्च के उच्च स्थिति तक उठने से उच्चरित 'ल' ध्वनि के लिए प्रयुक्त सामान्य शब्द। अँग्रेजी में इस प्रकार का 'ल' अन्त स्थिति में तथा [j] को छोड़कर अन्य व्यंजनों के पूर्व प्रयुक्त होता है, यथा - field.

पश्च विषमीकरण regressive dissimilation

स्वन परिवर्तन की वह प्रक्रिया जिसमें दो निकटवर्ती स्वनों में से परवर्ती स्वन पूर्ववर्ती को प्रभावित कर अपने से कुछ असमान बनाता है, जैसे - संस्कृत - मुकुल, प्राकृत - मुउलो।

पश्च समीकरण regressive assimilation

स्वन परिवर्तन की वह प्रक्रिया जिसमें परवर्ती स्वन पूर्ववर्ती स्वन को अपने सदृश कर लेता है, जैसे - संस्कृत शर्करा > शक्कर।

पश्चोन्मुखी cataphora

जब एक भाषिक इकाई आगे आने वाली दूसरी इकाई को सन्दर्भित करे तो उस प्रक्रिया या इसके परिणाम को कतिपय वैयाकरण पश्चोन्मुखी कहते हैं। जो अभिव्यक्त हो चुका है तथा जो अभिव्यक्त होने वाला है उसके मध्य भिन्नता दर्शाने का एक रास्ता पश्चोन्मुखी सन्दर्भ है, यथा - 'यह नौ बजे का समाचार बुलेटिन सुनिए' वाक्य 'यह' शब्द के पश्चोन्मुखी प्रकार्य को दर्शाता है।

पाठ text

विश्लेषण एवं वर्णन की दृष्टि से एकत्रित किया गया भाषा का रूप पाठ कहलाता है। इसके अन्तर्गत लिखित एवं मौखिक दोनों भाषिक सामग्री आती है। अर्थविज्ञान में **'पाठीय अर्थ'** पारिभाषिक शब्द का प्रयोग मिलता है। पाठीय अर्थ से तात्पर्य वाक्य के अर्थ को प्रभावित करने वाले उन तत्त्वों से है जो वाक्य के पूर्व-पर सन्दर्भ में आकर उसके अर्थ को प्रभावित करते हैं। पिछले कुछ वर्षों में, यूरोप में, भाषाविज्ञान की एक नवीन शाखा के रूप में 'पाठ भाषाविज्ञान' उभर कर आया है जिसकी केन्द्रीय अवधारणा पाठ है। इसके अनुसार निश्चित सम्प्रेषणात्मक प्रकार्य वाली भाषिक इकाइयाँ, जिनके मध्य संरचनात्मक

संगति, साहचर्य, सूचना प्रदान करने की क्षमता होती है, पाठ कही जाती हैं।

पाठाघात alexia

मस्तिष्क में लगी चोट के कारण यदि साक्षर व्यक्ति को भाषा पढ़ने में असुविधा या कठिनाई हो तो इसे पाठाघात कहते हैं। इस कमी के कारण पठन-पाठन, बोधन और / अथवा मौखिक पाठन में समस्याएँ आती हैं। कतिपय विद्वान **शाब्दिक पाठाघात** - वर्णों का नाम लेने की असमर्थता, तथा **मौखिक पाठाघात** - शब्दों को पढ़ने की असमर्थता के मध्य अन्तर कर पाठाघात के दो वर्गों की चर्चा करते हैं। किन्तु आधुनिक विद्वान इस वर्गीकरण को स्वीकार नहीं करते हैं।

पाणिनि Panini

पाणिनि संसार के सर्वश्रेष्ठ वैयाकरण के रूप में सुविख्यात हैं। इन्होंने अपनी रचना **'अष्टाध्यायी'** में तत्कालीन संस्कृत भाषा का बीजगणितीय, सूत्रात्मक शैली में वर्णन किया। भाषा ही नहीं वरन, जीवन के प्रत्येक पक्ष से सम्बन्धित सामग्री उनके अध्ययनों में उपलब्ध है। पाश्चात्य विद्वानों ने भी मुक्त कण्ठ से इनकी प्रशंसा की और यह स्वीकार किया कि पाणिनि जैसी प्रतिभा और मनीषा का कोई दूसरा भाषाविज्ञानी आज तक उत्पन्न नहीं हुआ। पाणिनि के विचारों का अनुगमन करने वाले संस्कृत विद्वान **'पाणिनि सम्प्रदाय'** में परिगणित किए जाते हैं।

पारम्परिक conventional

यह भाषा की आधारिक विशेषता है। मानव परम्परा से भाषा अर्जित करता है। हमने अपने पूर्वजों से भाषा सीखी, उन्होंने अपने पूर्वजों से और इस प्रकार भाषा की अजस्र प्रवाहमान धारा पीढ़ी दर पीढ़ी चलती आ रही है। भाषा के प्रत्येक स्तर (ध्वनि, व्याकरण, अर्थ) पर यह विशेषता लक्षित होती है, जैसे -भाषिक अभिव्यक्ति एवं अर्थ का सम्बन्ध पारम्परिक एवं यादृच्छिक होता है। कोशीय मद 'पेड़' और वस्तु 'पेड़' के बीच का सम्बन्ध पारम्परिक है और हिन्दी वक्ता परम्परा से ही इसका ज्ञान प्राप्त करता है।

पारम्परिक व्याकरण traditional grammar

18वीं एवं 19वीं शताब्दी के यूरोपीय वैयाकरण सम्प्रदायों को पारम्परिक व्याकरण नाम दिया गया। ये सम्प्रदाय भाषाध्ययन के भाषेतर आधारों को स्वीकारते थे तथा इनके

नियम निर्देशात्मक थे अर्थात् ये नियमन करते हैं कि भाषा का स्वरूप क्या होना चाहिए? हमें भाषा कैसे बोलनी चाहिए? भाषा शुद्धता एवं अम्मिश्रता, साहित्यिक उत्कृष्टता, लैटिन माडल का महत्त्व एवं उसके प्रयोग पर बल, लिखित भाषा रूप का महत्त्व आदि इस व्याकरण की प्रमुख विशेषताएँ थीं।

पारस्परिक बोधगम्यता mutual intelligibility

जब दो बोलियों के प्रयोगकर्ता एकदूसरे के वार्तालाप का सिर्फ आशय ही न समझें वरन् उसे बोल भी सकें। प्राय: दो बोलियों के मध्य यह स्थिति मिलती है किन्तु दो भाषाओं के मध्य बोधगम्यता नहीं होती है। इस आधार पर बोलियों को एक भाषा से सम्बन्धित करने में सहायता मिलती है।

पारिभाषिक शब्द technical term

भाषिक संरचना की दृष्टि से सामान्य शब्द एवं पारिभाषिक शब्द में भिन्नता नहीं होती है क्यों कि पारिभाषिक शब्दों की रचना प्रक्रिया का कोई भी नियम सामान्य शब्द रचना प्रक्रिया के नियमों की मर्यादा से बाहर नहीं जा सकता है लेकिन, अर्थ-संरचना की दृष्टि से पारिभाषिक और सामान्य शब्द के बीच महत्त्वपूर्ण भेद हैं। पारिभाषिक शब्द अभिधार्थ में ही ग्रहण किए जाते हैं लक्ष्यार्थ या व्यंग्यार्थ में नहीं। इन शब्दों में विचलन सम्भव नहीं होता है, ये अपने विषय क्षेत्र में सर्वत्र एक ही अर्थ में ग्राह्य होते हैं। इन शब्दों की बाह्य संरचना से जो प्रकट अर्थ व्यक्त होता है उससे कहीं अधिक तकनीकी अर्थ उसके गर्भ में निहित होता है जो उस विषय-क्षेत्र के संदर्भ में ही समझा जा सकता है। इन शब्दों की मूल प्रवृत्ति अर्थों के सूक्ष्मीकरण की होती है जिससे हर शब्द किसी न किसी या सूक्ष्म अर्थ का वाचक बन जाता है। पारिभाषिक शब्द एवं उसके अर्थ के बीच सम्बन्ध रूढ़ीकरण प्रक्रिया द्वारा स्थापित और विकसित होता है। कभी-कभी इन्हें दो वर्गों में विभाजित किया जाता है-पूर्ण पारिभाषिक एवं अर्ध पारिभाषिक।

पार्श्विक lateral

ऐसे स्वन जिनके उच्चारण में जिह्वाग्र अथवा फलक, दन्त, वर्त्स या तालु के साथ इस प्रकार सम्पर्कित होता है कि केन्द्रीय मार्ग अवरुद्ध हो जाता है पार्श्व ढीले रहते हैं वायु पार्श्व और दन्त पंक्ति से निकलती रहती है। पार्श्विक व्यञ्जन सघोष एवं अघोष दोनों होते हैं। हिन्दी का /ल/ तथा अंग्रेजी का स्पष्ट और अस्पष्ट /l/ पार्श्विक है। यदि वायु जिह्वा के

एक पार्श्व से निकलती है तो स्वन **एकपार्श्विक** कहलाते हैं तथा दोनों पार्श्वों से वायु निसृत होने पर उच्चरित स्वन **द्विपार्श्विक** कहलाता है।

स्वनप्रक्रिया के भेदक अभिलक्षण उपागम में अपार्श्विक अर्थात् जिनका पार्श्विक उच्चारण न हो की चर्चा होती है।

पुनरावर्तिता recursiveness

किसी वाक्य प्रजनन के जो नियम बार-बार प्रयुक्त होने की क्षमता रखते हैं उन्हें प्रजनक भाषाविज्ञान में पुनरावर्ती की संज्ञा दी जाती है। इस प्रक्रिया द्वारा प्रजनित वाक्य भी पुनरावर्ती कहलाते हैं एवं इस प्रक्रिया को पुनरावर्तिता कहते हैं। इस युक्ति द्वारा निश्चित संख्यक नियमों से असीम असंख्य वाक्यों का प्रजनन हो सकता है, यथा - बड़ी मूँछों वाले आदमी की पागल बीबी के छोटे भाई...। इसे पौन: पुन्य संज्ञा भी देते हैं।

पुनरावर्ती स्तरण recursive layering

बन्धिम व्याकरण में वाक्यीय रचना में प्रयुक्त एक प्रक्रिया। जब एक बन्धिम रचना उसी स्तर की दूसरी रचना में सम्प्रविष्ट हो तो उसे पुनरावर्ती स्तरण की संज्ञा दी जाती है, यथा - 'यह सब ताजा मीठा दूध' यहाँ पदबन्ध में पदबन्ध समाविष्ट हैं।

पुनरूक्ति reduplication

रूपरचना में पुनरावृत्ति की प्रक्रिया पुनरूक्ति कहलाती है। इसमें धातु के कतिपय अंश या पूर्ण धातु की पुनरावृत्ति होती है। ग्रीक भाषा में धातु के आरम्भिक व्यंजन की पुनरूक्ति कतिपय व्याकरणिक सन्दर्भों में होती है। संस्कृत भाषा भी इस दृष्टि से पर्याप्त समृद्ध है वहाँ परोक्षभूत लिट् लकार में यह विशेषता पायी जाती है, यथा - पठ→पपाठ, लिख→लिलेख, दिश→दिदेश।

पुनर्निवेश feed back

किसी सूचना को भेजने वाला सूचक प्राप्त कर्ता से प्रतिक्रिया प्राप्त करता है और उसके आधार पर अपने सम्प्रेषण की क्षमता का परीक्षण एवं मूल्यांकन करता है यह सम्पूर्ण प्रक्रिया सम्प्रेषण सिद्धान्त में पुनर्निवेश कहलाती है। कुछ विद्वान इसे मानवीय भाषा की प्रमुख विशेषता स्वीकारते हैं ऐसी विशेषता जो मानवीय भाषा को अन्य प्रतीक व्यवस्थाओं से भिन्न प्रतिपादित करती है। स्वनविज्ञान के अन्तर्गत वक्ता की अपने उच्चारण

के प्रति श्रवण, उच्चारण एवं स्पदंन सम्बन्धी जागरूकता को भी पुनर्निवेश कहते हैं। मुख एवं कर्ण के मध्य वाक् प्रसरण में जब कोई ऐसा कृत्रिम विलम्ब उत्पन्न किया जाए जिसके फलस्वरूप संकेत निश्चित अवधि से विलम्ब से कर्ण तक पहुँचे तो इसे विलम्बित श्रवण सम्बन्धी पुनर्निवेश कहते हैं। कतिपय प्रकार की विलम्ब अवधि वक्ता की सामान्य प्रवाहगत वाक् क्षमता को प्रभावित कर उसमें निश्चित परिवर्तन लाती है। इस तकनीकी द्वारा हकलाने वाले व्यक्ति के वाक् में सुधार किया जा सकता है।

पुनर्रचना reconstruction

ऐतिहासिक भाषाविज्ञान एवं तुलनात्मक भाषाशास्त्र में प्रयुक्त एक पद्धति जिसमें भाषा के अज्ञात पूर्व रूप की स्वन व्यवस्था एवं रूप व्यवस्था की स्थापना भाषिक सामग्री के प्रमाणिक स्वनों एवं रूपों के विश्लेषण के आधार पर की जाती है। **तुलनात्मक पुनर्रचना** का यह प्रक्रम परस्पर सम्बन्धित भाषाओं में उपलब्ध लिखित सामग्री पर निर्भर करता है। इन परिस्थितियों के अभाव में किसी भाषा की समकालीन अवस्थाओं में प्राप्त संरचनात्मक नियमितताओं एवं अनियमितताओं के आधार पर ऐतिहासिक विकास क्रम का अनुमान लगाया जाता है। यह विश्लेषण भाषा के ऐसे मूलाधार रूपों की ओर संकेत करता है जो उसकी आरम्भिक अवस्थाओं के सूचक होते हैं, यह प्रक्रम **आन्तरिक पुनर्रचना** कहलाता है।

पुनर्लेख नियम rewrite rule

प्रजनक व्याकरण में प्रतिपादित एक नियम जो बाण के चिह्न द्वारा अंकित होता है जिसका अर्थ 'फिर से लिखना' होता है, जैसे - क2ख+ग का अर्थ है कि ख और ग 'क' के धारक हैं तथा 'क' का प्रत्यीकृत रूप ख+ग है। इस बाण चिह्न के बाएँ ओर आगत प्रतीक एक स्वतन्त्र संरचनात्मक तत्त्व का प्रतिरूपण करता है तथा दाएँ ओर आगत प्रतीक एक या अधिक तत्त्वों की श्रृंखला का प्रतिरूपण करता है।

पुनःसंरचना restructuring

आधुनिक प्रजनक व्याकरण में प्रतिपादित एक प्रकार का कोशीय नियम जो वाक्यीय कोटियों के अनुक्रम द्वारा किसी इकाई को पुनर्विश्लेषित करताहै, जैसे - [राम स.] [खाना स.] [खाकर क्रिप.] [चला गया क्रिप.] को [राम स.] [खाना खाकर चला गया क्रि.] रूप में पुनः संरचित किया जा सकता है।

पुर: विषमीकरण progressive dissimilation

स्वन परिवर्तन की वह प्रक्रिया जिसमें दो निकटवर्ती स्वनों में से पूर्ववर्ती स्वन परवर्ती स्वन को प्रभावित कर अपने से कुछ असमान बनाता है, जैसे - संस्कृत काक< हिन्दी काग।

पुर: समीकरण progressive assimilation

स्वन परिवर्तन की वह प्रक्रिया जिसमें दो निकटवर्ती या कभी-कभी दो अल्प दूरवर्ती स्वनों में से पहला स्वन दूसरे को प्रभावित करता है और प्रभावित होने वाला स्वन तद्रूप हो जाता है, जैसे - चक्र (संस्कृत) > चक्क (प्राकृत)।

पुरूष person

व्याकरणिक वर्णन में प्रयुक्त यह व्याकरणिक कोटि किसी परिस्थिति में भाग लेने वाले की प्रकृति को स्पष्ट करती है। वक्ता अथवा लेखक की दृष्टि से इसके तीन भाग किए जाते हैं प्रथम स्वयं वक्ता; द्वितीय श्रोता तथा तृतीय कथाविषय अर्थात् वक्ता एवं श्रोता को छोड़कर और सब। हिन्दी में इन्हें क्रमश: उत्तम पुरूष, मध्यम एवं अन्य पुरूष कहते हैं। प्राय: पुरूष की कोटि सर्वनाम या/और क्रिया को प्रभावित करती है।

पूरक वितरण complementary distribution

किसी स्वनिम के उपस्वनों का ऐसा वितरण जो परस्पर व्यावर्तक परिवेश में हो अर्थात् एक उपस्वन जिस परिवेश में आए दूसरा उसमें नहीं आए, उदाहरणार्थ - अंग्रेजी के / k / स्वनिम के दो उपस्वन-अल्पप्राण [k] तथा महाप्राण [kh] का वितरण। अल्पप्राण [k] या तो [s] के बाद आता है (sky) अथवा मध्य या अंत्यस्थिति में किसी अन्य व्यञ्जन के पहले आता है (act) जबकि महाप्राण (kh) आद्य स्थिति में किसी स्वर के पूर्व आता है (key)। स्वनप्रक्रिया के साथ-साथ रूपरचना के क्षेत्र में भी इस शब्द का प्रयोग मिलता है वहाँ व्याकरणिक परिवेश में रूपों के युग्मों के वितरण की चर्चा की जाती है।

अर्थविज्ञान में कोशीय मदों के मध्य एक आशय सम्बन्ध की कोटि को सन्दर्भित करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। पूरक शब्दों में एक प्रकार की आर्थी विलोमता मिलती है, यथा -स्त्री / पुरूष, विवाहित / अविवाहित। इस प्रकार के सम्बन्ध में किसी एक मद की स्वीकृति दूसरे की अस्वीकृति की सूचना देती है। कोई भी सत्व एक साथ दोनों नहीं हो सकता है।

पूर्ण full

प्राय: भाषाओं में शब्द के वर्गीकरण के लिए दो वर्गों की स्थापना की जाती है पूर्ण एवं रिक्त। वे शब्द जिनके निश्चित कोशीय अर्थ होते हैं पूर्ण कहलाते हैं, जैसे - घर, लड़का, खाना, सोना आदि। रिक्त शब्दों की भूमिका पूर्णत: व्याकरणिक होती है, जैसे - में, से, लेकिन, परन्तु। इन दोनों वर्गों के मध्य स्पष्ट विभाजक रेखा खीची नहीं जा सकती अत: कतिपय विद्वानों ने इस वर्गीकरण की आलोचना की। उनके अनुसार लेकिन, परन्तु जैसे शब्दों को यद्यपि व्याकरणिक माना जाता है तथापि इनके कुछ स्वतन्त्र वर्णय अर्थ अवश्य होते हैं। पूर्ण पारिभाषिक शब्द का प्रयोग पूर्ण वाक्य, पूर्ण विधेय या पूर्ण क्रिया जैसे पदबन्धों में भी किया जाता है।

पूर्णकालिक perfect

क्रिया रूपों के व्याकरणिक वर्णन में इस शब्द का प्रयोग मिलता है। क्रिया के वे रूप जो व्यापार की पूर्ण व अपूर्ण अवस्था का बोध कराते हैं क्रमश: पूर्णकालिक एवं अपूर्णकालिक कहलाते हैं, जैसे - नौकर आया है (पूर्ण), गाड़ी आ रही है (अपूर्ण)। हिन्दी में क्रिया के कालों के वर्तमान, भूत एवं भविष्य तीन भेद होते हैं। वर्तमान काल एवं भूतकाल के पुन: दो-दो उपभेद पूर्णता एवं अपूर्णता के आधार पर मिलते हैं। अंग्रेजी में इन दोनों के अतिरिक्त भविष्य काल के भी पूर्ण अपूर्ण भेद मिलते हैं तथा कालों की संख्या कुल नौ होती है।

जहाँ कुछ भाषाओं में इस शब्द का प्रयोग काल के शीर्षक के अन्तर्गत तीन वर्गों (पूर्ण, पूर्ण भूत एवं पूर्ण भविष्य) के मध्य समय सम्बन्धी व्यतिरेक प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है वहाँ कतिपय भाषाओं में पक्ष शीर्षक में समाहित होता है (पूर्णकालिक पक्ष एवं अपूर्णकालिक पक्ष) जैसे - रूसी या पोलिश भाषाएँ। स्लाविक भाषाओं में ये दोनों संकल्पनाएँ मिलती हैं।

पूर्णार्थ शब्द full word

भाषाविज्ञान के कतिपय उपागमों में शब्द वर्गीकरण के वर्गों में एक वर्ग पूर्णार्थक शब्द का माना जाता है अर्थात् वे शब्द जिनका वर्णय कोशीय अर्थ होता है। प्राय: प्रकार्यात्मक शब्दों को छोड़ कर, जिनका मुख्य उद्देश्य व्याकरणिक सम्बन्धों की अभिव्यक्ति है, भाषा के समस्त शब्द इस वर्ग में आते हैं।

पूर्वता सम्बन्ध precedence relation

किसी पदबन्ध-चिह्नक की आसन्धियों के युग्मों के मध्य प्राप्त एक प्रकार का सम्बन्ध प्रजनक व्याकरण में इस नाम से अभिहित किया जाता है। पदबन्ध-चिह्नक में यदि कोई आसन्धि कहीं किसी अन्य के बाँए ओर आती है तो वह दूसरे के पूर्ववर्ती होती है, जैसे - यदि व `ब' आसन्धि के तत्काल बाएँ ओर आए तो व `ब' के तत्काल पूर्ववर्ती होगी। आसन्धियों के मध्य प्राप्त क्षैतिज पूर्वता सम्बन्ध ऊर्ध्वाधर पूर्वता सम्बन्ध से भिन्न होते हैं।

पूर्वपद antecedent

ऐसी भाषिक इकाई जिसकी ओर वाक्य में आगत परवर्ती इकाई संकेत करे पूर्वपद कहलाती है। प्राय: व्यक्तिवाचक एवं सम्बन्धवाचक सर्वनाम अपने पूर्वपदों की ओर संकेत करते हैं, जैसे - मेरी लड़की, जो अच्छा नृत्य करती थी, उसके पैर की हड्डी टूट गई।

पूर्वप्रत्यय prefix

एक प्रकार का प्रत्यय जो धातु या प्रातिपदिक के पहले जुड़ता है, जैसे - असन्तोष, कुपूत, अनदेखा में संयुक्त (अ-,कु.-, अन-)। पूर्व प्रत्यय संयोजन की प्रक्रिया हिन्दी एवं अंगेजी रूपरचना की एक सामान्य प्रक्रिया है।

पूर्वमान्यता presupposition

भाषा का प्रयोग करते समय वक्ता कुछ पूर्वानुमान लगाता है। वह अपने वक्तव्यों का गठन इस पूर्वानुमान के आधार पर करता है कि श्रोता को इन तथ्यों का ज्ञान पहले से ही होगा। वक्ता द्वारा लगाए गए ये पूर्वानुमान जिनका श्रोता को ज्ञान होता है पूर्वमान्यता कहलाते हैं, जैसे - तुम्हारा भाई कल कहाँ गया था? वाक्य इस तथ्य का संकेतक है कि श्रोता का एक भाई है और वक्ता उसे जानता है। पेन्सिल कहाँ है? वाक्य यह पूर्वानुमान करता है कि वक्ता के सामने पेन्सिल नहीं है और उसे पेन्सिल की आवश्यकता है।

पूर्ववर्ती anterior

मुख विवर के तालु वर्त्स्य क्षेत्र (जहाँ से अँग्रेजी sh उच्चरित होता है) तथा उसके आगे के भाग में वायु धारा के अवरूद्ध होने के फलस्वरूप उच्चरित स्वन पूर्ववर्ती कहलाता है, जैसे - प, त,। इस स्वन की चर्चा चॉमस्की एवं हॉले द्वारा प्रतिपादित स्वनप्रक्रिया के भेदक अभिलक्षण सिद्धान्त में मिलती है।

पूर्वविकृति premodification

उन समस्त मदों को सन्दर्भित करने वाला शब्द जो किसी पदबन्ध के शीर्ष के पूर्व में आते हैं, जैसे - यह तुम्हारा फटा-पुराना कपड़ा नहीं चाहिए। हिन्दी में प्रायः इस स्थिति में निर्धारक एवं विशेषण आते हैं।

पूर्वसर्ग preposition

एक पद वर्ग जिसके सदस्यों की संख्या सीमित होती है तथा जो भाषा में सदैव संज्ञा पदबन्ध के पहले अथवा कुछ रूपों के पहले प्रयुक्त होता है, जैसे - on the table, in your house, to sit.

पूर्वस्थापना prepose

वाक्य में किसी घटक का पूर्व स्थिति में संचलन प्रजनक व्याकरण में पूर्वस्थापना कहलाता है, जैसे - मैने कल साड़ी खरीदी ; कल मैने साड़ी खरीदी यहाँ दूसरे वाक्य में `कल' की पूर्वस्थापना की गई है।

पूर्वापेक्षा anticipation

मनोभाषाविज्ञान में जिह्वा स्खलन के एक प्रकार को पूर्वापेक्षा नाम दिया गया। जब वक्ता बाद में आने वाली इकाई का पहले से ही प्रयोग कर ले तो इसे पूर्वापेक्षा की संज्ञा दी जाती है, यथा - catch the ball के स्थान पर batch the call प्रयोग अथवा हिन्दी में `दाल-चावल' के स्थान पर `चाल-दावल' का प्रयोग।

पूर्वापेक्षी anticipatory

समीकरण के विविध प्रकारों में एक जिसका प्रयोग स्वनविज्ञान एवं स्वनप्रक्रिया में मिलता हैं। पूर्वापेक्षी समीकरण में किसी स्वन का परिवर्तन परवर्ती स्वन के प्रभावस्वरूप होता है, जैसे - एक गाँव>एग्गाँव, सात दिन> साद्दिन या हाथ ही> हाथी।

पृथक्कीकरण divergence

बोली परिवर्तन की एक प्रक्रिया जिसमें कतिपय बोलियों के मध्य की समानता कम हो जाती है, समाजभाषाविज्ञान में इसे पृथक्कीकरण की संज्ञा दी जाती है। यह

प्रक्रिया प्राय: किसी भाषिक समुदाय के अन्तर्गत वक्ताओं के मध्य भौगोलिक एवं सामाजिक कड़ी के अभाव में घटित होती है ऐसी स्थिति में वक्ताओं के बीच सम्प्रेषण कम या कठिन हो जाता है। प्राय: इन भाषिक समुदायों में किसी एक मानक भाषा का अस्तित्त्व नहीं होता है। ऐतिहासिक भाषाविज्ञान में उस स्थिति को भी पृथक्कीकरण की संज्ञा देते हैं जिसमें एक रूप दो व्यतिरेकी इकाइयों में खण्डित हो जाता है।

पोर्ट रॉयल Port Royal

सत्रहवीं शताब्दी के विद्वानों का एक समुदाय जिन्होंने देकार्ते के विचारों का अनुगमन करते हुए भाषा विषयक इस विचारधारा का विकास किया कि व्याकरणिक कोटियाँ एवं संरचनाएँ विचारों की सार्वभौमिक तार्किक अभिरचना से सम्बन्धित हैं। 1960 में चॉमस्की द्वारा भाषा एवं मस्तिष्क के मध्य प्राप्त सम्बन्धों की चर्चा में इस सम्प्रदाय द्वारा स्थापित अवधारणाओं को समानान्तर स्तर पर रखा गया।

पौन: पुनिक frequentative

बार-बार किए गए कार्य को अभिव्यक्त करने वाली क्रिया के लिए इस शब्द का प्रयोग मिलता है। कतिपय भाषाओं जैसे रूसी में यह विशेषता रूपरचनात्मक दृष्टि से चिह्नित भी होती है जब कि अंग्रेजी में इस अर्थ की अभिव्यक्ति स्वतन्त्र शब्द क्रियाविशेषण द्वारा होती है, जैसे - again, often, regularly.

प्रकट overt

किसी वाक्य की बाह्य संरचना पर परीक्षणीय भाषिक रूपों के मध्य प्राप्त सम्बन्धों को सन्दर्भित करने के लिए भाषिक विश्लेषण में `प्रकट' पारिभाषिक शब्द का प्रयोग किया जाता है, जैसे - शब्द क्रम-अन्विति और स्वनिमविन्यास अनुक्रम।

प्रकथन statement

वाक्य के प्रकार्य सम्बन्धी वर्गीकरण में प्रकथन का उल्लेख मिलता है तथा इसकी परिभाषा व्याकरणिक, आर्थी या कभी-कभी समाजभाषावैज्ञानिक आधार पर की जाती है। वाक्यीय दृष्टि से एक ऐसा वाक्य जिसमें क्रिया के पूर्व कर्ता हो, जैसे - कुत्ता भौंक रहा है प्रकथन कहलाता है। आर्थी दृष्टि से पूर्ण अर्थ सम्प्रेषण ही प्रकथन का उद्देश्य होता है।

व्याकरणिक चर्चा में इनको प्राय: रूपात्मक दृष्टि से व्याख्यात्मक या निर्देशात्मक माना जाता है।

प्रकार्य function

किसी भाषिक रूप तथा भाषा व्यवस्था या अभिरचना के अन्य अंशों के मध्य का सम्बन्ध प्रकार्य कहलाता है, जैसे - हिन्दी में संज्ञा उपवाक्य संरचना में कर्ता, कर्म आदि के रूप में कार्य करती है। ये भूमिकाएँ वितरणात्मक दृष्टि से निर्धारित होती हैं। वाक्यीय प्रकार्य या सम्बद्धता की चर्चा प्राग सम्प्रदाय, सम्बन्धपरक व्याकरण आदि उपागमों में मिलती है। ऐसे सिद्धान्त जिनमे प्रकार्य की संकल्पना केन्द्रीय होती है उन्हें **प्रकार्यात्मक भाषाविज्ञान** या **विश्लेषण** की संज्ञा देते हैं।

प्रकार्यक functor

किसी भाषा में व्याकरणिक प्रकार्यों को सम्पादित करने वाले बद्ध रूपिमों एवं शब्दों के लिए प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द, उदाहरणार्थ - परसर्ग, सर्वनाम, समुच्चयबोधक। इन्हें प्रकार्य शब्द, व्याकरणिक शब्द या रूप शब्द भी कहते हैं। कोशीय शब्द इन सबका व्यतिरेकी है जो मुख्य आर्थी आशय का वहन करता है।

प्रकार्यच्युत chomeur

इस शब्द की व्युत्पत्ति फ्रेंच शब्द से हुई है जिसका अर्थ `बेरोजगार' होता है। इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग सम्बन्धपरक व्याकरण में मिलता है। जब किसी उपवाक्य में किसी संज्ञार्थक मद की भूमिका किसी अन्य संज्ञार्थक मद द्वारा ग्रहण कर ली जाए तो प्रथम को `प्रकार्यच्युत' की संज्ञा देते हैं, यथा - अंग्रेजी के कर्मवाच्य वाक्यों में मूलाधार कर्ता का कर्ता प्रकार्य कर्तृवाच्य के कर्म द्वारा किया जाता है अत: इस स्थिति में कर्तृवाच्य कर्ता को प्रकार्य-च्युत माना जाता है।

प्रकार्य-परिवर्तन transmutation

किसी प्रतीक व्यवस्था को भाषेतर प्रतीक व्यवस्था में प्रस्तुत करना प्रकार्य - परिवर्तन कहलाता है, यथा - किसी उपन्यास या कहानी का फिल्मांकन अथवा किसी नाटक या एकांकी का मंचन।

प्रकार्यात्मक वाक्य परिप्रेक्ष्य functional sentence perspective

प्राग सम्प्रदाय के नवीन अनुयायियों से सम्बद्ध एक भाषिक विश्लेषण सिद्धान्त। यह उक्तियों या पाठ का विश्लेषण उनके द्वारा संवहित सूचनाओं के आधार पर करता है। उक्ति के प्रत्येक अंश की भूमिका सम्पूर्ण उक्ति में उसके आर्थी योगदान के आधार पर मूल्यांकित की जाती है। किसी संरचना के अन्तर्गत विविध स्तरों के महत्त्व को ज्ञात करने के प्रयास स्वरूप ही **सम्प्रेषणपरक गत्यात्मकता** की संकल्पना विकसित हुई है।

प्रक्रम process

कतिपय भाषिक तत्त्वों या संरचनाओं पर घटित संक्रिया जिसके परिणामस्वरूप परिवर्तित भाषिक तत्त्व प्रकाश में आए। परिवर्तन का यह प्रक्रम वास्तविक भी हो सकता है, अथवा वर्णन के किसी विशिष्ट मॉडल में प्राप्त सम्बन्धों की अमूर्त व्यवस्था का अंग भी हो सकता है। भाषिक वर्णन के **मद एवं प्रक्रम** मॉडल में यह एक आधारिक अवधारणा है। समसामयिक भाषाविज्ञान के कई महत्त्वपूर्ण पारिभाषिक शब्दों पुनर्लेख नियम, व्युत्पत्ति एवं कर्मवाचकता आदि में प्रक्रम उपागम प्रतिबिम्बित होता है।

प्रक्रिया procedure

किसी निष्कर्ष या भाषिक विश्लेषण पर पहुँचने का विशेष तरीका/मार्ग भाषा-विज्ञान में प्रक्रिया कहलाता है। भाषाविज्ञान में तीन प्रकार की प्रक्रियाओं की चर्चा मिलती है-

(1) **खोज प्रक्रिया** - भाषिक सामग्री पर यान्त्रिक या स्वत: चालित रूप में लागू होने वाली एक तकनीकी जिसके द्वारा शुद्ध विश्लेषण प्राप्त होता है। इस प्रकार की प्रक्रिया का प्रयोग अनेक अमरीकी ब्लूमफील्ड अनुयायियों ने किया जिनकी आलोचना प्रजनक भाषाविदों ने की।

(2) **निर्णय प्रक्रिया** - किसी भाषा के व्याकरण क्रमों पर स्वचालित रूप में प्रयुक्त तकनीकी, जो सर्वाधिक उपयुक्त व्याकरण का निर्णय करे। विद्वानों का विचार है कि वर्तमान भाषिक ज्ञान के आधार पर इस उद्देश्य की प्राप्ति असम्भव है और भाषाविद् को पूर्ण निर्णयों के स्थान पर सापेक्ष निर्णयों को ही मानना चाहिए।

(3) **मूल्यांकन प्रक्रिया** - किसी सामग्री के दो विश्लेषणों में से कौन सा अधिक उपयुक्त है इस निर्णय के लिए सहायक आधार प्रस्तुत करने वाली तकनीकी। यह कहे जाने पर कि कोई विश्लेषण दूसरे की तुलना में अधिक सरल, विश्वसनीय एवं अच्छा है, सही निर्णय तक पहुँचाने वाली तकनीकी मूल्यांकन प्रक्रिया कहलाती है।

प्रक्षेपण projection

प्रजनक भाषाविज्ञान में, व्याकरण की क्षमता को इस प्रकार निर्धारित करना जिससे वह दिए गए वाक्य समुच्चय का विश्लेषण करने के साथ-साथ भाषा की असीमित वाक्य राशि पर भी लागू किया जा सके, प्रक्षेपण कहलाता है। प्रजनक नियम ही यह करने का प्रमुख साधन हैं। प्रजनक व्याकरण के कतिपय मॉडलों में इसका संकुचित अर्थ में प्रयोग मिलता है, जैसे - **प्रक्षेपण नियम** - ये नियम आर्थी घटक के अंग रूप में निरुपित किए जाते हैं और इनका कार्य वाक्यीय घटक द्वारा प्रजनित रचक श्रंखला की आर्थी व्याख्या प्रस्तुत करना है। ×-रेखा वाक्यरचना में **पदबन्धीय प्रक्षेपण** या **रेखा प्रक्षेपण** का प्रयोग पदबन्ध के वाक्यीय विश्लेषण में माध्यमिक कोटियों के संज्ञान के लिए किया जाता है।

प्रजनक generative

गणित से आगत इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 1957 में प्रकाशित नोअम चॉमस्की की पुस्तक `सिंटैक्टिक स्ट्रक्चर्स' में मिलता है। चॉमस्की के अनुसार एक सफल एवं उत्कृष्ट व्याकरण निश्चित नियमों का ऐसा समुच्चय है जो भाषा के समस्त सम्भावित व्याकरणिक वाक्यों को प्रजनित कर उनका वर्णन कर सके। चॉमस्की ने प्रजनक शब्द का प्रयोग व्याकरण की इसी क्षमता के सन्दर्भ में किया। प्रजनक व्याकरण के अनेक मॉडल स्थापित किए गए। स्वयं चॉमस्की ने प्रारम्भिक चर्चा में तीन प्रकारों का उल्लेख किया- परिमित स्थिति, पदबन्ध संरचना और रूपान्तरण व्याकरण। सम्प्रति चॉमस्की द्वारा विकसित सिद्धान्तों के अतिरिक्त अन्य कई प्रकार के सिद्धान्तों के लिए इसका प्रयोग किया जा रहा है, यथा - चाप युग्म व्याकरण, शब्द-प्रकार्य व्याकरण एवं सामान्यीकृत पदबन्ध संरचना व्याकरण। प्रजनक भाषाविज्ञान की दो प्रमुख उपशाखाएँ हैं प्रजनक वाक्य विज्ञान एवं प्रजनक स्वनप्रक्रिया। प्रजनक अर्थ विज्ञान का प्रयोग भिन्न अर्थ में मिलता है।

प्रजनक भाषाविज्ञान के अन्तर्गत कार्य करते हुए अनेक अमरीकी भाषाविदों जार्ज लेकॉफ, पोल पोस्टल, ज़ॉन रॉस, जे.काट्स तथा जे. फोडर ने प्रजनक अर्थविज्ञान की चर्चा की । इस उपागम के अनुसार व्याकरण का आर्थी अंश ही प्रजनक आधार होता है जिससे वाक्यीय संरचनाएँ व्युत्पन्न होती हैं। इनका विश्लेषण किसी वाक्य के आर्थी प्रतिरूपण से आगे बढ़ता है और यह स्तर सुगठित बाह्य संरचनाओं की उत्पत्ति में सहायक है। इसके बाद आने वाले वाक्यीय नियम पूर्णत: निर्वचनात्मक होते हैं और इन दोनो के बीच कोई माध्यमिक स्तर नहीं होता है, यहाँ प्रजनक शब्द का प्रयोग संकीर्ण अर्थ में हुआ है।

प्रतिउदाहरण counter example

किसी परिकल्पना को अप्रमाणिक सिद्ध करने वाले आँकड़ो के उपलब्ध होने पर यदि विश्लेषण का पुन: प्रत्यक्षीकरण किया जाए तो यह सम्पूर्ण प्रक्रम प्रति उदाहरण कहलाता है। अन्य विज्ञानों की भाँति भाषाविज्ञान में भी इस विषय पर प्राय: चर्चा मिलती है कि क्या कोई प्रस्तावित प्रति उदाहरण वास्तविक अथवा दृश्यमान हो सकता है? अर्थात् वह इस प्रकार का विश्लेषण करने में समर्थ हो सकता है कि किए गए विश्लेषण का निस्तारण हो सके।

प्रतिकर्ता counter agent

अपने परवर्ती प्रारूप में फिल्मोर ने जिन नवीन कारक कोटियों को समाविष्ट किया उनमें से एक प्रतिकर्ता भी है अर्थात् वह बल या प्रतिरोध जिसके विरूद्ध कोई कार्य किया जाए।

प्रतिज्ञप्ति proposition

दर्शनशास्त्र से आगत यह शब्द अर्थ की ऐसी इकाई की ओर संकेत करता है जो किसी कथन की विषय वस्तु का निर्माण सरल निर्देशक वाक्य के रूप में करता है। भाषा-विज्ञान के क्षेत्र में अध्ययन का केन्द्र यह तथ्य है कि किन साधनों द्वारा विविध भाषिक रूप समान प्रतिज्ञप्ति की अभिव्यक्ति करते हैं (जैसे - राम ने पत्र लिखा, पत्र राम द्वारा लिखा गया) या किस प्रकार एक भाषिक रूप अनेक प्रतिज्ञप्तियों में विश्लेष्य होता है (जैसे - यह सुन्दर लाल साड़ी महँगी है - साड़ी सुन्दर है; साड़ी लाल है; साड़ी मँहगी है) कारक व्याकरण में वाक्य को प्रकारता एवं प्रतिज्ञप्ति दो आधारिक घटकों में विभाजित किया गया।

प्रतितथ्यपरक counterfactual

व्याकरण तथा अर्थविज्ञान में उस हेतुमद् वाक्य के लिए इस शब्द का प्रयोग किया जाता है जो पूर्णत: परिकल्पनीय स्थिति की ओर संकेत करता है, यथा - 'यदि उसने मेहनत की होती तो वह अवश्य पास हो जाता।' इनके विपरीतार्थी वाक्य वास्तविक हेतुमद वाक्य होते हैं, यथा - यदि वह मेहनत करेगा तो अवश्य पास होगा इन दोनों ही प्रकार के वाक्यों की व्याख्या तथ्यपरकता की अवधारणा के सन्दर्भ में की जा सकती है।

प्रतितथ्यात्मक contrafactive

क्रिया-पूरक रचनाओं के वर्गीकरण में प्रयुक्त एक पारिभाषिक शब्द। वे रचनाएँ जिनमें पूरक उपवाक्य में अभिव्यक्त तर्क के विषय में यह पूर्वमान्यता बना ली जाती है कि वह असत्य है, यथा - आशा है मेरा भाई कल आ जाएगा। ये क्रियाएँ तथ्यपरक से भिन्न होती हैं।

प्रतिध्वनि echo

ऐसा वाक्य जिसमें पूर्वप्रयुक्त वाक्य के एक अंश या पूर्ण भाग का, अन्य वक्ता द्वारा पुन: प्रयोग किया गया हो। इस प्रकार के प्रतिध्वनि वाक्य के अन्तर्गत ही प्रतिध्वनि प्रश्न (यथा - राम - मैंने शेर देखा। श्याम-तुमने क्या देखा?) और विस्मयादिबोधक वाक्य (यथा - राम - क्या तुमनें किताब फाड़ी? श्याम - क्या मैंने किताब फाड़ी है!) आते हैं।

प्रतिनिधान commutation

कतिपय स्वनप्रक्रियाशास्त्रियों ने व्यतिरेक प्रदर्शित करने वाली ध्वनि स्थानापत्ति की प्रक्रिया को, प्रतिनिधान कहा है। प्राय: इस शब्द का प्रयोग 'प्रतिनिधान-परीक्षण' पदबन्ध में अधिक मिलता है। यह स्वनिम निर्धारण के लिए लघुतम युग्म स्थानापन्न क्षमता प्रक्रिया का एक व्यवस्थित प्रयोग है।

हेल्मस्लेव द्वारा प्रतिपादित ग्लौसेमैटिक्स सिद्धान्त में यह शब्द सीमित अर्थ में लिया गया - वहाँ प्रतिनिधान स्थानापत्ति से व्यतिरेक प्रदर्शित करता है तथा किसी रूप सारणी के सदस्यों के मध्य प्राप्त एक प्रकार के सम्बन्ध को सन्दर्भित करता है।

प्रतिनिध्यात्मक cross sectional

भाषा के विकास की प्रक्रिया के अध्ययन हेतु प्रयुक्त दो मुख्य कार्यविधियों में एक प्रतिनिध्यात्मक कहलाती है जिसका अनुप्रयोग शिशु भाषा अधिग्रहण क्षेत्र में किया जाता है। इस प्रकार के अध्ययन में समान या भिन्न आयु वर्ग वाले बच्चों के समूह की तुलना एक काल विशेष में, की जाती है। अनुदैर्ध्य (longitudinal) अध्ययन इसकी व्यतिरेकी पद्धति है जिसमें किसी एक बच्चे या समूह के भाषाअधिग्रहण में समय के साथ हुए विकास का अध्ययन किया जाता है।

प्रति निर्देश cross reference

एक विशिष्ट वाक्यात्मक सम्बन्ध को सन्दर्भित करने वाला शब्द। यदि वाक्यान्तर्गत कोई घटक ऐसे व्याकरणिक लक्षण की अभिव्यक्ति करे जो अन्य घटकों द्वारा भी अभिव्यक्त हो चुका हो तो लक्षण के पुन:प्रयोग को प्रतिनिर्देश कहते हैं, यथा - संस्कृत में 'त्वम् गच्छसि' यहाँ सर्वनाम एवं क्रिया में समान व्याकरणिक लक्षण का प्रतिपादन है।

प्रतिपूरण compensation

विभिन्न उपायों द्वारा एक सा ध्वानिक प्रभाव उत्पन्न करना। यदि हम किसी उच्चारण-कारक को दबाते हैं या परिवर्तित करते हैं तो दूसरे कारकों में फेर-बदल करके उसकी क्षतिपूर्ति कर सकते हैं। वह प्रक्रिया जिसमें शब्द विशेष में किसी स्वन के लुप्त होने या परिवर्तित हो जाने पर उसका आसन्न स्वन दीर्घ या ह्रस्व रूप में परिवर्तित हो जाता है, यथा - मध्ययुगीन आर्य भाषा अग्ग> हिन्दी आग।

परवर्ती व्यञ्जन के लुप्त होने पर पूर्ववर्ती स्वर का दीर्घ हो जाना **प्रतिपूरक दीर्घीकरण** कहलाता है, जैसे - प्राकृत कम्म> हिन्दी काम। परवर्ती संयुक्त व्यञ्जन के स्थान पर द्वित्व हो जाने से पूर्ववर्ती स्वर का ह्रस्व हो जाना **प्रतिपूरक ह्रस्वीकरण** कहलाता है, यथा - संस्कृत शून्य> सुन्न।

प्रतिफलन realization

किसी अमूर्त भाषिक इकाई की भौतिक / मूर्त अभिव्यक्ति प्रतिफलन कहलाती है, जैसे - स्वनिम स्वन द्वारा, रूपिम रूप द्वारा प्रतिफलित होते हैं।

वह व्याकरण जो समस्त वाक्यों को उनके संवादी आर्थी प्रतिरूपण से व्युत्पन्न माने **प्रतिफलनात्मक व्याकरण** कहलाता है। स्तरपरक व्याकरण में निरूपित दो विश्लेषणों में से एक **प्रतिफलनपरक विश्लेषण** कहलाता है। इस भाषिक अभिरचना के लिए चार आधारिक संक्रियाओं की स्थापना लैम्ब ने की-समस्तरीय समूहन (जैसे - घ्,+अ+र्+अळघर); समस्तरीय विखण्डन (जैसे - किसी ळकिस+ही); ऊर्ध्वाधर समूहन - जब दो या अधिक भाषिक इकाइयों को किसी उच्चस्तरीय इकाई का प्रतिफलन मानते हैं (जैसे - बहुवचन रूपिम के विविध रूप); ऊर्ध्वाधर विखण्डन-जब दो या अधिक उच्चस्तरीय इकाइयाँ एक निम्नस्तरीय इकाई द्वारा प्रतिफलित हों (जैसे - अंग्रेजी--s बहुवचन एवं संबंधवाचक दोनों का प्रतिफलन करता है)

प्रतिबंधक restrictive

पदबन्ध के व्याकरणिक विश्लेषण में परिवर्तित संरचना एवं उसके शीर्ष शब्द के सम्बन्ध को द्योतित करने वाला पारिभाषिक शब्द। प्रतिबन्धक परिवर्तन में शीर्ष का भाषिक परिचय उसके साथ आगत परिवर्तित रूप पर निर्भर/आश्रित करता है, उदाहरणार्थ - `माधुरी ने लाल साड़ी पहनी है' वाक्य में साड़ी शब्द पर बल दिए जाने पर अर्थ यह निकलेगा कि माधुरी के पास एक लाल साड़ी है और `लाल' शब्द पर जोर डालने पर अर्थ होगा कि माधुरी के पास एक से अधिक साड़ियाँ है और उसने लाल वाली साड़ी पहनी है अर्थात् यहाँ साड़ी की पहचान या परिचय उसके लाल रंग पर आश्रित है अत: यहाँ प्रतिबन्धक परिवर्तन है।

प्रतिबद्ध commissive

कथन का एक प्रकार जहाँ वक्ता अपनी भावी कार्य प्रक्रिया के बारे में स्वयं प्रतिबद्धता जाहिर करता है, यथा - मैं वादा करता हूँ, मैं अवश्य करूँगा....आदि।

प्रतियोग opposition

किसी एक भाषिक प्रतीक का दूसरे भाषिक प्रतीक से भेद प्रतियोग कहलाता है। स्वनप्रक्रिया के क्षेत्र में स्वन के भेदक अभिलक्षणों के मध्य प्राप्त व्यतिरेक अथवा किसी अभिलक्षण की उपस्थिति या अनुपस्थिति के बीच के व्यतिरेक को प्रतियोग कहते हैं, जैसे - /p/और/s/ के मध्य की भिन्नता दो प्रतियोगों के सम्बन्ध के रूप में देखी जा सकती है। इनमें उच्चारण स्थान एवं प्रयत्न दोनों में अन्तर है। प्राग सम्प्रदाय के संस्थापक त्रुबेत्सकॉय ने सर्वप्रथम प्रतियोग की चर्चा कर उसे वर्गीकृत करने का प्रयास किया। प्रतियोग के मुख्य प्रकार-

(1) **द्विविध बनाम बहुविध प्रतियोग** दो विरोधी स्वनिमों में प्राप्त वह समानता जो अभिलक्षण रूप में केवल दो विरोधी सदस्यों तक सीमित हो द्विविध प्रतियोग कहलाती है, जैसे - अंग्रेजी का /t/ और/d/ क्योंकि स्वनिम व्यवस्था में यही दो इकाइयाँ वर्त्स्य / स्पर्श है जो घोषता के अभिलक्षण द्वारा भिन्नता प्रकट करती हैं । दो विरोधी स्वनिमों में प्राप्त वह समानता जो अभिलक्षण रूप में दो से अधिक विरोधी सदस्यों में प्राप्त होती है बहुविध प्रतियोग कहलाती है, जैसे - हिन्दी के [फ] और [ख] के बीच की समानता महाप्राणता स्पर्श हिन्दी स्वनिम व्यवस्था में [थ] और [ठ] के बीच भी प्राप्त होती है।

(2) **समानुपाती बनाम एकल प्रतियोग** अँग्रेजी /f/ और /v/ का प्रतियोग समानुपाती कहा जाता है क्योंकि अँग्रेजी स्वनिम व्यवस्था में इसके समानान्तर रूप में कार्यरत अन्य प्रतियोग मिलते हैं, जैसे - /s/ बनाम/z/ जबकि /v/ और /l/ का प्रतियोग एकल है क्योंकि भाषा के किसी भी अन्य खण्ड में इस प्रकार का विरोध नहीं मिलता है अर्थात् सघोष दन्तोष्ठ्य संघर्षी बनाम सघोष पार्श्विक।

(3) **वैयक्तिक प्रतियोग** द्विआधारी होता है। किसी अभिलक्षण की उपस्थिति के कारण एक सदस्य को चिह्नित माना जाता है जबकि प्रतियोगी सदस्य में वह अभिलक्षण नहीं होता है अर्थात् वह अचिह्नित होता है, जैसे - /p/ बनाम /b/ । कुछ भाषाओं में स्वनों के मध्य भिन्नता की मात्रा अलग-अलग होती है जिसे एक प्रकार के मापक द्वारा पहचाना जा सकता है इसे **क्रमिक प्रतियोग** कहते हैं। **समतुलित प्रतियोग** के सदस्य परस्पर तार्किक आधार पर समतुल्य होते हैं, जैसे - /p/ एवं /k/ की भिन्नता को एक स्वतन्त्र स्वनिक सांतत्यक के साथ विरोध रूप में विश्लेषित नहीं किया जा सकता है न तो /p/ को अकोमल तालव्य कह सकते है और /k/ को अ-द्विओष्ठ।

(4) **नियत तथा निर्विषमीकृत प्रतियोग** एक नियत प्रतियोग सदस्यों के मध्य समस्त सम्भावित परिस्थितियों में घटित होता है, जैसे - भाषाओं में जहाँ कही /p/ ध्वनि मिलेगी वहाँ /b/ के साथ व्यतिरेक भी आवश्यक होगा। निश्चित परिवेश में दो ध्वनियों के मध्य प्राप्त व्यतिरेक यदि समाप्त हो जाए, जैसे - अंग्रेजी /t/ बनाम /d/ का भेद निर्विषमीकृत है क्योंकि कुछ स्थितियों में इनका भेद समाप्त होता है और प्रतियोग समान ध्वनियों द्वारा प्रतिफलित होता है। जब /t/ आरम्भिक /s/ के बाद आता है stick का व्यतिरेक sdick नहीं मिलता है।

प्रतिरूपण representation

वाक्य विश्लेषण के दौरान प्राप्त भाषिक स्तरों के मध्य स्थापित संवाद सम्बन्ध प्रजनक भाषाविज्ञान में प्रतिरूपण कहलाते हैं। भाषिक सामग्री किसी स्तर पर तत्त्वों की संस्थिति के रूप में पुन: प्रस्तुत की जाती है (जैसे - किसी वाक्य का आर्थी / स्वनप्रक्रियात्मक / गहन संरचनात्मक / स्वन व्यवस्थापरक प्रतिरूपण) तथा व्याकरणिक नियम इन प्रतिरूपणों का संरचनात्मक वर्णन करते हैं।

प्रतिलब्धियोग्यता recoverable

वे वाक्य जहाँ ऐसे तत्त्व जो लुप्त हो चुके हों उन्हें भाषिक सन्दर्भ के आधार पर पुन: प्रयुक्त किया जा सके, प्रतिलब्धि योग्य कहलाते हैं। अद्यतन प्रजनक व्याकरण में यह पारिभाषिक शब्द लोप नियमों के अनुप्रयोग को निर्देशित करने वाली एक परिस्थिति के

लिए प्रयोग किया जाता है जो इस तथ्य को स्पष्ट करती है कि आर्थी आशय हीन तत्त्वों का ही लोप किया जा सकता है।

प्रति समुद्देश्य co- referential

किसी वाक्य के वे घटक जिनका उद्देश्य या प्रसंग समान हों प्रजनक भाषाविज्ञान में प्रतिसमुद्देशीय कहलाते हैं, उदाहरणार्थ - `मैंने कहा था कि मैं जाऊँगी' वाक्य में दोनों कर्ता प्रति समुद्देश्य हैं जबकि `उसने कहा था कि वह आएगी' वाक्य में यह स्पष्ट नहीं है कि कर्ता प्रतिसमुद्देश्य है कि नहीं क्योंकि वाक्य में आगत दूसरा `वह' किसी अन्य व्यक्ति का सूचक भी हो सकता है। इनके मध्य भिन्नता दर्शाने के लिए प्रतिसमुद्देश्य सूचकांकों का प्रयोग किया जाता है, यथा - (1) उसने$_{क}$ कहा था कि वह$_{क}$ आएगी। (प्रतिसमुद्देश्य) (2) उसने$_{क}$ कहा था कि वह$_{ख}$ आएगी। (अप्रतिसमुद्देश्य)

प्रतिस्थापक replacive

वे रूप जिनके निर्मायक स्वनिमों के किसी अंश की स्थानापत्ति नवीन स्वनिमों द्वारा होती है प्रतिस्थापक कहलाते हैं; जैसे - हिन्दी में चल-चाल, कट-काट, पुत्र-पौत्र या अँग्रेजी में men-man, sing-song ।

प्रतिस्थापन substitution

भाषिक संरचना में किसी मद या इकाई के स्थान पर किसी अन्य मद या इकाई का प्रयोग प्रतिस्थापन प्रक्रिया द्वारा घटित माना जाता है। वह सन्दर्भ जिसमें प्रतिस्थापन घटित हो रहा है **प्रतिस्थापन ढाँचा** कहलाता है, जैसे - राम.........जा रहा है। यहाँ रिक्त स्थान में आने वाले मदों का समुच्चय **प्रतिस्थापन वर्ग** और यह प्रतिस्थापन ढाँचा कहलाएगा। इस प्रक्रिया द्वारा निर्मित रूपिम **प्रतिस्थापक रूपिम** कहलाते हैं।

प्रत्यक्षण perception

स्वनविज्ञान एवं मनोविज्ञान के क्षेत्र में यह शब्द अपने समान्य अर्थ में प्रयुक्त होता है तथा वाक् निवेश की प्राप्ति एवं विकोडीकरण की प्रक्रिया की ओर संकेत करता है। इस प्रक्रिया के अनुसार श्रोता को जो कुछ उसने सुना है उन भाषिक प्रतीकोंकी व्याख्या सिर्फ भाषा में विद्यमान ध्वनि अनुसंकेतकों (acoustic cues) को ध्यान में रखकर नहीं वरन् भाषा की स्वन्यात्मक अभिरचना के अपने ज्ञान के आधार पर करनी चाहिए।

प्रत्यक्षीकरण actualization

किसी अमूर्त भाषिक इकाई की मूर्त / भौतिक अभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त शब्द; उदाहरणार्थ - स्वनिमों का प्रत्यक्षीकरण स्वनों, रूपिमों का रूपों में होता है। इस प्रकार प्रत्येक मूलाधार रूप का एक संवादी प्रत्यक्षीकृत रूप मिलता है। आज इसके स्थान पर प्रतिफलन (realization) शब्द का अधिक प्रयोग हो रहा है।

प्रत्यय affix

रचकों के उस समूह को प्रत्यय कहते हैं जिनका प्रयोग अन्य रूपिमों से संयुक्त होने पर किया जा सके अर्थात् ये एक प्रकार के बद्ध रूपिम है जो स्वतन्त्र प्रयोग की क्षमता नहीं रखते हैं। प्राय: भाषाओं में इनकी सीमित संख्या मिलती है। धातु या प्रातिपदिक में इनका संयोजन कहाँ हुआ है इस आधार पर इनके तीन वर्ग मिलते हैं; वे प्रत्यय जो धातु / प्रातिपदिक के पूर्व संयुक्त होते हैं (**पूर्वप्रत्यय**), यथा - असन्तोष; वे जो बाद में संयुक्त होते हैं (**परप्रत्यय**), यथा - ऐतिहासिक; तथा वे जो धातु / प्रातिपदिक के मध्य में जोड़े जाते हैं (**मध्य प्रत्यय**) यथा - sulat> sumulat। ऐसी रूपरचना प्रक्रिया जिसके द्वारा व्याकरणिक या कोशगत inflectional सूचना प्रातिपदिक में जुड़ जाती है वह **प्रत्यय योजन** (affixation) कहलाती हैं। एक अन्य दृष्टिकोण से प्रत्ययों को **व्युत्पत्तिमूलक** (derivational) एवं **विभक्तिपरक** (inflectional) इन दो वर्गों में बाँट सकते हैं। प्रत्यय संयोजन के आधार पर ही भाषाओं के अयोगात्मक एवं योगात्मक दो वर्ग किए जाते हैं तथा जो भाषाएँ व्याकरणिक सम्बन्धों की अभिव्यक्ति मुख्यत: प्रत्यय द्वारा करती हैं वे प्रत्यय प्रधान भाषाएँ कहलाती हैं, उदाहरणार्थ - बान्टू पूर्व प्रत्यय प्रधान भाषा है तथा संस्कृत, ग्रीक, लैटिन अन्त प्रत्यय प्रधान भाषाएँ हैं। नियमों के निर्माण में, प्रजनक व्याकरण में प्रत्यय शब्द वर्तमान एवं भूत की अवधारणा से जुड़ा है। इस उपागम में **प्रत्यय-कूद** एक अनिवार्य रूपान्तरण नियम है जो श्रंखला में एक प्रत्यय को उपयुक्त रचक से जोड़ता है। प्रत्यय अपनी निकटवर्ती क्रिया के ऊपर से कूदता है, यथा - अंग्रेजी में - ing+go > go+ -ing।

प्रत्याकर्षण retraction

किसी उच्चारक का निर्धारित स्थान से पीछे की ओर संचलन स्वनविज्ञान में प्रत्याकर्षण कहलाता है। स्वन के उच्चारण में जब जिह्वा निर्धारित स्थान से पीछे कोमल तालु की ओर खींची जाती है तो यह प्रक्रिया प्रत्याकर्षण कहलाती है। कोमल तालव्यीकृत अवस्था में प्रत्याकर्षित स्वनों का प्रयोग मिलता है।

प्रधान major

वाक्य प्रकार के वर्गीकरण में भाषाविद् भाषा की सर्वाधिक उत्पादक वाक्य अभिरचना को **प्रधान वाक्य** कहते हैं, यथा - हिन्दी में सप+क्रिप एक प्रधान वाक्य अभिरचना है - कुत्ता दौड़ रहा है; किताब गिर गई आदि। अन्य वाक्य प्रकार **लघु** (minor) कहलाते हैं।

प्रबलता loudness

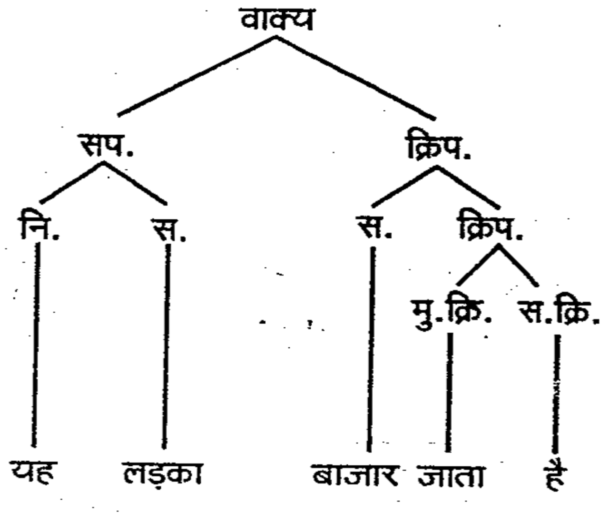
ध्वनि से उत्पन्न हुए संवेदन का परिमाण प्रबलता कहलाता है। यह मुख्यतः ध्वनि तरंग की तीव्रता पर निर्भर करता है किन्तु दोनों में सरल सम्बन्ध नहीं है। प्रबलता का ऐसा मापक्रम बनाना कठिन है जो यथार्थतः ध्वनि द्वारा उत्पन्न हुए संवेदन की मात्रा निर्धारित कर सके।

प्रबल रूप strong form

किसी शब्द का बलाघात युक्त उच्चरित रूप प्रबल कहलाता है, यथा - मुझे रोटी और अचार चाहिए। शब्द का एक अन्य उच्चारण **दुर्बल रूप** कहलाता है।

प्रभाविता dominance

वृक्ष आरेख की आसन्धियों के मध्य प्राप्त एक प्रकार का सम्बन्ध प्रभाविता कहलाता है, उदाहरणार्थ - क ख के प्रभाव में है यहाँ यदि क ख के बीच कोई अन्य आसन्धि नहीं आती है तो यह प्रभाव प्रत्यक्ष एवं तात्कालिक कहा जा सकता है, यथा - `यह लड़का बाजार जाता है' वाक्य में निर्धारक और संज्ञा सप से प्रत्यक्षतः प्रभावित हैं और द्वितीय संज्ञा क्रिप से सीधी प्रभावित है--



इस प्रारूप में कर्ता कर्म का भेद प्रभाविता स्पष्ट करती है, जैसे - सप. द्वारा प्रत्यक्ष प्रभावित संज्ञा कर्ता तथा क्रिप द्वारा प्रत्यक्ष प्रभावित संज्ञा कर्म होती है। प्रभाविता के ऊर्ध्वाधर आयाम प्राथमिकता / पूर्वता की समस्तरीय अवधारणा से भिन्न प्रतिपादित होने चाहिए। **सन्निहित-प्रभाविता नियम** (Immediate-dominance rule) सामान्यीकृत पदबन्ध संरचना व्याकरण के घटकों में से एक है।

प्रभेदक distinguisher

कोशीय मदों के आर्थी घटकों के द्विविधात्मक वर्गीकरण के लिए प्रजनक भाषाविदों ने इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग किया। प्रभेदक वे घटक होते हैं जो समरूप के भिन्न अर्थ को अलग-अलग प्रतिपादित करने में सहायता देते हैं। ये व्यवस्थित होते हैं अर्थात् चयनपरक या अन्य बाद्धयताओं में जिनकी, विशेष भूमिका नहीं होती है, जैसे - हिन्दी `आम' समरूप शब्द (जो सामान्य हो विशेष नहीं)। जो घटक व्यवस्थित रूप में कार्य करते हैं उन्हें चिह्नक कहते हैं, जैसे - `आम' (मीठा) (खाने योग्य) (फल) (निर्जीव)।

प्रमुखता prominence

श्रवणमूलक स्वनविज्ञान में प्रयुक्त एक पारिभाषिक शब्द। कोई ध्वनि या अक्षर अपने परिवेश में जिस डिग्री के कारण दूसरों से भिन्न प्रतीत हो उसे प्रमुखता कहते हैं। सुर, बलाघात, दीर्घता आदि किसी इकाई की सापेक्षिक प्रमुखता को प्रभावित करने वाले तत्त्व हैं।

प्रयत्न manner of articulation

स्वन उच्चारण में वाक्-पथ के संकोचन के प्रकार प्रयत्न कहलाते हैं। स्वनों के उच्चारण में करण के उच्चारण स्थान की ओर अग्रसर होकर वायु को पूर्ण या आंशिक रूप में रोकने या मध्य में वायुमार्ग के अवरूद्ध रहते हुए भी हवा को एक पार्श्व या दोनों पार्श्वों से जाने देने की विभिन्न स्थितियाँ। व्यजंन की दृष्टि से ये प्रयत्न निम्न प्रकार के होते हैं- 1.स्पर्श 2.घर्षी 3.स्पर्श-घर्षी 4.कंपित 5.पार्श्विक 6.ताड़ित 7. उत्क्षिप्त 8.लोड़ित।

प्रयुक्ति register

किसी विशिष्ट परिस्थिति में सामाजिक दायित्व के निर्वाह के लिए वक्ता द्वारा

प्रयुक्त किया गया भाषा रूप प्रयुक्ति कहलाता है। इस प्रकार भाषा का एक प्रकार जो भिन्न सामाजिक परिस्थिति में किए गए प्रयोग पर निर्भर करता है, जैसे - हिन्दी भाषा के वैज्ञानिक, धार्मिक या मानक रूप।

प्रयोग-क्षेत्र domain

किसी भाषिक रचना / परिकल्पना का जहाँ-जहाँ अनुप्रयोग हो वह उसका प्रयोग-क्षेत्र कहलाता है, उदाहरणार्थ - किसी नियम का व्यवहार-क्षेत्र वे सभी रचनाएँ हैं जहाँ वह नियम लागू / अनुप्रयुक्त होता है।

प्रजनक भाषाविज्ञान में वृक्ष आरेख की किसी आसंधि से निकलने वाले सभी अंग उसका प्रयोग-क्षेत्र कहलाते हैं अर्थात् आसंधि द्वारा प्रभावित समस्त संरचनाएँ।

प्ररूपी भाषाविज्ञान typological linguistics

भाषाविज्ञान की एक शाखा जो भाषाओं के मध्य प्राप्त संरचनात्मक समानताओं का अध्ययन बिना उनके इतिहास पर दृष्टि डाले, करती है तथा इस आधार पर भाषाओं का वर्गीकरण या उनके प्ररूप बनाने का प्रयास करती है। इस प्रकार प्ररूपात्मक तुलना ऐतिहासिक तुलना से भिन्न होती है। आरम्भिक 19वीं शताब्दी में जर्मन भाषविद् हुम्बोल्ड ने प्ररूपात्मक वर्गीकरण प्रस्तुत किया और भाषाओं की संरचनात्मक समानता के आधार पर तीन वर्ग निर्धारित किए-अयोगात्मक, योगात्मक एवं शिलष्ट / सम्मिश्र। इस वर्गीकरण का आधार रूपात्मक था। इसी प्रकार स्वनप्रक्रियात्मक प्ररूपात्मक वर्गीकरण भी किया जा सकता है।

प्रवाही continuant

चॉमस्की एवं हॉले द्वारा स्वनप्रक्रिया के प्रभेदक अभिलक्षण सिद्धान्त के अन्तर्गत ध्वनि के उच्चारण प्रकार की विविधता को विश्लेषित करने के लिए जिन अभिलक्षणों की स्थापना की गई उनमें से प्रवाही एक है। ऐसा उच्चारण जिसमें वाक्-पथ में वायुधारा का मार्ग इस सीमा तक अवरूद्ध नहीं रहता कि उक्त मार्ग बन्द हो जाए। इस स्थिति में उच्चरित समस्त स्वर एवं संघर्षी ध्वनियाँ प्रवाही होती हैं। इसका विपरीतार्थक अभिलक्षण अप्रवाही (non-continuant) है। इन ध्वनियों के उच्चारण में वाक्-पथ में वायु धारा का मार्ग पूर्णतः अवरुद्ध रहता है, जैसे - स्पर्श या नासिक्य व्यञ्जनों के उच्चारण में।

प्रविष्टि entry

किसी कोश में प्राप्त एक कोशीय मद से सम्बन्धित समस्त संरचनात्मक सूचना प्रविष्टि कहलाती है। इस प्रकार कोई कोश कोशीय प्रविष्टियों का एक समुच्चय कहा जा सकता है। व्यवस्थापरक व्याकरण में **प्रविष्टि प्रतिबन्ध** रूप मिलता हैं। इससे तात्पर्य उस मानदण्ड से है, किसी विशिष्ट व्याकरणिक व्यवस्था की क्रियाशीलता के लिए जिसकी पूर्ति अनिवार्य होती है, उदाहरणार्थ - जहाँ निर्देशवाचक~प्रश्नवाचक~आज्ञार्थक के मध्य विकल्प हो वहाँ व्यवस्था की संक्रियता के लिए प्रविष्टि प्रतिबन्ध इनपुट (input) रूप में मुख्य उपवाक्य की आकांक्षा करता है। इस सिद्धान्त में सम्पूर्ण भाषा को इस प्रकार की व्यवस्थाओं के जाल के रूप में देखा गया।

प्रवेग tempo

सम्भाषण की गति के लिए स्वनप्रक्रिया में प्रवेग शब्द का प्रयोग किया जाता है। भाषा एवं प्रयोक्ता के आधार पर उच्चारण की गति में विविधता मिलती है। इसके मापन के लिए अक्षर प्रति सेकण्ड, शब्द प्रति मिनट, विराम के क्षण आदि का प्रयोग किया जाता है। वक्ता की मानसिक अवस्था सामाजिक परिस्थिति एवं आर्थी प्रभाव प्रवेग को प्रभावित करता है। गति द्रुत होने पर ध्वनि को कम समय मिलता है जब कि विलम्बित गति ध्वनि उच्चारण के लिए अधिक समय प्रदान करती है। हिन्दी का 'जा-ओ' इस प्रकार धीमी गति से उच्चरित होने पर अनुरोध का भाव अभिव्यक्त करता है।

प्रश्न interrogation

वाक्य का एक विशेष प्रकार्य जिसे व्याकरणिक, आर्थी या समाजभाषिक आधार पर परिभाषित किया जा सकता है। वाक्यात्मक दृष्टि से हिन्दी में प्रश्नवाचक का निर्माण प्राय: नवीन शब्द संयोजन द्वारा किया जाता है, जैसे - क्या राम जाएगा ? तुम कहाँ जा रहे हो? आदि। प्रश्नवाचक वर्ग के वाक्यों के उच्चरित रूप में आरोही अनुतान सुनाई पड़ता है। आर्थी दृष्टि से प्रश्नवाचक वाक्य और अधिक सूचना चाहते हैं और प्राय: श्रोता से एक उत्तर की आशा रखते हैं।

प्रश्नवाचक interrogative

वाक्य का एक प्रकार जिसमें क्रिया रूप / वाक्य, उपवाक्य प्रश्न के रूप में अभिव्यक्त होता है। हिन्दी में प्राय: स्वतन्त्र शब्द प्रयोग द्वारा प्रश्नवाचकता लक्षित होती है, यथा -

राम गया-क्या राम गया?, तुम्हारा घर कहाँ है? आदि। अंग्रेजी में पदक्रम परिवर्तन अथवा स्वतन्त्र शब्द प्रयोग वाक्य में प्रश्नवाचकता उत्पन्न करता है, जैसे - Is he coming ? what is your name?

प्रसंग context

किसी भाषिक इकाई का अपनी निकटवर्ती इकाइयों के साथ पूर्वापर सम्बन्ध उसका प्रसंग कहलाता है। एक इकाई का प्रयोग आंशिक या पूर्णरूप में उसके प्रसंग द्वारा निर्धारित होता है। विद्वानों की मान्यता है कि कोई भी शब्द अपने प्रसंग में ही पूर्ण अर्थ अभिव्यक्ति करता है।

प्रजनक व्याकरण में वह नियम जो प्रसंग द्वारा प्रतिबन्धित होते हैं **प्रसंग सापेक्ष नियम** तथा शेष **प्रसंग निरपेक्ष नियम** कहलाते हैं। जिस व्याकरण में बिना विचार किए समस्त नियमों का अनुप्रयोग हो उसे प्रसंग निरपेक्ष व्याकरण कहते हैं इसके सभी नियम क-ख की भाँति होते हैं।

प्रसंग सापेक्ष व्याकरण मे नियम क-ख / ग-घ की भाँति होते हैं। यहाँ तिर्यक रेखा प्रसंग की सूचक तथा क्षैतिज रेखा संरचना में इकाई के स्थान की सूचक है। कतिपय प्रजनक प्रारूपों में प्रसंगगत अभिलक्षण से तात्पर्य कोशीय प्रविष्टि के उस अभिलक्षण से लिया जाता है जो गहन संरचना के प्रतिरूपण में कोशीय मद के प्रयोग से सम्बन्धित सूचना देता है। प्राय: तीन प्रकार के प्रसंगगत अभिलक्षण का उल्लेख मिलता है - (1) कोटि अभिलक्षण (2) नियमबद्ध उपकोटिकरण अभिलक्षण (3)चयनपरक अभिलक्षण।

भाषाविज्ञान में **स्थितिपरक प्रसंग** की भी चर्चा मिलती है-'भाषिक इकाई से सम्बद्ध अभाषिक जगत के अभिलक्षण'। स्थूल रूप में इससे तात्पर्य किसी कथन या पाठ की समस्त अभाषिक भूमिकाओं से होता है अर्थात् किस स्थिति में, किसके द्वारा, किसके लिए प्रयोग किया गया; वक्ता एवं श्रोता का विश्वास और पूर्वमान्यताएँ।

प्रसरण expansion

जब किसी रचना की आधारिक संरचना को बिना प्रभावित करे उसमें नवीन तत्त्वों का सम्मिलन हो तो यह व्याकरणिक प्रक्रिया प्रसरण कहलाती है, यथा - संज्ञा के पूर्व विशेषण या क्रिया के पूर्व / पश्चात सहायक क्रिया का आगम (पेड़ >घना पेड़)।

कभी-कभी प्रजनक व्याकरण में पुनर्लेख नियम प्रसरण नियम कहलाते हैं क्योंकि वहाँ एक अकेला प्रतीक प्रतीकों की माला रूप में प्रसरित होता है जो उसकी घटक संरचना

का प्रतिरूपण करता है (सपळ (नि.)+ (वि.)+स.)। भाषाविज्ञान में इस शब्द का प्रयोग और विस्तृत अर्थ में भी मिलता है - यदि कोई शब्द पूर्व प्रचलित अर्थ से विस्तृत प्रसंगार्थ में प्रयुक्त होने लगे तो यह प्रक्रिया अर्थ विस्तार / प्रसरण कहलाती है। इसी प्रकार समाज भाषाविज्ञान के अन्तर्गत जब किसी भाषा या उसके रूप का प्रयोग नवीन परिस्थितियों में होता है जिसके फलस्वरूप उसका प्रभाव बढ़ता है (जैसे - आगत शब्दों द्वारा) तो इस प्रक्रिया को भी प्रसरण की संज्ञा देते हैं।

प्रस्फोट burst

किसी स्वन के उच्चारण में होने वाला ध्वनिक ऊर्जा का अकस्मात् निम्न शिखर प्रस्फोट कहलाता है, जैसा स्पर्श ध्वनियों के मोचन की अवस्था में सुनाई पड़ता है।

प्राक्-भाषाविज्ञान pre-linguistics

1950 में कतिपय विद्वानों ने भाषा के स्वन पक्ष के उच्चारणात्मक एवं संवहनात्मक अध्ययन को स्वनप्रक्रिया से भिन्न प्रतिपादित कर इसके लिए प्राक् भाषाविज्ञान शब्द का प्रयोग किया। कभी-कभी विद्वान भाषिक विश्लेषण के पहले जिस परिकल्पना की आवश्यकता होती है उसे सन्दर्भित करने के लिए इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग करते हैं - जैसे उपयुक्त सामग्री का संकलन।

प्राक् रूप protoform

ऐसा भाषिक रूप या भाषा की वह अवस्था जो प्रमाणित रूपों या भाषाओं का पूर्वज हो, जैसे - प्राक् भारोपीय या प्राक् रोमान्स।

प्राग सम्प्रदाय Prague school

1926 में Cercle linguistique de Prague की स्थापना हुई। मैथेसियम, त्रुबेत्स्कॉय, मुकारोफ्स्की, यकोब्सन आदि इस सम्प्रदाय के प्रमुख विद्वान थे। इन विद्वानों ने मुख्यतः स्लाविक एवं रोमान्स भाषाओं से सम्बन्धित कार्य किए और एक व्यवस्थित भाषिक सिद्धान्त का निरूपण किया। इनके मतानुसार भाषाविद् का उद्देश्य भाषा के प्रकार्य का विश्लेषण कर यह ज्ञात करना है कि कहाँ, कैसे, किस प्रकार, किसके द्वारा किसी भाषिक कथन का प्रयोग किया गया। भाषा के सभी स्तरों पर प्रकार्यात्मक व्यवस्था

मिलती है। इस सम्प्रदाय के विद्वान त्रुबेत्सकॉय ने भाषाओं की स्वनप्रक्रियात्मक संरचना का वर्णन विश्लेषण कर तत्सम्बन्धी अनेक धारणाओं का निरूपण किया। स्वनविज्ञान एवं स्वनप्रक्रिया का अन्तर, स्वनिम का भेदक अभिलक्षणों के रूप में विश्लेषण द्विचरता, चिह्नता एवं रूपस्वनिमिकी जैसी सम्बन्धित संकल्पनाँए आदि इनके सिद्धान्त के महत्त्वपूर्ण बिन्दु थे। परवर्ती काल में वाक्यरचना, अर्थ विज्ञान एवं शैलीविज्ञान सम्बन्धी विचारों नें इस सम्प्रदाय में विशेष स्थान प्राप्त किया। जे. वाचक इस सम्प्रदाय के आधुनिक अनुयायी हैं।

प्राणि संकेतविज्ञान zoo semiotics

संकेत विज्ञान की वह शाखा जो मानवीय संम्प्रेषण के उन अभिलक्षणों का अध्ययन करती है जो प्राणी सम्प्रेषण व्यवस्थाओं में भी प्राप्त होते हैं। इन अभिलक्षणों में मुखाकृति अभिव्यक्ति अंग विक्षेप, वाक् तान आदि आते हैं। इस शाखा में उन प्राणी सम्प्रेषण यान्त्रिकताओं का भी विश्लेषण किया जाता है जो मानवीय संकेत व्यवस्थाओं में नहीं प्राप्त होती हैं।

प्रातिपदिक base

जिस प्रकार धातु क्रिया के विभिन्न रूपान्तरों में पाया जाने वाला लघुतम समानांश होता है उसी प्रकार संज्ञा अथवा नाम (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण) के प्रतिपद में पाये जाने वाले समानांश या मूलांश को प्रातिपादिक कहते हैं। संस्कृत वैयाकरण पाणिनी नें अष्टाध्यायी में इसकी परिभाषा करते हुए कहा कि `अर्थवद धातुरप्रत्यय: प्रातिपदिकम् (1/2/24) धातु, प्रत्यय और प्रत्ययान्त के अतिरिक्त कोई भी शब्द जो अर्थयुक्त हो, प्रातिपदिक होता है। इनके अतिरिक्त कृदन्त्, तद्धितान्त और समस्त पदों को भी यह संज्ञा प्राप्त होती है- कृत्तद्धित समासाश्च (1/2/46)। प्रातिपदिक में लगने वाले प्रत्ययों को सुप् तथा धातु में लगने वाले प्रत्ययों को तिङ् कहते हैं। संस्कृत के कृत् प्रत्यय सीधे धातु में लगते हैं। धातु में इन प्रत्ययों को जोड़ कर संज्ञा, विशेषण अथवा अव्यय बनता है। तद्धित प्रत्यय किसी संज्ञा, विशेषण, अव्यय अथवा क्रिया के अनन्तर जोड़कर अन्य संज्ञा विशेषण अव्यय, क्रिया आदि बनाने के लिए होता है। प्रातिपदिक एक धातु रूपिम वाला हो सकता है (पेड़, मेज) या दो धातु रूपिम वाला होता है (राजगृह, कमलनयन) अथवा धातु रूपिम एवं व्युत्पादक प्रत्यय के संयोग से निर्मित होता है (कलात्मक, कलात्मकता)। विद्वानों का मत है कि विभक्त्यात्मक प्रत्ययों का संयोजन प्रातिपदिक में होता है।

प्रातिशाख्य Pratishakhya

इन ग्रन्थों में वेद की एक-एक शाखा के नियमों का वर्णन है। इसमें वैदिक मन्त्रों की ध्वनि और पद दोनों का विवेचन करते हुए, पदों का विश्लेषण एवं वर्गीकरण प्रस्तुत किया गया।

प्राप्तसूचना given information

सूचना संरचना के आधार पर उक्ति को दो वर्गों में विश्लेषित किया जाता है-प्राप्त एंवं नीवन सूचना। कथन के पूर्व सन्दर्भ से जो सूचना मिल चुकी हो उसे 'प्राप्त सूचना' और जो पहले नहीं मिली हो उसे 'नवीन सूचना' कहते हैं।

प्रारम्भ onset

किसी भाषिक इकाई जैसे अक्षर या तान का प्रथम खण्ड अथवा किसी वाक्स्वन उच्चारण को आरम्भ करने वाला संचलन प्रारम्भ कहलाता है।

प्रारम्भक initiator

वे उच्चारण अवयव जो वायु संचलन का स्रोत होते हैं, प्रारम्भक कहलाते हैं। प्राय: फेफड़े प्रारम्भक का कार्य करते हैं किन्तु अन्य वायुप्रवाह तन्त्र भी प्रयोग किये जाते हैं। फेफड़े, स्वर यन्त्र एवं जिह्वा (विशेषत: पश्च भाग) विवर के आयतन को बड़ा या छोटा करते हैं और प्रारम्भक कहलाते हैं।

प्रारूप model

संकल्पना या सत्व विशिष्ट प्रकार से निर्मित प्रतिरूपण मॉडल कहलाता है। प्रारूप संरचना एवं प्रकार्य की खोज और व्याख्या का कार्य करता है। अमरीकी भाषाविद् हॉकेट ने सर्वप्रथम अपनी पुस्तक में रूपरचना के वर्णन हेतु **मद एवं विन्यास** तथा **मद एवं प्रक्रिया** प्रारूपों की चर्चा की। प्रजनक व्याकरण में प्राय: आस्पेक्ट मॉडल से सिंटेक्टिक स्ट्रक्चर मॉडल की भिन्नता निरूपित की जाती है।

प्रावस्था phase

कतिपय वैयाकरणों ने क्रिया पदबन्ध के पूर्ण एवं अपूर्ण के मध्य के व्यतिरेक को

स्पष्ट करने के लिए इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग किया। यह शब्द इन रूपों को काल एवं वाच्य के व्यतिरेक तथा पक्षान्तर्गत असातत्य सूचक एवं सातत्य सूचक व्यतिरेक से भिन्न प्रतिपादित करता है।

प्रेरणार्थक causative

व्याकरणिक वर्णन में किसी वाक्य के वैकल्पिक रूपान्तरों के मध्य प्राप्त प्रयोजनार्थक सम्बन्ध को सन्दर्भित करने वाला पद प्रेरणार्थक कहलाता है। हिन्दी के `माँ ने खाना बनाया' तथा `खाना बन गया' वाक्य परस्पर सम्बन्धित हैं। प्रथम वाक्य की क्रिया द्वितीय वाक्य की क्रिया का प्रेरणार्थक रूप है। कतिपय भाषाओं में कुछ प्रत्यय भी प्रेरणार्थक भूमिका अदा करते हैं, यथा - अँग्रेजी का `ise' (domesticise=cause to become domestic).

कतिपय भाषाओं में क्रिया के प्रेरणार्थक एवं अप्रेरणार्थक प्रयोगों के मध्य व्यवस्थित भिन्नता करने वाला प्रत्यय विद्यमान होता है (यथा - जापानी, तुर्की आदि)। हिन्दी में क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि क्रिया को करने की प्रेरणा कर्ता को किसी अन्य से मिली है उस क्रिया रूप को प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। प्रेरणार्थक में किसी अन्य को कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाता है अतएव क्रिया सकर्मक में ही रहती है। मानक हिन्दी धातु में `आ' प्रत्यय जोड़कर प्रेरणार्थक रूप बनाते हैं। कभी-कभी इसके संयोजन के उपरान्त `वा' रचनात्मक प्रत्यय लगाकर एक दूसरा प्रेरणार्थक रूप बनता है (यथा - चलना-चलाना-चलवाना)। कुछ अकर्मक क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप नहीं बनते हैं, यथा - आना, जाना, होना।

प्रोक्ति discourse

भाषा (विशेषतः उच्चरित) का एक अविच्छिन्न विस्तार जो वाक्य से बृहत्तर हो प्रोक्ति कहलाता है। यह कथनों का एक ऐसा समुच्चय है जो अभिज्ञेय वाक्-घटना का निर्माण करता है, उदाहरणार्थ - कोई वार्तालाप, साक्षात्कार, चुटकुला आदि। समाजभाषिक अध्ययनों में प्रोक्ति का प्रकार्यगत वर्गीकरण किया जाता है जो विषयवस्तु के प्रकार, सन्दर्भ, वक्ता के व्यवहार आदि पर निर्भर करता है।

पिछले कुछ वर्षों में अनेक भाषाविदों ने व्याकरणिक, स्वनप्रक्रिया एवं आर्थी (जैसे - संहति, अन्वादेश, अन्तर्वाक्यीय सम्बद्धता) मानदण्डों के आधार पर प्रोक्तियों में प्राप्त भाषिक नियमितताओं को खोजने का प्रयास किया। यह प्रक्रिया प्रोक्ति विश्लेषण कहलाती है। आज यह स्वीकृत है कि वाक्यों के मध्य महत्त्वपूर्ण भाषिक आश्रयताएँ विद्यमान रहती

फ

फर्दिनान्द डि सेस्यूर Ferdinand de Saussure

स्वीट्ज़रलैण्ड में जनमे सेस्यूर जेनेवा सम्प्रदाय के मूल स्तम्भ थे। 1881 में इन्होंने संस्कृत सम्बन्ध कारक के प्रयोग पर पी.एच-डी. की उपाधि प्राप्त की। इक्कीस वर्ष की अल्पायु में सेस्यूर ने ऐतिहासिक तुलनात्मक भाषाविज्ञान से सम्बन्धित एक मौलिक लेख प्रकाशित किया जिसमें भारोपीय स्वर-व्यवस्था के विकास के सम्बन्ध में नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। 1907 से 1911 के मध्य इन्होंने जेनेवा में सामान्य भाषाविज्ञान के सिद्धान्त और पद्धति पर व्याख्यान दिए। 1913 में इनके निधन के उपरान्त इन्हीं भाषणों को आधार बना इनके सहयोगियों चार्ल्स बेली व अल्बर्ट सेचेहाए ने Course de Linguistique Generale नामक महत्त्वपूर्ण पुस्तक प्रकाशित की। सेस्यूर ने भाषा सम्बन्धी कतिपय आधारभूत प्रश्न उठाए और प्रश्नों के समाधान देते हुए भाषा की प्रकृति, स्वरूप की चर्चा की। इनके मतानुसार भाषिक प्रतीक पारम्परिक एवं यादृच्छिक होते हैं जिनका निर्माण संकेतक और संकेतित द्वारा होता है। भाषिक व्यवहार एवं उसके वास्तविक प्रतिरूपण के मध्य की भिन्नता इन्होंने लांग और परोल के माध्यम से स्पष्ट की। सेस्यूर ने ऐतिहासिक / द्विकालिक भाषा अध्ययन की तुलना में संकालिक अध्ययन की उपयोगिता पर बल दिया।

फलक [1] blade

जिह्वाग्र तथा जिह्वामध्य के बीच का भाग जो सामान्य स्थिति में दाँत तथा वर्त्स्य प्रदेश (मंसूड़े) के सामने रहता है। इसकी सहायता से अनेक वाग्ध्वनियों का उच्चारण किया जाता है।

फलक [2] slit

जिह्वा की वह स्थिति जिसमें आगे के दोनों किनारे सम या बराबर होते हैं, जैसे - अँग्रेजी /θ/ के उच्चारण में जिह्वा की यही स्थिति होती है यहाँ फलक करण होता है। घर्षी स्वन जिसके उच्चारण में जिह्वा के आगे के दोनों किनारे सम या बराबर होते हैं **फलक घर्षी** कहलाते हैं।

फार्मेन्ट formant

ध्वानिक स्वर्नाविज्ञान / संवहनमूलक स्वनिकी में स्वर एवं स्वरवत् स्वनों तथा स्वरों और उनके निकटवर्ती स्वनों के मध्य के संक्रमण अभिलक्षणों के वर्गीकरण के लिए यह शब्द विशेष महत्त्व रखता है। फार्मेन्ट ध्वनिक ऊर्जा का एकत्रीकरण है जो फेफड़ों से आने वाली वायु के कारण परिवर्तित आकार वाले वाक्पथ के कम्पन द्वारा लक्षित होता है। किसी स्वर के उच्चारण के लिए वायु अनेक भिन्न आवृत्तियों पर एक साथ कम्पन्न करती है तथा सर्वाधिक प्रभावी आवृत्तियों का प्रभावी बैंड एक फार्मेन्ट का निर्माण करता है जो स्वन स्पेक्टोग्राफ पर एक काली रेखा के रूप में स्पष्ट रूपेण देखा जा सकता है। तीन मुख्य फार्मेन्ट के आधार पर स्वर वर्णन किया जा सकता है-निम्नतम, उच्च एवं उच्चतर इसके अतिरिक्त अन्य भाषिक विश्लेषण की दृष्टि से कम महत्त्वपूर्ण होते हैं।

फिल्टर filter

इस प्रक्रिया की सर्वप्रथम चर्चा प्रजनक व्याकरण के मानक सिद्धान्त में मिलती है। जब किसी व्युत्पत्ति में सिर्फ कुछ आधारिक पदबन्ध चिह्नक ही बहिस्तलीय संरचनाओं में रूपान्तरित होते हैं और अन्य विविध प्रकार की बाध्यताओं द्वारा फिल्टर हो जाते हैं। इस प्रक्रिया ने आधुनिक प्रजनक भाषाविज्ञान में केन्द्रीय भूमिका प्राप्त की। यहाँ फिल्टर से तात्पर्य एक प्रकार की शर्त से है जो अव्याकरणिक वाक्यों के प्रजनन में रोक लगाती है, इन्हें निर्गम या बहिस्तलीय बाध्यता भी कहते हैं, उदाहरणार्थ - 'For-For फिल्टर' प्रस्तावित किया गया जिसके अनुसार For-For अनुक्रम वाली बहिस्तलीय संरचनाएँ अव्याकरणिक होती हैं।

फिलोलॉजी philology

प्रारम्भ में भाषा इतिहास के अध्ययन के लिए फिलोलॉजी शब्द का प्रयोग किया गया। 18वीं शताब्दी में तुलनात्मक अध्ययन केन्द्र में होने के कारण **तुलनात्मक फिलोलॉजी** नाम का प्रयोग किया गया। कतिपय विद्वानों ने इसका प्रयोग वरेण्य भाषाओं की लिखित सामग्री के अध्ययन विश्लेषण तक सीमित रखा। 19वीं शताब्दी में फिलोलॉजी का स्थान **'लिंग्विस्टिक्स'** ने ले लिया।

फुफ्फुसीय pulmonic

वायु-प्रवाह का वह तन्त्र जिसमें फेफड़े के संकोचन से वायु की दिशा बहि:मुखी

होती है। सामान्यतः बोलने और गाने में यही प्रक्रिया काम में आती है। इस स्थिति में उच्चरित व्यञ्जन फुप्फसीय व्यंजन कहलाता है। इसके उच्चारण में फेफड़े प्रारम्भक का कार्य करते हैं। वाग्यन्त्र के भीतर की पाँच गुहिकाओं में से एक फुप्फुसीय विवर है जिसका एक सिरा खुला या बन्द हो सकता है।

फोकस focus

वाक्य का दो अंशों में विभक्त विश्लेषण, जो वक्ता द्वारा कल्पित सूचना और उसके द्वारा सम्प्रेषित सूचना के केन्द्र के मध्य भिन्नता प्रतिपादित करता है। इस अर्थ में केन्द्र शब्द का प्रयोग पूर्वमान्यता का विपरीतार्थक है। हिन्दी के वाक्य 'अरे रमा ही थी जो खाने पर आई थी' वाक्य का केन्द्र / फोकस 'रमा' है।

फ्रान्ज़ बोआज़ Franz Boas

जर्मनी में जनमे बोआज़ मूलतः भौतिकशास्त्र एवं भूगोल के ज्ञाता थे। भौगोलिक रूचि के कारण यात्रा के दौरान उनकी रुचि मानवविज्ञान में हुई और उसके फलस्वरूप भाषा-विज्ञान में। नव्य वैयाकरण परम्परा से परिचित होने पर भी इन्होंने अज्ञात इतिहास और अलिखित सामग्री वाली अमरीकी भाषाओं पर उन सिद्धान्तों को आरोपित नहीं किया। इन्होंने इस तथ्य को रेखांकित किया कि प्रत्येक भाषा की अपनी एक विशिष्ट व्यवस्था होती है जिसका वर्णन विश्लेषण किसी सामान्य मॉडल एवं पद्धति द्वारा नहीं किया जा सकता है। अमरीकी भाषाओं के लिप्यंकन के लिए बोआज़ ने अन्तर्राष्ट्रीय स्वनवर्ण माला पर आधृत नवीन स्वन्यात्मक लेखन व्यवस्था का विकास किया।

फ्रेम frame

जिस संरचनात्मक सन्दर्भ में मदों के किसी वर्ग का प्रयोग किया जा सके उसे फ्रेम कहते हैं, यथा - राम..........जाता है फ्रेम एक ऐसे परिवेश को प्रस्तुत करता है जिसमें किसी संज्ञा (घर, विद्यालय, बाजार, होटल आदि) का ही प्रयोग हो सकता है। भाषाविज्ञान में **वाक्यीय फ्रेम** और **स्थानापत्ति फ्रेम** पदबन्धों का प्रयोग मिलता है। प्रजनक व्याकरण में **उपकोटिकरण फ्रेम** का प्रयोग कोशीय मद के भगिनी घटकों के प्रभाव क्षेत्र के लिए किया जाता है।

ब

बंधिमविज्ञान Tagmemics

अमरीकी भाषाविद् के. एल. पाइक ने भाषाविश्लेषण की एक व्यवस्था का विकास किया जिसका अनुप्रयोग Summer Institute of Linguistics में भाषाविदों को प्रशिक्षित करने के लिए किया गया। पाइक ने भाषा को त्रिरूपीय माना जो स्वनप्रक्रिया, व्याकरण एवं शब्दकोश से संरचित है। इन्होंने तीनों के उपखण्डीकरण के स्थान पर सम्मिलन को बढ़ावा दिया। स्वनप्रक्रिया: स्वनिम और शब्दकोश : रूपिम के आधार पर इन्होंने व्याकरण : बंधिम अवधारणा की रचना की। यह एक विशिष्ट प्रकार्य-स्थान (slot) में आने वाली स्थानापत्ति सक्षम इकाइयों का वर्ग है जिसकी सत्ता कार्य (उद्देश्य, विधेय, शीर्ष आदि) एवं रूप (सर्वनाम, संज्ञापदबन्ध आदि) के सहसम्बन्ध पर निर्भर करती है। इन्होंने बंध, सहबंध, संबंधिम अवधारणाओं की भी चर्चा की।

बद्ध bound

रूपरचनात्मक स्तर की लघुतम इकाई रूपिम को दो वर्गों में विभाजित किया जाता है-बद्ध एवं मुक्त। एक बद्ध रूप / रूपिम उसे कहते हैं जिसमें स्वतन्त्र प्रयोग की क्षमता न हो अर्थात् प्रयोग के लिए जो दूसरे पर आश्रित हो, यथा - विभिन्न प्रत्यय उप-, अनु-, -ता, -इक इत्यादि।

बलाघात stress

किसी अक्षर के उच्चारण में दिया जाने वाला अतिरिक्त बल जिसके कारण उच्चारण करते समय हवा अधिक मात्रा में बाहर निकलती है, इस आधार पर अक्षरों के दो वर्ग होते हैं - **बलाघात युक्त** एवं **बलाघात हीन।** जिसमें से प्रथम, द्वितीय की तुलना में अधिक प्रमुख होता है और इसके लिप्यांकन के लिए ['] चिह्न लगाया जाता है। जहाँ एकाधिक बलाघात युक्त अक्षर होते हैं वहाँ सर्वाधिक बलाघात युक्त को ऊपर चिह्नित करते हैं और द्वितीय को नीचे। बलाघात एवं प्रमुखता में तात्त्विक अन्तर मिलता है। बलाघात वक्ता द्वारा प्रयुक्त

बहुअर्थकता polysemy

कतिपय कोशीय मद एकाधिक अर्थों की अभिव्यक्ति करते हैं उन्हें बहुआर्थी एवं इस विशेषता को बहुअर्थकता कहते हैं। बहुअर्थी शब्दों के अर्थ परस्पर सम्बन्धित होते हैं, जैसे - आँख-मनुष्य की, जानवर की, सूई की। विद्वानों के समक्ष प्रायः समनामता एवं बहुअर्थकता में भेद की समस्या आती है। जिन कोशीय मदों का सम्बन्ध एकाधिक भिन्न अर्थों से होता है वे समनामी कहलाते हैं, जैसे - जल-पानी : जलना इनके अर्थ भिन्न-भिन्न हैं ये दुर्घटनावश समानरूपीय हैं। किन्तु इन दोनों के मध्य की भिन्नता इतनी सरलता से स्पष्ट नहीं होती क्योंकि अर्थ सम्बन्धी यह आधार अनेक सैद्धान्तिक विचार-विमर्श को जन्म देता है।

बहु-आक्षरिक poly-syllable

जैसा कि नाम से स्पष्ट है एकाधिक अक्षर वाला शब्द स्वनप्रक्रिया में बहु आक्षरिक कहलाता है। एकाक्षरी पारिभाषिक शब्द इसका व्यतिरेकी शब्द है।

बहुखंडात्मक plurisegmental

कतिपय स्वनशास्त्रियों ने एक कथन में एकाधिक खंडों तक फैले हुए मौखिक प्रभाव को बहुखंडात्मक नाम दिया, उदाहरणार्थ - अनुतान परिरेखा। इसका अधिखंडात्मक नाम अधिक प्रचलित है।

बहुप्रचलित favourite

किसी भाषा की सर्वाधिक उत्पादक वाक्य अभिरचना के लिए भाषाविद् बहुप्रचलित शब्द का प्रयोग करते हैं, यथा - अंग्रेजी या हिन्दी में कर्ता+विधेय (सप.+क्रिप.) अभिरचना बहुप्रचलित है, इसका दूसरा भेद **अप्रचलित** होता है।

बहुभाषिका polylectal

कतिपय भाषाविदों ने व्याकरण का ऐसा प्रारूप प्रस्तावित किया जो अलग-अलग वक्ताओं द्वारा प्रयुक्त भाषा के विभेदों का वर्णन करने में समर्थ हो। यह व्याकरण प्रारूप ऐसे अन्य व्याकरणों से व्यतिरेक प्रदर्शित करता है जो भाषा में प्राप्त प्रादेशिक एवं क्षेत्रीय विविधता को महत्त्व नहीं देते और इस प्रकार विश्लेषित करते हैं जैसे भाषा काल्पनिक सजातीय स्थिति में हो।

बहुभाषिता multilingualism

समाजभाषाविज्ञान में ऐसा भाषिक समुदाय जहाँ एकाधिक भाषाएँ बोली - समझी जा रही हों, बहुभाषी कहलाता है तथा यदि कोई अकेला वक्ता एकाधिक भाषाओं में सम्प्रेषण की क्षमता रखता हो तो उसे भी बहुभाषी कहते हैं। कभी-कभी बहुभाषिता किसी भाषिक समुदाय के लिए आन्तरिक होती है (दैनिक वाक् व्यवहार की पूर्ति के लिए एकाधिक भाषाओं का प्रयोग) तथा कभी बाह्य (जब किसी अन्य भाषा का प्रयोग अन्य देशों में सम्प्रेषण के लिए किया जाए)। समाजभाषिक अध्ययनों में बहुभाषिता की जटिलता एवं आवृत्ति दोनों पर ही बल दिया गया। आज विश्व में जहाँ पूर्णत: एकभाषी समाजों की संख्या बहुत कम है वहीं बहुभाषी क्षमता अनेक प्रकार की राजनैतिक, शैक्षिक तथा सामाजिक समस्याओं को जन्म देती है।

बहुविध प्रतियोग multilateral opposition

प्राग् सम्प्रदाय द्वारा निरूपित प्रतियोग प्रकारों में एक बहुविध तथा दूसरा द्विविध कहलाता है। दो विरोधी स्वनिमों में प्राप्त वह समानता जो अभिलक्षण रूप में दो से अधिक विरोधी सदस्यों में व्याप्त होती है। हिन्दी के /फ्/ /ख्/ के बीच की समानता महाप्राण स्पर्श बहुविध प्रतियोग का उदाहरण है क्योंकि /फ्/ के विरोध में /थ्/ और /ठ्/ स्वन भी हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था में हैं।

बहुव्यवस्थापरकता polysystemicism

जे.आर. फर्थ द्वारा प्रतिपादित भाषा विश्लेषण का एक उपागम, जिसमें संरचना में विविध स्थलों पर भिन्न भाषिक व्यवस्थाओं के स्थापन की चर्चा की गई। सर्वप्रथम, स्वनप्रक्रिया के क्षेत्र में इस उपागम का विकास हुआ। जहाँ अक्षर, शब्द, व्याकरण तथा अन्य इकाइयों की संरचना में स्थान-स्थान पर आवश्यकतानुसार स्वनप्रक्रियात्मक संरचना स्थापित की जाती है। यह लिप्यंकन पर नहीं बल्कि स्वनप्रक्रिया का सम्बन्ध संरचना के अन्य स्तरों से स्थापित करने पर अधिक बल देता है।

बहुसंश्लिष्ट polysynthetic

तुलनात्मक भाषाविज्ञान में संरचनात्मक आधार पर शब्द की विशेषताओं को केन्द्र में रखते हुए भाषाओं का वर्गीकरण किया गया जिनमें से बहुसंश्लिष्ट या प्रश्लिष्ट एक वर्ग है। ये भाषाएँ जटिल रुपरचनात्मक संरचना वाली होती हैं इनमें धातु और प्रत्यय

का ऐसा योग होता है कि उनको अलग-अलग करना सम्भव नहीं होता है, जैसे - अमरीकी जनजातियों की कई भाषाएँ या अँग्रेजी का एक शब्द anti/dis/establish/ment/arian/ism/s.

बाधक bleeding

नियमों के मध्य के प्रकार्यात्मक सम्बन्ध को सन्दर्भित करने वाला शब्द। प्रारम्भ में जिसका प्रयोग कालक्रमिक स्वनप्रक्रिया के सन्दर्भ में तथा नियम-क्रमण के प्रजनक भाषिक विश्लेषण में किया गया। जब कोई एक नियम (क) एक संरचनात्मक प्रतिरूपण को हटाता है जिस पर कोई दूसरा नियम (ख) लागू हो सकता था तो इस सम्बन्ध को बाधक सम्बन्ध कहते हैं। यदि नियम `ख' का स्वरूप ×ꙍy है तो, नियम `क' का स्वरूप wꙍहोगा × नहीं। इन परिस्थितियों में नियम `क' नियम `ब' के सम्बन्ध में बाधक नियम कहलाएगा तथा इन नियमों के रेखीय क्रम को **बाधक क्रम** कहेगें।

बाध्यता constraint

प्रजनक व्याकरण में वह स्थिति, जो किसी नियम के अनुप्रयोग को रोके जिससे सिर्फ सुगठित वाक्य ही प्रजनित हों, बाध्यता कहलाती है। प्रजनक स्वनप्रक्रिया में सहकालिक एवं अनुक्रमिक बाध्यता के मध्य भेद किया जाता है। इनमें से प्रथम अभिलक्षणों के सहकालिक प्रयोग पर रोक लगाता है, यथा - कोई एक खण्ड एक साथ (+उच्च) एवं (+निम्न) नहीं हो सकता है। द्वितीय अभिलक्षणों के अनुक्रम को रोकता है, यथा - कोई भाषा नियत गुच्छों को स्वीकृत करती है या नहीं।

प्रजनक वाक्यविज्ञान में भी कई प्रतिबन्धों का उल्लेख मिलता है और इनके द्वारा असंघटित पदबन्धचिह्नकों की व्युत्पत्ति पर रोक लगाने का प्रयास किया जाता है, यथा - नियमों के क्रम पर लगा प्रतिबन्ध।

बाह्य संरचना surface structure

किसी वाक्य के वाक्यीय प्रतिरूपण की अंतिम अवस्था उसकी बाह्य संरचना कहलाती है। यह व्याकरण के स्वनप्रक्रियात्मक घटक के लिए सामग्री प्रस्तुत करती है जो वक्ता द्वारा उच्चरित वाक्य के लगभग समान होता है। बाह्य संरचना पर प्राप्त रूपिमों का विश्लेषण भाषिक संरचना के अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्यों का उद्घाटन करता है किन्तु वाक्यों के मध्य प्राप्त सम्बन्ध या संदिग्धार्थी वाक्यों का विवेचन इसके द्वारा सम्भव नहीं होता हैं इसी कारण चॉमस्की ने आन्तरिक संरचना की चर्चा की-जो वाक्यीय अन्तर्सम्बन्धों का

निर्धारण, वाक्य की संरचनात्मक व्याख्या, वाक्यीय संदिग्धता का विश्लेषण करने में सहायक होती है।

बी. कूर्तने B. Courtenay

कूर्तने का जन्म 1845 में पोलैण्ड में हुआ। इन्होंने जेना विश्वविद्यालय में भारोपीय तुलनात्मक अध्ययन, संस्कृत तथा स्लाविक भाषाशास्त्र में शिक्षा ग्रहण की। कूर्तने ने अपने शिष्य एम. क्रुज़ेफ़स्की के साथ मिलकर कार्य किए और भाषाविज्ञान की वैज्ञानिक पद्धति के प्रयोग पर बल दिया। इनके अनुसार भाषा का विश्लेषण आन्तरिक विशेषताओं पर आधृत होना चाहिए क्योंकि आन्तरिक व्यवस्था एक निश्चित काल में भाषा में कार्यरत स्थिर नियमों तथा शक्ति की संकेतक होती है। कूर्तने ने सर्वप्रथम स्वन और स्वनिम के भेद को स्पष्ट किया। इन्होंने भाषा की संरचनात्मक विशेषताओं के वर्णन के लिए सांख्यिकी एवं गणितीय उपकरणों का प्रयोग किया।

बीज core

प्रजनक भाषाविज्ञान में, भाषिक सिद्धान्तों का सार्वभौमिक समुच्चय जो भाषा में प्राप्त समस्त अचिह्नित व्याकरणिक सिद्धान्तों की विशेषता हो, **बीज व्याकरण** कहलाता है। ऐसे नियम जो इन नियमों के अनुरूप होते हैं **बीज नियम** होते हैं तथा जो इनके अनुरूप नहीं होते उन्हें **अबीज नियम** की संज्ञा देते हैं। किसी भाषा विशेष या सामान्य भाषा के लिए बीज व्याकरण विकसित किया जा सकता है।

(core) शब्द का प्रयोग **समान क्रोड** (common core) पदबन्ध में किसी भाषा के समस्त भेदों में प्राप्त समान भाषिक अभिलक्षणों के समुच्चय के लिए भी किया जाता है।

बृहद्भाषाविज्ञान macrolinguistics

विषयवस्तु की संकीर्णता एवं विस्तार के आधार पर, पिछले कुछ वर्षों से, भाषाविङ्ञान को दो वर्गों - सूक्ष्म एवं बृहद् में विभाजित किया जा रहा है। बृहद् विचारधारा में भाषाविज्ञान को स्वनिक एवं भाषा बाह्य अनुभवों से उसके सम्बन्ध के परिप्रेक्ष्य में रखकर देखा जाता है। इसके तीन उपक्षेत्र हैं - प्राक्भाषाविज्ञान (स्वनविज्ञान जिसकी मुख्य विषय-वस्तु है), सूक्ष्मभाषा-विज्ञान (जिसमें स्वनप्रक्रिया, रूपरचना एवं वाक्यरचना की गणना की जाती है) और अधिभाषाविज्ञान (जिसके अन्तर्गत सम्प्रेषणात्मक व्यवहार के समस्त अभाषिक अभिलक्षणों तथा भाषा के मध्य सम्बन्ध की विवेचना होती है)।

बोधन comprehension

लिखित अथवा उच्चरित भाषा को समझने की क्षमता को बोधन कहते हैं, इसका विरोधी पारिभाषिक शब्द उत्पादन है। मनोभाषाविज्ञान में वाग्बोधन की प्रक्रिया का विशेष महत्त्व होता है और इसके अन्तर्गत बच्चों द्वारा भाषा-अर्जन में प्रयुक्त की गई युक्तियाँ, विभिन्न प्रकार के वाक्यों को समझने के लिए वयस्कों द्वारा प्रयुक्त युक्तियाँ, भाषाविज्ञानेतर स्थिति की भूमिका तथा स्मृति, प्रत्यक्षीकरण आदि संज्ञानात्मक तत्त्वों की, वाक्य एवं प्रोक्ति की व्याख्या में क्या भूमिका होती है, आदि की गणना होती है।

बोली dialect

किसी भाषा का प्रादेशिक अथवा सामाजिक भिन्नतापरक रूप जिसकी अपनी व्याकरणिक संरचना एवं निश्चित शब्दावली हो, बोली कहलाता है। मौखिक बोलियाँ प्राय: अपने भिन्न उच्चारण या लहजे के कारण पहचानी जाती हैं। जिस भाषा के प्रयोगकर्ता बहुत अधिक हो जाते हैं उसकी बोलियाँ विकसित हो जाती हैं। बोली विकास के प्रमुख दो कारण हैं-(1) भाषा वक्ताओं के मध्य भौगोलिक व्यवधान / दूरी जिसके कारण एक समुदाय दूसरे से अलग हो जाए या (2) वक्ताओं के मध्य सामाजिक वर्ग गत विभाजन हो। बोलियों के व्यवस्थापरक अध्ययन को **बोलीविज्ञान** कहते हैं। कतिपय विद्वान **बोली भूगोल** या **भाषाभूगोल** नाम का भी प्रयोग करते हैं। 19वीं शताब्दी के अन्तिम चरण में बोली विज्ञान सम्बन्धी अध्ययन, प्रश्नावली टेप रिकार्डर एवं साक्षात्कार के माध्यम से किए गए। मुख्यत: रूपात्मक, आर्थी या उच्चारण्यात्मक भिन्नता वाले प्रादेशिक शब्दों का विश्लेषण इनके अध्ययन का केन्द्र था। अध्येय बोली के शब्दों को एकत्रित कर मानचित्र पर उनका अंकन **बोली मानचित्रावली** कहलाता है। इस प्रकार के अध्ययन के निष्कर्षों के फलस्वरूप बोलियों की सीमाओं तथा पारस्परिक सम्बन्धों को स्थापित किया जाता है। यदि एक क्षेत्र विशेष में अनेक प्रभेदक मद प्राप्त होते हैं तो यह तथ्य इस बात का प्रमाण होता है कि वह एक बोली थी और इन्ही मदों के अंकन द्वारा बोली सीमाओं को अंकित किया जाता है।

बोलीविज्ञान dialectology

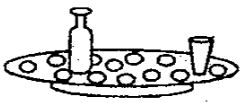
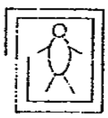
बोली के स्वरूप, उसकी प्रकृति, उद्भूत होने के कारण, बोली, उपबोली आदि का व्यवस्थापरक अध्ययन बोली विज्ञान कहलाता है। यह अध्ययन संकालिक एवं द्विकालिक दोनों दृष्टियों से किया जा सकता है। बोली विज्ञान में सर्वेक्षण पद्धति का विशेष महत्त्व है। इसकी एक महत्त्वपूर्ण शाखा **स्थाननाम विज्ञान** (toponomasiology) है जिसमें विभिन्न स्थानों के नामों का भाषावैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है।

भ

भाव affect

अर्थ प्रकार का एक भेद जिसकी चर्चा कभी-कभी अर्थविज्ञान में मिलती है। यह पारिभाषिक शब्द अर्थ में निहित अभिवृत्यात्मक तत्त्वों की ओर संकेत करता है, यथा - क्रोध, व्यंग या उपहास की अभिव्यक्ति से वाक्य की प्रबलता या अनुतान में भिन्नता आती है। भावात्मक अर्थ संज्ञानात्मक अर्थ से भिन्न होता है।

भाव लिपि ideographic writing

लिपि का एक प्रकार। प्रारम्भ में एक चित्र एक अर्थ की अभिव्यक्ति करता था किन्तु धीरे-धीरे इनके द्वारा सूक्ष्म अर्थों की व्यंजना भी होने लगी, जैसे  यह चित्र सूर्य के साथ-साथ ऊष्णता, प्रकाश आदि भावों को भी अभिव्यक्त करने लगा। आज भी अन्तर्राष्ट्रीय ट्रैफिक प्रतीकों में इस लिपि का प्रयोग मिलता है, जैसे  मछली पकड़ना;  खाद्य वस्तु की दुकान;  पर्यावरण अध्ययन क्षेत्र।

भाव वाच्य medio-passive voice

क्रिया के जिस रूप से कर्ता या कर्म नहीं वरन् भाव की प्रधानता व्यक्त होती है, उसे भाववाच्य कहते हैं। इस प्रकार के कथन में मुख्य उद्देश्य कोई कर्ता या कर्म नहीं, बल्कि किसी भाव-मात्रा का कथन होता है, यथा - थके यात्री से चला नहीं जाता है; दु:खी आदमी से हँसा नहीं जाता है। हिन्दी में भाववाच्य सदैव अकर्मक क्रिया से ही निर्मित होता है।

भाषा language

बोलचाल की भाषा में इस शब्द से विविध अर्थ लिए जाते हैं किन्तु भाषाविज्ञान में इसका विशिष्ट अर्थ ग्रहण किया जाता है। मनुष्य अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिए

जिस साधन को अपनाता है, जो ऐच्छिक ध्वनिप्रतीकों द्वारा निर्मित होती है, वही भाषा है। व्यवस्था, उत्पादकता द्वैतात्मकता, विस्थापन आदि विशेषताएँ भाषा में निहित होती हैं। भाषाविद् भाषा के भौतिक एवं मानसिक दो रूपों की चर्चा करते हैं। भौतिक रूप में उसका प्रयोग समाज में होता है अर्थात् परोल या भाषिक व्यवहार तथा मानसिक रूप में वह नियम संहिता के रूप में मानव मस्तिष्क में अवस्थित होती है अर्थात् लॉग या भाषिक दक्षता। भाषाविद् का उद्देश्य इसी अमूर्त भाषा को मूर्त की सहायता से ज्ञात करना है। भाषा को लिखित एवं मौखिक दो वर्गों में विभाजित किया जाता है। लिखित भाषा मौखिक भाषा का आश्रय लेकर ही लिप्यांकित की जाती है।

भाषाकालक्रम विज्ञान glottochronology

एक समान मूल स्रोत से भाषाएँ किस सीमा तक पृथक हुई हैं इस परिमाणन की चर्चा भाषा कालक्रम विज्ञान के अन्तर्गत होती है। शब्द सांख्यकीय तकनीकि के प्रयोग द्वारा यह अध्ययन किया जाता है कि अनुमानतः सम्बन्धित भाषाओं में कितने सजात शब्द हैं और इनकी संख्या के आधार पर विश्लेषण कर्ता यह ज्ञात करने का प्रयास करता है कि समान स्रोत से व्युत्पन्न इन भाषाओं को पृथक दिशा में विकसित हुए कितना समय व्यतीत हो चुका है।

भाषाद्वीप language island

वह क्षेत्र जहाँ ऐसी बोली या भाषा का प्रयोग हो रहा हो जो आस-पास के स्थानों पर नहीं बोली जाती हो, भाष द्वीप कहलाता है, उदाहरणार्थ - बिहार और उड़ीसा में द्रविड़ एवं मुंडा भाषाओं के भाषा द्वीप मिलते हैं।

भाषा-द्वैत diglossia

किसी भाषायी समाज में जब विभिन्न परिस्थितियों में एक भाषा के दो भिन्न रूपों का प्रयोग होता है तो ऐसी स्थिति भाषाद्वैत कहलाती है। दोनों रूपों का भिन्न-भिन्न सामाजिक कार्य होता है जहाँ एक शिक्षा, राजनीति, साहित्यिक परिचर्चा में प्रयुक्त होता है वहाँ दूसरा रूप अनौपचारिक, बोलचाल की परिस्थितियों तक सीमित रहता है किन्तु दोनों ही रूप एक सीमा तक मानक रूप होते हैं प्रायः वक्ता दोनों को विशिष्ट नाम दे देता है, यथा - उच्च बोली तथा निम्न बोली। भाषाद्वैतता की यह स्थिति अरबी, ग्रीक, जर्मन भाषाओं में मिलती है।

भाषा-नवप्रवर्तन linguistic innovation

यदि किसी भाषा में बाह्य प्रभाव के फलस्वरूप ऐसी नवीन प्रवृति आ जाए जिसका प्रयोग प्राचीन विशेषताओं के साथ-साथ होने लगे तो इसे भाषा नवप्रवर्तन कहते हैं। प्रत्येक भाषा में अन्य भाषाओं से सम्पर्क होने पर यह परिस्थिति मिलती है, जैसे - हिन्दी में अंग्रेजी के प्रभाव स्वरूप नवीन स्वर ध्वनि विकसित हुई है (ऑ)। कॉफी, बॉल, चॉक शब्दों में इसका प्रयोग मिलता है।

भाषा नियोजन language planning

यह एक व्यवस्थित प्रयास होता है जो किसी भाषिक समुदाय की सम्प्रेषण सम्बन्धी समस्याओं के समाधान के लिए किया जाता है। समाज में व्यवहृत बोलियों एवं विविध भाषाओं के अध्ययन के आधार पर, विद्वान भाषाओं का चयन एवं प्रयोग सम्बन्धी नीति निर्धारित करते हैं। 1957 में उरील वाइनराइख ने, कोलम्बिया यूनिवर्सिटी में, संगोष्ठी के शीर्षक रूप में 'भाषा नियोजन' शब्द का प्रयोग पहली बार किया था। एनियार हॉगेन प्रथम व्यक्ति हैं जिन्होंने साहित्य में इसका प्रयोग किया।

भाषा भंडार repertoire

किसी भाषा के ऐसे समस्त रूप जिनकी सहायता से कोई वक्ता समाज की विभिन्न परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न सामाजिक भूमिका निभाने में समर्थ होता है। प्राय: किसी भाषिक समुदाय के समस्त भाषिक रूपों के लिए भी सामूहिक रूप में इस शब्द का प्रयोग किया जाता है।

भाषा भूगोल linguistic geography

जब किसी भाषा का भौगोलिक परिवेश में अध्ययन कर यह ज्ञात किया जाता है कि स्वन, रूप, वाक्य व्याकरण और अर्थ की दृष्टि से कहाँ-कहाँ किस प्रकार की भिन्नता मिलती है तो इसे भाषा भूगोल कहते हैं। यही अध्ययन बोली के सन्दर्भ में बोली भूगोल कहलाता है।

भाषा संकुचन language shrink

जब अत्यधिक आदान के फलस्वरूप भाषा की आधारभूत शब्दावली की स्थानापत्ति हो जाये, भाषिक संरचनाओं में सरलता आ जाये तथा पारस्परिक बोलचाल के रूपरचनात्मक

और वाक्यीय संरचनाओं में कमी या लोप हो जाये तो इस स्थिति को भाषा संकुचन की संज्ञा देते हैं।

भाषा सम्मिश्रण / समेकन language conflation

जब भाषा में आगत अथवा गृहीत कोशीय मदों का विस्तार उस सीमा तक हो जाये कि वे कोशीय मद भाषा की जटिल संरचना के अनुरूप हो अर्थ सम्बन्धी रिक्तता को भी दूर कर सकें तो यह स्थिति भाषा सम्मिश्रण कहलाती है। प्रायः इस दशा में भाषा-अभिसरण घटित होता है। यह भाषा सम्पर्क का परिणाम है जो भाषा को परिवर्तित कर अविरल प्रयुक्त होने के लिए बाध्य करता है।

भाषाविद् linguist

भाषाविज्ञान विषय का छात्र या प्रशिक्षक भाषाविद् कहलाता है। एक सामान्य भ्रान्ति भाषाविद् एवं बहुभाषी को समान मानने की है। प्रायः समझा जाता है कि यदि कोई भाषाविद् है तो उसे कई भाषाओं का ज्ञान होना स्वाभाविक है जब कि एकाधिक भाषा ज्ञान भाषाविद् की अनिवार्यता नहीं है। भाषाविद् के लिए प्रश्न भाषा बोलने का नहीं वरन् भाषा के विषय में बोलने का है, उन सिद्धान्तों के सर्जन का है जो भाषाओं के मूल में निहित नियमों का उद्‌घाटन कर सकें।

भाषाविज्ञान linguistics

भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन। अध्ययन का यह विषय अपेक्षाकृत नवीन है सम्प्रति जिसका विकास बहुत शीघ्रता से हुआ। भाषा के विषय में अध्ययन विश्लेषण पाश्चात्य एवं प्राच्य जगत में अत्यन्त प्राचीन काल में हुआ किन्तु यह अध्ययन भाषा सम्बन्धी कहा जा सकता है भाषावैज्ञानिक नहीं। वैज्ञानिक विषय के रूप में इसका विकास 19वीं शताब्दी में आरम्भ हुआ और 1960 के लगभग सम्पूर्ण विश्व में इसका प्रसार हुआ।

भाषाविज्ञान-बाह्य extra - linguistic

भाषा के अतिरिक्त जगत का कोई भी उपादान जिससे भाषा प्रयोग सम्बन्धित हो भाषाविज्ञान-बाह्य स्थिति कही जाती है। इसके अतिरिक्त इस शब्द का प्रयोग सम्प्रेषण की उन विशेषताओं के लिए भी होता है जो भाषिक शब्दावली में स्पष्ट रूपेण विश्लेष्य नहीं होती हैं; उदाहरणार्थ - अंग विक्षेप, लहजा आदि। कतिपय विद्वान प्रथम को अधिभाषा-

विज्ञान और द्वितीय को पराभाषाविज्ञान कहते हैं।

भाषिक linguistic

भाषा या भाषाविज्ञान से सम्बन्ध सूचित करने के लिए प्राय: इस विशेषण का प्रयोग किया जाता है। भाषिक दर्शनशास्त्र, भाषिक समाज आदि प्रयोगों में यह भाषा से समबद्ध है जबकि भाषिक विश्लेषण में भाषाविज्ञान से। कतिपय प्रयोगों में दोनों अर्थ समाहित होते हैं, यथा - भाषिक अन्त:प्रज्ञा या भाषिक मानचित्र।

भाषिका lect

भाषिक घटनाओं का वह संग्रह जो किसी भाषा समुदाय में प्रकार्यात्मक विशेषता रखता है भाषिका कहलाता है। इस संग्रह का निर्माण कई आधार पर किया जाता है, जैसे - क्षेत्रीय आधार (बोली); सामाजिक आधार (समाजबोली) आदि।

भाषिका व्यंजक eye dialect

भाषा में आगत किसी विदेशी शब्द का जैसे उच्चारण किया जाए उसका लेखन भी ठीक उसी प्रकार होना चाहिए। विद्वानों का विचार है कि इससे बोली और वर्तनी में भिन्नता नहीं होती है, उदाहरणार्थ-

school	-	इस्कूल	(स्कूल)
slate	-	सिलेट	(स्लेट)
master	-	माट्साब	(मास्टर)

भूभाषाविज्ञान geolinguistics

क्षेत्रीय वितरण के आधार पर भाषाओं एवं बोलियों का अध्ययन कभी-कभी इस नाम से अभिहित किया जाता है यद्यपि बोली विज्ञान या क्षेत्रीय भाषाविज्ञान शब्द अधिक प्रचलित हैं।

भेदक distinctive

भाषा या लिपि का कोई भी ऐसा अभिलक्षण जो स्वनप्रक्रियात्मक, व्याकरणिक या आर्थी इकाइयों के मध्य व्यतिरेक प्रदर्शित करे भेदक कहलाता है। इस पारिभाषिक

शब्द का सर्वाधिक प्रयोग स्वनप्रक्रिया के क्षेत्र में **भेदक अभिलक्षण** में मिलता है और एक लघुतम व्यतिरेकी इकाई को सन्दर्भित करता है। प्राग् सम्प्रदाय के उपागम में एक स्वनिम प्रभेदक स्वनिक अभिलक्षणों के समुच्चय के रूप में परिभाषित किया गया, उदाहरणार्थ - हिन्दी का /प/ स्वनिम द्वयोष्ठ्ता, घोषत्व, स्पर्श आदि अभिलक्षणों के समागम का परिणाम है तथा अन्य स्वनिम/प् / से इन अभिलक्षणों में से कम से कम एक अभिलक्षण के आधार पर भिन्नता रखते हैं, यथा - /प् / और /ब् / का भेदक अभिलक्षण घोषत्व है।

म

मद item

एक अकेला भाषिक रूप किसी तालिका में प्रयुक्त होने पर मद कहलाता है, जैसे - किसी कोश में सूचीबद्ध शब्दावली कोशीय मदों का एक समुच्चय कही जाती है। व्याकरणिक एवं स्वनप्रक्रियात्मक इकाइयों की भी मदों के रूप में तालिका निर्मित की जा सकती है किन्तु प्रायः ऐसा नहीं होता है। इन्हें वर्गों में ही विश्लेषित किया जाता है।

मद एवं प्रक्रम item and process

इस प्रारूप में शब्दों के मध्य के सम्बन्ध को व्युत्पत्ति की प्रक्रिया के रूप में देखा गया। इसके अन्तर्गत भाषिक संरचना के वर्णन हेतु मौलिक तत्त्वों की स्थापना और इनकी संयोजन प्रक्रिया को महत्त्व दिया जाता है। इस उपागम में 'चलता' की व्युत्पत्ति 'चल' धातु में प्रत्यय विधान द्वारा की गई है अर्थात् चल > चलता। यहाँ 'चलता' की तुलना में 'चल' की पूर्वकालिकता प्रतिभासित होती है।

मद एवं विन्यास item and arrangement

वर्णन का एक प्रारूप जो भाषिक इकाइयों का विश्लेषण भाषिक संरचना के लघुतम घटकों का सन्धान कर, उनके विन्यास के आधार पर, करता है। इस प्रारूप में शब्द, रूपिमों के रेखीय अनुक्रम के रूप में, देखे जाते हैं और वाक्यान्तर्गत उनके विन्यास का वर्णन किया जाता है, यथा - लड़के पतंग उड़ा रहे हैं लड़का+-ए +पतंग+उड़ +-आ + रह+-ए+हैं+ —•—।

मध्य mid

स्वर उच्चारण में जिह्वा की तीन स्थितियों की चर्चा की जाती है उच्च, मध्य एवं निम्न। यह पारिभाषिक शब्द उच्चारण के मध्य क्षेत्र से बोले गए स्वरों को सन्दर्भित करता है, जैसे-ए, ओ।

मध्य प्रत्यय infix

प्रत्यय का एक प्रकार जिसका संयोजन धातु या प्रातिपदिक के अन्दर होता है। मध्य प्रत्यय संयोजन की प्रक्रिया यूरोपीय भाषाओं या हिन्दी में दृष्टिगत नहीं होती है किन्तु अमरीकी जनजातियों की भाषाओं, अफ्रीकी भाषाओं आदि में यह मिलती है, जैसे - टेगलोग भाषा में sulat का अर्थ है `लिख' तथा susulat का `लिखेगा'। यहाँ द्वितीय शब्द में / -su- / मध्य प्रत्यय संयुक्त हुआ है।

मध्य भाषिका mesolect

समाजभाषाविज्ञान में क्रियोल भाषाओं के अध्ययन में जो भाषा उच्चभाषिक एवं निम्नभाषिक के बीच आती है उसे मध्य भाषिका कहते हैं। इसको आगे तीन उपवर्गों में विभाजित किया जाता है **उच्च मध्य भाषिका** (जो उच्चभाषिका के करीब हो); **निम्न मध्य भाषिका** (जो निम्नभाषिका से अधिक साम्य रखती हो तथा **मध्य मध्य भाषिका** (जिसकी दोनों रूपों से समान दूरी हो)।

मध्य वर्ण लोप syncope

किसी शब्द के मध्यवर्ती स्वन का लोप ऐतिहासिक भाषाविज्ञान में मध्यवर्ण लोप कहलाता है, जैसे - हिन्दी में खरीद्दार > खरीदार।

मध्यवर्ती medial

किसी भाषिक इकाई में आगत आरम्भिक एवं अन्त्य स्थिति तत्त्व के अतिरिक्त अन्य तत्त्वों को मध्यवर्ती कहते हैं। इस शब्द का स्वनप्रक्रिया में अधिक प्रयोग मिलता है, यथा - अंग्रेजी के seat शब्द में स्वनिम / i / मध्यवर्ती स्थिति में आता है।

मनोभाषाविज्ञान psycholinguistics

भाषाविज्ञान की एक शाखा जिसके अन्तर्गत भाषिक व्यवहार एवं तत्सम्बन्धी मानसिक प्रक्रमों के सहसम्बन्धों का अध्ययन विश्लेषण होता है। यह अध्ययन दो दिशाओं में किया जा सकता है - स्मृति, प्रत्यक्षीकरण, ध्यान, अधिग्रहण आदि में भाषा की भूमिका ज्ञात करना (मनोवैज्ञानिक भाषाविज्ञान) तथा भाषाभाषी के भाषिक प्रयोग में आने वाली बाधाओं का मनोवैज्ञानिक पक्ष उद्घाटित करना (भाषाविज्ञान की दृष्टि से द्वितीय पक्ष अधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है)। सम्प्रति शिशु भाषाधिग्रहण से सम्बन्धित विषयों पर अनेक कार्य हो रहे हैं।

महाप्राणता aspiration

ध्वनियों के उच्चारण के साथ निर्मुक्त अतिरिक्त श्रव्य प्रश्वास के लिए स्वनविज्ञान में महाप्राणता शब्द का प्रयोग किया जाता हैं। प्राय: इसे मुख्य चिह्न के ऊपर छोटा उठा (^{h}) चिह्न लगाकर लिप्यांकित किया जाता है। हिन्दी भाषा में घोष और अघोष स्पर्श व्यञ्जन में महाप्राणता लक्षित होती है [p-], [p^h-], [b-], [b^h-] । महाप्राणता का प्रभाव कतिपय स्वनिक वितरणों में परिवर्तित होता रहता है, यथा - जब अंग्रेजी स्पर्श ध्वनियों के बाद (l,r,w,j) आते हैं तो महाप्राणता इन व्यञ्जनों को अघोष कर देती है।

मॉड्यूलेशन modulation

कथन में विशेष प्रकार के समाजिक या अभिवृत्तिक प्रभाव को लाने के लिए कभी-कभी उपरिखण्डीय परिवर्तन किए जाते हैं इन्हें बलाघात या स्वराघात परिवर्तन की संज्ञा देते हैं, जैसे - चीखना या फुसफुसाना अदि।

मातृभाषा vernacular

मातृ भाषा की अभी तक कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं है, फिर भी सामान्य रूप से यह माना जाता है कि जिस भाषा का ज्ञान हमें बोलने की प्रक्रिया प्रारम्भ करने के समय से ही प्राप्त होने लगता है और आयु के विकास के साथ-साथ जिस पर हमारा अधिकार बढ़ता जाता है वह भाषा मातृ भाषा है। व्यक्ति का सबसे ज्यादा अधिकार उसकी मातृ भाषा पर होता है इस भाषारूप के सम्बन्ध में उसकी अन्त: प्रज्ञा एवं भाषा प्रयोग सम्बन्धी उसके निर्णय सर्वाधिक विश्वसनीय माने जाते हैं। मातृ भाषा ही उसकी अभिव्यक्ति का सहज एवं सशक्त माध्यम है।

मातृभाषाभाषी native speaker

किसी मातृ भाषा का प्रयोक्ता, जिसने शैशवावस्था से उस मातृ भाषा को सीखा हो एवं उसका प्रयोग कर रहा हो। भाषा सम्बन्धी विश्लेषण में सूचना प्राप्त करने के लिए मातृभाषा भाषी सूचक सबसे अच्छा माना जाता है। अपनी भाषा सम्बन्धी उसके निर्णय उस व्यक्ति की तुलना में, अधिक प्रमाणिक एवं विश्वसनीय माने जाते हैं जिसने विदेशी भाषा के रूप में उसे सीखा हो। किन्तु बहुत से लोग विदेशी भाषा में मातृभाषावत दक्षता प्राप्त कर लेते हैं, जैसे - पूर्ण द्विभाषिकता की स्थिति में वक्ता का दो भाषाओं पर मातृभाषावत नियन्त्रण होता है।

मात्रक chroneme

काल की मात्रा की वह अर्थ भेदक इकाई, जिससे ह्रस्व, दीर्घ आदि स्वनों का भेद किया जाता है। इस अमूर्त इकाई का प्रयोग कुछ ही स्वनशास्त्रियों ने किया। स्वर एवं व्यञ्जन दोनों में ही काल से सम्बन्धित ध्वन्यात्मक व्यतिरेक मिल सकता है। जर्मन, संस्कृत एवं हिन्दी में दीर्घ एवं ह्रस्व स्वर मिलते हैं और लिथुयानियन में व्यञ्जन। इसके आधार पर दीर्घता [:] को भी स्वनिमिक स्तर प्रदान किया जाता है। इसे **मात्रा - स्वनिम** भी कहते हैं।

मात्रा mora

किसी स्वन, विशेषत: स्वर के उच्चारण में समय की जो मात्रा लगती है उसे भाषिक अध्ययन या विश्लेषण में मात्रा या मात्रा काल कहते हैं। कालावधि की यह इकाई यादृच्छिक होती है। ह्रस्व स्वर के उच्चारण में लगने वाले समय की **ह्रस्व**, दीर्घ स्वर के समय को **दीर्घ** तथा ह्रस्व से तिगुने समय वाले स्वन की मात्रा को **प्लुत** कहते हैं। ओऽम् शब्द का 'ओ' प्लुत है। इसलिए इसके बाद ऽ अथवा 3 लिखा जाता है।

मात्रात्मक भाषाविज्ञान quantitative linguistics

भाषाविज्ञान की एक शाखा जो भाषिक इकाइयों की आवृत्तियों एवं वितरण का अध्ययन सांख्यिकी तकनीकी द्वारा करती है। इसका सैद्धान्तिक पक्ष शब्द, ध्वनि के प्रयोग सम्बन्धी सांख्यिकीय नियमितताओं से सम्बन्धित सामान्य सिद्धान्तों का निर्माण करता है तथा अनुप्रयोग पक्ष भाषिक समस्याओं के समाधान एवं व्याख्या हेतु आवश्यक सांख्यिकी तकनीकियों की खोज करता है।

माध्यमिक intermediate

दो सहवर्ती मानस्वरों के बीच स्थित स्वर माध्यमिक स्वर कहलाता है। मान स्वर चित्र के केन्द्र में स्थित स्वर श्वा (schwa) भी कभी-कभी इस नाम से अभिहित किया जाता है।

मानक उच्चारण received pronunciation

अंग्रेजी भाषा के सन्दर्भ में उच्चारण का वह रूप जो पब्लिक स्कूलों, ऑक्सफोर्ड

एवं कैंब्रिज विश्वविद्यालयों और इंग्लैण्ड के न्यायालयों में प्रचलित है। सामान्यत: इसका प्रयोग समाज के शिक्षित एवं शिष्ट उच्च मध्यवर्गीय वर्ग की भाषा के लिए किया जाता है। इसको समाज में प्रचलित अन्य भाषा रूपों की तुलना में अधिक सम्मान प्राप्त होता है जो भाषिक नहीं अपितु सामाजिक तत्त्वों का परिणाम है। मानक उच्चारण अन्य उच्चारणों से न निम्नतर कहा जा सकता है और न उच्चतर किन्तु यह अवश्य है कि इसका सम्बन्ध समाज के अधिक शिक्षित वर्ग से होता है।

मानक भाषा standard language

किसी भाषिक समुदाय में प्रचलित भाषा का सम्मानित स्वरूप जो आदर्श, प्रतिमानी शुद्ध रूप होता है। मानक भाषा / बोली / रूप प्रादेशिक भिन्नताओं को समाप्त कर सम्प्रेषण का एक समेकित माध्यम प्रस्तुत करती है जिसका प्रयोग शिक्षा-दीक्षा, पठन-पाठन, समाचार पत्र, दूरदर्शन, प्रशासनिक कार्यों, समस्त साधनों के रूप में होता है। स्थिरता एवं बौद्धिकता इसके दो अनिवार्य गुण हैं। यह भाषिक समुदाय की भाषिक चेतना से जुड़ी रहती है और भाषाभाषी इसके प्रति गर्व, निष्ठा एवं भावात्मक लगाव की अनुभूति करता है। एक भाषिक समुदाय में किसी मानक भाषा का सहज विकास या किसी भाषा या बोली को मानक भाषा बनाने की चेष्टा **मानकीकरण** (standardisation) कहलाती है। सहज मानकी - करण शनैः शनैः मन्द गति से होता है जब कि सचेत मानकीकरण में विद्वानों, साहित्यकारों के प्रयास के फलस्वरूप भाषा अल्प समय में ही मानक रूप में स्थापित हो जाती है। ऐसे भाषिक रूप या बोलियाँ जो इस मानदण्ड के अनुरूप नहीं होते हैं उन्हें **अधो मानकीकृत** या **अमानक रूप** कहते हैं।

मान-कोटिपरक व्याकरण Scale and Category grammar

ब्रिटिश भाषाविद् हैलिडे ने प्रारम्भ में अपनी विश्लेषण पद्धति को मान कोटिपरक व्याकरण नाम दिया क्योंकि इनके भाषा विश्लेषण के आधार कुछ माप तथा कुछ कोटियाँ थीं। इस विश्लेषण में व्यवस्था (एक व्याकरणिक कोटि) तथा विकल्प व्यवस्था की व्याख्या पर भी बल रहा है। अत: कतिपय विद्वान इस पद्धति को व्यवस्था-विकल्प भी कहते हैं किन्तु बाद में हैलिडे ने 'व्यवस्थापरक व्याकरण' नाम उपयुक्त समझा। इस सिद्धान्त में चार सैद्धान्तिक कोटियों-इकाई, सरंचना, वर्ग तथा व्यवस्था की स्थापना की गई। ये कोटियाँ श्रेणी, सूक्ष्मता एवं द्योतन के माप द्वारा सम्बन्धित होती हैं।

मानचित्र map

यह पारिभाषिक शब्द किसी स्थिति के प्रारूप में परिभाषित तत्त्वों एवं वास्तविक परिस्थिति में प्राप्त तत्त्वों के बीच के संवाद को सन्दर्भित करता है। यदि किसी दिए गए स्वर पर इन तत्त्वों के मध्य एक से एक का संवाद होता है तब मानचित्रण समाकृतिक कहलाता है और यदि किसी स्तर विशेष में सतही या चयनपरक संवाद मिलता है तो मानचित्रण समरूपी कहलाता है।

रूपान्तरण व्याकरण में प्राय: इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग उस प्रक्रिया के लिए किया जाता है जहाँ वाक्य व्युत्पत्ति का कोई विशिष्ट चरण परवर्ती चरण से रूपात्मक दृष्टि से सम्बन्धित होता है, यथा - एक निविष्ट पदबन्ध का व्युत्पन्न पदबन्धचिह्न पर एक रूपान्तरण समुच्चय द्वारा मानचित्रण किया जाता है।

मॉनटेग व्याकरण Montague grammar

1970 के मध्य अमरीका में तर्कशास्त्री रिचर्ड मॉनटेग के विचारों से प्रभावित एक नवीन भाषिक सिद्धान्त का बीजारोपण हुआ। यह उपागम तार्किक भाषा के अर्थविज्ञान सम्बन्धी अध्ययन से उत्पन्न संकल्पनात्मक उपकरण का उपयोग करता है तथा प्रकृत भाषा के विश्लेषण के लिए इसका अनुप्रयोग करता है। इस व्याकरण में वाक्यीय एवं आर्थी घटकों को घनिष्ठत: सम्बन्धित माना गया। इन दो स्तरों में प्राप्त व्याकरणिक कोटियों के बीच एक से एक का संवाद मिलता है। वाक्य रचना का निरूपण वाक्यीय नियमों द्वारा होता है जो वाक्यीय कोटियों को परिभाषित कर पदबन्ध संरचना व्याकरण का निर्माण करते हैं। इनके संवादी आर्थी नियम सत्याश्रित निर्धारक की अवधारणा के आधार पर इन वाक्यों की प्रतिज्ञप्ति सम्बन्धी व्याख्या करते हैं। इस सिद्धान्त का विकास एवं विस्तार कई प्रकार से किया गया। **सामान्यीकृत पदबन्ध संरचना व्याकरण** इसका एक विकसित रूप है।

मानदंड criterion

किसी विश्लेषण या वर्णन के रूपात्मक औचित्य के सन्दर्भ में मानदण्ड शब्द का प्रयोग किया जाता है, अर्थात् कोई भाषिक विश्लेषण किसी विशेष प्रकार से ही क्यों किया जा रहा है। विश्लेषण या वर्णन के उद्देश्य को ध्यान में रखकर ही मानदण्ड निर्मित किए जाते हैं, यथा-शब्द वर्गों की स्थापना में सिर्फ विशुद्ध भाषिक मानदण्ड लिए जाएँ या भाषेतर भी ग्रहण किए जाएँ यह निर्णय लेना पड़ता है -(1) मानदण्ड सदैव स्पष्ट होने चाहिए तथा

(2) जहाँ तक सम्भव हो मानदण्ड का रूपात्मक महत्त्व होना चाहिए।

मानसवाद mentalism

इस सम्प्रदाय के विचार का प्रभाव नोआम चॉमस्की के अध्ययन पर सर्वाधिक दृष्टिगत होता है। मुख्यत: उनके द्वारा प्रतिपादित भाषिक क्षमता एवं सहजातीयता की अवधारणा एवं भाषा तथा मस्तिष्क सम्बन्धी सामान्य दृष्टिकोण में इसका प्रभाव देखा जा सकता है। मानसवाद इस विचार पर बल देता है कि मानसिक स्थितियाँ एवं प्रक्रियाएँ व्यवहार सम्बन्धी अपनी अभिव्यक्ति से स्वतन्त्र रूप से विद्यमान रहती हैं तथा व्यवहार की व्याख्या कर सकती हैं।

मानस्वर cardinal vowel

स्वर स्वनों की वह व्यवस्था जो किसी भाषा विशेष से सम्बद्ध नहीं होती, किन्तु सामान्य सन्दर्भों में, जिसकी जिह्वागत तथा ओष्ठगत स्थितियाँ एवं ध्वानिक विशेषताएँ सुनिश्चित मान ली गई हैं और जिसका प्रयोग किसी भाषा विशेष के स्वरों से तुलना के लिए किया जाता है। सर्वप्रथम **डेन्यिल जोन्स** ने इन्हें **संदर्भ स्वर** के रूप में परिभाषित किया था। मान स्वरों के निम्नलिखित पाँच अभिलक्षण हैं-

(1) ये किसी एक भाषा के नहीं होते हैं और स्वर विश्लेषण के लिए संदर्भ-साधन का काम देते हैं। ये यादृच्छिक ढंग से निर्धारित किए गए हैं।

(2) इनकी ध्वानिक विशेषताएँ सुनिश्चित हैं।

(3) ये स्वर - क्षेत्र की परिधि पर स्थित होते हैं।

(4) ये श्रवणात्मक दृष्टि से समान दूरी पर भी स्थित हैं।

(5) इनकी संख्या आठ है और इन्हें क्रमश: संख्या 1 से 8 द्वारा अभिहित किया जाता है।

माला string

प्रजनक व्याकरण में तत्त्वों का रेखीय अनुक्रम माला कहलाता है। यह एक तत्त्व युक्त या तत्त्वहीन (शून्य तत्त्व युक्त) दोनों हो सकती है। तत्त्वहीन को **रिक्त / शून्य माला** कहते हैं। किसी माला का वह भाग जो स्वयं माला हो **उपमाला** कहलाता है, यथा - राम+बाजार +जा +रहा + है वाक्य में दो उपमालाएँ `राम' तथा `बाजार जा रहा है' हैं।

मिश्रण blending

व्याकरणिक एवं कोशीय विश्लेषण में प्राप्त एक प्रक्रिया जिसमें, भाषा के नियमों के अनुसार सामान्यत: साथ-साथ घटित न होने वाले, दो तत्त्व किसी एक भाषिक इकाई में साथ आते हैं। व्याकरण में इस प्रक्रिया का उदाहरण वाक्यीय मिश्रण में मिलता है, यथा - It is his job, is the problem । यह वाक्य It is His job और his job is the problem वाक्यों का मिश्रण है।

मिश्रण की यह प्रक्रिया शब्द निर्माण की एक प्रचलित प्रक्रिया है, यथा - Brunch, motel, interpol अथवा बंगाली शब्द जूटॉन जो `जूट' और cotton के मिश्रण से निर्मित हुआ है।

कतिपय मनोभाषाविदों नें वाक् स्खलन के कारण दो शब्दों में विलयन से उत्पन्न शब्द के लिए भी इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग किया है, यथा - swurse-swear+curse।

मुक्त free

ऐसा व्याकरणिक अथवा स्वनप्रक्रियात्मक अभिलक्षण जिसका कोई विशिष्ट रूपात्मक प्रतिबन्ध न हो मुक्त कहलाता है, जैसे - मुक्त रूप या मुक्त रूपिम एक ऐसी लघुतम इकाई है जो बिना किसी रूपात्मक परिवर्तन के शब्दवत् प्रयुक्त हो सकती है। जो शब्द क्रम परिवर्तन भाषा में अर्थगत भिन्नता नहीं उत्पन्न करता है उसे **मुक्त शब्द क्रम** कहते हैं। यदि किसी बह्वाक्षरी शब्द में मुख्य बलाघात का कोई निश्चिंत स्थान नहीं हो तो उसे **मुक्त बलाघात** की संज्ञा देते हैं। **मुक्त वितरण** पदबन्ध में भी इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग मिलता है अर्थात् जब किसी निश्चित परिवेश में किसी ध्वनि की स्थानापत्ति अन्य ध्वनि द्वारा होने पर अर्थगत भिन्नता न उत्पन्न हो, यथा - दीवार/दीवाल यहाँ /ल/ एवं /र/ के मध्य मुक्त वितरण की स्थिति है।

मुक्त आश्रितता unbounded dependency

सामान्यीकृत पदबन्ध संरचना व्याकरण तथा अन्य आधुनिक सिद्धान्तों में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द जो एक ऐसी रचना की ओर संकेत करता है जिसमें वाक्यीय सम्बन्ध के कारण दो घटकों के मध्य की संरचनात्मक दूरी पर कोई प्रतिबन्ध नहीं होता है। अंग्रेजी तथा हिन्दी खंड वाक्यों में, टॉपकीकरण एवं सम्बन्धपरक उपवाक्यों में इस प्रकार की आश्रितता के दर्शन होते हैं। प्राय: टॉपिक मुख्य उपवाक्य के प्रारम्भ में तथा उससे सम्बन्धित

रचना दो या अधिक उपवाक्यों के बाद प्रयुक्त दिखाई पड़ती है, यथा - 'मैं **हर काम** मन लगा कर करता हूँ, उसने कहा था **हर काम** मन लगा कर करना चाहिए।'

मुखरता का शिखर crest of sonority

किसी अक्षर के उच्चारण में ध्वनि के उच्चारण की चरम सीमा। ध्वनि में प्रखरता का शिखर होने से ही वह आक्षरिक कहलाती है।

मुखरित sonorant

चॉमस्की एवं हॉले द्वारा प्रतिपादित भेदक अभिलक्षण सिद्धान्त में निरूपित स्वन का एक प्रमुख अभिलक्षण जो उच्चारण प्रयत्न की विविधता दर्शाता है। उच्चारणात्मक दृष्टि से यह सापेक्षतया स्वतन्त्र वायु-प्रवाह से उच्चरित होते हैं तथा सुरतन्त्रियों की स्थिति ऐसी होती है कि निरन्तर घोषता सम्भव हो, जैसे - स्वर, नासिक्य, पार्श्विक स्वनों में। इसका विलोम अमुखरित स्वन है जहाँ निकोच वायु-प्रवाह को बाधित करता है, जैसे - घर्षी, स्फोटक, स्पर्श संघर्षी में।

मुख-विवर oral buccal cavity

मुँह के ओठों से लेकर गले तक का वह भाग जिसमें मुख्यत: वायु के निकलते समय उच्चारण अवयवों द्वारा अवरोध के फलस्वरूप स्वरों तथा व्यञ्जनों का उच्चारण होता है, मुख विवर कहलाता है।

मुख्य main

उपवाक्य के कई भेद किए जाते हैं-मुख्य एवं आश्रित। एक मुख्य उपवाक्य स्वतन्त्र होता है अर्थात् इसका वाक्यवत् प्रयोग किया जा सकता है। इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग किसी वर्ग के महत्त्वपूर्ण संरचनात्मक सदस्य के लिए भी किया जाता है, यथा - 'मुख्य क्रिया'।

मुख्य कर्म direct object

प्राय: भाषाओं में उपवाक्यान्तर्गत कर्म दो प्रकार से कार्यरत मिलता है - मुख्य एवं गौण। 'राम खाना खाता है' वाक्य में 'खाना खाता' मुख्य कर्म है जब कि 'राम मोहन को

खाना खिलाता है' `मोहन को' गौण कर्म है। मुख्य कर्म उपवाक्य का केन्द्र होता है जबकि गौण कर्म मुख्य कर्म की आकांक्षा करता हैं।

मुख्य वर्ग अभिलक्षण major class feature

चॉमस्की तथा हॉले द्वारा प्रतिपादित स्वनप्रक्रिया के भेदक अभिलक्षण सिद्धान्त में निरूपित वर्गीकरण के पाँच आयामों में एक मुख्य वर्ग अभिलक्षण, स्रोत एवं स्वनगुण विश्लेषण अभिलक्षण है। इसके अन्तर्गत स्वन के वे अभिलक्षण आते हैं जो उसे स्वर, व्यंजन, अर्धस्वर और तरल वर्गों में विभाजित करते हैं, जैसे-स्वरात्मक / अस्वरात्मक, व्यंजनात्मक / अव्यंजनात्मक आदि।

मुहावरा idiom

शब्दों का एक निश्चित अनुक्रम जो आर्थी एवं कभी-कभी वाक्यीय दृष्टि से सीमित होने के कारण एक इकाईवत् कार्य करता है। मुहावरे में प्रयुक्त शब्दों के अर्थ के आधार पर मुहावरे का अर्थ स्पष्ट नहीं किया जा सकता है, जैसे-नौ दो ग्यारह होना। अन्य सन्दर्भों में शब्द जिस प्रकार की परिवर्तन शीलता परिलक्षित करते हैं, मुहावरे में वह दृष्टिगत नहीं होती है। प्राय: मुहावरों की आन्तरिक संरचना दृढ़ होती है और परिवर्तन स्वीकार नहीं करती, जैसे - अपने मुँह मियाँ मिट्ठू के स्थान पर तुम्हारे / उसके मुँह मियाँ मिट्ठू प्रयोग नहीं किया जा सकता।

मूर्धन्य retroflex

ऐसे स्वन जिनके उच्चारण में जिह्वाग्र ऊपर उठकर कठोर तालु की ओर प्रत्याकर्षित होता है, जैसे - स्वीडिश बोलियों में प्राप्त स्वनिम / ṭ / । किसी स्वन में मूर्धन्य स्वन की विशेषता आ जाने पर यह प्रक्रिया **मूर्धन्यीकरण** कहलाती है। मूर्धन्यीकरण की मात्रा में भिन्नता मिलती हैं। हिन्दी की ड्, ढ्, ण्, ट्, ठ् ध्वनियाँ इसी प्रकार की व्यञ्जन ध्वनियाँ हैं।

मूलभूत आवृत्ति fundamental frequency

ध्वनियों के भौतिकशास्त्रीय अध्ययन से व्युत्पन्न शब्द ध्वनिकी में जिसका प्रयोग किसी जटिल ध्वनि तरंग में निम्नतम आवृत्ति घटक को सन्दर्भित करने के लिए किया जाता है। इस प्रकार संमिश्र/जटिल तरंग की पुनरावृत्ति की बारम्बारता मूलभूत आवृत्ति

कहलाती है। यदि किसी पुनरावृत्ति तरंग का विश्लेषण उसकी घटक आवृत्तियों के आधार पर किया जाए तो मूलभूत आवृत्ति घटक आवृत्तियों का महत्तम सार्वहर (highest common denominator) होगी।

मूलाधार underlying

किसी भाषा की आनुभविक सामग्री में प्राप्त अभिरचनाओं की व्याख्या के लिए निरूपित वाक्य का अमूर्त प्रतिरूपण। **मूलाधार रूप** की अवधारणा प्रजनक व्याकरण की केन्द्रीय अवधारणा है जहाँ वाक्यों की व्युत्पत्ति में **मूलाधार संरचना** के अनेक चरणों का उल्लेख किया जाता है। आरम्भिक रूपान्तरण व्याकरण में पदबन्ध संरचना नियमों द्वारा प्राप्त वाक्य का संरचनात्मक वर्णन **मूलाधार पदबन्ध चिह्नक** कहलाता है और यही **मूलाधार माला** परवर्ती रूपान्तरण नियमों के लिए निर्गत का कार्य करती है और इससे **व्युत्पन्न पदबन्ध चिह्नक** उत्पन्न होते हैं। चॉमस्की की पुस्तक 'ऑस्पेक्ट' में मूलाधार संरचना की धारणा के लिए आन्तरिक संरचना शब्द का प्रयोग मिलता है, रूपान्तरणों द्वारा जिससे बाह्य संरचनाएँ व्युत्पन्न होती हैं।

मूल्य value

किसी सत्व की प्रकार्यात्मक पहचान बताने, उसके स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए फ्रेंच विद्वान फर्दिनान्द डी सेस्यूर ने सर्वप्रथम मूल्य शब्द का प्रयोग किया। इनके अनुसार भाषा स्वतन्त्र शब्दों की व्यवस्था है। प्रत्येक शब्द का मूल्य भाषा में आगत अन्य शब्दों की समकालिक उपस्थिति का परिणाम होता है। भाषा के ये शब्द सारणिक एवं श्रंखलात्मक साहचर्य द्वारा सम्बन्धित होते हैं। संरचनात्मक भाषाविज्ञान में इसको विशेष महत्त्व दिया गया।

मृदु mellow

यकोब्सन एवं हॉले द्वारा प्रतिपादित स्वनप्रक्रिया के भेदक अभिलक्षण सिद्धान्त में उच्चारण स्थान की भिन्नता के वर्णन के लिए स्थापित लक्षणों में एक मृदु है जिसका विपरीतार्थक रूक्ष होता है। मृदु ध्वनियों का उच्चारणात्मक एवं ध्वानिक विवरण दिया जा सकता है। वे ध्वनियाँ जो उच्चारण बिन्दु पर कम जटिल संकोचन वाली होती हैं तथा रूक्ष ध्वनियों की तुलना में ध्वनिक ऊर्जा की निम्न आवृत्तियों और तीव्रता वाली होती हैं।

मृदु व्यञ्जन soft consonant

मूर्धा से लेकर अलिजिह्वा तक तालु का पिछला कोमल भाग कोमल/मृदु तालु कहलाता है। इस भाग से उच्चरित व्यंजन कोमल तालव्य/ कंठ्य कहलाते हैं, जैसे - हिन्दी के कवर्ग व्यजंन। रूसी भाषाओं में b चिह्न (मृदुताचिह्न) अपने पूर्ववर्ती व्यंजन को तालव्यीकृत कर देता है।

मैट्रिक्स matrix

गणित से आगत एक पारिभाषिक शब्द जो एक आयताकार तत्त्वों की सरणी (array), जिसका निर्माण पंक्तियों एवं कॉलमों से होता है तथा जिसका प्रयोग भाषाविज्ञान की प्रत्येक शाखा में वर्णन या विश्लेषण की सहायता के लिए होता है, जैसे - स्वनप्रक्रिया में प्राय: प्रभेदक अभिलक्षणों का मैट्रिक्स द्वारा वर्णन किया जाता है वहाँ खण्ड कॉलम होते हैं और अभिलक्षण पंक्तियाँ, तत्पश्चात् मैट्रिक्स के कक्ष घन या ऋणात्मक प्रतीकों द्वारा भरे जाते हैं। कतिपय परिस्थितियों में शून्य भी लिखा जाता है। क्या चिह्न लगेगा यह इस बात पर निर्भर करता है कि किसी अभिलक्षण का प्रयोग हुआ है (+) अथवा नहीं हुआ (-)।

प्रजनक व्याकरण में ऐसा अधिक्रमबद्ध वाक्य जिसमें एक अन्य वाक्य आधायित हो मैट्रिक्स वाक्य कहलाता है, यथा - वह आदमी, जिसके घर चोरी हुई थी, आया है।

मौखिक oral

स्वनविज्ञान में मौखिक से तात्पर्य मुख का उच्चारण स्थान होता है इसका विलोम नासिक्य है। जब फेफड़े से बाहर आने वाली वायु अलिजिह्वा के नीचे उठे रहने के कारण मुख विवर से प्रवाहित हो तो इस स्थिति में उच्चरित स्वन मौखिक कहलाते हैं। नासा-पथ को छोड़ कर काकल से ओंठ तक का वायु मार्ग **मुख पथ** कहलाता है। मुँख में ओंठों से लेकर गले तक का वह भाग जिसमें मुख्यत: वायु के निकलते समय उच्चारण-अवयवों द्वारा उत्पन्न अवरोध के फलस्वरूप स्वरों एवं व्यंजनों का उच्चारण होता है **मुख विवर** कहलाता है। यद्यपि मौखिक एवं नासिक्स में ही व्यतिरेक किया जाता है तथापि मौखिक में सुरयन्त्र, ग्रासिका एवं फेफड़े भी नहीं आते हैं।

य

यकारी करण yodization

सामान्यत: इ अथवा ए का य में परिवर्तन यकारीकरण कहलाता है, जैसे - लैटिन भाषा के शब्द vince का ग्राम्य लैटिन रूप में vinya रूप उच्चरित होता है।

यादृच्छिकता arbitrariness

मानवीय भाषा की एक विशेषता जो उसे अन्य संकेत व्यवस्थाओं से भिन्न प्रतिपादित करती है। यादृच्छिक होने का अभिप्राय यह है कि भाषिक रूपों का जागतिक वास्तविकताओं; जिन्हें वे सन्दर्भित करते हैं, से कोई भौतिक एवं अपरिवर्तनीय सम्बन्ध नहीं होता है। यही कारण है एक ही वस्तु या पदार्थ के लिए विभिन्न भाषाओं में भिन्न-भिन्न ध्वनि-प्रतीकों का प्रयोग होता है, जैसे - एक ही वस्तु को हिन्दी में `मेज' और अंग्रेजी में `table' कहते हैं। साथ ही मेज शब्द में ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसकी आकृति, निर्माण सामग्री आदि को प्रतिबिम्बित करता है। भाषाओं में कुछ शब्द ऐसे भी होते हैं जो आंशिक या पूर्णत: अनुप्रतीकात्मक होते हैं, जैसे - अनुकरणात्मक शब्द-म्याऊँ, चीं चीं आदि। यादृच्छिकता मात्र शब्द के स्तर की नहीं, समस्त भाषा स्तरों की विशेषता है।

युक्त clitic

शब्द से साम्य रखने वाले ऐसे रूप के लिए `युक्त' पद का प्रयोग किया जाता है जो अपने पड़ोसी शब्दों पर संरचनात्मक दृष्टि से आश्रित होने के कारण स्वतन्त्र रूप में प्रयुक्त नहीं किया जा सकता है। ग्रीक में clitic शब्द का अर्थ `आश्रित' होता है। अंग्रेजी be के संकुचित रूप इसके उदाहरण हैं, यथा - I'm, He's । अंग्रेजी तथा फ्रेंच के उपपद (article) भी युक्त कहे जाते हैं क्योंकि इनका स्वतन्त्र प्रयोग नहीं हो सकता और मातृभाषी इन्हें शब्द कहता है। इनके दो वर्ग मिलते है-पूर्वाश्रयी एवं पश्चाश्रयी।

योगात्मक agglutinative

तुलनात्मक भाषाविज्ञान में शब्द के अभिलक्षण तथा संरचना के आधार पर भाषाओं को योगात्मक एवं अयोगात्मक दो वर्गों में विभाजित किया गया। योगात्मक भाषाओं में शब्दों में रूपों का एकरेखीय अनुक्रम मिलता है जैसा हिन्दी **बैठकबाजीपन** में देखा जा सकता है। भाषाओं में योजन की यह विशेषता सदैव समान नहीं होती है। यह अभिलक्षण कहीं अधिक तो कहीं कम मिलता है। जापानी एवं तुर्की भाषा में योजन अत्यधिक मिलता है।

योजित वाक् connected speech

सामान्य कथनों या बातचीत में मौखिक भाषा में जो अविच्छिन्न अनुक्रम प्राप्त होता है, भाषा-विज्ञान में उससे योजित वाक् की संज्ञा देते हैं। पारम्परिक अध्ययन में स्वतन्त्र भाषिक इकाइयों (किसी एक स्वन, शब्द या पदबन्ध) के विश्लेषण पर अधिक बल दिया गया किन्तु आज यह सर्वविदित तथ्य है कि योजित वाक् में होने पर इन इकाइयों में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन घटित होते हैं, यथा - समीकरण या लोप की प्रक्रिया द्वारा लक्षित परिवर्तन।

यो-हे-हो वाद yo-he-ho theory

भाषा उत्पत्ति के इस सिद्धान्त की मान्यता थी कि श्रम करते समय व्यक्ति की श्वासगति तीव्र होने के कारण सुरतन्त्रियों में कम्पन उत्पन्न होता है जिसके परिणाम स्वरूप मुख से स्वत: ध्वनियों का उच्चारण होता है और इन्ही ध्वनियों से भाषा निसृत हुई है।

र

रचना construction

भाषाविज्ञान में किसी व्याकरणिक इकाई के आन्तरिक संघटन की समस्त प्रक्रिया को रचना की संज्ञा दी जाती है। जैसे - कोई एक वाक्य विशिष्ट नियमों का पालन करने वाले किसी रूपिम समुच्चय द्वारा निर्मित होता है। यह किसी प्रक्रिया के श्रृंखलात्मक परिणाम की ओर संकेत करती है। कोई रचना भाषा के व्याकरण में प्रकार्यात्मक पहचान रखने वाली इकाइयों के एक अनुक्रम के रूप में परिभाष्य होती है,- यथा एक उपवाक्य कर्ता + कर्म + क्रिया तथा एक पदबन्ध निर्धारक + संज्ञा के रूप में विवेच्य होता है। यह शब्द विशेषत: रचनात्मक प्रारूप के प्रतीक रूप में माला के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है, यथा - लड़का + स्कूल + जा + रहा + है। अमरीकी विद्वान ब्लूमफील्ड ने किसी रचना को आसन्न घटक पद्धति द्वारा घटकों में विभाजित कर, विश्लेषित करने का प्रस्ताव रखा।

रचनांग formative

किसी निश्चित रूपात्मक स्वरूप वाला अविभाज्य व्याकरणिक तत्त्व जो बृहत्तर भाषिक इकाइयों की रचना में सहयोग दे, रचनांग कहलाता है, जैसे - शब्द या वाक्य। किसी वाक्य की बहि:स्तलीय संरचना के प्रतिरूपण में आगत अन्त्य तत्त्वों के लिए प्रजनक भाषाविज्ञान में रचनांग शब्द का प्रयोग रूपिम के विकल्प रूप में किया गया। वाक्य रचना में प्रकार्य के आधार रचनांगों के अनेक प्रकारों की स्थापना की जा सकती है, जैसे - विभक्ति रचनांग या कोशीय रचनांग आदि।

रचनात्मक समरूपता constructional homonymity

यदि किसी श्रंखला की एकाधिक व्याख्याएँ, उसकी रचनात्मक व्यवस्थाओं के आधार पर, की जाएँ तो इसे रचनात्मक समरूपता की संज्ञा देते हैं। पारम्परिक व्याकरण की शब्दावली में; ऐसी श्रंखलाएँ संरचनात्मक संदिग्धता युक्त होती हैं, यथा - 'छोटे मन्दिर में न आएँ' वाक्य का विश्लेषण (छोटे मन्दिर) में न आएँ और (छोटे) मन्दिर में न आएँ दोनों प्रकार से किया जा सकता है।

रचना नियम formation rule

प्रजनक अर्थविज्ञान के प्रारूप में वाक्यों के आर्थी प्रतिरूपण को प्रजनित करने वाला आरम्भिक नियमों का एक समुच्चय रचना नियम नाम से अभिहित किया जाता है।

रणन timbre

समान सुर, प्रबलता और मात्रा वाली ध्वनियों के मध्य श्रोता जिस अभिलक्षण द्वारा भिन्नता स्थापित करने में समर्थ होता है। इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण विविध वाद्ययन्त्रों की रणन गुण भिन्नता है। इस प्रकार ध्वनि का वह गुण जो विभिन्न अतितानों (overtones) की सापेक्ष तीव्रता के होने या न होने पर निर्भर करता है।

रिक्त empty

कतिपय व्याकरणिक वर्णनों में एक निरर्थक तत्त्व का प्रयोग किसी संरचना की व्याकरणिकता सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है, यथा - यहाँ घर में बहुत ठन्ड है, वाक्य में प्रयुक्त `यहाँ'। इन तत्त्वों को डमी या अवलम्बन शब्द (prop-word) भी कहते हैं। प्रजनक व्याकरण में पदबन्ध चिह्नकों में रिक्त तत्त्वों का प्रदर्शन रिक्त आसन्धियाँ करती हैं।

कतिपय विद्वान भाषाओं में दो मुख्य पदवर्गों का प्रतिपादन करते हैं रिक्त एव पूर्ण। रिक्त शब्द वे होते हैं जिनका कोशीय अर्थ नहीं होता और जिनका उद्देश्य व्याकरणिक सम्बन्धों की अभिव्यक्ति होता है, यथा - में, के, पर, से आदि। इस वर्गीकरण के आलोचकों के विचारानुसार प्रत्येक व्याकरणिक शब्द में किसी न किसी मात्रा में अर्थ अवश्य होता है। भाषा में ऐसे शब्दों की गिनती अति अल्प है जिनका कुछ भी आशय न हो। सम्प्रति `रिक्त शब्द' के स्थान पर `व्याकरणिक शब्द' अथवा `प्रकार्यात्मक शब्द' का प्रयोग अधिक हो रहा है।

रूपचरना में रिक्त रूपिम का उल्लेख किया जाता है अर्थात् शब्द का ऐसा रूपात्मक अभिलक्षण जो किसी अन्य रूपिम को आंवटित नहीं किया जा सकता है, उदाहरणार्थ - अंग्रेजी शब्द children का विश्लेषण child धातु और बहुवचन प्रत्यय / -en / इस प्रकार किया जाता है। इस विश्लेषण में जो अंश शेष रह गया है / r / इसे **रिक्त रूपिम** कहते हैं जिसके अभाव में रूपिमिक स्तर पर शब्द का पूर्ण विश्लेषण सम्भव नहीं होगा।

रिक्तन gapping

प्रजनक व्याकरण में प्रतिपादित एक पारिभाषिक शब्द जो उपवाक्यों में आगत पुनरूक्त क्रिया के लोप की ओर संकेत करता है। परिवर्तित उपवाक्य में एक रिक्ति रह जाती है, यथा - राम स्कूल गया और सीता बाजार। लड़के ने कहानी सुनाई एवं लड़की ने गाना।

रिक्ति gap

जब अभिरचना में किसी स्थान पर कोई भाषिक इकाई अनुपस्थित हो जहाँ सामान्य रूप में उसे होना चाहिए तो उसे रिक्ति की संज्ञा देते हैं। अर्थविज्ञान के क्षेत्र में 'कोशीय रिक्ति' का विशेष स्थान है, उदाहरणार्थ - हिन्दी में सम्बन्धियों के सूचक शब्द चाचा/चाची, मामा/मामी, मौसा/मौसी मिलते हैं किन्तु यदि सिर्फ ताऊ मिले तो यहाँ स्त्रीलिंग की अनुपस्थिति 'कोशीय रिक्ति' कहलाएगी।

रूढ़ primitive

कोई भी सिद्धान्त कतिपय रचनाओं को पहले से ग्रहण कर चलता है और सैद्धान्तिक व्याख्या द्वारा उन्हें स्पष्ट करने का प्रयास करता है इस प्रकार के शब्द रूढ़ कहलाते हैं, जैसे - उक्ति, ग्राह्य, स्वन सार्थकता आदि। प्रजनक व्याकरण में रूपात्मक भाषिक सिद्धान्त की स्थापना के लिए रूढ़ प्रारूप में कर्ता, कर्म समपदवर्गीय आदि को व्युत्पन्न माना गया और वाक्य, सप., क्रिप.,+, - आदि चिह्नों को रूढ़।

रूप form / morph

'रूप' पारिभाषिक शब्द का प्रयोग भिन्न-भिन्न अर्थों में मिलता है। सामान्य अर्थ में, यह भाषा के अमूर्त स्वनप्रक्रियात्मक या और व्याकरणिक विशेषीकरण की ओर संकेत करता है। भाषिक रूप, व्याकरणिक रूप आदि पदबन्धों में **रूप** का यही आशय है। विशिष्ट अर्थ में यह, वाक्य और रूपिम आदि भाषिक इकाइयों की स्वनप्रक्रियात्मक/ व्याकरणिक/ कोशीय विशेषताओं की ओर संकेत करता है। **रूपवर्ग** से तात्पर्य उस समुच्चय से है जिसके सदस्य रूपों के मध्य सदृश या तद्रूप व्याकरणिक अभिलक्षण मिलते हैं, यथा - लड़का, राम, मेज, पेड़ संज्ञा रूपवर्ग के सदस्य हैं क्योंकि इनका वाक्यीय वितरण और रूपरचनात्मक विशेषताएँ समान हैं।

हैलिडे का भाषिक सिद्धान्त भाषा को तीन स्वतन्त्र स्तरों में विभाजित करता है - रूप, सत्व एवं सन्दर्भ। इस प्रारूप में भाषा के व्याकरणिक एवं कोशीय संगठन रूप में समाविष्ट माने गए।

किसी भाषिक इकाई के प्रतिफलनात्मक परिवर्त उसके रूप कहलाते हैं अर्थात् रूपसारणिक विकल्पों वाले किसी समुच्चय के सदस्य, उदाहरणार्थ - पढ़ क्रिया के रूप पढ़ो, पढ़ता, पढ़ती, पढ़ेगा आदि हैं।

रूपरचना morphology

व्याकरण को दो शीर्षकों में विभाजित किया जाता है रूपरचना एवं वाक्य रचना। रूपरचना में शब्दों के रूप या उनकी संरचना का वर्णन विश्लेषण, रूपिम संकल्पना की स्थापना के आधार पर किया जाता है जब कि वाक्य रचना के अन्तर्गत शब्द के ऊपर की इकाइयों पदबन्ध, उपवाक्य आदि का वर्णन विश्लेषण एवं वाक्यान्तर्गत शब्द प्रयोग की सम्भावनाओं तथा नियमों का अध्ययन किया जाता है। रूपरचना के दो वर्ग किए जाते हैं - विभक्त्यात्मक एवं व्युत्पादक रूपचना। प्रथम के अन्तर्गत किसी भाषा के विभक्ति प्रत्ययों का अध्ययन किया जाता है। भाषा के शब्द निर्माण में सहायक व्युत्पादक प्रत्यय द्वितीय का विषय है।

रूप-वाक्यात्मक morpho-syntactic

ऐसे व्याकरणिक अभिलक्षण जिनका विवेचन रूपरचना तथा वाक्यरचना दोनों आधारों पर किया जाए रूपवाक्यात्मक कहलाते हैं, जैसे - शब्द की विशेषताओं का वर्णन दोनों स्तरों पर सम्भव है। हिन्दी संज्ञा की वचन कोटि भी इसी वर्ग में आती है क्योंकि संज्ञा शब्द के वचन में भिन्नता एक तरफ वाक्यरचना को प्रभावित करती है (बहुवचन संज्ञा, क्रिया के बहुवचन रूप की आकांक्षा करती है) और दूसरी ओर इनका निरूपण रूपरचनात्मक आधार पर किया जाता है (बहुवचनत्व का द्योतन -ए / एँ आदि के संयोग द्वारा होता है।)

रूपशब्द form word

पूर्णतः व्याकरणिक प्रकार्य वाले शब्द कभी-कभी रूपशब्द के नाम से जाने जाते हैं, जैसे-सर्वनाम, समुच्चयबोधक आदि इन्हें व्याकरणिक शब्द या प्रकार्यात्मक शब्द भी कहा जाता है।

रूपस्वनिमिकी morphophonemics

प्रत्येक रूपिम का निश्चित स्वनिमिक स्वरूप होता है। कतिपय रूपिम सदैव सदृश आकार प्रकार वाले होते हैं, जबकि कुछ अन्य में स्वरूप गत परिवर्तन दृष्टिगत होता है अर्थात् इन रूपिमों के सहरूप का स्वनिमिक स्वरूप पृथक-पृथक होता है, यथा - अंग्रेजी की भूतकालिक क्रिया निष्पन्न करने वाला रूपिम / -ed /। रूपिम के सहरूप / सम्परिवर्तकों की स्वनिमिक विविधता का अध्ययन करने वाली शाखा रूपस्वनिमिकी कहलाती है। यह भाषा विश्लेषण के दो स्तरों व्याकरण एवं स्वनप्रक्रिया के बीच सेतु का कार्य करती है और व्याकरणिक स्तर की लघुतम इकाई रूपिम के स्वनिम वैचित्र तथा स्वनप्रक्रिया की लघुतम इकाई स्वनिम के व्याकरणिक वैविध्य का अध्ययन विश्लेषण करती है। इस स्तर की लघुतम आधारिक इकाई रूपस्वनिम कहलाती है।

रूपान्तरण transformation

एक रूपात्मक भाषिक संक्रिया जो दो स्तरों के संरचनात्मक प्रतिरूपण के मध्य संवाद की स्थिति स्थापित करती है। एक रूपान्तरण नियम में प्रतीकों का अनुक्रम होता है जिसे कतिपय परम्पराओं का पालन करते हुए पुनर्लिखित किया जा सकता है। इस नियम के लिए निवेश पदबन्ध चिह्नकों का ऐसा वर्ग होता है जिन पर नियम लागू किए जा सकते हैं। यह नियम तत्पश्चात् इस निविष्ट रूप पर संरचनात्मक परिवर्तन करता है। **संचलन रूपान्तरण** (क्रमान्तरण या क्रमचय) एक निविष्ट संरचना के घटकों का क्रमान्तरण कर उसे संशोधित करता है। जब इस संक्रिया द्वारा पदबन्ध चिह्नक में संचालित तत्त्वों के समीपस्थ स्थिति में रखा जाता है तो इसे **अनुबंधीय रूपान्तरण** कहते हैं। **निवेश रूपान्तरण** निविष्ट संरचना में नवीन संरचनात्मक तत्त्वों का संयोजन करते हैं। रूपान्तरणों के नाम तथा उनकी आधारिक प्रकृति के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है।

रूपान्तरण नियम का एक प्रारम्भिक उदाहरण कर्तृवाच्य को कर्मवाच्य में बदलने वाला नियम था जिसका रूप था -

$$NP_1 - AUX - V - NP_2 \rightarrow NP_2 - AUX + be + en - V - by + NP_1$$

यह नियम सर्वप्रथम मूलाधार पदबन्ध चिह्नक पर संक्रिया कर उसे द्वितीय-व्युत्पन्न पदबन्ध चिह्नक में परिवर्तित करता है। जैसे-जैसे वाक्य का विश्लेषण आगे बढ़ता है व्युत्पन्न पदबन्ध चिह्नक द्वारा उत्पन्न माला अन्य रूपान्तरणों के लिए मूलाधार माला का कार्य करती है। किसी वाक्य के लिए निर्धारित पदबन्ध चिह्नकों का अनुक्रम उस वाक्य का **रूपान्तरणपरक इतिहास** (transformational history) कहलाता है।

वह व्याकरण जो इस अवधारणा का प्रयोग कर, संक्रिया करता है **रूपान्तरणपरक व्याकरण** कहलाता है। इस व्याकरण की सर्वप्रथम चर्चा नोअम चॉमस्की ने 1957 में अपनी पुस्तक `सिंटेक्टिक स्ट्रक्चर्स' में प्रजनक उपकरण के रूप में की जो पदबन्ध संरचना व्याकरण तथा परिमित अवस्था व्याकरण (finite state grammar) से अधिक सक्षम है। इनके मतानुसार पदबन्ध संरचना व्याकरण के घटक विश्लेषण नियमों के स्थान पर रूपान्तरण नियमों का प्रयोग कर अनेक वाक्यों का सरलता से व्युत्पादन किया जा सकता है। प्रजनक व्याकरण सिद्धान्त के विकास में रूपान्तरण व्याकरण सर्वाधिक प्रभावशाली सिद्ध हुए। सम्भवतः इसीलिए इस सम्पूर्ण क्षेत्र को `रूपान्तरणपरक-प्रजनक व्याकरण' नाम दिया गया।

1957 में प्रस्तुत प्रथम प्रारूप के बाद कई प्रारूप सामने आए। चॉमस्की ने 1965 में 'ऑस्पेक्ट्स' (Aspects of the theory of syntax) नामक पुस्तक में निरूपित 'स्टैण्डर्ड' प्रारूप में तीन घटकों की चर्चा की - (i) वाक्यीय घटक - जिसमें पदबन्ध संरचना नियमों का एक आधारिक समुच्चय होता है (इसे आधार घटक भी कहते हैं) जो कोशीय सूचना के साथ मिलकर वाक्य की आन्तरिक रूपान्तरण नियमों का एक समुच्चय होता है जो बहिःस्तलीय संरचना का प्रजनन करता है, (ii) स्वनप्रक्रियात्मक घटक - जो वाक्यीय तत्वों की माला को उच्चारणात्मक उक्ति में परिवर्तित करता है; तथा (iii) आर्थी घटक - जो वाक्य में प्रयुक्त / आगत कोशी मदों का अर्थ प्रतिरूपण प्रस्तुत करता है। इन घटकों के अन्तर्सम्बन्ध के विषय में विद्वानों में मतभेद रहा तथा कई वैकल्पिक प्रारूप प्रस्तुत किए गये (प्रजनक और व्याख्यायक अर्थविज्ञान)।

चॉमस्की दो प्रकार के रूपान्तरणों की चर्चा करते हैं- अनिवार्य एवं वैकल्पिक। जो नियम लागू करने अनिवार्य हैं वे प्रथम वर्ग में आते हैं तथा जिन नियमों का प्रयोग आवश्यक नहीं हो अर्थात् जिनमें विकल्प हों वे द्वितीय वर्ग में आते हैं। प्रारम्भ में चॉमस्की ने एकल रूपान्तरण एवं सामान्यीकृत रूपान्तरण, दो वर्गों की चर्चा की। जहाँ नियम सिर्फ एक अन्त्य माला पर संक्रिया करता है उसे एकल रूपान्तरण कहते हैं और जहाँ दो या अधिक अन्त्य मालाओं को संयुक्त करता है वहाँ सामान्यीकृत की चर्चा की जाती है। 'ऑस्पेक्ट्स' में चॉमस्की कोशीय तथा अकोशीय रूपान्तरणों का भी उल्लेख करते हैं। प्रथम, पूर्ण कोशीय संरचनाओं को सम्मिश्र प्रतीकों वाली आन्तरिक संरचनाओं में रूपान्तरित करते हैं जबकि द्वितीय आन्तरिक / अन्तस्तलीय संरचना को बहिःस्तलीय में रचनान्तरित करते हैं। प्रजनक भाषाविज्ञान में रूपान्तरण के सैद्धान्तिक आधार के विषय में विद्वानों में आज भी मतभेद हैं।

रूपात्मक विषमता anisomorphism

विभिन्न भाषाओं के मध्य प्राप्त, कोशीय अर्थ सम्बन्धी, आकृतिपरक विषमताओं का सूचक शब्द। इन विषमताओं में पदनाम के संगठन, मुख्यार्थ की अनुपस्थिति तथा संस्कृति सम्बन्धी भिन्नताएँ आती हैं। लक्षणार्थ तथा प्रयोग परास के कारण भी भाषाओं में रूपात्मक विषमता मिलती है।

रूपसारणी paradigm

एक धातु या प्रातिपदिक से व्युत्पन्न व्याकरण प्रतिबन्धित समस्त रूप एक रूपसारणी का निर्माण करते हैं, जैसे - घर, घरों, बेघर, घरेलू, घरौंदा आदि।

किसी विशिष्ट सन्दर्भ में एक भाषिक इकाई का अन्य भाषिक इकाइयों से सम्बन्ध **रूपसारणिक सम्बन्ध** कहलाता है। ये सम्बन्ध भाषा संरचना के प्रत्येक विश्लेषण स्तर पर घटित होते हैं, जैसे - `ल-'सन्दर्भ में च,प,म,न के स्थान पर `क' का चयन। इसी प्रकार- लड़की सन्दर्भ में काली,गोरी, मोटी के स्थान पर `अच्छी' का चयन। रूपसारणिक सम्बन्ध श्रंखलात्मक सम्बन्धों के साथ मिलकर भाषिक व्यवस्था में किसी भाषिक इकाई की पहचान निर्धारित करते हैं।

रूपावली accidence

सभी पारम्परिक व्याकरण, व्याकरण के साथ-साथ रूपावली को एक प्रमुख उपविभाग मानते हैं। इसके अन्तर्गत व्याकरणिक अर्थ जैसे कारक, काल, वचन आदि को अभिव्यक्त करने वाले शब्द संरचना सम्बन्धी परिवर्तनों की चर्चा होती है, जैसे - हिन्दी में जा, जाता, जाएगा, गया' शब्दो के बीच प्राप्त भिन्नता की व्याख्या इसका विषय क्षेत्र है। आधुनिक भाषा-विज्ञान में इस प्रकार का विश्लेषण वर्णन रूपरचना के अन्तर्गत किया जाता है।

रूपिम morpheme

व्याकरणिक स्तर की लघुतम भेदक इकाई तथा रूपरचना का केन्द्रीय तत्त्व रूपिम कहलाता है। धातु, प्रत्यय, समास आदि अवधारणों को अन्तर्सम्बन्धित करने वाली एक स्वतन्त्र संकल्पना की आवश्यकता हेतु तथा शब्द की संरचना अत्यन्त जटिल होने के कारण इसका विकास हुआ। रूपिम को लघुतम प्रकार्यात्मक इकाई, जो शब्द रचना के लिए महत्त्वपूर्ण हो, इस प्रकार निरूपित किया गया।

सामान्यत: रूपिम को दो वर्गों में विभाजित किया जाता है **मुक्त रूपिम** जो स्वतन्त्र शब्द के रूप में भाषा में प्रयुक्त हो सके एवं **बद्ध रूपिम** जो आश्रित हों और प्रयोग के लिए किसी अन्य इकाई की आकांक्षा करें, जैसे - प्रत्यय। हिन्दी के असुन्दरता शब्द में अ- और-ता क्रमश: पूर्व एवं पर प्रत्यय बद्ध रूपिम तथा `सुन्दर' मुक्त रूपिम हैं। एक रूपिम द्वारा निर्मित शब्द **एकरूपिमिक शब्द** तथा एकाधिक रूपिम द्वारा निर्मित शब्द **बहुरूपिमिक शब्द** कहलाता है। कतिपय रूपिमों का कोशीय अर्थ होता है जब कि अन्य व्याकरणिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होते हैं। इस आधार पर रूपिम के दो चर्ग मिलते हैं-कोशीय एवं व्याकरणिक। विद्वानों की मान्यतानुसार रूपिम एक अमूर्त, मानसिक इकाई है जिसकी भौतिक, मूर्त, भाषा में व्यवहृत सत्ता **रूप** (morph) कहलाती है। प्रत्येक रूप अन्य रूपों से ध्वन्यात्मक, आर्थी या दोनों दृष्टियों से भिन्न होता है। प्राय: रूपिमों का प्रतिफलन, एक रूप द्वारा होता है किन्तु कभी-कभी कतिपय रूपिम एकाधिक रूपों द्वारा प्रतिफलित होते हैं। एक रूपिम को प्रतिफलित करने वाले विविध रूप **सहरूप** (allomorph) कहलाते हैं, उदाहरणार्थ - हिन्दी में बहुवचनत्व की अभिव्यक्ति भिन्न-भिन्न प्रकार से होती है (लड़के; औरतें; मक्खियाँ) अत: ये { -ए, - एँ, आँ } बहुवचन रूपिम के सहरूप कहलायेंगे।

रेखा bar

$\bar{X}$ रेखा वाक्य रचना में प्रयुक्त एक प्रतीक जो किसी कोटि के ऊपर लगाया जा सकता है, यथा - व̄ से तात्पर्य है `वा-बार'। यह पदबन्धीय विस्तार के स्तर की ओर संकेत करता है जिसपर वह कोटि कार्य करती है। एक के बाद एक आने वाले स्तरों को संख्या के आधार पर इसे सन्दर्भित किया जाता है, यथा - एक-रेखा, द्वि-रेखा, त्रय रेखा।

रेखीयता linearity

कोई भाषा तत्त्वों एवं नियमों का एकदिशिक अनुक्रम होती है इस गुण को प्रतिफलित करने वाली विशेषता रेखीयता कहलाती है। विद्वानों का विचार है कि भाषिक नियमों की रेखीय क्रमिकता व्याकरणिक प्रक्रियाओं के निर्माण को सम्भव बनाती है। स्वनप्रक्रिया के क्षेत्र में रेखीयता एक व्यवस्था सम्बन्धी सिद्धान्त है जहाँ प्रत्येक स्वनिम उसको प्रतिफलित करने वाले स्वनों के अनुक्रम के रूप में निरूप्य माना जाता है। यदि `अ' स्वनिम `ब' का पूर्ववर्ती है तो `अ' स्वन `ब' स्वन के पहले होगा। अत: रेखीयता उभय अनन्यता की एक पूर्व शर्त है। वर्गिकीय स्वनिमिकी की अलोचना करने वाले प्रजनक स्वनशास्त्रियों ने इस सिद्धान्त की भी आलोचना की।

ल

लक्ष्य भाषा target language

अनुवाद कार्य में जिस भाषा से पाठ/सामग्री ग्रहण की जाती है उसे स्रोत भाषा तथा जिसमें अनुवाद किया जाए उसे लक्ष्य भाषा कहते हैं, उदाहरणार्थ - हिन्दी के वाक्य 'भाषा-विज्ञान भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन है' का अंग्रेजी में अनुवाद होगा 'linguistics is the scientific study of language' यहाँ हिन्दी स्रोत भाषा और अंग्रेजी लक्ष्य भाषा है। भाषाशिक्षण मे जो विदेशी भाषा अर्जित करनी है उसे लक्ष्य भाषा या द्वितीय भाषा कहते हैं।

लक्ष्यार्थ connotation

अर्थविज्ञान में अर्थ के वर्गीकरण के लिए इस शब्द का प्रयोग किया जाता है। लक्ष्यार्थ में शब्द के कोशीय अर्थ बोध के साथ-साथ प्रयुक्त शब्द से सम्बद्ध अन्य गुण-विशेषता का आरोप होता है, यथा - कोशीय इकाई सूई के लक्ष्यार्थ में दर्द, चुभन, स्टील से निर्मित आदि गुण जुड़ जाते हैं। लक्ष्यार्थ सभी भाषाओं में एक-सी अभिव्यक्तियों द्वारा सम्प्रेषित नहीं होता है। यह न तो दो भाषाओं के बीच समान अथवा निश्चित रूप ले सकता है न ही दो सांस्कृतिक / सामाजिक समुदायों के बीच। साथ ही एक भाषा समुदाय में दो अलग-अलग समय पर प्रयुक्त लक्ष्यार्थ प्रयोग भी भिन्न हो सकते हैं।

लघु minor

सीमित उत्पादकता वाले वाक्य के लिए कुछ विद्वानों ने लघु वाक्य पारिभाषिक शब्द का प्रयोग किया। इन वाक्यों में भाषा के प्रधान वाक्य के घटकों में से कतिपय घटक नहीं होते हैं।

लय rhythm

किसी भाषा के उच्चार, विराम, बलाघात और अक्षर का विशिष्ट अनुक्रम लय कहलाता है। इसके दो भेद हैं - बलाघाताश्रित लय, अक्षराश्रित लय। वह उच्चार खंड जो किन्ही दो अनुक्रमिक लय-विरामों के बीच आता है **एकलयी वर्ग** (rhythm group) कहलाता है।

लहजा tone of voice / accent

किसी स्थान या सामाजिक वर्ग से सम्बद्ध व्यक्तियों के बोलने का विशिष्ट ढंग जो उनमें उनकी आदत या स्वभाव के कारण मिलता है। इस प्रकार यह शब्द किसी व्यक्ति के उच्चारण द्वारा लक्षित औच्चारिक प्रभावों का संयोजन है जो व्यक्ति के सम्बन्ध में यह सूचना देता है कि वह किस प्रदेश या क्षेत्र का है। चूंकि यह शब्द सिर्फ उच्चारण को ही सन्दर्भित करता है अत: यह बोली से भिन्न है। बोली व्याकरण एवं शब्दावली को भी ग्रहण करती है। किसी देश के शहरी एवं ग्रामीण समुदाय के बोलने के विशिष्ट ढंग को आंचलिक / क्षेत्रीय लहजा कहते हैं (यथा - बम्बइया, कलकतिया) साथ ही एक भाषा को बोलने वाले राष्ट्रीय समुदाय (अमरीकी, चीनी) तथा दूसरी भाषाओं का प्रभाव (विदेशी लहजा, चीनी लहजा) भी क्षेत्रीय लहजा कहा जा सकता है।

लांग langue

स्विस भाषाविद् सेस्यूर ने भाषा स्वरूप के स्पष्टीकरण के लिए लांग, लैंगेज एवं परोल इन तीन फ्रेंच शब्दों का प्रयोग किया। लांग से तात्पर्य भाषा व्यवस्था से है जिसकी किसी समुदाय के समस्त वक्ताओं के मध्य सहभागिता होती है अर्थात् भाषा के वे नियम जो अमूर्त हैं और मानव मस्तिष्क में अन्तरीकृत हैं, लांग कहलाते हैं। भाषाविद् का उद्देश्य लांग का अध्ययन करना है। लांग के आधार पर, समाज में किसी एक वक्ता द्वारा बोला गया व्यवहार परोल कहलाता है यह भाषा का मूर्त इन्द्रियगोचर रूप है। किसी भाषिक समुदाय में लांग एक /समान होती है और उस समान लांग के आधार पर समाज में निवसित वक्ताओं की परोल भिन्न - भिन्न होती है।

लाघव economy

भाषाविज्ञान में यह एक स्वीकृत मानदण्ड है कि यदि अन्य स्थितियाँ सामान्य हों तो किसी विश्लेषण को छोटा एवं कम से कम शब्दों वाला होना चाहिए। मूल्यांकन में वही विश्लेषण श्रेष्ठ माना जाता है जो न्यूनतम नियमों एवं अभिलक्षणों का प्रयोग करे। एक अन्य तर्क के अनुसार यह अनिवार्य नहीं है कि मात्रात्मक दृष्टि से सरल प्रतीत होने वाला उपाय ही सदैव ग्राह्य एवं अधिक उपयुक्त हो क्योंकि भाषिक लाघव का ध्यान रखते हुए कार्य करना कठिन होता है। कभी-कभी विश्लेषण में एक स्थान की सरलता अन्य स्थलों पर समस्या उत्पन्न करती है। यह भी निश्चित है कि जब तक वर्णन पूरा न हो लाघव के सम्बन्ध में स्थायी सुझाव नहीं दिए जा सकते हैं। किन्तु प्रजनक व्याकरण लाघव की अवधारणा को मुख्य सैद्धान्तिक महत्त्व देता है और विद्वानों ने इस दिशा में अनेक प्रयत्न किए।

लिंग gender

शब्द/वर्गो के विश्लेषण के लिए प्रयुक्त एक व्याकरणिक कोटि जो स्त्रीलिंग/ पुर्लिंग/ नपुंसक लिंग या मानवीय/ अमानवीय उपवर्गों में विभाज्य है। इस सन्दर्भ में विद्वान प्राय: इस आवश्यकता पर बल देते हैं कि लिंग का वर्गीकरण प्राकृतिक एवं व्याकरणिक इन दो वर्गों में होना चाहिए। प्राकृतिक लिंग में मद वास्तविक जगत की वस्तुओं के लिंग की ओर संकेत करते हैं अर्थात् किसी शब्द का लिंग बाह्य संसार में संकेतित उपादान की भाँति ही होता है जब कि व्याकरणिक लिंग में इस प्रकार का सम्बन्ध नहीं होता है। ये वाक्यान्तर्गत शब्दों के व्याकरणिक सम्बन्धो की ओर संकेत करता है। फ्रेंच, जर्मन, लैटिन भाषाओं की लिंग व्यवस्था व्याकरणिक है। हिन्दी एवं अँग्रेजी में यह अभिलक्षण नहीं प्राप्त होता है। इन भाषाओं के कतिपय अंश प्राकृतिक लिंग और कतिपय व्याकरणिक लिंग द्वारा विश्लेष्य होते हैं।

लिपि script

दृश्यमान संकेतों की व्यवस्था, जो भाषा को स्थायित्व प्रदान करती है और जिसके माध्यम से मनुष्य दूरागत स्थानों एवं विविध कालों में अपने विचार सम्प्रेषित करता है। यह व्यवस्था मौखिक भाषा पर आश्रित होती है। प्राचीन काल में लिखित भाषा को अधिक शुद्ध एवं मानक रूप माना गया जबकि वास्तविकता यह है कि मौखिक भाषा प्रधान होती है और लिखित भाषा उसका कम या अधिक अपूर्ण प्रतिफलन। हिन्दी भाषा की लिपि का नाम देवनागरी है।

लिपि चिह्न character

किसी लिपि व्यवस्था की लघुतम इकाई के रूढ़ प्रतीक वर्ण कहलाते हैं। लेखन में इनकी सहायता से ध्वनि को अंकित किया जाता है अर्थात् ये ध्वनि आश्रित होते हैं, यथा - (क् + अ) के लिए देवनागरी में <क> और बंगला में <क> चिह्न होता है।

लिप्यंकन transcription

लिप्यकंन की वह पद्धति जिसमें कथन या उक्ति की सभी उच्चारणगत स्वनिक तथा स्वनगुणात्मक विशेषताओं को स्वनों और विशेषक चिह्नों द्वारा वयक्त किया जाता है। इस लिप्यंकन के लिए बड़े कोष्ठक का प्रयोग किया जाता है। चूंकि लिप्यंकन में अवधारणा को लेखीय प्रतीकों की व्यवस्था में सन्निहित किया जाता है अत: कुछ विद्वान इसे अनुवाद

की श्रेणी में रखते हैं किन्तु यह उचित नहीं है। अनुवाद में एक संरचना के समानान्तर दूसरी संरचना का (स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा के बीच) प्रयोग होता है जबकि लिप्यंकन में लक्ष्य, एक लेखीय व्यवस्था प्रतीकों के स्थान पर दूसरी व्यवस्था के प्रतीकों का प्रयोग करना होता है।

लियोनार्ड ब्लूमफील्ड Leonard Bloomfield

अमरीका में संरचनात्मक भाषाविज्ञान के अभ्युदय एवं विकास का श्रेय जिन विद्वानों को जाता है उनमें से प्रमुख नाम एल. ब्लूमफील्ड का है। 1914 में इनकी प्रथम पुस्तक An Introduction to the Study of Language प्रकाशित हुई। जिस पर मनोवादी मनोवैज्ञानिक विल्हेल्म वुन्ट का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। 1933 में इनकी दूसरी पुस्तक Language प्रकाशित हुई जो एक युगान्तकारी घटना थी। इस पुस्तक को Bible of American Linguistics माना जाता है। इस पुस्तक में इन्होंने भाषाध्ययन के व्यवहारवादी एवं यान्त्रिकतावादी उपागम को महत्त्व दिया। 1914 एवं 1933 के बीच प्रकाशित अनेक लेख ब्लूमफील्ड के उपागम एवं विचारधारा सम्बन्धित इस क्रान्तिकारी परिवर्तन को स्पष्ट करते हैं। लगभग बीस वर्षों तक अधिकांश अमेरिकी भाषाविद् ब्लूमफील्ड द्वारा प्रतिपादित उपागम के प्रभुत्व से प्रभावित रहे और इसीलिए इस काल को 'ब्लूमफील्ड युग' कहा गया। यह निश्चित है कि वर्णनात्मक तकनीकियों पर ध्यान केन्द्रित कर ब्लूमफील्ड ने भविष्य में कार्य करने वाले विद्वानों के लिए अग्रगामी तथा ठोस आधार निर्मित किए।

लेखन व्यवस्था orthography

किसी भाषा के स्वनों पर आश्रित प्रतीकों को पारम्परिक एवं स्वीकृत क्रम में रखने की व्यवस्था लेखन व्यवस्था कहलाती है। यह भाषा के शुद्ध लेखन एवं शुद्ध वर्तनी से सम्बन्धित होती है।

लेखविज्ञान graphetics

भाषा के लेखिक सत्व का विश्लेषण लेखविज्ञान का क्षेत्र है। इसके अन्तर्गत आकार-प्रकार की दृष्टि से वर्णों या लिपिचिह्नों का अध्ययन किया जाता है। लिखित माध्यम के अभिलक्षण, जैसे - वर्णों का आकार प्रकार, रंग आदि सम्प्रेषण को प्रभावित करते हैं। लेख-विज्ञान का मूलाधार वर्णों या लेखिमों का भौतिक स्वरूप है जबकि प्रयोग की दृष्टि से उनका अध्ययन **लेखिम विज्ञान** में किया जाता है। यह लेखन व्यवस्था और

भाषिक व्यवस्था के सम्बन्धों का अध्ययन करने वाला विज्ञान है। लिपि-व्यवस्था का वह विज्ञान जिसके अन्तर्गत शब्दों में प्रयुक्त होने वाले लेखिम और उनका विन्यास समाविष्ट होता है उसे **लेखिम प्रक्रिया** की संज्ञा देते हैं। लेखिम विज्ञान एवं लेखिम प्रक्रिया का सम्बन्ध बहुत कुछ स्वनविज्ञान एवं स्वनप्रक्रिया के समानान्तर है।

लेखिम grapheme

किसी भाषा की लिपि व्यवस्था की लघुतम व्यतिरेकी इकाई लेखिम कहलाती है। इस प्रकार किसी वर्णमाला का कोई वर्ण-विशेष भाषा विज्ञान में लेखिम नाम से अभिहित किया जाता है। यह स्वन या संयुक्त स्वन का वह लिखित रूप है जो किसी स्वनिम को व्यक्त करता है, यथा - अंग्रेज़ी में a लेखिम सहलेखिमों A, a द्वारा प्रतिफलित होता है। ये सहलेखिम कभी मुक्त तो कभी परिपूरक वितरण में मिलते हैं।

लोड़ित rolled

उच्चारण प्रयत्न के आधार पर किया गया व्यञ्जन स्वनों के वर्गीकरण का एक प्रकार। ऐसा व्यञ्जन जो जिह्वाग्र से दांतों का या वर्त्स्य का ताड़न करने से उच्चरित होता है। अंग्रेजी की वेल्स और स्कोट बोलियों में लोड़ित वर्त्स्य (r) मिलता है। फ्रेंच एवं जर्मन भाषाओं में अलिजिह्वीय लोड़ित (R) मिलता है।

लोप elision

योजित वाक् से ध्वनियों का लुप्त हो जाना। यह लोप स्वर एवं व्यंजन दोनों ध्वनियों का हो सकता है। कभी-कभी सम्पूर्ण अक्षर भी लुप्त हो जाता है। हिन्दी में लोप के कतिपय उदाहरण निम्नवत हैं - सिमटा > सिम्टा, हाथ ही में > हाथी में, तुम और मैं > तुम औ मैं, मुन्नी बुआ > मुन्नबा। हिन्दी उच्चारण में अधिकांश अकारान्त शब्दों के 'अ' का लोप हो गया है।

व

वक्ष स्पंद chest pulse

यह पद ध्वनिविज्ञान के अन्तर्गत वक्ष की उन माँसपेशियों के संकुचन को सन्दर्भित करता है जो फेफड़ों से वायु के निःश्वासन में सहायक होती हैं। अवधारक वाक् के उच्चारण में ये वक्ष स्पंद पुनर्बलित एवं बलाघातित होता है। वक्ष स्पदं सिद्धान्त में अक्षर उत्पादन का विश्लेषण वक्ष स्पंदन को एक केन्द्रीय व्याख्येय अवधारणा के रूप में स्वीकारा गया किन्तु इस मनोदृष्टि ने अनेक समस्याएँ उत्पन्न कीं।

वचन number

पद वर्ग विश्लेषण में प्रयुक्त एक व्याकरणिक कोटि भाषाओं में जिसका द्विविधात्मक या त्रिविधात्मक विभाजन मिलता है, जैसे - एक वचन और बहुवचन या एक वचन, द्विवचन और बहुवचन। प्रायः वचन की कोटि वास्तविक जगत में प्राप्त संख्या को ही अभिव्यक्त करती है, जैसे - पेड़ : पेड़ों ; लड़का : लड़के ; किन्तु विद्वानों ने ऐसे शब्दों की तरफ ध्यान आकर्षित किंया जो समस्याप्रद होते हैं जैसे कतिपय संज्ञाएँ एकवचन होते हुए भी एकाधिक की ओर संकेत करती हैं, यथा - `भीड़ आ रही है' - `भीड़'।

वर्त्स्य तालव्य alveo - palatal

वर्त्स्य एवं तालव्य दोनों स्वनों के गुण वाला वह स्वन जिसका उच्चारण जिह्वाग्र को दंतकूट और कठोर तालु के मिलन स्थल तक उठाकर किया जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय स्वन माला में इस प्रकार के दो स्वनों की चर्चा मिलती है जो पोलिश भाषा में प्राप्त होते हैं।

वयस्क केन्द्रित adultocentric

वयस्कों की भाषा को विश्लेषित करने के लिए जिन उपकरणों का प्रयोग होता है यदि उन्हीं का प्रयोग बच्चों की भाषा की विशेषताओं के विश्लेषण के लिए किया जाए तो इसे भाषा शिक्षण सम्बन्धी अध्ययनों में वयस्क केन्द्रित कहते हैं, उदाहरणार्थ - बच्चों के

बबलाने का वर्णन अन्तर्राष्ट्रीय स्वनिक वर्ण के आधार पर करना। इस क्षेत्र से सम्बद्ध विद्वानों का विचार है कि बच्चों की भाषा के लिए वयस्कों से भिन्न पारिभाषिक शब्दों और संकेतन का प्रयोग करना चाहिए।

वर्ग, वर्गीकरण class, classification

भाषाविज्ञान तथा स्वनविज्ञान में सदृश रूपात्मक एवं आर्थी गुण वाले तत्त्वों के समुच्चय को प्राय: वर्ग की संज्ञा दी जाती है। रूपिमों को रूप-वर्ग तथा शब्दों को शब्द-वर्ग में वर्गीकृत किया जाता है। इस पद का एक अन्य प्रयोग शब्दों के विवृत एवं संवृत वर्ग के सम्बन्ध में किया जाता है। जब एक शब्द विभिन्न वर्गों में विश्लेष्य हो तो इस स्थिति में **वर्ग-परिवर्ती प्रयोग** (class - changing) का उल्लेख मिलता है, यथा 'कुछ' - उसे कुछ बुखार है, बुखार कुछ उतरा है। कतिपय वैयाकरण संख्येय संज्ञाओं को **वर्ग संज्ञाएँ** भी कहते हैं।

हैलिडे सिद्धान्त में उल्लिखित चार प्रमुख कोटियों में **वर्ग** भी एक है। यहाँ वर्ग से तात्पर्य ऐसे समुच्चय से है जिसके मदों में समान संक्रिया करने की सम्भावनाएँ होती हैं, उदाहरणार्थ - नामिक समूहों का वर्ग उपवाक्य संरचना में कर्ता, कर्म आदि की भाँति भी संक्रिया कर सकता है। जिन रूपिमों का प्रकार्य रूपात्मक या आर्थी वर्ग को संकेतित करना होता है उन्हें **वर्गीकारक** (classifier) भी कहते हैं, यथा - हिन्दी में - ई रूपिम स्त्रीलिंग का तथा अंग्रेजी - ly क्रिया विशेषण का वर्गीकारक है।

संरचनावादियों का एक प्रमुख गुण वर्गीकरण करना था। वहाँ स्वनों को स्वनिमों तथा रूपों को रूपिमों में वर्गीकृत किया जाता है। भाषा के इस वर्गिकीय (taxonomic) उपागम की सीमाओं के कारण ही प्रजनक भाषाविज्ञान का विकास हुआ।

समाजभाषाविज्ञान में **वर्ग भाषा** या **वर्ग बोली** शब्द का प्रयोग मिलता है। समाज के वर्गों के अनुरूप भाषा में प्राप्त विविधता के सन्दर्भ में इस शब्द का प्रयोग किया जाता है।

वर्गिकीय taxonomic

ऐतिहासिक, प्रकार्यात्मक, क्षेत्रीय आदि किसी भी आधार पर किया गया वर्गीकरण जो भाषिक विश्लेषण एवं वर्णन का आधार हो वर्गिकीय कहलाता है अर्थात् वह उपागम जो विश्लेषण एवं वर्णन के लिए वर्गीकरण को महत्त्वपूर्ण मानता है। इसके अन्तर्गत भाषाओं एवं बोलियों को मदों, इकाइयों तथा संरचनाओं में वर्गीकृत किया जाता है। संरचनात्मक वैयाकरणों ने वर्गिकीय विश्लेषण पद्धति के आधार पर वर्गीकरण एवं खण्डीकरण प्रक्रिया पर विशेष बल दिया।

वर्गिम classeme

कतिपय यूरोपीय विद्वानों द्वारा प्रयुक्त एक पारिभाषिक शब्द जो आनुपातिक अमूर्त आर्थी अभिलक्षणों की ओर संकेत करता है। ये अभिलक्षण भिन्न आर्थी क्षेत्रों (यथा - मानवीय/ अमानवीय, वयस्क/बच्चा) से सम्बंधित कोशीय मदों में प्राप्त होते हैं। इस उपागम में यह शब्द अविभाज्य आर्थी अभिलक्षणों से व्यतिरेक प्रदर्शित करता है। इन्हें सीम या पक्षपद कहते हैं और ये किसी एक विशिष्ट स्तर पर, एक विशिष्ट आर्थी क्षेत्र के अन्तर्गत कार्य करते हैं, यथा - एक मेज 'टाँगों की संख्या, आकार-प्रकार' के आधार पर पहचानी जाती है।

वर्ण letter

वर्णमाला का वह पारम्परिक चिह्न जो एक वाक्-स्वन या एकाधिक स्वनों का दृश्य प्रतीक होता है, यथा - हिन्दी में अ, आ, इ, क, ख, ग आदि। यह लिपि व्यवस्था की सबसे छोटी भेदक इकाई होती है।

वर्णन, वर्णनात्मक description, descriptive

एक अवस्था विशेष में किसी विशिष्ट भाषा या बोली की अभिरचनाओं तथा प्रयोग का वस्तुनिष्ठ, व्यवस्थित, स्पष्ट एवं समग्र विवरण उसका वर्णन कहलाता है। यह पद्धति भाषा विश्लेषण की अन्य पद्धतियों से भिन्न है। वस्तुनिष्ठता एवं व्यवस्था पर विशेष बल वर्णनात्मक विश्लेषण को पारम्परिक व्याकरण के निर्देशात्मक विश्लेषण से भिन्न प्रतिपादित करता है। इसका उद्देश्य भाषा के प्रयुक्त (बोले गये) रूप का वर्णन है न कि भाषा कैसी होनी चाहिए ये बताना। एक अवस्था विशेष में भाषा में प्राप्त विशेषताओं का विवरण होने के कारण यह अध्ययन ऐतिहासिक भाषाविज्ञान से भिन्न होता है, जिसका उद्देश्य भाषिक रूपों में घटित परिवर्तनों को दर्शाना है। वर्णनात्मक अध्ययन भाषा का संकालिक अध्ययन है। इसके लिए यह अनिवार्यता नहीं है कि अध्ययन की अवस्था वर्तमान काल की ही हो, किसी भी काल की एक निश्चित अवस्था में प्राप्त भाषिक विशेषताओं का वर्णन किया जा सकता है। एक भाषा विशेष से सम्बद्ध होने के कारण वर्णनात्मक अध्ययन तुलनात्मक भाषाविज्ञान से भी भिन्न होता है, जो दो या अधिक भाषा रूपों या एक ही भाषा की दो काल स्थितियों के मध्य तुलना कर समानताओं एवं असमानताओं का उल्लेख करता है। सामान्य भाषाविज्ञान भी इससे भिन्न होता है क्योंकि सामान्य भाषाविज्ञान का उद्देश्य सम्पूर्ण भाषा के लिए सैद्धान्तिक कथनों का निर्माण है किन्तु यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि भाषाविज्ञान की ये विविध शाखाएँ अन्तर्सम्बन्धित हैं क्यों कि कोई

भी वर्णन विश्लेषण पर निर्भर करता है और विश्लेषण सैद्धान्तिक मान्यताओं पर आश्रित होता है।

वर्ण लिपि alphabetic writing

लिपि का वह रूप जहाँ प्रत्येक प्रतीक एक विशिष्ट ध्वनि की अभिव्यक्ति करता है और यह ध्वनि प्रभेदक होती है। इस व्यवस्था में स्वर तथा व्यंजन के लिए स्वतन्त्र प्रतीक होते हैं। अंग्रेजी भाषा की लिपि रोमन इसी वर्ग में आती है।

वर्तुलन rounding

किसी स्वन के उच्चारण में ओठों की गोलाकार स्थिति वर्तुलन कहलाती है। मान स्वर चित्र में पश्च स्वरों के लिए वर्तुलन एक स्वाभाविक अभिलक्षण है।

चॉमस्की तथा हॉले द्वारा प्रतिपादित स्वनप्रक्रिया के भेदक अभिलक्षण सिद्धान्त में वर्तुलित एवं अवर्तुलित का विभाजन विशेष महत्त्व रखता है। वर्तुलित स्वनों के उच्चारण में ओंठ गोलाकार होते हैं, जैसे - ऊ एवं औ जबकि अवर्तुलित स्वन उच्चारण में ओंठ गोल नहीं होते हैं, जैसे - इ, ए, अ, आ।

वाक् अवयव vocal organs

मानव शरीर के ऐसे अंग जिनका वाक् - स्वनों के उच्चारण में सीधा योगदान होता है, जैसे - फेफड़े, काकल, घोषतन्त्रियाँ, ग्रसनी, अलिजिह्वा, तालु, वर्त्स, जिह्वा, दाँत, ओंठ आदि वाक् अवयव कहलाते हैं।

वाक् गतिकी voice dynamics

प्रबलता, प्रवेग, लय, प्रयुक्ति आदि खण्डात्मक अभिलक्षणों एवं वाक् गुणों के अतिरिक्त अन्य वाक् प्रभावों के लिए कुछ स्वनशास्त्रियों द्वारा इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग किया गया। अर्थ एवं भाषिक समुदायों के बीच भिन्नता प्रदर्शित करने के कारण ये प्रभाव भाषाविज्ञान के क्षेत्र में ग्राह्य होते हैं।

वाक् गुण voice quality

किसी व्यक्ति की बोली में विद्यमान ऐसे अभिलक्षण, जो उसे पहचानने में सहायता

दें. वाक् गुण कहलाते हैं। प्रबलता का स्तर बोलने के प्रवेग तथा रणन, स्वराघात की ऊँचाई आदि तत्त्व मिलकर वाक् - गुण का निर्माण करते हैं। व्यक्ति की आवाज कर्कश, कटु, मीठी आदि प्रतीत होती है किन्तु ये नाम भाषिक के साथ-साथ पराभाषिक सन्दर्भों की भी सूचना देते हैं।

वाक् छल prevarication

कतिपय भाषाविदों ने इसे मानवीय भाषा की एक विशेषता के रूप में निरूपित किया जो उसे अन्य सम्प्रेषण साधनों से भिन्न प्रतिपादित करती है। भाषा का प्रयोग गलत सूचनाएँ देने, असत्य भाषण, सूचना के स्वरूप को परिवर्तित करने आदि कई प्रकार से किया जा सकता है।

वाक् - पथ vocal tract

काकल के ऊपर का सम्पूर्ण वायु-मार्ग स्वनविज्ञान में वाक् - पथ कहलाता है। वाक् - पथ का आकार वाक् - स्वनों के स्वरूप को प्रभावित करने वाला महत्त्वपूर्ण तत्त्व होता है। वाक्-पथ को नासा-पथ एवं मुख-पथ में विभाजित किया जा सकता है। नासा-पथ नासावरोध स्थल से नासा-द्वार का वायुधारा मार्ग होता है तथा काकल से ओंठ तक का वायुमार्ग, नासा-पथ को छोड़कर, मुख-पथ कहलाता है।

वाक्य sentence

पारम्परिक व्याकरण में वाक्य को पूर्ण विचाराभिव्यक्ति कह कर परिभाषित किया गया किन्तु समसामयिक भाषिक विश्लेषण में वाक्य का सूक्ष्म वर्णन किया गया। अमरीकी भाषाविद् वाक्य की संरचनात्मक स्वयत्ता और स्वतन्त्रता की बात करते हैं, जो किसी अन्य बृहद भाषिक इकाई में अन्तर्निविष्ट नहीं होता है। अन्य भाषिक इकाइयाँ वाक्य पर निर्भर करती हैं वाक्यान्तर्गत प्रकार्य के आधार पर व्याख्येय होती हैं किन्तु वाक्य दीर्घतम एवं स्वतन्त्र है। सम्प्रति कतिपय विद्वान वाक्य से बृहत्तर इकाई जैसे - प्रोक्ति, पाठ का उल्लेख करते हैं किन्तु वाक्य की तुलना में किसी ऐसी इकाई की खोज नहीं कर पाए जिसके संरचनात्मक घटक रूपात्मक एवं वितरणात्मक शब्दों में विश्लेष्य एवं व्याख्येय हों। वाक्य सम्बन्धी अध्ययनों में वाक्य के स्वरूप की पहचान, वर्गीकरण एवं प्रजनन सम्बन्धी समस्याओं पर विचार विमर्श किया जाता है। लिखित भाषा में इसकी सत्ता को पहचानना सरल होता है किन्तु मौखिक भाषा, जहाँ अनुतान एवं विराम वाक्य की सीमा से सम्बन्धित अनिश्चित संकेत देते हैं, वहाँ यह कार्य समस्याप्रद होता है।

वाक्यरचना / वाक्यविज्ञान syntax

वाक्यविज्ञान वाक्य के रचनात्मक पक्ष के अध्ययन से सम्बद्ध है। इसके अन्तर्गत पदों की सक्रियता का विश्लेषण इस दृष्टि से होता है कि वे बृहत्तर इकाई (वाक्य) के निर्माण में किस प्रकार योगदान देते हैं। इस प्रकार वाक्यविज्ञान में वाक्य-अवयवों का परस्पर सम्बन्ध, रूपान्तर, क्रम और वाक्य बनाने की रीति का वर्णन किया जाता है।

प्रजनक भाषाविज्ञान में व्याकरण के अन्तर्गत परिगणित तीन घटकों में प्रमुख वाक्यीय घटक है अन्य दो स्वनप्रक्रियात्मक एवं आर्थी घटक हैं।

वाक्यात्मक शब्द holophrase

प्राय: एक शब्द द्वारा निर्मित, व्याकरणिक दृष्टि से असंरचनात्मक उक्ति भाषार्जन के क्षेत्र में वाक्यात्मक शब्द संज्ञा से अभिहित की जाती है। छोटे बच्चों की भाषा में ऐसे कथनों का बाहुल्य देखने को मिलता है, यथा - माँ या दीदी से उनका तात्पर्य `माँ आओ' `वह दीदी है' होता है। यहाँ `माँ' के अतिरिक्त भाव संकेत या आवाज के सुर आदि से व्यक्त होते हैं। वयस्कों की भाषा में भी इस प्रकार के शब्द मिलते हैं, यथा - धन्यवाद, नमस्कार आदि।

वाचाघात aphasia

सामान्य भाषा प्रयोग में समर्थ व्यक्ति के मस्तिष्क में क्षति पहुंचने पर जब उसकी भाषिक योग्यता में बाधा आ जाए अथवा उसका लोप हो जाए तो यह स्थिति वाचाघात कहलाती है। प्राय: यह माना जाता है कि सभी दक्षिणहस्त प्राधान्य एवं अधिकतर वामहस्तिकों के मस्तिष्क का बायाँ हेमिस्फीयर भाषा को नियन्त्रित करता है। अत: मस्तिष्क के इस भाग में पहुँची किसी भी प्रकार की क्षति वाचाघात उत्पन्न कर सकती है।

वाम शाखन left branching

वह रचना जिसकी व्युत्पत्ति संरचनात्मक संक्रियाओं के जटिल अनुक्रम द्वारा हो और वृक्ष आरेख पर जिसका प्रतिरूपण वाम शाखा पर उत्तरोत्तर बढ़ती जटिलता द्वारा हो, यथा - `मेरे पति की चाची का भाई' रचना वाम शाखन या वाम पुनरावर्तन वाली है। इसकी जटिलता और बढ़ाई जा सकती है, यथा - मेरे पति की चाची के भाई का बेटा जो अमरीका में रहता है।

वायु-प्रवाह तन्त्र airstream mechanism

एक शारीरिक प्रक्रिया जो वाक् ध्वनि उच्चारण में संलग्न ऊर्जा देती है। इस तंत्र द्वारा वायु अन्दर (अन्तर्गामी) एवं बाहर (बर्हिगामी) की ओर प्रवाहित होती है। वायु संचलन के प्रमुख आरम्भक फेफड़े होते हैं जो ज्यादातर मानवीय वाग्ध्वनियों के उच्चारण में सहायक होते हैं। इसे **फुफ्फुसीय वायु प्रवाह तन्त्र** की संज्ञा देते हैं। **श्वासद्वारीय वायु प्रवाह तन्त्र** श्वासद्वार के संचलन द्वार वाग्ध्वनियों का उच्चारण करता है। जिह्वापश्च को कोमल तालु की ओर संचलित करने पर उत्पन्न वायुप्रवाह को **कोमल तालव्य वायु प्रवाह तन्त्र** की संज्ञा दी जाती है। स्पष्ट है कि वायु प्रवाह दिशा के आधार पर इसके दो वर्ग तथा आरम्भक के आधार पर तीन वर्ग मिलते हैं।

वार्तालाप विश्लेषण conversation analysis

प्रायः नृजाति कार्य प्रणाली की तकनीकियों के आधार पर दैनिक व्यवहार में आगत वार्तालाप की अनुक्रमिक संरचना एवं सम्बद्धता का अध्ययन करने वाली पद्धति वार्तालाप विश्लेषण कहलाती है। यह उपागम वास्तविक वार्तालाप को रिकार्ड कर उन अभिलक्षणों को प्रतिपादित करता है जिनका प्रयोग कोई वक्ता व्यवस्थित भाषिक अन्तर्प्रक्रिया के दौरान करता है। यह पद्धति आनुभविक एवं आगमनात्मक होती है।

वास्तविकतावादी व्याकरण realistic grammar

व्याकरणिक विश्लेषण का वह उपागम जिसका उद्देश्य मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यथार्थवादी होता है और जिसके अन्तर्गत भाषिक व्यवहार के बोधन एवं स्मरण क्षेत्रों की व्याख्या की जाती है। इसका उद्देश्य भाषिक प्रयोग के मनोवैज्ञानिक मॉडल के अन्तर्गत एक रूपान्तरण व्याकरण को साकार करना है जिससे यह मॉडल प्रयोगकर्ताओं के भाषा ज्ञान का सत्य प्रतिरूपण कर सके। विद्वानों का विचार है कि वास्तविकतावादी व्याकरण मनोभाषावैज्ञानिक एवं भाषिक मानदण्डों द्वारा भाषिक दक्षता की प्रकृति से सम्बन्धित नवीन अन्तर्दृष्टि प्रस्तुत करेगा तथा रूपात्मक व्याकरण के गुणों को मूल्यांकित करने में सहायक होगा।

विकार mutation

आसन्न रूपिम अथवा शब्द की ध्वनियों के प्रभाव से यदि किसी ध्वनि का गुण परिवर्तित हो जाता है तो इसे विकार की संज्ञा दी जाती है, यथा - प्राचीन अंग्रेजी के विकास काल में कुछ स्थितियों में /i/ स्वर के प्रभाव से अन्य स्वर परिवर्तित हो गए * foti > feet।

यही नहीं समकालिक सन्दर्भ में भी इसके उदाहरण मिलते हैं, यथा - वेल्श भाषा के कुछ शब्दों में आरम्भिक व्यंजन परिवर्तित हो जाता है `pen' का अर्थ है `सिर' `fymhen' का अर्थ है `मेरा सिर'।

विकासात्मक भाषाविज्ञान developmental linguistics

भाषाविज्ञान की एक शाखा जिसका सम्बन्ध बच्चों के भाषार्जन से है विकासात्मक भाषाविज्ञान कहलाती है। इसके अन्तर्गत भाषिक सिद्धान्तों एवं विश्लेषण की प्रविधियों का अनुप्रयोग बच्चों की भाषिक सामग्री पर किया जाता है और विश्लेषण के आधार पर वैयक्तिक भाषाओं अथवा सार्वभौमिक रूप में प्राप्त विकास की अभिरचनाओं का सूक्ष्म विवेचन तथा उपलब्ध परिवर्त्यों एवं प्रतिमानों की व्याख्या की जाती है। व्याख्या के दौरान संज्ञान, सामाजिक पृष्ठभूमि, प्रयोगकार्य की प्रकृति जैसे अभाषिक तत्त्वों पर विशेष ध्यान दिया जाता है। मनो-वैज्ञानिक तत्त्वों पर विशेष बल के कारण, कभी-कभी विद्वान इसे विकासात्मक मनोभाषाविज्ञान नाम से भी अभिहित करते हैं।

विकृति modification

एक रूप की धातु या प्रातिपदिक में घटित परिवर्तन की प्रक्रिया विकृति कहलाती है, जैसे - हिन्दी में चल ~ चाल या अनुपूरण की अवस्था में जा ~ गया रचना होती है।

विचलक deviant

भाषाविज्ञान में यह पारिभाषिक शब्द उस वाक्य के लिए प्रयोग में आता है जो किसी व्याकरण के नियमानुसार नहीं होता है अर्थात् जो सुगठित न हो। परम्परा से विचलक वाक्यों को तारक चिह्न द्वारा चिह्नित किया जाता है, यथा * है लड़का से बाजार घर जाती।

विचलन deviation

शैलीविज्ञान के अन्तर्गत यह शब्द एक पारिभाषिक शब्द के रूप में प्रयोग में आता है। भाषा में विद्यमान नियमों, बन्धनों को तोड़ना उनका उल्लंघन करना विचलन कहलाता है। प्राय: साहित्य में किसी कथ्य को विशेष महत्त्व देने के लिए रचनाकार विचलन का प्रयोग करते हैं। इस प्रकार सामान्य रूप से हटकर किया गया भाषा का किञ्चिद भिन्न रूप में प्रयोग विचलन कहलाता है। विचलन का प्रयोग ध्वनि, व्याकरण एवं अर्थ तीनों स्तरों पर दृष्टिगत होता है, उदाहरणार्थ - ``पहले लोग सठिया जाते थे अब कुर्सिया जाते हैं" इस

पंक्ति में कुर्सी संज्ञा से क्रिया 'कुर्सिया' बनाया गया तथा पद वर्ग विचलन द्वारा भिन्न भावाभिव्यक्ति की गई है।

विचार प्रधान अर्थ ideational meaning

कतिपय विद्वान अर्थ वर्गीकरण के सन्दर्भ में विचार प्रधान अर्थ की चर्चा करते हैं। अर्थ का वह पक्ष जो वक्ता की बाह्य संसार के प्रति संज्ञानात्मक जागरूकता किस प्रकार भाषा में परिलक्षित होती है, इस पर निर्भर करता है। पाठीय, सामाजिक या अभिव्यंजक अर्थ इसके व्यतिरेकी हैं।

वितरण distribution

वे समस्त सम्भावित सन्दर्भ जिनमें किसी भाषिक इकाई (यथा - रूपिम, स्वनिम या शब्द) का प्रयोग हो सके। वितरणात्मक विश्लेषण यह जानने का प्रयास करता है कि छोटी भाषिक इकाइयाँ बृहत्तर इकाइयों में कहाँ रखी जा सकती हैं, यथा - शब्दों का वाक्यान्तर्गत वितरण या स्वनिमों का शब्दान्तर्गत वितरण। सर्वप्रथम स्वनप्रक्रिया के क्षेत्र में वितरण का विकास हुआ किन्तु बाद में अन्य भाषिक स्तरों तक प्रसार हो गया।

वितरित distributed

चॉमस्की तथा हॉले ने अपने प्रभेदक अभिलक्षण सिद्धान्त के अन्तर्गत, वायुधारा के प्रवाह की दिशा के साथ-साथ अधिक दूरी तक व्याप्त संकोचन के माध्यम से उत्पन्न ध्वनि को वितरित नाम दिया। यह विशेषता द्वयोष्ठ्य एवं तालु-वर्त्स्य संघर्षी स्वनों में मिलती है। इसके विपरीत **अवितरित** अभिलक्षण होता है जो उन ध्वनियों की ओर संकेत करता है जिनका उच्चारण वायुधारा के प्रवाह की दिशा के साथ कम दूरी तक व्याप्त संकोचन से होता है, जैसे - दन्त या मूर्धन्य संघर्षी ध्वनियाँ।

विधेय predicate

पारम्परिक अध्ययन में वाक्य को दो वर्गों में विभाजित किया गया- उद्देश्य या कर्ता तथा विधेय। वाक्य में उद्देश्य के अतिरिक्त आने वाले समस्त अनिवार्य घटक विधेय कहलाते हैं, यथा - राम गया; राम ने गेंद फेंकी; राम बाजार पुस्तक लेने गया, इन तीनों वाक्यों को कर्ता (राम) + विधेय रचना के रूप में विश्लेषित किया जाएगा। हिन्दी में उद्देश्य का विस्तार क्रिया, पूरक, कर्म और क्रिया विशेषण आदि से होता है। बहिःकेन्द्रिक रचनाओं के वर्गीकरण में इन वाक्यों की गणना **विधेयात्मक** वर्ग में होगी।

प्रकार्यात्मक व्याकरण में इस शब्द का केन्द्रीय महत्त्व है। कभी-कभी वाक्य-विज्ञान के विस्तृत अध्ययन में शब्दों के विधेयात्मक तथा अविधेयात्मक प्रकार्य के मध्य अन्तर किया जाता है, यथा - `आदमी पैसे वाला है' वाक्य में `पैसे वाला' विशेषण विधेयात्मक है जबकि `पैसेवाला आदमी' में यह गुणवाचक है। यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि भाषा विश्लेषण के मॉडलों में शब्दावली सम्बन्धी बहुत भिन्नता मिलती है। कुछ सिद्धान्तवादियों ने **विधेयक** शब्द का प्रयोग रचना में आने वाले क्रिया रूप के लिए करने का सुझाव दिया और कर्ता - क्रिया - कर्म के स्थान पर कर्ता - विधेयक - कर्म की चर्चा की।

विन्यास arrangement

भाषिक तत्त्वों का ऐसा कोई भी अनुक्रम जो तत्त्वों के वितरण पर आधृत हो, विन्यास कहलाता है, यथा - अक्षर या शब्दान्तर्गत स्वनिमों के सम्भावित संयोग या शब्दों एवं वाक्यों में रूपिमों के सम्भावित संयोग। भाषा वर्णन एवं विश्लेषण के `रूप एवं विन्यास' मॉडल की यह मौलिक धारणा है।

वाक्य में आगत शब्दों के विन्यास द्वारा अभिव्यक्त वाक्यात्मक सम्बन्ध को **विन्यासात्मक** संज्ञा दी जाती है तथा व्याकरणिक विन्यास की लघुतम प्रभेदक इकाई **पदिम** कहलाती है, जैसे - हिन्दी की द्विकर्मक क्रियाओं में कर्म के साथ `को' का प्रयोग एक अनिवार्य विन्यासात्मक लक्षण है।

विन्यासक्रमी syntagmatic

भाषा, भाषिक इकाइयों के सम्बन्धों पर आश्रित होती है। इस तथ्य को पुष्ट करते हुए फर्दिनान्द डी सेस्यूर ने दो प्रकार के सम्बन्धों की चर्चा की - विन्यासक्रमी एवं सारणिक। विविध इकाइयों का अपने पूर्व एवं परागत इकाइयों से सम्बन्ध ही विन्यासक्रमी कहलाता है, उदाहरणार्थ - नगर शब्द में न - ग - र का परस्पर सम्बन्ध। जबकि `नगर' एवं `मगर' में `न' और `म' का सम्बन्ध सारणिक है। इसी प्रकार `अच्छी लड़की' पदबन्ध के दोनों घटकों के मध्य विन्यासक्रमी सम्बन्ध है जबकि `अच्छी' एवं `मोटी' (मोटी लड़की) के मध्य सारणिक सम्बन्ध है।

विपरीतार्थक शब्द contrary term

यह शब्द अर्थविज्ञान के अन्तर्गत कोशीय मदों के मध्य प्राप्त कतिपय आशय सम्बन्धों को अभिव्यक्त करता है।ऐसे शब्द अर्थ की विरोधात्मकता प्रदर्शित करते हैं, जैसे - बड़ा / छोटा, सुख / दुख। कतिपय विद्वान इस विरोध को विपर्याय की संज्ञा देते हैं।

विपर्यय metathesis

किसी वाक्य में तत्त्वों के अनुक्रम का परस्पर परिवर्तन विपर्यय कहलाता है। यह प्राय: स्वनों के मध्य होता है किन्तु कभी-कभी अक्षर, शब्द या अन्य इकाइयों में भी यह प्रक्रिया घटित दृष्टिगत होती है। ऐतिहासिक भाषाविज्ञान में इसके अनेक उदाहरण मिलते हैं, जैसे - चिह्न > चिन्ह; वाराणसी > बनारस। विपर्यय के अनेक उदाहरण भाषा प्रयोग सम्बन्धी अशुद्धियों में भी मिलते हैं, जैसे - विस्फोट > विस्टोफ; लखनऊ > नखलऊ अथवा 'शक्कर मिलाकर दूध पी लो' > दूध मिलाकर शक्कर पी लो।

विपर्याय / विलोम antonym

अर्थविज्ञान में विरुद्धार्थकता के अध्ययन के लिए प्रयुक्त शब्द। विपरीत अर्थ द्योतित करने वाले शब्द विलोम कहलाते हैं। इनके द्वारा सभी प्रकार की आर्थी विलोमता लक्षित होती है। इसके कई उपवर्ग किए जाते हैं, यथा - **अनुस्तरित विलोम** (छोटा ~ बड़ा) तथा **अननुस्तरित विलोम** (एक ~ अनेक)। कुछ विद्वानों ने प्रथम वर्ग को विलोम तथा द्वितीय वर्ग को पूरक की संज्ञा दी।

विपर्यास reversal

पारम्परिक अध्ययन में जिसे विपर्यय या स्पूनरिज्म का नाम दिया गया उसे ही कतिपय मनोभाषावैज्ञानिकों ने विपर्यास संज्ञा दी अर्थात् जब दो भाषिक इकाइयों के पारस्परिक परिवर्तन के कारण भाषा परिवर्तित हो, जैसे - दाल-चावल > चाल-दावल के समान बोला जाए या लखनऊ को नखलऊ कहा जाए।

विभक्ति inflection

शब्द निर्माण प्रक्रिया के दो प्रमुख वर्गों में से एक विभक्ति है। इसका प्रयोग शब्द निर्माण में रत एक प्रकार के प्रत्यय के लिए भी किया जाता है। विभक्त्यात्मक प्रत्यय व्याकरणिक सम्बन्धों की ओर संकेत करते हैं, यथा - बहुवचन, भूतकाल आदि। इनके संयोजन से शब्द (प्रातिपदिक) के वर्ग में परिवर्तन नहीं होता है। ये शब्द एक रूप सारणी का निर्माण करते हैं, जैसे - चल, चला, चली, चलता, चलती आदि।

भाषा वर्गीकरण में एक वर्ग विभक्ति प्रधान भाषाओं का मिलता है। इन भाषाओं में व्याकरणिक सम्बन्धों की अभिव्यक्ति शब्द में विभक्ति संयोजन द्वारा होती है। इनमें रूपों के रैखिक अनुक्रम तथा रूपिमों के मध्य एक से एक का सम्बन्ध नहीं होता है। ग्रीक, लैटिन आदि भाषाओं में शब्द के विभक्ति रूप अनेक रूपरचनात्मक प्रतियोगों को प्रकट

करते हैं, यथा - लैटिन amo (मैं प्यार करता हूँ) यह रूप वर्तमानकाल, कर्तृवाच्य, प्रथम पुरुष, एक वचन सभी अभिलक्षणों की अभिव्यक्ति एक साथ करता है।

वियोजन disjunction

दो या दो से अधिक (स्वनिक या स्वनिमिक) खंडों का ऐसा अनुक्रम जिनके बीच में कोई खंड अकेले या युग्म में आ जाए वियोजन कहलाता है। इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग भाषाविज्ञान के विविध क्षेत्रों में किया जाता है। जब दो वाक्य `जब - तब', `या - तो' शब्दों से जुड़े हों तो यह प्रक्रिया भी वियोजन कहलाती है, यथा - या तो तुम चले जाओ या राम को भेज दो।

विराम चिह्न punctuation marks

लिखित या मुद्रित भाषा में अर्थ-स्पष्टता के लिए तथा संरचना-विभाजन के लिए प्रयुक्त होने वाले विभिन्न मानक चिह्न या संकेत विराम चिह्न कहलाते हैं, जैसे - हिन्दी में अल्पविराम (,) अर्धविराम (;) पूर्ण विराम (।) प्रश्नसूचक चिह्न (?) विस्मयादिबोधक चिह्न (!) विवरण चिह्न (:-) उद्धरण चिह्न (" ") योजक चिह्न (-) आदि व्यवहार में लाए जाते हैं।

विरोधात्मक contradictory

कोशीय मदों के मध्य के सम्बंध को विश्लेषित करने के लिए कभी-कभी इस शब्द का प्रयोग किया जाता है। ऐसे शब्द जिनमें अर्थ सम्बन्धी विपरीतार्थकता हो **विरोधात्मक शब्द** कहलाते हैं, यथा - स्त्री / पुरुष, विवाहित / अविवाहित।

विलम्बित निर्मोचन delayed release

चॉमस्की एवं हॉले द्वारा प्रतिपादित स्वनप्रक्रिया के प्रभेदक अभिलक्षण सिद्धान्त में उच्चारण प्रयत्नों की व्याख्या करते हुए विलम्बित निर्मोचन की चर्चा की गई। जब ध्वनि का इस प्रकार देर से निर्मोचन हो कि वायु प्रवाह किसी संघर्षण या विक्षोभ के साथ निकले, यथा - स्पर्श संघर्षी ध्वनियों च, छ, ज, झ के उच्चारण में।

विलयन merger

मूलत: भिन्नता रखने वाली दो भाषिक इकाइयों में जब सम्मिश्रण हो जाता है तो इस प्रक्रिया को विलयन की संज्ञा देते हैं। दो स्वनिमों के निकट आने पर स्वनिमिक

विलयन की स्थिति मिलती है. जैसे - प्राचीन अंग्रेजी के /ae:/ और /e:/ स्वर आधुनिक अंग्रेजी में /i :/ में विलयित हो गए हैं, यथा - meet और clean शब्दों में।

विल्हेल्म फॉन हुम्बोल्ट Wilhem Von Humboldt

उन्नीसवीं शताब्दी के महान सिद्धान्तवादी एवं विचारक थे। बीसवीं शताब्दी के बोआज़, सपीर, वूर्फ तथा चॉमस्की जैसे प्रसिद्ध एवं प्रतिभाशाली विद्वानों की कृतियों में हुम्बोल्ट के प्रभाव के स्पष्ट संकेत मिलते हैं। इनके अनुसार भाषा ही विचार का निर्माण करती है। भाषा का आंतरिक रूप मानव मस्तिष्क का आधारभूत रचनांश है। यह आन्तरिक रूप भाषा का अर्थविज्ञान तथा व्याकरणिक संरचना होती है। उनके विचारानुसार भाषा निरन्तर घटने वाला व्यापार है। वह भाषा को जातीय एवं राष्ट्रीय चरित्र का प्रतीक मानते हैं। इन्होंने जावा की कवि तथा बास्क भाषाओं का वर्णनात्मक विश्लेषण कर, द्विकालिक की तुलना में संकालिक अध्ययन की उपयोगिता पर बल दिया।

विवर cavity

स्वनविज्ञान में वाक् पथ के कक्षों के लिए विवर शब्द का प्रयोग किया जाता है। इन कक्षों का कम से कम एक सिरा खुला या बन्द हो सकता है। मुख्य विवर पाँच होते हैं-

(i) **मुख - विवर -** का निर्माण मुख में ओंठ से लेकर गले तक के उस भाग द्वारा होता है जिसमें मुख्यतः वायु के निकलते समय उच्चारण अवयवों द्वारा उत्पन्न अवरोध के फलस्वरूप ध्वनियों (स्वर एवं व्यञ्जन) का उच्चारण होता है।

(ii) **नासिका-विवर -** नाक के अन्दर खाली भाग जिसमें साँस अपने स्वाभाविक रूप से आती जाती है। नासिक्य ध्वनियों के उच्चारण में इसी से सहायता मिलती है।

(iii) **फुप्फुसीय-विवर -** इसका निर्माण फेफड़े एवं श्वासनली द्वारा होता है। यह वाग्ध्वनियों का सामान्य स्रोत होता है।

(iv) **ग्रासनलीय-विवर -** ग्रासनी से लेकर पेट तक का क्षेत्र इस विवर में आता है। इसका प्रयोग असमान्य ध्वनि उत्पादन में होता है, यथा - स्वरयन्त्रोच्छेदन आपरेशन के बाद ध्वनि उत्पादन।

(v) **ग्रसनी-विवर -** स्वरयन्त्र से लेकर उस बिन्दु तक जहाँ कोमल तालु कंठ के पश्च से सम्पर्क करता है।

स्वनप्रक्रिया के चॉमस्की एवं हॉले द्वारा प्रतिपादिक प्रभेदक अभिलक्षण सिद्धान्त

में वाक् ध्वनियों के विश्लेषण हेतु पाँच अभिलक्षणों की चर्चा की गई। विवर अभिलक्षण इनमें से एक है। इसके अतिरिक्त मुख्य वर्ग अभिलक्षण, उच्चारण प्रयत्न अभिलक्षण, स्रोत अभिलक्षण तथा स्वनगुणिमिक अभिलक्षण हैं।

विवृत open

मान स्वर व्यवस्था के वर्णन में जिह्वा की चार अवस्थाओं का उल्लेख किया जाता है - संवृत, अर्ध संवृत, अर्ध विवृत एवं विवृत। विवृत वह अवस्था है जब किसी स्वर उच्चारण में जिह्वा निम्नतम सम्भावित स्थिति में हो अर्थात् मुख जितना अधिक सम्भव हो खुल सके, जैसे - cat एवं cart शब्दों में प्रयुक्त [a]। जब ओष्ठ काफी खुले हों किन्तु उनमें वर्तुलन न दिखाई पड़े, जैसे - past शब्द में आगत [a] तो ओष्ठ की अवस्था के आधार पर किए गए वर्गीकरण में विवृत वर्ग की चर्चा की जाती है। इसकी व्यतिरेकी अवस्था में ओष्ठ वर्तुलित फैले हुए तथा तटस्थ होते हैं।

वह अक्षर जिसका शिखर पश्च स्थिति में आगत स्वर हो विवृत अक्षर कहलाता है, जैसे- पी, ना, जा आदि। जबकि जिसके अन्त में व्यंजन हो उसे संवृत अक्षर कहते हैं। शिशु स्वन अधिग्रहण विकास सम्बन्धी इस तथ्य की ओर संकेत करते हैं कि शिशु विवृत अक्षर पहले बोलते हैं।

यह शब्द वर्गीकरण का एक आधार भी है जहाँ भाषाओं के शब्दों को विवृत वर्ग (open class) एवं संवृत वर्ग (close class) में विभाजित किया जाता है। विवृत वर्ग की सदस्य संख्या असीमित होती है। नवीन खोज, विचार आदि अभिव्यक्ति के नए मद इस वर्ग में लगातार समाहित होते रहते हैं। संज्ञा, विशेषण एवं क्रिया विवृत वर्ग हैं जबकि सर्वनाम एवं समुच्चयबाध संवृत वर्ग कहलाते हैं।

विशेषक quantifier

एक व्याकरणिक इकाई की दूसरी इकाई पर होने वाली एक प्रकार की व्याकरणिक आश्रयता को वाक्यरचना में विशेषक कहकर सन्दर्भित करते हैं। कतिपय पारम्परिक व्याकरणों में यह प्रतिपादित किया गया कि संज्ञापदबन्ध के आश्रित मद (जैसे - विशेषण) संज्ञा की विशेषता बताते हैं; हैलिडे के व्याकरण में संज्ञापदबन्ध के शीर्ष के बाद आने वाली संरचना विशेषक कहलाती हैं।

विशेषक चिह्न diacritic marks

किसी वर्ण के ऊपर, नीचे, दाएँ या बाएँ कहीं भी लगाए जाने वाले निशान या

संकेत चिह्न जिनसे वर्ण द्वारा अभिव्यक्त स्वनिक मूल्य से भिन्न मूल्य प्रकट होता है विशेषक चिह्न कहलाते हैं, उदाहरणार्थ - देवनागरी में `फ' के नीचे बिन्दु लगाने से `फ' का दन्त्योष्ठ्य संघर्षी उच्चारण प्रकट होता है तथा कश्मीरी के विशिष्ट स्वर `अ' के लिए ` (अे) आदि।

विशेषण adjective

शब्द के व्याकरणिक वर्गीकरण का वह वर्ग जिसके शब्द संज्ञा के गुण, लक्षण अथवा विशेषता को नामोद्दिष्ट करते हैं। हिन्दी में विशेषण विकारी तथा अविकारी होते हैं। विकारी विशेषण का लिंग, वचन एवं कारक जिस संज्ञा की विशेषता बताई जा रही है उसके अनुरूप होता है, यथा - काली बिल्ली; काला कुत्ता; काले लड़के। वाक्य में प्राय: ये शब्द विशेषक तथा विधेय के अंश होते हैं। कभी-कभी उद्देश्य, कर्म अथवा कोई अन्य अंग भी हो सकते हैं। अंग्रेजी में इस वर्ग के सदस्य लिंग, वचन से प्रभावित नहीं होते हैं तथा रूपात्मक दृष्टि से इनकी परिभाषा के लिए चार आधारों की चर्चा की जाती है -

(i) इनका प्रयोग संज्ञा पदबन्ध के अन्तर्गत होता है, यथा - पीली साड़ी, the black bag, (ii) इनका प्रयोग क्रिया के पूर्व या विधेयक स्थिति में भी हो सकता है, यथा - साड़ी पीली है, The bag is black,

(iii) तीव्रक द्वारा विशेषण पूर्व विकृत भी किए जा सकते हैं, यथा - हल्की पीली साड़ी; The very black bag, (iv) साथ ही अंग्रेजी में इनका प्रयोग तुलना कोटि एवं अतिशय कोटि में होता है। इन कोटियों की रचना विभक्ति संयोजन द्वारा (big, bigger, biggest) अथवा नवीन शब्द संयोजन द्वारा (more interesting, most interesting)होती है। अंग्रेजी और हिन्दी के सभी विशेषण इन कसौटियों पर खरे नहीं उतरते हैं। हिन्दी में इसके चार उपवर्ग हैं - **गुणवाचक** - डरपोक, पीले; **परिमाणवाचक** - मुट्ठीभर, मनभर, कुछ, थोड़ी; **संख्यावाचक** - एक, दो, पहला, **सार्वनामिक** - यह, वह, उस।

हिन्दी में तीन अवस्थाओं की चर्चा भी मिलती है - मूलावस्था `न्यून', उत्तरावस्था - `न्यूनतर'; उत्तमावस्था - `न्यूनतम'।

विश्लेषणात्मक analytic

तुलनात्मक भाषाविज्ञान संरचनात्मक आधार पर भाषाओं का वर्गीकरण करता है।शब्द की विशेषताओं को केन्द्र में रख बनाए गए इस वर्गीकरण का एक उपवर्ग विश्लेषणात्मक कहलाता है। इस वर्ग की भाषाओं में प्रत्येक शब्द निश्चर (invariant) होते हैं तथा वाक्यीय सम्बन्धों का स्पष्टीकरण शब्दक्रम द्वारा होता है। इन्हें आयोगात्मक नाम भी दिया गया। संश्लेषणात्मक भाषाएँ इनसे भिन्न होती हैं। इन भाषाओं के शब्द एकाधिक रूपिमों द्वारा निर्मित होते हैं। ध्यातव्य है कि किसी भी भाषा में एक वर्ग की सभी

विशेषताएँ नहीं मिलती हैं और न ही इस आधार पर भाषाओं के मध्य सपष्ट विभाजक रेखा खींची जा सकती है। भिन्न-भिन्न भाषाओं में अलग-अलग मात्रांक में विश्लेषणीयता देखी जा सकती है।

विश्लेषणात्मक वाक्य analytic sentence

वह वाक्य जिसका व्याकरणिक रूप एवं कोशीय अर्थ उसे निश्चित रूपेण सत्य बनाता है, अर्थविज्ञान में विश्लेषणात्मक वाक्य / प्रतिज्ञप्ति कहलाता है, जैसे - विधुर पत्नीहीन पुरुष होते हैं; मिठाई मीठी होती है।

इसके व्यतिरेकी पारिभाषिक शब्द **संश्लेषणात्मक** में वाक्य की सत्यता आनुभविक आधार पर निश्चित की जाती है।

विश्वव्यापी नियम global rules

1970 में प्रजनक भाषाविज्ञान ने समस्त व्युत्पत्तियों के लिए इन नियमों का उल्लेख किया। ये नियम पदबन्ध संरचना और रूपान्तरण नियमों से भिन्न होते हैं तथा असहवर्ती पदबन्ध चिह्नकों की संवादी आसंधियों के संविन्यास सम्बन्धी सुगठनता की स्थितियों को निश्चित करते हैं।

विषमार्थक पद heteronym

आंशिक समरूपता प्रदर्शित करने वाले शब्द अर्थात् ऐसे शब्द जो अर्थगत भिन्नता रखते हो किन्तु उनमें रूपात्मक समानता प्राप्त हो। ये रूपात्मक समानता उच्चरित या लिखित किसी एक रूप में दृष्टिगत होती है, उदाहरणार्थ - भाषाओं में प्राप्त समलेख या समध्वन्यात्मक शब्द, जैसे - हिन्दी शब्द बेल - एक फल विशेष; वृक्ष की एक जाति विशेष दोनों अर्थों में प्रयुक्त होता है, अथवा अंग्रेजी शब्द meat : meet।

विषमीकरण dissimilation

वह स्वनिक प्रक्रिया जिसमें कोई स्वन दूसरे के उच्चारण को प्रभावित कर अंशत: भिन्न बना लेता है। इन परिवर्तनों के दो प्रकार होते हैं - पुर: विषमीकरण एवं पश्च विषमीकरण। जब पहला स्वन दूसरे को प्रभावित करता है (यथा - सं. चक्र > प्रा. चक्क) तो प्रथम स्थिति होती है तथा जब परवर्ती स्वन पूर्ववर्ती को परिवर्तित कर अपने सदृश कर लेता है तो पश्च विषमीकरण की स्थिति होती है (स. कर्म > पा. कम्म)।

विषु स्वन diaphone

किसी भाषा के स्वनिम के वे अनेक उपस्वन जिनका उच्चारण उस भाषा के विभिन्न भाषिक वर्गों द्वारा किया जाता है, यथा - दक्षिणी अंग्रेजी के वक्ता get के [e] को अनेक प्रकार से विवृत कर के बोलते हैं।

विसंदिग्ध करना disambiguate

ऐसा विश्लेषण जो संदिग्धार्थी वाक्य की वैकल्पिक संरचनात्मक व्याख्या प्रस्तुत करता है। रूपान्तरण व्याकरण में इस प्रक्रिया को विसंदिग्ध करना कहते हैं। यह कार्य कोष्ठक नियत कर अथवा एक रूपान्तरण सम्बन्ध बता कर किया जाता है, उदाहरणार्थ - 'यह खाने के लिए बहुत गर्म है' वाक्य को अन्य वाक्यों से सम्बन्ध स्थापित कर विसंदिग्ध किया जा सकता है यथा -

(i) चाय, पीने के लिए, बहुत गर्म है।

(ii) उसका मिजाज, खाने के लिए गर्म है।

(iii) खाने के लिए मौसम बहुत गर्म है।

विसंधि hiatus

दो स्वनों (प्राय: स्वरों) के बीच अत्यल्प विराम, जो उच्चारण में सामान्य विराम से मात्रा में कम होता है। इसके दो भेद होते हैं - आन्तरिक जब एक ही शब्द के भीतर दो स्वर पास-पास आएँ और उनके मध्य अल्पकालिक विराम हो, यथा - पुआल, सुअर आदि। बाह्य विसन्धि-दो शब्दों की स्वर ध्वनियों के बीच अत्यल्प विराम की मात्रा, यथा - चली आई; अरे इधर आदि।

विस्तरण periphrasis

भाषा में जब किसी व्याकरणिक सम्बन्ध की अभिव्यक्ति प्रत्यय के स्थान पर स्वतन्त्र शब्द द्वारा की जाए तो उसे विस्तरण की संज्ञा देते हैं, जैसे - नामक-नाम वाला, पालक-पालने वाला अथवा अंग्रेजी में happier, happiest में विभक्ति संयुक्त है और more happy, most happy विस्तरण है।

विस्तारित मानक सिद्धान्त extended standard theory

यह नोअम चॉमस्की द्वारा 1970 में प्रतिपादित प्रजनक व्याकरण के मानक सिद्धान्त का विकसित प्रारूप है। यह विस्तार मुख्यत: आर्थी नियमों की दिशा में हुआ। चॉमस्की ने

सुझाव दिया कि अब कतिपय आर्थी नियमों को बहिस्तलीय संरचना के निवेश रूप में सक्रिय होने की छूट होनी चाहिए। उनके अनुसार अर्थविज्ञान के लिए उपयोगी अन्त:स्तलीय संरचना के अभिलक्षणों के अन्तर्गत अनुतान तथा बलाघात के विविध प्रकार्य, परिणाम वाचकता के पक्ष, वाक्य का फोकस जो उसकी पूर्वमान्यताओं से सम्बन्धित सूचना देने वाला है, आते हैं। दूसरे शब्दों में, यह मान्यता समाप्त हो गई कि वाक्य का आर्थी प्रतिरूपण केवल अन्त:स्तलीय संरचना द्वारा ही निर्धारित होगा। प्रजनक अर्थशास्त्री इस प्रारूप को **निर्वचनात्मक अर्थविज्ञान** या **व्याख्यात्मक प्रारूप** नाम से पुकारते हैं।

विस्तीर्ण wide

वह स्वनिक अभिलक्षण जिसमें जिह्वामूल को आगे करके ग्रसनी को बड़ा किया जाता है तथा जिह्वामूल पीछे किए जाने पर ग्रसनी को छोटा करना सम्भव है। इस अभिलक्षण के आधार पर घाना में बोली जाने वाली त्वी भाषा में, स्वरों के दो समुच्चयों में, भेद किया जाता है। एक में विस्तीर्ण स्वरों का समावेश होता है और दूसरे में संकीर्ण।

विस्तृत elaborated

सामाजिक व्यवस्था एवं नियमों की प्रकृति के सामान्य सिद्धान्त के सन्दर्भ में समाजशास्त्री बेसिल बर्नसटीन ने भाषा-प्रयोग के दो भेदों की चर्चा की-**विस्तृत कोड** एवं **सीमित कोड**। यह मान्यता थी कि विस्तृत कोड का प्रयोग औपचारिक तथा शिक्षा सम्बन्धी परिस्थितियों में होता है और यह अपनी सार्थकता के लिए भाषा-बाह्य सन्दर्भ (यथा - अंग विक्षेप या सामान्य विश्वास) पर निर्भर नहीं करता है। विस्तृत कोड वक्ता को अभिव्यक्ति में वैयक्तिक सृजनात्मकता की स्वतन्त्रता देता है तथा उन्हें एकाधिक भाषिक अभिव्यक्तियों के मध्य चयन की छूट होती है। इस कोड में आश्रित उपवाक्यों, विशेषणों, उत्तम पुरुष एक वचन सर्वनाम तथा कर्तृवाच्य जैसे भाषिक अभिलक्षण बहुत अधिक मिलते हैं।

विस्थापन displacement

भाषा का एक महत्त्वपूर्ण अभिलक्षण जो उसे अन्य संकेत व्यवस्थाओं से भिन्न प्रतिपादित करता है। भाषा का प्रयोग वक्ता के सामने से हटाए गए सन्दर्भों के लिए भी किया जा सकता है, उदाहरणार्थ - 'मैं डर गया' वाक्य का वक्ता आवश्यक नहीं है कि इस कथन को बोलते समय भी डरा हुआ हो। मानवेतर प्राणियों का सम्प्रेषण मूलप्रवृत्तिजन्य होने के कारण विशिष्ट परिस्थिति से आबद्ध होता है और विस्थापन का गुण उसमें नहीं प्राप्त होता है।

विस्मयादिबोधक interjection

शब्दों का एक वर्ग जो अनुत्पादक होता है तथा अन्य वर्गों से जिसका वाक्यीय सम्बन्ध नहीं होता है एवं जिसका प्रकार्य पूर्णत: भाव प्रधान होता है, यथा - हिन्दी में छि:! थू!। कतिपय विस्मयादिबोधक शब्दों के समुद्दिष्ट / संदर्भपरक अर्थ भी होते हैं, यथा - बहुत बढ़िया! भई वाह! आदि।

विस्मयादिबोधक वाक्य exclamatory sentence

वाक्य के प्रकार्य का एक वर्ग जो कभी व्याकरणिक और कभी आर्थी या समाजभाषा-विज्ञानी आधार पर परिभाषित किया गया। परम्परा से विस्मयादिबोधक को भावपूर्ण कथन माना गया जिसमें पूर्ण वाक्य जैसी संरचना का अभाव तथा प्रबल अनुतान होता है, यथा - ओफ्फोह! हे भगवान! कभी-कभी पूरा वाक्य अथवा वाक्यांश विस्मयादि बोधक हो जाता है; जैसे - क्या बात है! बहुत अच्छा! सर्वनाश हो गया!

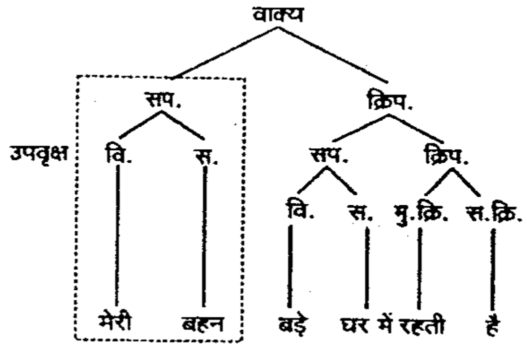
विहित रूप canonical form

वह भाषिक रूप जिसको तुलना के समय मानक रूप में स्थापित किया जाए। स्वनप्रक्रिया में किसी भाषा की ध्वनियों के सामान्य आक्षरिक संयोजन विहित माने जाते हैं; यथा - एक व्यञ्जन-स्वर CV या व्यंजन-स्वर-व्यंजन CVC संरचना एक विहित अक्षर अभिरचना का निर्माण करती है। रूपरचना में इस शब्द का प्रयोग किसी भाषा के रूपिमों की विशिष्ट स्वनप्रक्रियात्मक रचना को संकेतित करता है, यथा - पॉलिनेशियन में CVCV। वाक्य रचना में भी विहित संरचनाओं की कल्पना की जाती है, यथा - वाक्य = कर्ता - क्रिया - कर्म।

वृक्ष आरेख tree diagram

किसी नियम समुच्चय द्वारा प्रजनित वाक्य की आन्तरिक सोपानिक संरचना को दर्शाने के लिए प्रजनक व्याकरण में एक द्विआयामी आरेख का प्रयोग किया गया जिसे वृक्ष आरेख कहते हैं। इस वृक्ष की जड़ सर्वाधिक ऊपर आरम्भिक प्रतीक 'वा' (S) के रूप में होती है। इस सर्वोच्च बिन्दु से नियमानुसार, शाखाएं (आसन्धि) जैसे - सप. क्रिप. आदि निकलती हैं। वृक्ष के भागों के आन्तरिक सम्बन्ध परिवार वृक्ष की शब्दावली में व्याख्यायित किए जाते हैं, जैसे - एक आसन्धि से विकसित शाखाएं उसकी पुत्री और व्युत्पन्न करने वाली आसन्धि माँ तथा विकसित शाखाएं परस्पर भगिनी कहलाती हैं। किसी वृक्ष का

उपवर्ग उपवृक्ष कहलाता है, उदाहरणार्थ -



वृत्ति mood

जो कार्य - व्यापार लौकिक जगत में घटित न हुए हों,और जो वक्ता के मस्तिष्क में ही (इच्छा, सम्भावना, अनुमान, आज्ञा आदि के रूप में) निहित हों उसका सम्बन्ध वृत्ति से होता है। इस प्रकार वृत्ति कथन / वाक्य का मनोवैज्ञानिक पक्ष हुआ। यह कार्य - व्यापार की उस अवस्था या रीति को व्यक्त करता है जिसे वक्ता मानसिक स्तर पर अपनी चेतना तथा अपने दृष्टिकोण से देखता है। उसकी यह दृष्टि इच्छा, संकल्प या अनुमान आदि से प्रेरित हो सकती है। अत: वृत्ति से कार्य - व्यापार के प्रति वक्ता की अभिवृत्ति या कर्ता और कार्य - व्यापार के सम्बन्ध में उसके दृष्टिकोण का बोध होता है (शायद वह आए, वे आते होंगे आदि)।

वृत्ति भाषा jargon

अबोधगम्य या निरर्थक शब्दावली के साथ जो भाषा किसी विशिष्ट समुदाय, समूह या व्यवसाय के लोगों में पनपती है उसे वृत्ति भाषा कहते हैं। बोली का यह रूप औद्योगिक वातावरण में ही पनपता है। किसी व्यवसाय में लगे हुए लोगों को वह बोधगम्य होती है जब कि सामान्य जनता उसे नहीं समझ पाती और सुनते हुए भी अनभिज्ञ रहती है, यथा - प्राचीन ग्रीक के जुलाहों की भाषा में अपनी विशिष्टता थी।

वैकल्पिक optional

अमरीकी भाषाविद् नोआम चॉमस्की ने अपनी पुस्तक 'सिंटैक्टिक स्ट्रक्चर्स' (1957) में दो प्रकार के रूपान्तरण नियम निरूपित किए-वैकल्पिक एवं अनिवार्य। ऐसे रूपान्तरण जो व्युत्पत्ति के निश्चित चरण पर लागू हो सकते हैं किन्तु जिनका अनुप्रयोग वाक्य की सुगठनता के लिए आवश्यक नहीं होता है वैकल्पिक कहलाते हैं, जैसे - सकारात्मक से नकारात्मक, कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य, निर्देशक से प्रश्नवाचक रूपान्तरण।

वैयक्तिक privative

प्राग् सम्प्रदाय में स्वीकृत एक प्रतियोग जो **क्रमिक** एवं **समतुलित** से भिन्न होता है। यह **प्रतियोग द्विचर** होता है और इसका एक सदस्य अभिलक्षण युक्त होने के कारण चिह्नित होता है और दूसरे में उस अभिलक्षण का अभाव (**अचिह्नित**) होता है, जैसे - अंग्रेजी में /p/ vs /b/ की भिन्नता यहाँ **द्वितीय** में घोषता है।

व्यंजन consonant

सामान्यत: ध्वनियों को दो वर्गों में विभाजित किया जाता है स्वर एवं **व्यञ्जन**। वे ध्वनियाँ जिनके उच्चारण में वायु पूर्णत: या अंशत: बाधित होकर मुख अथवा नासिका विवर से निसृत होती है व्यञ्जन कहलाती हैं। ये संघर्षी एवं संघर्षहीन दोनों होते हैं। प्राय: भाषाओं में अनाक्षरिक व्यञ्जन ही मिलते हैं तथा ये स्वरों की तुलना में कम मुखर होते हैं। कुछ भाषाओं में अंत:श्वसित वायु से भी व्यञ्जन उच्चरित होते हैं, किन्तु ऐसे व्यञ्जनों की संख्या अपेक्षाकृत बहुत कम है। व्यञ्जनों को उच्चारण-स्थान एवं प्रयत्न इन दो आधारों पर वर्गीकृत किया जाता है।

कतिपय ध्वनियाँ औच्चारिक दृष्टि से स्वर के उच्चारण के सन्निकट एवं भाषा में व्यवहार की दृष्टि से व्यंजन के अनुरूप होती हैं, इनमें कतिपय विशेषताएं स्वर की ओर कतिपय व्यञ्जन की होती हैं। प्राय: ऐसी ध्वनियों को अर्द्ध स्वर कहते हैं किन्तु अमरीकी भाषाविद् हॉकेट अर्द्ध व्यंजन नाम भी सही मानते हैं। इनके उच्चारण में अवयव एक स्वर स्थिति से दूसरे की दिशा में गतिशील होते हैं। साधारणत: भाषाओं में [w] तथा [j] ये दो अर्द्ध स्वर मिलते हैं।

अमरीकी भाषाविद् के.एल. पाइक ने व्यञ्जन शब्द को स्वनप्रक्रियात्मक स्तर के विश्लेषण के लिए सुरक्षित रखने तथा स्वनिक स्तर के लिए व्यञ्जनक (contoid) शब्द का निर्माण करने का प्रस्ताव रखा। इस आधार पर [p] व्यञ्जन एवं व्यञ्जनक ध्वनि होगी तथा [l] व्यञ्जन एवं स्वरक (vocoid)।

व्यंजनांत अक्षर closed syllable

वह अक्षर जिसके अन्त में (जिसके शिखर के बाद) कोई व्यञ्जन ध्वनि हो व्यंजनान्त अक्षर कहलाता है, यथा - सत् , चित् ।

व्यंजनाभ contoid

अमरीकी ध्वनिशास्त्री के.एल. पाइक ने स्वनविज्ञान एवं स्वनप्रक्रियात्मक स्तर

पर व्यञ्जन की अवधारणा में आगत भिन्नता को दर्शाने के लिए इस पारिभाषिक शब्द की स्थापना की। स्वनविज्ञान के आधार पर व्यञ्जन की परिभाषा ऐसी ध्वनि के रूप में की जाती है जिसके उच्चारण में वाक् पथ में वायु धारा का पूर्ण अवरोध हो या उच्चारण के समय मुख विवर में घर्षण हो। स्वनप्रक्रियात्मक दृष्टि से यह एक ऐसी इकाई है जो अक्षरों के उपांत पर कार्य करती है किन्तु कतिपय ध्वनियों (य, व, र, ल) पर यह आधार लागू नहीं होते हैं क्योंकि ये ध्वनियां अक्षरों में व्यञ्जनवत कार्य करती हैं जबकि स्वनात्मक दृष्टि से स्वर की भांति होती हैं। इन्हीं ध्वनियों के विश्लेषण के लिए पाइक अलग-अलग पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग करते हैं । इस प्रकार व्यंजनाभ किसी व्यञ्जन के स्वनात्मक लक्षण वर्णन की ओर संकेत करता है तथा व्यंजन शब्द इसके प्रक्रियात्मक आशय का सूचक है।

व्यक्ति बोली idiolect

किसी व्यक्तिगत वक्ता की भाषिक व्यवस्था अर्थात् उसकी अपनी बोली व्यक्ति बोली कहलाती है। प्रत्येक व्यक्ति की बोली भिन्न होती है, इस दृष्टि से व्यक्ति समाज में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। बहुत सी व्यक्ति-बोलियों के सम्मिलित रूप का नाम ही बोली है।

व्यतिरेक contrast

भाषिक इकाइयों के मध्य की भिन्नता जो मुख्यत: अर्थ में अन्तर लाती है व्यतिरेक कहलाती है। इस अन्तर को प्रभेदक, प्रकार्यात्मक या सार्थक भी कहते हैं। व्यतिरेक का नियम भाषिक विश्लेषण का आधारिक एवं महत्त्वपूर्ण नियम है। भाषा के प्रत्येक स्तर पर व्यतिरेक के उदाहरण मिलते हैं, यथा - स्वनप्रक्रियात्मक स्तर पर /प/ और /फ/ के मध्य; व्याकरण के स्तर पर पदक्रम की विविध सम्भावनाओं के मध्य या विभक्तिपरक प्रत्ययों के मध्य।

कुछ विद्वान प्रतियोग शब्द का व्यवहार इसी अर्थ में करते हैं जबकि कतिपय उपागमों में भाषिक इकाइयों के मध्य प्राप्त भिन्नता के लिए प्रतियोग शब्द का प्रयोग तथा श्रृंखलात्मक भिन्नता के लिए व्यतिरेक का प्रयोग किया गया है।

व्यतिरेकी विश्लेषण दो वस्तुओं के बीच पाई जाने वाली संरचनात्मक समानता और विषमता के निर्धारण का क्षेत्र है। इसके अन्तर्गत दो भाषाओं की संरचनात्मक भिन्नता के बिन्दुओं की पहचान की जाती है। अनुवाद, भाषा शिक्षण जैसे अनुप्रयुक्त क्षेत्रों के सन्दर्भ में इसका अध्ययन विश्लेषण किया जाता है। ये विश्लेषण संकालिक होते हैं।

व्यवस्था system

भाषा संगठन व्यवस्थित सम्बन्धों के एक जाल द्वारा निर्मित होता है अत: भाषा समग्रता को एक व्यवस्था का नाम दिया जाता है जिसमें प्राय: एकाधिक उपव्यवस्थाएं सोपानिक क्रम में संगठित होती हैं। एक मत के अनुसार भाषा व्यवस्था स्वनप्रक्रियात्मक, व्याकरणिक एवं आर्थी व्यवस्था द्वारा निर्मित होती है।

व्यवस्थापक व्याकरण Systemic grammar

भाषा की इस विश्लेषण-पद्धति के जनक एम.ए. के. हॅलिडे थे। जिनके सिद्धान्तों के कई मूलसूत्र फर्थ के सिद्धान्तों में बीज रूप में मिलते हैं। प्रारम्भ में इसे **माप और कोटि व्याकरण** नाम दिया गया तथा चार प्रमुख कोटियों-व्यवस्था, इकाई, संरचना तथा वर्ग की चर्चा की गई। इस सिद्धान्त के विकास के साथ 'व्यवस्था' इसकी प्रमुख एवं केन्द्रीय कोटि मानी गई तथा इसका नाम परिवर्तित हो गया। इनके मतानुसार भाषा और अर्थ परस्पर इतनी जटिलता से सम्पृक्त है कि कोई भी एकदिशीय या एक व्यवस्थीय विवरण भाषा के समस्त पक्षों की व्याख्या नहीं कर सकता है।

व्यवस्थापरक स्वनविज्ञान systematic phonetics

प्रजनक स्वनप्रकिया में प्रतिरूपण का एक स्तर जो उच्चारण के व्यवस्थित अभिलक्षणों का स्वनिक लिप्यंकन करता है। इसके अन्तर्गत उच्चारण के प्रयोग सम्बन्धी तत्त्वों को महत्त्व नहीं दिया जाता है। यह व्याकरण के स्वनप्रक्रियात्मक घटक के नियमों द्वारा व्यवस्थापरक स्वनिम स्तर के प्रतिरूपण से सम्बन्धित होता है। इसे ध्वनि का बहिस्तलीय स्तर भी कहा जाता है।

व्यवस्थापरक स्वनिमविज्ञान systematic phonemics

प्रजनक स्वन प्रक्रिया में निरूपित प्रतिरूपण का एक स्तर जो व्याकरणिक संरचनाओं को परस्पर सम्बद्ध करने वाले एक मूलाधार रूप की स्थापना करता है। यह मूलाधार रूप समस्त स्वनप्रक्रियात्मक भिन्नताओं की व्याख्या में सहायक होताहै। चॉमस्की ने संरचनात्मक भाषाविज्ञान के स्वनिम स्तर से भिन्नता दर्शाने के लिए 'व्यवस्थापरक' शब्द का प्रयोग किया। यह स्तर संरचनात्मक भाषाविज्ञान के रूपस्वनिमिक स्तर के समानान्तर है। इस स्तर की इकाई **व्यवस्थापरक स्वनिम** कहलाती है जो पारम्परिक स्वनिमिक विज्ञान के स्वतन्त्र स्वनिम से भिन्न अवधारणा है। वहाँ स्वनिम व्याकरणिक संरचना के सन्दर्भ में विश्लेषित नहीं किया गया।

व्यवहारवाद behaviourism

मनोविज्ञान का एक सम्प्रदाय जिसका उद्देश्य प्रेक्षणीय एवं परिमेय व्यवहार का अध्ययन है। भाषाविज्ञान में इस सम्प्रदाय का सर्वाधिक प्रभाव अमरीकी भाषाविद् ब्लूमफील्ड के कार्यों में दृष्टिगत होता है। फलस्वरूप अमरीकी भाषाविदों ने परिशुद्ध खोज प्रक्रियाओं की उपयोगिता पर अधिक बल दिया तथा अर्थ की व्याख्या किसी परिस्थिति में भाग लेने वाले व्यक्ति के प्रेक्षणीय व्यवहार (उद्दीपन-अनुक्रिया) के आधार पर करने की चेष्टा की। भाषा के व्यवहारवादी वर्णन की कमियों की आलोचना 1950 में चॉमस्की ने अपने कार्यों में की तथा मनोवादी विचारधारा को बढ़ावा दिया।

व्याकरण grammar

भाषाविज्ञान का एक प्रमुख पारिभाषिक शब्द। सूक्ष्म अर्थ में जिसे संरचनात्मक व्यवस्था के एक स्तर रूप में ग्रहण किया जाता है और जिसको स्वनप्रक्रिया एवं अर्थ से स्वतन्त्र रूप में विश्लेषित किया जा सकता है। सामान्यत: जो रूपरचना एवं वाक्यरचना दो उपवर्गों में विभाज्य होता है। इस आशय में व्याकरण से तात्पर्य उस ज्ञान विधा से जिसके अन्तर्गत शब्द के घटकों से निर्मित रचनाओं द्वारा संयोजित वाक्य का विश्लेषण वर्णन किया जाता है। वाक्य के अंश किन सम्बन्धों में आबद्ध हो वाक्य को निश्चित स्वरूप प्रदान करते हैं, वाक्य की सीमान्तर्गत उनके वितरण एवं प्रकार्य क्या हैं - आदि का अध्ययन व्याकरण की परिसीमा में आता है। विस्तृत अर्थ में व्याकरण के निम्नलिखित प्रकारों का उल्लेख मिलता है।

मातृभाषाभाषी द्वारा बोली गई सामग्री के आधार पर प्राप्त मौखिक या लिखित भाषिक उद्देश्यों का व्यवस्थित वर्णन **वर्णनात्मक व्याकरण** कहलाता है। यदि विश्लेषण कर्ता सैद्धान्तिक दृष्टि से प्रबुद्ध है तो वह भाषा की समग्र संरचना से सम्बन्धित वर्णन करने में सक्षम होता है। यदि ये कथन वक्ता की भाषा क्षमता का स्पष्ट एवं सुनिश्चित वर्णन करते हैं तो ऐसा व्याकरण वर्णनात्मक दृष्टि से उपयुक्त एवं प्रजनक कहा जा सकता है। प्राचीन समय में **निर्देशात्मक व्याकरण** अर्थात् जिसका उद्देश्य किसी भाषा के सामाजिक एवं शैलीगत शुद्ध प्रयोग के लिए नियमों का प्रतिपादन था, प्रचलित था तथा इसके विरोध एवं विपरीत अर्थ में वर्णनात्मक व्याकरण को रखा गया।

सैद्धान्तिक व्याकरण वैयक्तिक भाषाओं के अध्ययन से ऊपर उठ भाषिक सामग्री का प्रयोग सैद्धान्तिक अन्तर्दृष्टि के विकास के लिए करता है जिसके फलस्वरूप सफल भाषिक विश्लेषण के लिए आवश्यक वर्गीकरण एवं प्रक्रिया से सम्बन्धित सूचनाएं प्राप्त होती हैं। यदि व्याकरण भाषिक रूपों की संरचना उनके वितरण, विश्लेषण तक सीमित

हो तो उसे **रूपनिष्ठ या संरचनात्मक व्याकरण** कहते हैं।

वर्णन में ऐतिहासिक आयाम समायोजित करने पर उसकी मनोदृष्टि ऐतिहासिक हो जाती है। **ऐतिहासिक व्याकरण** भाषाओं के अर्वाचीन एवं नवीन दोनों रूपों के मध्य के विकास को ज्ञात करने का प्रयास करता है। दो या दो से अधिक भाषाओं (हिन्दी, मराठी, गुजराती) या दो भाषिक स्थितियों (जैसे - प्राचीन हिन्दी एवं नवीन हिन्दी) की तुलना कर समानताओं एवं असमानताओं का उद्घाटन **तुलनात्मक व्याकरण** का उद्देश्य है। यह वर्णनात्मक एवं ऐतिहासिक व्याकरण से प्राप्त विश्लेषण पर निर्भर करता है। **शैक्षिक व्याकरण** का निर्माण भाषा शिक्षण को ध्यान में रखकर अथवा मातृभाषा के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए किया जाता है।

पारम्परिक व्याकरण का प्रयोग उन समस्त मनोदृष्टियों एवं पद्धतियों के लिए सम्मिलित रूप में होता है जो व्याकरणिक अध्ययन के उस काल में हुए जिसे भाषिक पूर्व मानते हैं, यथा- रोमन, ग्रीक आदि व्याकरण सम्प्रदाय।

व्याकरणिकता grammaticality

किसी भाषा के नियमों के अनुरूप निर्मित वाक्य व्याकरणिक कहलाता है। ऐसे वाक्य जो नियमों के अनुसार न हों अर्थात् अव्याकरणिक हों उनके पूर्व * चिह्न लगाकर उन्हें चिह्नित किया जाता है। मातृभाषाभाषियों के व्याकरणिकता सम्बन्धी निर्णयों में मतभेद हो सकता है। प्रजनक भाषाशास्त्री व्याकरण का उद्देश्य ही व्याकरणिक वाक्यों का निरूपण एवं अव्याकरणिक से भेद मानते हैं। व्याकरणिकता के विकल्प रूप में सुगठनता शब्द का भी प्रयोग मिलता है। सुगठनता सम्बन्धी निर्णय वाक्य के अर्थ पर निर्भर नहीं करते हैं। ऐसा सम्भव है कि कोई वाक्य ग्राह्य हो पर सुगठित न हो अथवा सुगठित हो पर ग्राह्य न हो।

व्याकृति construe

व्याकरणिक विश्लेषण में प्राप्त एक पारम्परिक पारिभाषिक शब्द जो शब्दों को रचनात्मक सम्बन्धों में व्यवस्थित करने वाली प्रक्रिया एवं रचनात्मक सम्बन्धों के अध्ययन एवं निर्वचन को सन्दर्भित करता है। आधुनिक प्रजनक वाक्य रचना में इस शब्द का पुन: प्रयोग प्रारम्भ हुआ। वहाँ यह रूपान्तरण नियमों के (व्याकृति नियमों) के अनुप्रयोग के फलस्वरूप कई प्रकार के घटकों (अन्वादेशक, पश्चोन्मुखी) के मध्य प्राप्त सम्बन्धों का स्पष्टीकरण करता है।

व्याख्यात्मक explanatory

चॉमस्की द्वारा प्रतिपादित प्रजनक भाषाविज्ञान में व्याकरण को तीन उपयुक्तता स्तरों पर परखा गया - प्रेक्षणमूलक, वर्णनात्मक एवं व्याख्यात्मक। यदि व्याकरण व्याकरणिक एवं अव्याकरणिक कथनों के मध्य अन्तर स्थापित करने में समर्थ है तो वह प्रथम दृष्टि से उपयुक्त कहा जा सकता है। जब व्याकरण मातृभाषाभाषी की भाषिक अन्त:- प्रज्ञा का सही वर्णन कर भाषा की मूलाधार नियमितताओं से सम्बन्धित सामान्यीकरण प्रस्तुत करने में सक्षम हो तो वह वर्णनात्मक दृष्टि से उपयुक्त कहा जाता है। जब व्याकरण में भाषिक सामग्री के परीक्षण एवं विश्लेषण की क्षमता हो; प्राप्त सामग्री का सम्यक् वर्णन कर सके तथा सामग्री के आधार पर निर्मित नियमों की पूर्ण एवं निर्भ्रम व्याख्या कर सके तो उसे व्याख्यात्मक दृष्टि से उपयुक्त कहा जाता है।

व्याख्येय interpretive

प्रजनक भाषाविज्ञान में प्रतिरूपण स्तरों के बीच घटित एक प्रकार के सम्बन्ध को व्याख्येय कहते हैं। मूलत: इस शब्द का प्रयोग प्रजनक व्याकरण की स्टैन्डर्ड थ्योरी में किया गया। इस सिद्धान्त में वाक्य की आन्तरिक संरचना को आर्थी घटक से सम्बद्ध करने वाले आर्थी नियमों तथा वाक्य की बाह्य सरंचना को स्वनप्रक्रियात्मक घटक से सम्बद्ध करने वाले स्वनप्रक्रियात्मक नियमों दोनों को व्याख्येय / निर्वचनात्मक मानते हैं अर्थात् ये नियम वाक्य संरचना के निर्गम का आर्थी एवं स्वनिक प्रतिरूपण निर्धारित कर उनकी व्याख्या करते हैं जिसके आधार पर उस वाक्य का अर्थ पक्ष एवं उच्चारण ज्ञात होता है। **व्याख्येय अर्थ विज्ञान** के विचारानुसार वाक्य रचना के स्तर में ही व्याकरण की समस्त प्रजनक क्षमता समाहित होती है। 1970 के प्रारम्भ में प्रजनक अर्थविज्ञानविदों ने वाक्य रचना को व्याख्येय माना अर्थ को नहीं।

व्याघात interference

किसी अन्य भाषा से सम्पर्क के कारण वक्ता जो त्रुटियाँ करता है उन्हें व्याघात कहते हैं। विदेशी भाषा शिक्षण में वक्ता की अपनी मातृभाषा व्याघात डालती है। प्रथम भाषा ज्ञान के कारण वक्ता कई स्थलों पर संगत न होने पर भी प्रथम भाषा के नियम लागू करता है जिसके फलस्वरूप उसकी भाषा द्वितीय भाषा के मानक रूप से भिन्न हो जाती है। यह भिन्नता या त्रुटि नकारात्मक अंतरण या व्यतिकरण / व्याघात कहलाता है। इसके पीछे मुख्यत: अन्तर्भाषायी तदरूपीकरण की मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया काम करती है जिसके फलस्वरूप द्विभाषी सतही सादृश के आधार पर दूसरी भाषा के तत्त्वों को अपनी भाषा के

समरूप समझ लेता है और उनका वैसा ही प्रयोग करने लगता है, जैसे - हिन्दी वक्ता अंग्रेजी के संघर्षी थ, द (thin, there) को हिन्दी स्पर्श थ, द समझता है।

व्यापक सांचा overall pattern

बोली विज्ञान के अन्तर्गत जब दो बोलियों की समानताओं एवं भिन्नताओं, दोनों का अध्ययन किया जाए तो इसे व्यापक सांचा कहते हैं। इसके अन्तर्गत ध्वन्यात्मक एवं व्याकरणिक आधार पर बोलियों की समानताओं एवं विषमताओं को निश्चित करते हैं।

व्युत्पत्ति etymology / derivation

शब्द निर्माण की एक प्रमुख प्रक्रिया व्युत्पत्ति है जिसके द्वारा प्राय: भाषाओं में नवीन शब्दों की रचना होती है (यथा - कला-कलाओं, कलात्मक, कलात्मकता आदि)। मूल रूप या शब्द में संयुक्त होने वाले प्रत्ययों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है (i) **व्युत्पादी** (-ता, त्मक, -इक) (ii) **विभक्तिपरक** (-ओ, -ए,-ई)। व्युत्पादी प्रत्यय के संयोजन से मूल रूप (रूपिम) का व्याकरणिक वर्ग परिवर्तित होता है, यथा - शब्द संज्ञा से क्रिया या संज्ञा से विशेषण में परिवर्तित हो जाता है (इतिहास>ऐतिहासिक)। व्युत्पादी प्रत्यय के उपरान्त अन्य प्रत्यय संयुक्त हो सकते हैं तथा प्राय: इनका अपना स्वतन्त्र अर्थ होता है। जिस तत्त्व में ये प्रत्यय जुड़ते हैं पारिभाषिक शब्दावली में वह **धातु** (root) कहलाता है। धातु एवं प्रत्यय के संयुक्त रूप को **प्रातिपदिक** कहते हैं जिसमें आगे विभक्तिपरक प्रत्यय संयोजन की सम्भावना रहती है।

प्रजनक व्याकरण में व्युत्पत्ति शब्द एक आरम्भिक प्रतीक से अन्त्य माला तक वाक्य के प्रजनन में कार्यरत रूपात्मक चरणों की ओर संकेत करता है और इसके अन्तर्गत अनुप्रयुक्त पदबन्ध संरचना नियमों के सम्पूर्ण समुच्चय, रूपान्तरण आदि की गणना की जाती है। इस प्रकार रूपान्तरण नियम के अनुप्रयोग के उपरान्त प्राप्त कोई पदबन्ध चिह्नक इसका उदाहरण कहा जा सकता है।

ऐतिहासिक भाषाविज्ञान के अन्तर्गत किसी भाषिक रूप, भाषा की उत्पत्ति या भाषा के ऐतिहासिक विकासक्रम को दर्शाने के लिए व्युत्पत्ति शब्द का प्रयोग किया जाता है। विद्वानों की यह मान्यता है कि किसी भाषा की ध्वनियाँ, शब्द एवं संरचनाएँ उसकी पूर्ववर्ती अवस्था में प्राप्त संवादी रूपों से ही व्युत्पन्न होती हैं।

श

शक्तिशाली powerful

प्रजनक सिद्धान्त में व्याकरण का मूल्यांकन करने वाला पारिभाषिक शब्द। यदि एक व्याकरण दूसरे व्याकरण की तुलना में अधिक भाषाओं का प्रजनन करे तो वह दूसरे व्याकरण से शक्तिशाली माना जाएगा। प्रजनक व्याकरण में प्रबल प्रजनन शक्ति एवं दुर्बल प्रजनन शक्ति का भेद भी मिलता है। यदि कोई व्याकरण (नियम समुच्चय) अधिक व्याकरणिक वाक्यों का प्रजनन करें तो प्रबल प्रजनन शक्ति वाला माना जाता है साथ ही वह व्याकरण अधिक प्रबल होगा जो वाक्य के अन्तर्सम्बन्धों को स्पष्ट करने वाले संरचनात्मक वर्णन को प्रस्तुत करे। व्याकरण ऐसा नहीं होना चाहिए जो अव्याकरणिक वाक्यों को प्रजनित करे और ऐसे संरचनात्मक वर्णन प्रस्तुत करे जो अन्त: प्रज्ञात्मक दृष्टि से अविश्वस्त हों।

शक्य विराम potential pause

व्याकरणिक इकाई के रूप में शब्द को निर्धारित करने वाला एक अभिलक्षण। वाक् व्यवहार में विराम का प्रयोग सदैव शब्द के पहले या बाद में, उसकी सीमा पर किया जाता है शब्द की संरचना में यह प्रयोग सम्भव नहीं होता है।

शब्द word

पारम्परिक व्याकरण में शब्द को आधारभूत इकाई माना गया तथा इसे स्वनों की एक विशिष्ट रचना जो एक निश्चित अर्थ से सम्बन्धित होती हैं और जिसका एक विशिष्ट प्रकार्य होता है इस रूप में परिभाषित किया गया। संरचनात्मक अध्ययन के अन्तर्गत शब्द को लघुतम मुक्त रूप माना गया जिसका विशिष्ट स्वनिमिक स्वरूप, अर्थ एवं व्याकरणिक प्रकार्य होता है। स्वतन्त्र होने के साथ-साथ शब्द की एक विशेषता यह है कि वह अपने स्वरूप में व्याघात सहन नहीं करता है और विराम सदैव शब्द के आदि या अन्त में आता है। सोपानिक क्रम में शब्द रूपिम के ऊपर की इकाई है।

शब्द कोश lexicon

किसी भाषा की समस्त शब्दावली उसके शब्द कोश का अंग होती है। इस पारिभाषिक शब्द का प्रजनक व्याकरण में विशेष महत्त्व है। प्रजनक व्याकरण में भाषा के कोशीय मदों से सम्बन्धित समस्त संरचनात्मक विशेषताएं जिस घटक में समाहित होती हैं उसे शब्द कोश की संज्ञा देते हैं। परवर्ती प्रारूप में इन विशेषताओं को अभिलक्षण रूप में रूपायित कर [ ] कोष्ठक में रखा गया।

शब्द-क्रम word-order

बृहत्तर भाषिक इकाई में शब्दों के अनुक्रमिक विन्यास को शब्द-क्रम की संज्ञा दी जाती है। कुछ भाषाओं में शब्द-क्रम विशिष्ट व्याकरणिक सम्बन्धों की अभिव्यक्ति करता है और दृढ़ होने के कारण शीघ्र परिवर्तित नहीं होता है, यथा - हिन्दी, अंग्रेजी जबकि कुछ भाषाएं लचीले क्रम वाली होती हैं, यथा - संस्कृत, लैटिन।

शब्द एवं रूपावली word and paradigm

व्याकरणिक विश्लेषण एवं वर्णन का एक प्रारूप जो शब्द को विश्लेषण की आधारभूत इकाई स्वीकार करता है। वर्णन का यह पारम्परिक प्रारूप संस्कृत, लैटिन व्याकरणों में मिलता है। यह प्रारूप वर्णन के दो अन्य प्रारूपों-मद एवं विन्यास तथा मद एवं प्रक्रम का एक महत्त्वपूर्ण विकल्प है।

शब्द पूर्व pre-lexical

प्रजनक व्याकरण के कतिपय प्रारूपों में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द जो आन्तरिक संरचना के प्रजनन के दो चरणों में से प्रथम चरण की ओर संकेत करता है। इस चरण में पदबन्ध चिह्नक प्रजनित होते हैं जिनमें अन्त्य आसन्धियों की अभिव्यक्ति Δ (डेल्टा) तत्त्व के रूप में होती है। द्वितीय चरण में इनके स्थान पर कोशीय मदों का प्रयोग जटिल प्रतीकों के रूप में किया जाता है।

शब्द प्रकार्य व्याकरण lexical functional grammar

इस भाषिक सिद्धान्त के अनुसार वाक्य की वाक्यीय संरचना का निर्माण एक

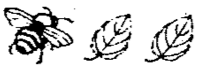
घटक संरचना तथा सतही व्याकरणिक सम्बन्धों को रूपायित करने वाली प्रकार्य संरचना द्वारा होता है। रूपान्तरण व्याकरण में वाक्यीय घटक का निरूप्य प्रकार्य इस उपागम में कोशीय घटक का माना गया।

शब्द रचना word formation

शब्द रचना से तात्पर्य उन समस्त रूपरचनात्मक भिन्नताओं की प्रक्रिया से है जो शब्द के निर्माण में संलग्न होती है। इसके दो वर्ग किए जाते हैं विभक्ति द्वारा शब्द रचना एवं व्युत्पत्ति द्वारा शब्द रचना। प्रथम व्याकरणिक सम्बन्धों की ओर संकेत करती है तथा द्वितीय कोशीय सम्बन्धों की अभिव्यक्ति करती है। कुछ विद्वान द्वितीय वर्ग को ही शब्द-रचना का अंग मानते हैं और इसे दो वर्गों व्युत्पादक एवं समास में वर्गीकृत करते हैं।

प्रजनक व्याकरण में शब्द-रचना नियम उन्हें कहते हैं जो एक पदवर्ग के शब्दों द्वारा दूसरे पदवर्ग के शब्दों का निर्माण करते हैं।

शब्द लिपि logographic writing

लिपि का एक प्रकार जिसमें प्रत्येक प्रतीक एक शब्द विशेष के लिए प्रयुक्त किया जाता है। जब लिपि की इस अवस्था में ध्वनि तत्त्व का मिश्रण प्रारम्भ हुआ तब प्रतीक वस्तु के स्थान पर उसकी नाम ध्वनि का बोध कराने लगे, उदाहरणार्थ  belife  belives।

शब्द शक्ति shabda shakti

संस्कृत वैयाकरण नागेश ने अर्थज्ञान के साधनों के विवेचन में वृत्तिज्ञान को मुख्य साधन माना है। ये वृत्तियाँ तीन प्रकार की हैं - अभिधा, लक्षणा, व्यंजना। संकेतित या साधारण बोलचाल में प्रचलित अर्थ का बोध कराने वाली शक्ति अभिधा कहलाती है। अभिधा द्वारा बोधित अर्थ अभिधेयार्थ, वाक्यार्थ या मुख्यार्थ भी कहलाता है। मुख्यार्थ के बाधित होने पर रूढ़ि या प्रयोजन के सहारे दूसरे अर्थ की कल्पित प्रतीति कराने वाली शक्ति लक्षणा है। अभिधा से अर्थ न निकलने पर इस शक्ति द्वारा अर्थ निकाला जाता है। मुख्यार्थ एवं लक्षणार्थ से अर्थ न निकल सकने पर उससे भिन्न अर्थ की प्रतीति कराने वाली शक्ति व्यंजना कहलाती है।

शब्द समूह lexis

किसी भाषा की समस्त शब्दावली उसका शब्द समूह कहलाती है। शब्द समूह की इकाई कोशीय मद या कोशीम कहलाती है। किसी भाषा के कोशीय मदों की समस्त प्रविष्टियाँ भाषा के कोश का निर्माण करती हैं। जिस रूप में कोशीय मद भाषा में व्यवस्थित होते हैं उसे **कोशीय संरचना** की संज्ञा दी जाती है। सदृश आर्थी अभिलक्षण वाले मदों का विशिष्ट समूह **कोशीय समुच्चय** कहलाता है। किसी भाषा के कोशीय क्षेत्र में निश्चित संरचनात्मक स्थान पर आने वाले कोशीम की अनुपस्थिति शाब्दिक रिक्ति (lexical gap) कहलाता है, यथा - अंग्रेजी में girl तथा boy; daughter और son कोशीम हैं किन्तु cousin के लिए स्त्रीलिंग एवं पुर्लिंग में स्वतन्त्र कोशीम नहीं है।

प्रजनक भाषाविज्ञान में **कोशीय स्वनप्रक्रिया** एवं **कोशीय वाक्यरचना** पारिभाषिक शब्द मिलते हैं। प्रथम उपागम में कतिपय स्वनप्रक्रियात्मक नियमों का स्थानान्तरण शब्दकोश में किया जाता है और इन्हें रूपरचनात्मक घटक से जोड़ते हैं। द्वितीय उपागम शब्द कोश में कतिपय वाक्यीय नियमों को समाविष्ट करता है।

भाषाविज्ञान में व्याकरणिक शब्द के विलोम रूप में **कोशीय शब्द** संकल्पना भी मिलती है। प्रथम उन शब्दों की ओर संकेत करता है जिनका कार्य व्याकरणिक सम्बन्धों की अभिव्यक्ति है (यथा - में, ने, से आदि) द्वितीय वर्ग में वे शब्द आते हैं जिनके कोशीय अर्थ होते हैं अर्थात् इनमें आर्थी आशय होता है।

शब्द-सांख्यिकी lexis-statistics

भाषाकालक्रम विज्ञान में प्रयुक्त एक तकनीकी जिसकी सहायता से विद्वान अनुमानत: सम्बन्धित भाषाओं के कोशीय मद समुच्चयों में होने वाले परिवर्तन की गतियों के मध्य मात्रात्मक तुलना करने का प्रयास कर दो भाषाओं के अलग-अलग होने वाले काल की दूरी का पता लगाते हैं। अन्य प्रकार की कोशीय तुलनाएँ, यथा - पारस्परिक बोधगम्यता का निर्धारण आदि भी इसी पारिभाषिक शब्द द्वारा सन्दर्भित होती हैं।

शब्दार्थविज्ञान semology

शब्द विज्ञान की उपशाखा जिसके अन्तर्गत शब्दार्थ का स्वरूप, उसके प्रकार. परिवर्तन के कारण आदि बातों का अध्ययन किया जाता है। यह संकेत्य है कि अर्थ केवल शब्द का ही नहीं होता शब्द से बड़ी भाषिक इकाई का भी होता है, साथ ही यह भी सम्भव है कि शब्द से बड़ी इकाई का अर्थ उसमें प्रयुक्त शब्दों में न हो, उदाहरणार्थ - Is Ram going? वाक्य के तीनों शब्दों में 'क्या' का अर्थ नहीं है जबकि वाक्य में है। शब्दार्थ विज्ञान

का क्षेत्र मात्र शब्द के अर्थ का अध्ययन है भाषार्थ का नहीं, जो अर्थविज्ञान का विषय क्षेत्र है।

शब्दादेश metonymy

अर्थ परिवर्तन का एक प्रकार जिसमें समय और स्थानिक समीपता के आधार पर किसी शब्द को नया अर्थ आदेश होता है, यथा - अंग्रेजी शब्द jaw का प्राचीन अर्थ cheek (गाल) था जो स्थानिक समीपता के कारण आज 'जबड़ा' अर्थ में प्रयुक्त होने लगा।

शब्दावली vocabulary

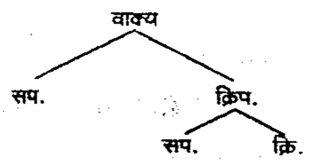
किसी भाषा का शब्द समूह या भंडार उसकी शब्दावली कहलाती है। भाषाविज्ञान में इसका प्रयोग सामान्य अर्थ में किया जाता है तथा इससे सम्बन्धित पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग lexi-प्रारम्भ से किया जाता है, यथा - lexis, lexicon इन दोनों का शब्द कोश या शब्द समूह अर्थ में ही प्रयोग किया जाता है।

शर्त condition

किसी सिद्धान्त, व्याकरण या विशिष्ट विश्लेषण के मूल्यांकन के लिए जिन तत्त्वों का होना आवश्यक हो, जैसे-बाह्य उपयुक्तता, सामान्यीकरण, सरलता आदि उन्हें 'शर्त' की संज्ञा देते हैं। दूसरे शब्दों में, किसी विश्लेषण के पूर्व जिन आधारों का होना अनिवार्य हो उन्हें सन्दर्भित करने वाला शब्द 'शर्त' कहलाता है। व्यवस्थापरक व्याकरण में प्रविष्टि परिस्थितियाँ संरचनात्मक आधार को स्पष्ट करती हैं तथा किसी विशिष्ट व्याकरणिक व्यवस्था के कार्यशील होने के लिए इन संरचनात्मक आधारों का पूर्ण होना अनिवार्य है। प्रजनक भाषाविज्ञान में रूपान्तरण नियम के लिए input का कार्य करने वाले संरचनात्मक वर्णन उन शर्तों की चर्चा करते हैं नियम संक्रिया के पूर्व, जिनकी पूर्ति आवश्यक होती है।

शाखन branching

भाषाविज्ञान में प्रयुक्त एक पारिभाषिक शब्द जो अधोगमित एकरेखीय सम्बन्धों को सन्दर्भित करता है जो एक वंशवृक्ष रेखाचित्र की पहचान के द्योतक होते हैं, यथा-



इन वृक्षों को जनित करने वाले पदबन्ध संरचना नियम प्राय: **शाखन नियम** कहलाते हैं तथा इन आसंधियों को **शाखन आसंधि** कहते हैं।

शिक्षा shiksha

वैदिक मन्त्रों के उच्चारण को शुद्ध बनाये रखने के लिए जो अनेकविध प्रयत्न किये गये उनमें पदपाठ के बाद शिक्षा का स्थान आता है। शिक्षा का सम्बन्ध ध्वनि अध्ययन से था। स्थान, करण, प्रयत्न के आधार पर ध्वनियों का वर्गीकरण विवेचन तथा मात्रा, सुर, बलाघात सन्धि नियमों का निर्धारण शिक्षा के प्रमुख कार्य थे।

शिथिल lax

वे स्वन जिनके उच्चारण में मांसपेशियों का प्रयास/तनाव और गति कम होती है तथा जो अपेक्षाकृत लघु एवं अस्पष्ट होते हैं। इनकी तुलना में **दृढ़** स्वन के उच्चारण में मांसपेशियाँ तनी होती हैं और उच्चरित स्वन स्पष्ट एवं पूर्ण होते हैं। वाक् पथ के केन्द्रीय क्षेत्र से उच्चरित स्वर शिथिल वर्ग में आते हैं, यथा - इ, उ, अ तथा ई, ऊ, ए दृढ़ वर्ग में आते हैं।

शिथिल व्यंजन lax consonant

वागवयवों की मांसपेशियों की अपेक्षाकृत दुर्बल, तनाव रहित स्थिति में उच्चरित व्यंजन स्वन शिथिल कहलाते हैं। अंग्रेजी के (b, d, v, z) व्यंजन इस वर्ग में आते हैं।

शिशु शैली baby talk

वयस्क भाषा में प्राप्त समस्त भेदक विशेषताएं जो बच्चों से वार्तालाप के समय दृष्टिगत होती हैं। इसके अन्तर्गत वयस्कों द्वारा बोले गए चिया (चिड़िया), मम्मम (पानी), बज्जी (बाजार) शब्दों के अतिरिक्त, सरल वाक्य संरचनाओं (बज्जी जाना, पापा जाए) तथा कतिपय प्रकार की भाषिक अन्तर्क्रियाओं का विश्लेषण होता है। 1970 में शिशु शैली विश्लेषण और वर्णन भाषार्जन सम्बन्धी अध्ययनों का केन्द्र बन गया।

शीर्ष head

अन्त:केन्द्रिक पदबन्धों का वह केन्द्रीय तत्त्व जिसका वितरण एवं प्रकार्य सम्पूर्ण पदबन्ध की भाँति होता है, यथा - मेरे पड़ोस में रहने वाला लड़का पदबन्ध का शीर्षक

'लड़का' शब्द है। शीर्ष, पदबन्ध या वाक्य के अन्दर अंशों के मध्य अन्विति सम्बन्धों का निरूपण करता है तथा शीर्ष का वचन वाक्य की क्रिया के वचन को निर्धारित करता है जबकि 'लड़के एवं लड़कियों' पदबन्ध का दोनों में से कोई भी घटक शीर्ष हो सकता है।

शुद्धतावाद purism

भाषाविज्ञान की एक विचारधारा जिसके मतानुसार भाषा को बाह्य तत्त्वों से सुरक्षित एवं संरक्षित रखना अनिवार्य है जिससे भाषा में स्थिरता आए और परिवर्तन घटित न हों। अधिकतर भाषाविद् इस शुद्धतावादी विचारधारा को उचित नहीं मानते क्योंकि सामाजिक, सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक विकास से भाषा को संरक्षित रखना, बचाना सम्भव नहीं है।

शुद्ध स्वर / मूल स्वर pure vowel

वह स्वर जिसके उच्चारण में आदि से लेकर अन्त तक कोई परिवर्तन नहीं होता है, इसकी उच्चारण स्थिति सदा समान रहती है। इसे एकस्वरक भी कहते हैं। यह स्वर संयुक्तस्वर एवं श्रुति से व्यतिरेक प्रदर्शित करते हैं।

शून्य zero

विश्लेषण हेतु निरूपित की गई अमूर्त इकाई वाक्व्यवहार में जिसका मूर्त / भौतिक प्रतिरूपण नहीं होता है। इसका द्योतन ∅ प्रतीक द्वारा किया जाता है। हिन्दी रूपरचना में संज्ञा शब्दों के वचनत्व लक्षित करने वाले प्राय: तीन रूप मिलते हैं-एक वचन संज्ञा, बहुवचन संज्ञा, बहुवचन संज्ञा का परसर्गीय रूप, जैसे -

लड़का	लड़के	लड़कों
कुत्ता	कुत्ते	कुत्तों
मधुमक्खी	मधुमक्खियाँ	मधुमक्खियों

किन्तु कुछ शब्दों के द्वितीय सारिणी के रूपों में दृश्यमान रूप परिवर्तन के अभाव में ही कार्य घटित होता है, जैसे -

घर	घर	घरों
नौकर	नौकर	नौकरों

यहाँ एक वचन एवं बहुवचन के सामान्य रूप में रूपगत भिन्नता नहीं है इनके द्वारा अभिव्यक्त बहुवचनत्व वाक्य प्रयोग के उपरान्त ही स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है, जैसे-

यह घर छोटा है।

ये घर छोटे हैं।

द्वितीय वाक्य के घर शब्द को घर+ϕइस प्रकार विश्लेषित किया जाता है। कतिपय भाषाविद् **शून्य आर्टिकल** (अर्थात् जहाँ संज्ञा के पूर्व आर्टिकल का अभाव है), **शून्य संयोजक** (अर्थात् जहाँ संयोजक लुप्त है, जैसे-उसने कहा वह नहीं जाएगा में 'कि' लुप्त है), **शून्य अन्वादेशक** तथा कभी-कभी **शून्य स्वनिम** की भी चर्चा करते हैं।

शृंखला concatenation

विन्यासक्रमी एवं सारणिक के लिए कुछ विद्वानों ने क्रमशः श्रृंखला और वरण (choice) शब्दों का प्रयोग किया।

शृंखलित cantenative

क्रियापद के कतिपय व्याकरणिक वर्णन में प्रयुक्त एक पद जो ऐसी कोशीय क्रिया को सन्दर्भित करता है जो किसी अन्य असमापिका क्रिया रूप को निर्देशित करे, जैसे - अंग्रेजी वाक्य he hates waiting; he wants to go आदि।

शैक्षणिक भाषाविज्ञान educational linguistics

विद्यालय एवं अन्य शिक्षा सम्बन्धी संस्थानों में मातृ भाषा शिक्षण, अध्यापन के अध्ययन क्षेत्र में भाषिक सिद्धान्तों, पद्धतियों एवं वर्णनात्मक निष्कर्षों के अनुप्रयोग को शैक्षणिक भाषाविज्ञान कहा जाता है। इसके अन्तर्गत मुख्यतः विद्यालयों में हो रहे पठन-पाठन एवं लेखन, लहजा, बोली, भाषा बोलने एवं समझने की क्षमता (oracy), अध्ययन सामग्री में प्राप्त भाषा विविधता आदि विषयों का अध्ययन तथा भाषाविज्ञान एवं व्याकरण का अध्यापन किया जाता है।

शैलीविज्ञान stylistics

भाषाविज्ञान की वह शाखा जिसमें स्थिति के अनुरूप किए गए भाषा के विविध प्रयोगों (भेदों) का विश्लेषण किया जाता है। यह शाखा उन सिद्धान्तों के प्रतिपादन का प्रयास करती है जो व्यक्ति या सामाजिक समूहों द्वारा भाषा प्रयोग सम्बन्धी किए गए विशिष्ट चयनों का विवरण देने में समर्थ होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति/भाषिक समुदाय सन्दर्भ, परिस्थिति एवं प्रसंगानुसार उपलब्ध रूपों में से एक का चयन करता है। कोई चयन क्यों किया गया है इससे सम्बन्धित सिद्धान्त का प्रतिपादन तथा परिस्थिति, प्रसंग एवं सन्दर्भ

के अनुरूप किए गए भाषा के विविध प्रयोगों का विश्लेषण ही शैली विज्ञान का क्षेत्र है। भिन्न-भिन्न भाषिक इकाइयों के आधार पर शैली विज्ञान की अलग-अलग शाखाएं की जाती हैं - स्वन शैली विज्ञान, रूप शैली विज्ञान।

श्रवणात्मक स्वनविज्ञान auditory phonetics

स्वनविज्ञान की वह शाखा जिसके अन्तर्गत वाक् स्वनों का विश्लेषण अध्ययन श्रवणेन्द्रिय द्वारा उनके ग्रहण किए जाने की संक्रियाओं के आधार पर किया जाता है। वाक् स्वनों की मानसिक एवं स्नायविक प्रतिक्रियाओं की पहचान एवं मापन में आगत कठिनाइयों के कारण स्वनविज्ञान की इस शाखा में अधिक कार्य नहीं हुए हैं।

श्रव्य खण्ड audible segment

वह स्वन जिसकी पहचान स्वनविज्ञान में प्रशिक्षित व्यक्ति की सामान्य श्रवण क्षमता के आधार पर होती है।

श्रुति glide

एक स्वन के उच्चारण के तत्काल बाद दूसरे स्वन का उच्चारण करने के लिए जब वागवयव नई स्थिति में आते हैं तो कभी-कभी वायु के निकलते रहने के कारण बीच में एक असार्थक स्वन सुनाई पड़ता है, उसे श्रुति कहते हैं, यथा - 'गये' में 'यकार' इसी प्रकार का स्वन है।

श्रुतिकटुत्व cacophony

भाषा विशेष में स्वनों या स्वन-गुच्छों में सुश्रव्यता का अभाव श्रुतिकटुत्व कहलाता है।

श्रेणी[1] rank

हैलिडे के सिद्धान्त में श्रेणी की कल्पना भाषिक इकाइयों के सोपानिक क्रम एवं उनके अन्तर्सम्बन्ध को निरूपित करने के लिए की गई, जैसे - हिन्दी की भाषिक इकाइयाँ व्याकरणिक श्रेणीमान वाक्य - उपवाक्य - समूह - शब्द - रूपिम पर अन्तर्निवेश के सम्बन्ध के आधार पर वर्णित की जा सकती हैं। वाक्य में उपवाक्य, उपवाक्य में समूह, समूह में शब्द तथा शब्द में रूपिम अन्तर्निविष्ट रहते हैं। प्रायः कोई भी भाषिक इकाई अपने से उच्च

श्रेणी का अंग होती है किन्तु कभी-कभी कोई भाषिक इकाई श्रेणीमान पर नीचे की ओर परिवृत्त हो जाती है यह प्रक्रम **श्रेणी परिवृत्ति** कहलाता है, जैसे - एक समूह के अन्तर्गत आगत उपवाक्य । 'इतना पहुंचा हुआ महात्मा, जिसे दुनिया पूजती थी, इतना घृणित निकला।' वाक्य में संज्ञा समूह के भीतर उपवाक्य (जिसे दुनिया पूजती थी) है।

श्रेणी² series

व्यंजन स्वनों का ऐसा समुच्चय जिसके सदस्यों के मध्य कम से कम एक स्वनिक अभिलक्षण समान हो और उसे उच्चारण स्थान के आधार पर भिन्न प्रतिपादित किया जा सके, जैसे - घोष स्पर्श श्रेणी में [b] - [d] - [g] और नासिक्य श्रेणी में [m] - [n] - [ŋ] आते हैं।

श्वसित घोष breathy voice

उच्चारणात्मक एवं श्रवणात्मक मापदण्डों के आधार पर किए गए वाक्-गुण के स्वन-वैज्ञानिक वर्गीकरण में प्रयुक्त एक शब्द। थोड़े से खुले श्वासद्वार से वायुधारा तीव्र, गति से अधिक मात्रा में प्रवाहित होने पर जो उच्चारणात्मक प्रभाव उत्पन्न होता है उसे श्वसितघोष की संज्ञा देते हैं। इस प्रभाव को **मर्मर** भी कहते हैं। कुछ वक्ताओं में यह विशेषता असामान्य रूप में मिलती है। भाषिक विश्लेषण की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण तथ्य यह कि कतिपय भाषाओं में ये प्रभाव व्यतिरेकी ताकत के रूप में भी प्रयुक्त होते हैं। गुजराती में यह एक स्वनप्रक्रियात्मक विशेषता होती है तथा इस आधार पर स्वरों के दो वर्ग मिलते हैं-श्वसित स्वर एवं अश्वसित स्वर।

श्वा schwa

आघातहीन अवर्तुलित स्वर जिसे **उदासीन स्वर** भी कहते हैं। अंग्रेजी के along, ago, amaze आदि शब्दों के प्रारम्भ में इसका प्रयोग मिलता है। जर्मन से आगत इस नाम के लिए [ə] यह चिह्न प्रचलित हैं।

श्वासद्वारीय glottal

श्वासद्वार को बंद करके स्फोटक प्रभाव द्वारा वायु को एकदम बाहर निकालने से उच्चरित होने वाला स्वन श्वासद्वारीय कहलाता है। कई पूर्वी तथा अफ्रीकी भाषाओं में यह पूर्ण स्वनिम है और इसका अन्तराष्ट्रीय स्वनिक चिह्न [?] है। किसी स्वन के प्राथमिक

उच्चारण के साथ-साथ फेफड़ों से आती हुई वायु धारा को घोषतन्त्रियों में रोक लेना या किसी स्वन के उच्चारण पर श्वासद्वारीय स्पर्श को आरोपित करना **श्वासद्वारीय रंजन** कहलाता है। वायु प्रवाह का वह तन्त्र जिसमें बन्द स्वरयन्त्र के ऊपर उठने के फलस्वरूप ग्रसनी में वायु संपीडित हो जाती है और प्रवाह की दिशा बहिर्मुखी होती है अथवा प्रकंपित स्वरयन्त्र नीचे की ओर खिंचता है तथा प्रवाह की दिशा अन्तर्मुखी होती है। बहिर्मुखी प्रवाह वाले व्यंजन **हिक्कित** और अन्तर्मुखी प्रवाह वाले व्यंजन **अन्तःस्फोटी** कहलाते हैं।

स

संकर शब्द hybrid

एक से अधिक भाषाओं के तत्त्वों से निर्मित शब्द संकर कहलाता है तथा इसके निर्माण में कार्यरत प्रक्रम **संकरीकरण** कहा जाता है, यथा - हिन्दी एवं अंग्रेजी तत्त्वों से निर्मित शब्द- शेयर बाजार, रेलगाड़ी आदि।

संकीर्ण narrow

वह स्वनिक अभिलक्षण जिसमें जिह्वामूल को पीछे करके ग्रसनी को छोटा किया जाता है। इस अभिलक्षण के आधार पर घाना में बोली जाने वाली त्वी (Twi) भाषा में स्वरों के दो समुच्चयों में भेद किया जाता है। एक समुच्चय में संकीर्ण और दूसरे में विस्तीर्ण स्वरों का समावेश होता है।

संकुचन contraction

जब कोई भाषिक रूप अपने सहवर्ती रूप में स्वनप्रक्रियात्मक दृष्टि से इस प्रकार एकाकार हो जाए कि वह एक रूप प्रतीत होने लगे तो इस प्रक्रिया को संकुचन कहते हैं। कह सकते हैं कि यह संधि का एक ऐसा भेद है जिसमें दो स्वनिम परस्पर सम्पृक्त हो एक ऐसे अन्य स्वनिम में परिवर्तित हो जाते हैं जिसमें आंशिक रूप से दोनों स्वनों की समानता देखी जा सकती है।

संकेत sign

सामान्यत: संकेत का अर्थ, भाषा के सन्दर्भ में, उन भाषिक अभिव्यक्तियों के ध्वन्यात्मक रूप से है जो वस्तु या सत्व विशेष की ओर संकेत करती हैं, जैसे-जानवर विशेष के लिए 'कुत्ता' संकेत है। विद्वानों ने प्रतीक, लक्षण, चिह्न शब्दों का भी प्रयोग किया है। प्राय: भाषा को संकेत-व्यवस्था तथा भाषा के संकेत को भाषिक प्रतीक कहा जाता है। सेस्यूर ने बहुस्वीकृत संकेत परिभाषा के स्थान पर अपनी परिभाषा दी उनके अनुसार

संकेत वह नहीं है जो किसी को संकेतित करे अपितु ध्वनिबिम्ब एवं अर्थ का सम्बन्ध संकेत है। इस प्रकार सेस्यूर संकेत को संकेतक (ध्वनिबिम्ब) एवं संकेतित (अर्थ) इन दो वर्गों में विभाजित करते हैं।

संकेतन notation

लिप्यंकन के वे प्रतीक जो किसी भाषिक रूप को स्वनिक, स्वनिमिक, रूपिमिक अथवा व्याकरणिक आदि रूप में प्रस्तुत करने के लिए अपनाए जाते हैं, जैसे - [ ], / /, { } विभिन्न भाषावैज्ञानिक सम्प्रदायों ने इन्हें भिन्न-भिन्न अर्थ में स्वीकार किया। प्रजनक व्याकरण में ( ) यह कोष्ठक वैकल्पिक की सूचना देता है।

संकेत प्रयोग भाषाविज्ञान pragma linguistics

संकेत प्रयोग विज्ञान के अध्ययन में प्रयुक्त एक पारिभाषिक शब्द। भाषाओं के संरचनात्मक स्रोतों के दृष्टिकोण से किया गया भाषा प्रयोग सम्बन्धी अध्ययन जो ऐसे अध्ययनों से व्यतिरेक प्रदर्शित करता है जिनमें भाषा संरचना के स्थान पर सामाजिक परिस्थितियों से उत्पन्न भाषा प्रयोग अवस्थाओं का विश्लेषण किया जाए। इसे कभी-कभी समाज संकेत प्रयोग विज्ञान भी कहते हैं।

संकेत प्रयोग विज्ञान pragmatics

संकेत विज्ञान का एक उपविभाग जो प्रयोक्ता की दृष्टि से भाषा का अध्ययन विश्लेषण करता है। सामाजिक अन्तर्प्रक्रिया के रूप में भाषा प्रयोग के समय आने वाली समस्याएं (चयन सम्बन्धी) तथा व्यक्ति द्वारा प्रयुक्त भाषा अन्य व्यक्तियों पर कितना प्रभाव डालती है आदि प्रश्नों का समाधान इसका विषय क्षेत्र निर्धारित करता है। चॉमस्की के सिद्धान्त में 'संकेत प्रयोग दक्षता' का उल्लेख किया गया। इसका सम्बन्ध भाषा प्रयोग से है तथा यह मातृभाषाभाषी को वाक्य की व्याख्या के लिए भाषेतर सूचनाएँ देती है।

संकेत विज्ञान semiotics

प्राकृतिक या कृत्रिम संकेत व्यवस्था की विशेषताओं का वैज्ञानिक अध्ययन संकेत विज्ञान कहलाता है। विद्वानों ने इसको तीन वर्गों में विभाजित किया - अर्थ विज्ञान (भाषिक अभिव्यक्ति एवं उनके द्वारा वर्णित जगत में प्राप्त वस्तुओं के मध्य के सम्बन्ध का अध्ययन); संकेत-सम्बन्ध विज्ञान (भाषिक अभिव्यक्तियों के पारस्परिक सम्बन्ध का अध्ययन); तथा

संकेत प्रयोग विज्ञान (भाषिक अभिव्यक्तियों के अर्थ की उनके प्रयोक्ता पर निर्भरता सम्बन्धी अध्ययन)।

संकोचन constriction

उच्चारणमूलक स्वनविज्ञान में प्रयुक्त एक पारिभाषिक शब्द जो वाक् पथ में होने वाली संकीर्णता को सन्दर्भित करता है। उच्चारण स्थान के निकट करण इस प्रकार आता है कि जब श्वासधारा उनके बीच से निकलती है तो घर्षण सुनाई पड़ता है। कभी-कभी यह शब्द सीमित अर्थ में व्यवहृत हो श्वासद्वारीय ध्वनियों के लिए भी प्रयोग किया जाता है।

संक्षिप्ति abbreviation

एक प्रकार का रूपरचनात्मक प्रक्रम, जो कभी-कभी लेखन व्यवस्था द्वारा प्रतिपादित होता है, यथा - आद्यात्मकता (जैसे - टी.वी.) या परिवर्णी शब्द (जैसे - भाजपा - भारतीय जनता पार्टी) अथवा छिन्न शब्द (जैसे - द. - दक्षिण)। प्रायः शब्द अपने ही एक रूपिम में छिन्न होकर भिन्न-भिन्न प्रयोगों में अपने मूल अर्थ में प्रयुक्त मिलता है, यथा - अंग्रेजी भाषा का शब्द para छिन्न होकर paraglider, paradoctor आदि रूपों में व्यवहृत होता है। इसी प्रकार कतिपय सामासिक शब्द अपने निर्णायक शब्द में छिन्न होने पर भी पूर्व अर्थ में ही प्रयुक्त होते हैं, जैसे - jet plane से निर्मित jet शब्द।

संख्येय countable

व्याकरणिक आधार पर संज्ञा को संख्येय एवं असंख्येय वर्गों में भी विभाजित किया जाता है। पारम्परिक व्याकरण प्रायः संख्येयता को महत्त्व नहीं देता किन्तु आधुनिक अध्ययन में संज्ञापदबन्ध के भाषिक विश्लेषण के अन्तर्गत इसको विशेष महत्त्व दिया गया क्योंकि संज्ञापदबन्ध के आधार पर ही संज्ञाओं के वितरण तथा संज्ञा एवं विशेषक के सम्बन्ध की व्याख्या की जाती है। इस प्रकार जो संज्ञा, अनेक, बहुत, एक, दो, तीन आदि शब्दों के साथ विभाज्य सत्व के रूप में प्रयुक्त हो उसे संख्येय संज्ञा कहते हैं। अंख्येय संज्ञा सतत सत्वों के रूप में होती है और अनेक, बहुत आदि शब्दों के साथ इनका प्रयोग नहीं किया जा सकता है, उदाहरणार्थ -

* एक घास, *अनेक घास, बहुत घास

एक चिड़िया, अनेक चिड़ियाँ, बहुत चिड़ियाँ।

संगति[1] harmony

किसी समान शब्द या पदबन्ध में एक स्वनप्रक्रियात्मक इकाई का उच्चारण जिस प्रकार किसी दूसरी इकाई द्वारा प्रभावित होता है उसे संगति कहते हैं। समीकरण इसका सदृश पारिभाषिक शब्द कहा जा सकता है। दो मुख्य प्रक्रियाएं **व्यंजन संगति** एवं **स्वर संगति** हैं। तुर्की भाषा में स्वर संगति का उदाहरण मिलता है तुर्की में किसी शब्द के सभी स्वर समान अभिलक्षण वाले होते हैं, यथा - सभी का उच्चारण जिहवाग्र से होता है या सभी वृत्ताकार होते हैं।

संगति[2] coherence

किसी लिखित या उच्चरित भाषिक खण्ड में कार्यरत मूलाधार प्रकार्यात्मक सम्बद्धता का विवरण देने के लिए व्यवस्था के जिन मुख्य नियमों को स्वीकार किया जाता है, प्रोक्ति विश्लेषण में संगति शब्द प्राय: इसी अर्थ को संकेतित करता है। इसमें भाषा प्रयोक्ता के जागतिक ज्ञान उनके द्वारा किए गए अनुमान, उनकी मान्यताओं तथा विशेष रूप से किस प्रकार वाक् क्रिया द्वारा सम्प्रेषण घटित हो रहा है आदि तत्त्वों का अध्ययन किया जाता है। इस अर्थ में संगति संहति से व्यतिरेक प्रदर्शित करता है। संहति में भाषिक रूपों में प्राप्त वाक्यीय एवं आर्थी सम्बद्धता का अध्ययन (विश्लेषण के) बाह्य संरचनात्मक स्तर पर किया जाता है।

संघटन composition

भाषाविज्ञान में भाषिक संरचना के सोपानिक प्रारूप को सन्दर्भित करने वाला शब्द। इस प्रारूप में बृहत्तर इकाइयों को लघुतर इकाइयों से संघटित माना जाता है, उदाहरणार्थ - व्याकरणिक विश्लेषण में वाक्य, उपवाक्य, पदबन्ध, शब्द और रूपिम के मध्य के सम्बन्ध का कभी-कभी एक संघटन के रूप में वर्णन किया जाता है। उच्चतर श्रेणी की इकाइयाँ निम्नतर श्रेणी की इकाइयों में विश्लेष्य होती हैं। स्तरपरक व्याकरण, पदबन्ध संरचना व्याकरण, टैगमीमिक्स तथा मान कोटि परक व्याकरण में विशेषरूप से संघटकीय प्रारूप मिलते हैं।

रूपान्तरण व्याकरण में संयुक्त क्रियाओं को (जैसे - कर दिया, चला गया) समस्त क्रिया (composite verb) कहते हैं। शब्द निर्माण प्रक्रिया में भी 'समासीकरण की प्रक्रिया' के अर्थ में इस शब्द का प्रयोग मिलता है।

संघर्षी fricative

उच्चारण प्रयत्न के आधार पर किया गया व्यंजन स्वनों का एक वर्ग जिसके उच्चारण में वायु-मार्ग संकुचित हो जाता है और वायु घर्षण करके निकलती है इन्हें घर्षी भी कहते हैं। इनके उच्चारण में वायु प्रवाह का पूर्ण अवरोध नहीं होता है वागांगों के बीच सिर्फ संकुचन होता है, यथा- स् , ज् , फ्।

संचय collapse

जब एक सरल एवं सामान्य कथन की प्राप्ति के लिए दो नियमों की अंकन पद्धति को एक में सम्मिश्रित किया जाए तो इस प्रक्रिया को (प्रजनक व्याकरण में) संचय की संज्ञा देते हैं, यथा (क) सप → नि.स.

(ख) सप → नि.वि.स.

इन दो नियमों की स्थानापत्ति सप.→नि. (वि.) स. इस नियम द्वारा की जा सकती है। यहाँ कोष्ठक विशेषण के वैकल्पिक होने की सूचना देता है।

संचलन movement

रूपान्तरण व्याकरण प्रारूप में एक आधारिक प्रकार के रूपान्तरण संक्रिया के लिए संचलन शब्द का प्रयोग किया जाता है। यह रूपान्तरण घटकों को प्राय: एक-एक कर पदबन्ध चिह्नक के एक भाग से दूसरे भाग में ले जाता है जैसे कर्मवाच्य के निर्माण में अथवा नकारात्मक या प्रत्ययों के स्थापन में। क्रमांतरण या क्रमपरिवृत्तीय इसके लिए प्रयुक्त अन्य शब्द है। कतिपय उपागमों में संचलन की संकल्पना को अनुबंधी रचनान्तरण एवं विलोपन संक्रियाओं में खण्डीकृत किया गया। इस प्रारूप में दो प्रकार के संचलन नियमों का प्रयोग किया गया - WH- संचलन तथा NP-संचलन।

संज्ञा noun

शब्दों के व्याकरणिक वर्गीकरण का प्रथम वर्ग संज्ञा कहा जाता है और परम्परा से इसे वस्तु, व्यक्ति या स्थान के नाम के रूप में परिभाषित किया गया किन्तु यह परिभाषा अपूर्ण एवं अस्पष्ट है (जैसे - बचपन, सुन्दरता आदि किस वर्ग में आयेंगे, क्या ये वस्तु हैं?) अत: भाषाविश्लेषण में इसको रूपात्मक एवं प्रकार्यात्मक आधार पर परिभाषित किया गया। भाषा-वैज्ञानिक दृष्टि से संज्ञा द्वारा लिंग, वचन और कारक की रूपरचनात्मक अभिव्यक्ति होती है। वाक्यान्तरगत इनका विशिष्ट वितरण होता है, यथा - ये सदैव परसर्गों

एवं सर्वनामों के पूर्व प्रयुक्त होती हैं साथ ही इनका निश्चित वाक्यीय प्रकार्य भी होता है उदाहरणार्थ - ये वाक्य के कर्ता या कर्म के रूप में कार्य करती है। यह शब्दों का मुक्त वर्ग है अर्थात् इसके सदस्यों की संख्या बढ़ती रहती है। प्रायः संज्ञाओं को जातिवाचक (फूल) और व्यक्तिवाचक (गुलाब) उपवर्गों में विभाजित किया जाता है तथा लिंग, वचन, कारक के आधार पर विश्लेषित किया जाता है।

ऐसी संरचनाएं जिनका मुख्य घटक या केन्द्र संज्ञा हो संज्ञापदबन्ध कहलाती हैं। संज्ञापदबन्ध में कम से कम एक संज्ञा या उसका स्थानापन्न अवश्य होता है। संज्ञा के पूर्व आगत रचनाओं को पूर्वविकृति (premodication) तथा बाद में आने वाली रचना को उत्तरवर्ती विकृति कहते हैं।

संज्ञानात्मक अर्थ cognitive meaning

अर्थ के विविध प्रकारों में से एक संज्ञानात्मक अर्थ कहलाता है। यह कोशीय मदों के मुख्यार्थ तथा वाक्यों के प्रतिज्ञप्तिक आशय से प्रत्यक्षतः सम्बन्धित अर्थ पक्ष को सन्दर्भित करता है और इस प्रकार व्याख्या के प्रज्ञासाध्य वस्तुपरक स्तर के अनुरूप होता है।

संज्ञा सम्बन्धी adnominal

संज्ञा सम्बन्ध के वे तत्त्व जो उसे परिवर्तित संशोधित करते हैं, कतिपय विद्वान उन्हें संज्ञा सम्बन्ध कहते हैं जैसे-विशेषण, सम्बन्धवाचक आदि, यथा - एक सुन्दर लड़की, छत पर खड़ी हुई एक सुन्दर लड़की, श्याम की लड़की।

संदिग्धार्थक ambiguity

सामान्यतः इस शब्द का प्रयोग उन शब्दों या वाक्यों के लिए किया जाता है जो अस्पष्ट एवं अनेकार्थी होते हैं किन्तु आज अनेक प्रकार की संदिग्धार्थकताओं की चर्चा की जाती है। पिछले कुछ वर्षों से व्याकरणिक या संरचनात्मक संदिग्धार्थकता पर बहुत विचार विमर्श हो रहा है। पदबन्ध संरचना संदिग्धार्थकता में एक रचना के लिए वैकल्पिक घटक संरचनाएं नियत कर दी जाती हैं, यथा 'राम की मां और लड़की' का विश्लेषण 'राम कीं मां और `राम की लड़की' इस प्रकार हो सकता है अथवा 'राम की मां और किसी अन्य व्यक्ति की लड़की' इस प्रकार भी किया जा सकता है। रूपान्तरणशील संदिग्धार्थकता में संदिग्धार्थक वाक्य को विभिन्न संरचनाओं से सम्बन्धित करने पर ही वैकल्पिक आर्थी प्रतिरूपण दिखाया जा सकता है, यथा-'राम ने दौड़ते हुए सांप को मारा' वाक्य का सम्बन्ध 'राम दौड़ रहा था उसने सांप मारा' या' साँप दौड़ रहा था राम ने उसे मारा' दोनों से है। एकाधिक संरचनात्मक

व्याख्या वाला वाक्य **बहुसंदिग्धार्थक** कहलाता है तथा किसी वाक्य की संदिग्धार्थकता प्रतिपादित करने वाला विश्लेषण उसे विसंदिग्ध करता है। जो संदिग्धता कोशीय इकाइयों के वैकल्पिक अर्थ के कारण होती है उसे **कोशीय संदिग्धार्थकता** कहते हैं, यथा-तुम्हारी मांग टेढ़ी है (जो तुमने मांगा है; बालों की विभाजक रेखा) आधुनिक आर्थी विचार विमर्श में संदिग्धार्थकता एवं अस्पष्टता के मध्य भिन्नता स्थापित की गई। एक संदिग्धार्थक वाक्य में एकाधिक भिन्न संरचनाएं होती हैं जबकि एक अस्पष्ट वाक्य की अनेकानेक व्याख्याएं सम्भव हैं। इसकी व्याख्या में निश्चित संख्यक मूलाधार संरचनाएं नहीं होती हैं।

संधि[1] sandhi

संस्कृत से आगत इस पारिभाषिक शब्द का अर्थ योग या मेल है अर्थात् दो रूपिमों, शब्दों या पदों के पास आने पर दो वर्णों के योग से उत्पन्न स्वन-परिवर्तन सन्धि कहलाता है। प्राय: भाषाओं में इसके आन्तरिक एवं बाह्य दो रूप मिलते हैं। शब्दान्तर्गत संक्रिया करने वाले संधि नियम आन्तरिक कहलाते हैं तथा शब्द सीमा पर कार्यरत नियम बाह्य वर्ग में आते हैं।

संधि[2] liaison/sandhi

स्वन प्रक्रिया की वह प्रक्रिया जिसमें दो रूपिमों, शब्दों अथवा पदों के सन्निकर्ष की स्थिति में एक या एकाधिक स्वनिमों में से किसी स्वनिम का लोप, आगम या योग होता है। सन्धि के दो प्रकार मिलते हैं आभ्यन्तर-सन्धि की वह प्रक्रिया जो शब्द या पद के भीतर होती है (वि+अर्थ=व्यर्थ); बाह्य-दो पदों के अत्यन्त सन्निकर्ष से उत्पन्न स्वन परिवर्तन की प्रक्रिया (विद्या+आलय=विद्यालय)।

सन्ध्यक्षर dipthong

दो स्वरों का ऐसा अनुक्रम जो मिलकर एक आक्षरिक शिखर का निर्माण करता है। दो स्वरों के संयोग से बनी यह स्वर ध्वनि एक इकाईवत कार्य करती है और एक बलाघात का वहन करती है। इनके उच्चारण में उच्चारण अवयव एक अवस्था से दूसरी अवस्था में गतिशील होते हैं अत: इन्हें **स्वर श्रुति** भी कहते हैं। सम्भाषण के मध्य अनेक श्रुतियाँ स्वत: उच्चरित होती हैं जो आश्रित होती हैं किन्तु संयुक्त स्वर सप्रयास उच्चरित होते हैं अत: स्वतन्त्र स्वर श्रुति माने जाते हैं, जैसे- हिन्दी में 'भैया' और 'कौवा' में क्रमश: ऐ [अइ] और औ [अउ]। श्वासाघात के बढ़ने पर संयुक्त स्वर का उत्तरांश अधिक स्पष्ट होता है ऐसे संयुक्त स्वर **आरोही** (rising) कहलाते हैं (यथा - हिन्दी ऐ, औ) तथा श्वासाघात

के कम होने पर पूर्वांश प्रमुख होता है। इस अवस्था में उच्चरित स्वर **अवरोही** (falling) कहलाते हैं (यथा - अंग्रेजी - $\widehat{ei}$ they, $\widehat{əi}$ boy)। जब इनके उच्चारण में जिह्वा निम्नतर अवस्था से उच्चतर अवस्था की ओर गतिशील हो तो इन्हें **संवृत्तोन्मुखी** कहते हैं और जब जिह्वा अपेक्षाकृत उच्चतर से निम्नतर अवस्था की ओर गतिशील हो तो इन्हें **विवृत्तोन्मुखी** कहते हैं तथा जब अग्र अथवा पश्च से केन्द्र की ओर अग्रसर हो तो **केन्द्रोन्मुखी** कहते हैं।

किसी एक स्वर का सन्ध्यक्षर के रूप में परिवर्तित हो जाना **संध्यक्षीकरण/ संयुक्तीकरण** कहलाता है।

सम्पर्क contact

जब भौगोलिक या सामाजिक निकटता के कारण बोलियाँ या भाषाएं एक दूसरे को प्रभावित करें तो इस स्थिति को समाज भाषाविज्ञान में भाषाओं के मध्य सम्पर्क की स्थिति माना जाता है। ये सम्पर्क भाषाओं को स्वनप्रक्रियात्मक, व्याकरणिक एवं शब्दावली के स्तर पर परिवर्तित करता है। कभी-कभी सम्पर्क के कारण भाषाओं के मिश्रित रूप (जैसे - पिजिन एवं क्रियोल) भी विकसित हो जाते हैं। विभिन्न प्रकार की द्विभाषिकता में वृद्धि का कारण भी सम्पर्क कहा जा सकता है।कतिपय विद्वान पिजिन भाषाओं को सम्पर्क भाषा नाम देते हैं।

संपृक्त रूप portmanteau morph

जब किसी एक रूप का विश्लेषण एकाधिक रूपिम के अन्तर्गत किया जा सके तो रूपरचनात्मक विश्लेषण में उसे 'संपृक्त रूप' नाम से अभिहित करते हैं; उदाहरणार्थ - बनारसी, दक्खिनी जैसे शब्दों में-ई प्रत्यय विशेषण चिह्न है परन्तु यही-ई नाना-नानी; छोटा-छोटी; मामा-मामी जैसे शब्दों में स्त्रीलिंग सूचक रूप है।

सम्प्रदान dative

जिस वस्तु के लिए कोई क्रिया की जाती है उसके वाचक संज्ञा/सर्वनाम के रूप को संप्रदान कारक कहते हैं यथा - राजा ने ब्राह्मण को धन दिया। भाषाओं में इस कारक का अलग-अलग तरह से प्रयोग मिलता है। अंग्रेजी में यद्यपि संप्रदान कारक रूप नहीं होता तथापि अप्रत्यक्ष कर्म की अभिव्यक्ति पूर्वसर्ग अथवा शब्द क्रम द्वारा की जाती है, यथा-he gave a book to the boy अथवा he gave the boy a book। कारक व्याकरण में इस शब्द का विशेष स्थान है। वहाँ चेतन प्राणी पर क्रिया की अवस्था अथवा व्यापार को दर्शाने वाला रूप संप्रदान कारक कहलाता है।

सम्प्रेषण communication

व्यवहार के अध्ययन की आधारिक इकाई जो भाषिक एवं स्वनिक अध्ययनों के लिए सन्दर्भ विन्यास की भांति कार्य करती है। किसी नियम संहिता द्वारा व्यवहार और जीवन विधि के तत्त्वों को समान रूप से ग्रहण करना सम्प्रेषण है इसे उद्दीपन और अनुक्रिया के सन्दर्भ में इस रूप में कहा जा सकता है कि सम्प्रेषण उद्दीपन के प्रेषण और अनुक्रिया के परिणाम के बीच उत्पन्न होने वाला वह सम्बन्ध है जिसका अपना कोड होता है। भाषिक सन्दर्भों में इसमें एक ओर वक्ता/लेखक होता है और दूसरी ओर श्रोता / पाठक होता है तथा कार्यरत कोड भाषा। वक्ता और श्रोता की भाषिक चेतना और ज्ञान के सन्दर्भ में कोड एक सा होता है।

मानवीय सम्प्रेषण अन्य संवेदी रीतियों (जैसे - देखना, सुनना आदि) द्वारा भी घटित हो सकता है तथा सम्प्रेषण प्रक्रिया में इन प्रयुक्त रीतियों से सम्बन्धित पर्यायता अध्ययन संकेत विज्ञान के अन्तर्गत किए जाते हैं। प्राय: मनोवैज्ञानिक **भाषायी** एवं **भाषेतर** सम्प्रेषण की भी चर्चा करते हैं। द्वितीय के अन्तर्गत मानव एवं मानवेतर प्राणियों के हाव-भाव, अंग विक्षेप आदि का भी अध्ययन किया जाता है।

संबंध relation

किसी भाषा के दो या अधिक महत्त्वपूर्ण तत्त्वों के मध्य प्राप्त भाषिक दृष्टि से उपयोगी समागम, संयोजन सम्बन्ध कहलाता है। तत्त्वों के मध्य व्यतिरेकी, आकांक्षा, समतुल्यता, समावेशन आदि सम्बन्ध मिलते हैं। कारक व्याकरण एवं सम्बन्धपरक व्याकरण में इस अवधारणा का केन्द्रीय महत्त्व है। अर्थविज्ञान में सदृश या विपरीत अर्थ वाले कोशीय मदों के बीच प्राप्त संवाद को आशय सम्बन्ध कहते हैं तथा इसे पर्यायवाचकता या विपरीतार्थकता की संज्ञा देते हैं। स्थूल दृष्टि से भाषिक सम्बन्धों का एक वर्गीकरण सारणिक एवं श्रंखलात्मक वर्गों में भी किया जा सकता है।

संबंधकारक genetive

संज्ञा के जिस रूप से उसकी वाच्य वस्तु का सम्बन्ध किसी दूसरी वस्तु के साथ सूचित होता है उस रूप को सम्बन्ध कारक कहते हैं, यथा - लड़के की पेन्सिल; पत्थर के टुकड़े। इस कारक के प्रयोग के सम्बन्ध में भाषाओं में बहुत विविधता है। अंग्रेजी में यह निम्न प्रकार की रचनाओं के लिए प्रयुक्त किया जाता है-

The book of my father-My father's book सम्बन्ध प्रत्ययों के वितरण के

कारण उत्पन्न समस्याओं पर अंग्रेजी भाषाविज्ञान में विशेष ध्यान दिया गया जैसे - a book of my father's और The king of England's hat। संस्कृत वैयाकरण सम्बन्ध को कारक की श्रेणी में नहीं रखते हैं क्योंकि यहाँ संज्ञा का सम्बन्ध क्रिया से नहीं अपितु दूसरी संज्ञा या सर्वनाम से होता है।

सम्बन्धपरक व्याकरण relational grammar

प्रजनक भाषाचिन्तन की एक धारा जिसके अध्ययन का केन्द्र पदबन्ध चिह्नकों की व्याकरणिक कोटियाँ नहीं वरन व्याकरणिक सम्बन्ध थे। इस दृष्टिकोण के अनुसार रूपान्तरण ऐसी संक्रिया है जो व्याकरणिक सम्बन्धों के अक्रमित आश्रयता नेटवर्क पर घटित होती है और जिसके आधार पर आश्रयता वृक्ष बनाया जा सकता है। प्रजनक व्याकरण की अन्य चिन्तन धाराएं सप. क्रिप. आदि व्याकरणिक कोटियों और उनके रेखीय क्रम पर बल देती हैं।

संबोधन address

प्रत्यक्ष भाषिक अन्तर्प्रक्रिया में जिस प्रकार किसी को सम्बोधित किया जाए उसे सम्बोधन की संज्ञा देते हैं। समाजभाषाविज्ञान में इसका विशेष महत्त्व है। समाजभाषाविद् विभिन्न भाषिक परिस्थितियों में भाग लेने वाले व्यक्तियों के मध्य घटित सम्बोधन के विविध प्रकारों का विश्लेषण करता है और वक्ता द्वारा सम्बोधन के लिए चयनित शब्दों से सम्बन्धित नियम प्रस्तावित करता है, उदाहरणार्थ - वक्ता किसी व्यक्ति को प्रथम अथवा द्वितीय किस नाम से सम्बोधित कर रहा है। अधिकार, सामर्थ्य, पारस्परिक निर्भरता जैसी मनोवैज्ञानिक अवधारणाएं, किसी समुदाय की सम्बोधन व्यवस्था को समझने के लिए उपयोगी होती हैं।

संबोधन कारक vocative

संज्ञा के जिस रूप से किसी को पुकारना सूचित होता है। चेतन अथवा अचेतन पदार्थों को सम्बोधित करने के लिए भी इसका प्रयोग होता है। हिन्दी तथा अंग्रेजी में इसके लिए विभक्ति चिह्न नहीं है। हिन्दी में प्राय: संज्ञा के पूर्व हे, अरे, अजी आदि विस्मयादिबोधक अव्यय लगाकर इसकी अभिव्यक्ति होती है। अंग्रेजी में कुछ स्थितियों में वैकल्पिक संज्ञा पद द्वारा और प्राय: एक भिन्न स्पष्ट सुरलहर द्वारा इसकी अभिव्यक्ति होती है, यथा- Mary, are you coming? संस्कृत वैयाकरण इसे कारक नहीं मानते क्योंकि इसका सम्बन्ध क्रिया से नहीं होता है।

सम्भावनार्थक subjunctive

वाक्य का एक प्रकार जिसके द्वारा अनिश्चितता, अस्पष्टता की अभिव्यक्ति होती है, उदाहरणार्थ - तुम्हें उसके गृह प्रवेश में जाना चाहिए।

संयुक्त क्रिया compound verb

जब दो या दो से अधिक प्रधान क्रियाएं मिलकर एक क्रिया का अर्थ व्यक्त करती हैं तब क्रियाओं के ऐसे संयोग को संयुक्त क्रिया की संज्ञा दी जाती है। संयुक्त काल (phrasal tense) में भी दो क्रियाओं का योग होता है किन्तु रचना एवं अर्थ की दृष्टि से इन दोनों में अन्तर है। जहाँ संयुक्त काल में एक प्रधान और एक सहायक क्रिया का संयोग (उठ रहा है, उठता था) होता है वहाँ संयुक्त क्रिया में दोनों प्रधान क्रियाओं का संयोग होता है (उठ बैठा)। साथ ही संयुक्त काल में मुख्य क्रिया द्वारा अभिव्यक्त अर्थ प्रधान होता है सहायक क्रिया से काल का बोध होता है जबकि संयुक्त क्रिया में दोनों प्रधान क्रिया मिलकर एक नए अर्थ का बोध कराती हैं। रूप अथवा रचना की दृष्टि से हिन्दी संयुक्त क्रियाओं को निम्नलिखित आठ वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है-1. वर्तमान कालिक कृदन्त +अन्य क्रिया (परिश्रम से धन बढ़ता गया); 2. भूतकालिक कृदन्त+अन्य क्रिया (वह पढ़ा करता है); 3. क्रियार्थक संज्ञा+अन्य क्रिया (वह हंसने लगा); 4. पूर्वकालिक कृदन्त+अन्य क्रिया (वह उठ बैठा); 5. अपूर्ण क्रियाद्योतक +अन्य क्रिया (ऋषि, मुनि सत्य वचन कहते आए हैं); 6. पूर्ण क्रियाद्योतक + अन्य क्रिया (सात दिन तक काम में लगे रहे); 7. संज्ञा विशेषण+ अन्य क्रिया (उसने बात स्वीकार कर ली); 8. पुनुरुक्त संयुक्त क्रिया +अन्य क्रिया (समान क्रिया का द्वित्व रूप)। संयुक्त क्रिया के उपवर्गों के विषय में विद्वान एक मत नहीं हैं।

संयुक्त द्विभाषिक compound bilingual

वे वक्ता जो दो भाषाओं में प्राप्त संवादी कोशीय इकाइयों को समान अर्थ प्रदान करें संयुक्त द्विभाषिक कहलाते हैं। प्राय: संयुक्त एवं समानाधिकृत द्विभाषिकों के बीच अन्तर किया जाता है। जो वक्ता दो भाषाओं के संवादी मदों को आंशिक या पूर्ण रूप से भिन्न अर्थ प्रदान करे उसे समानाधिकृत द्विभाषी कहते हैं।

संयोजक conjunctive

प्रजनक स्वनप्रक्रिया में नियमों के क्रमण को प्रभावित करने वाले एक सिद्धान्त

को सन्दर्भित करने के लिए इस शब्द का प्रयोग किया जाता है। धुनर्कोष्ठक संकेतन के प्रयोग में संयोजक क्रमण (conjunctive ordering) दृष्टिगत होता है जो इस तथ्य का संकेतक है कि इनमें से किसी एक वैकल्पिक समुच्चय का चयन अनिवार्य है। यदि नियमों का एक अनुक्रम निम्नवत अंकित हो न $\left\{ \begin{matrix} \text{क} \\ \text{ख} \\ \text{ग} \end{matrix} \right\}$ म तो

(i) न क म

(ii) न ख म

(iii) न ग म

यह अनुक्रम एक संयोजित क्रमित खण्ड बनाता है और इन तीनों में से किसी एक का प्रयोग आवश्यक होता है।

संयोजकविहीन वाक्य paratactic

पारम्परिक व्याकरणिक विश्लेषण में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द जिसका प्रयोग वर्णनात्मक भाषिक अध्ययनों में भी मिलता है। वे रचनाएं जो सन्निधि, विराम/अनुतान के कारण सम्पृक्त हो, न कि संयोजक द्वारा, इस वर्ग में आती हैं। इनका व्यतिरेकी आश्रित विन्यास कहलाता है जो संयोजक का प्रयोग करता है। 'वह शहर से कापी, पुस्तक, गेंद और हॉकी लाया' वाक्य में 'कापी, पुस्तक, गेंद' संयोजक विहीन रचना है।

संयोजी conjoin

जिसमें एक वाक्य दूसरे में समानाधिकृत हो ऐसी रचना को सन्दर्भित करने के लिए प्रजनक व्याकरण में इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग किया जाता है। संयोजी प्रक्रियाएं आधायक से भिन्न होती हैं; यथा - 'और', 'किन्तु' आदि द्वारा उपवाक्यों का संयोजन (वह आदमी बाजार गया और वह औरत अपने घर चली गई संयोजी); (वह आदमी उस औरत के घर जाने पर, बाजार गया - आधायक)।

संरचना structure

वह विशिष्ट रचना जिसके निर्मायक रचक परस्पर अन्तराश्रित सम्बन्धों में आबद्ध होकर निश्चित प्रकार्य करते हैं। संरचनावादी विद्वान भाषा को एक संरचना मानते हैं जो अन्तराश्रित इकाइयों का जाल है जिसके रचकों के अर्थ समग्रता के आधार पर ही स्पष्ट किए जा सकते हैं। कभी-कभी इस शब्द को 'व्यवस्था' के पर्याय के रूप में भी प्रयोग किया गया।

संलय / प्रश्लेषण coalescence

भाषाविज्ञान के ऐतिहासिक अध्ययनों में प्रयुक्त शब्द जो मूलत: ' भिन्न भाषिक इकाइयों का एक दूसरे के निकट आना' इस प्रक्रिया का संकेतक है। एक स्वनिम के सहस्वनों, भिन्न स्वनिमों या भिन्न रूपिमों के मध्य संलय हो सकता है।

स्वनविज्ञान एवं स्वनप्रक्रिया में समीकरण के एक प्रकार के रूप में भी इस शब्द का प्रयोग किया जाता है - **संलयी समीकरण** इसमें दोनों ध्वनियाँ एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं, यथा - पायजामा > पैजामा।

संलयन / श्लिष्ट fusion

संरचनात्मक मानदण्ड के आधार पर शब्द की विशेषता को ध्यान में रखते हुए किया गया भाषा का एक वर्ग श्लिष्ट कहलाता है। श्लिष्ट भाषाओं के शब्दों में एकाधिक रूपिम होते हैं किन्तु इन रूपिमों एवं शब्द के रूपों के रेखीय अनुक्रम के मध्य एक से एक का सम्बन्ध नहीं होता है। इस वर्ग में आने वाली भाषाएं संस्कृत, ग्रीक लैटिन हैं जिन्हें विभक्तिपरक भाषाएं भी कहा जाता है। भाषाओं में संलयन की मात्रा भिन्न-भिन्न होती है कहीं अधिक तो कहीं उससे कम।

एक भाषिक इकाई के अन्तर्गत उसके द्योतक लक्षणों का मिलना भी संलयन कहलाता है। विशेष रूप से यह संलयन एक शब्द में होता है जैसे take+past, took में इन दोनों का संलयन हुआ। कुछ समीकरणों में ध्वनियां संलयित होती हैं।

संलापी शब्द interlocutor

कोशीय मदों के मध्य प्राप्त एक प्रकार का आशय सम्बन्ध जिसका प्रयोग अर्थ-विज्ञान में मिलता है। 'संलापी शब्द' में अर्थ सम्बन्धी विरोध मिलता है, जैसे - क्रय/विक्रय, ऊपर/नीचे, शासक/शासित आदि। इन शब्दों के मध्य आर्थी अन्योन्याश्रयता होती है और इसी कारण एक सदस्य दूसरे की पूर्वकल्पना कर लेता है।

संवादिता correspondence

सम्बन्धित भाषाओं के शब्दों या संरचनाओं में प्राप्त रूपात्मक समानता संवादिता कहलाती है। संस्कृत के पितर तथा अंग्रेजी father शब्दों के मध्य व्यवस्थित संवादिता प्राप्त होती है क्योंकि यहां घटित ध्वनि-परिवर्तन की व्याख्या अंग्रेजी ध्वनि संरचना के इतिहास के अध्ययन के आधार पर की जा सकती है।

प्राय: इस अवधारणा का प्रयोग अर्थविज्ञान की चर्चा में भी मिलता है। अर्थ के संवादिता सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक भाषिक रूप एवं उसके द्वारा संकेतित अर्थ में सीधा सम्बन्ध होता है, जैसे - अनुकरणात्मक शब्द। यह दृष्टिकोण **संवादिता भ्रान्ति** नाम से अभिहित किया जाता है क्योंकि प्राय: भाषाओं में शब्द एवं संकेतित वस्तु के मध्य का सम्बन्ध यादृच्छिक होता है।

1960 में **संवादिता परिकल्पना** ने भाषार्जन सम्बन्धी अध्ययन की ओर अनेक विद्वानों का ध्यान आकृष्ट किया। किसी वाक्य की व्याकरणिक व्युत्पत्ति में प्रयुक्त नियमों के अनुक्रम तथा वाक् उत्पादन एवं प्रत्यक्षीकरण सम्बन्धी मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया के अनुक्रम के बीच संवादिता की स्थिति होती है। इस विषय पर हुए प्रयोग यह प्रमाणित करते हैं कि वक्ता सरल वाक्य की तुलना में जटिल वाक्य के उत्पादन में अधिक समय लगाता है। 1960 के अन्तिम चरण में हुए प्रयोग इस परिकल्पना को प्रमाणित नहीं करते हैं धीरे-धीरे अनेक पद्धतिगत समस्याओं के कारण यह परिकल्पना अप्रभावी हो गई।

संविन्यास configuration

प्रजनक व्याकरण के 'स्टैन्डर्ड प्रारूप' में पदबन्ध चिह्नकों को वाक्यीय कोटियों के संविन्यास के रूप में स्वीकारते हैं। ये कोटियां रैखिक अनुक्रम में व्यवस्थित रहती हैं।

साधारणत: इस शब्द का प्रयोग भाषाविज्ञान एवं स्वनविज्ञान में रूपात्मक दृष्टि से निर्धारणीय तत्त्वों के किसी भी विन्यास के लिए किया जाता है, यथा - अनुतान संविन्यास; कारकों का संविन्यास आदि।

संवृत close

मान स्वर व्यवस्था पर आधृत स्वरों के उच्चारण में जिह्वा की स्थिति को चार वर्गों में बांटा जाता है। जब जिह्वा अधिकतम या उच्चतम होती है तो उसे संवृत कहते हैं। इस स्थिति में ई, ऊ आदि स्वरों का उच्चारण होता है।

संवृत सूची/वर्ग closed class

शब्दों के व्याकरणिक वर्गीकरण में शब्द को दो मुख्य वर्गों में विभाजित किया जाता है। संवृत वर्ग के सदस्यों की संख्या निश्चित या सीमित होती है। इस वर्ग में नवीन सदस्य नियमित रूप से नहीं जुड़ते हैं। सर्वनाम, उपपद, संयोजक आदि सभी संवृत सूची वाले होते हैं।

संवेगार्थ emotive

अर्थ के विविध प्रकारों में से एक संवेगार्थ कहलाता है। किसी अभिव्यक्ति के संवेगार्थ से तात्पर्य श्रोता के ऊपर पड़ने वाले संवेगात्मक प्रभाव से लिया जाता है, जैसा - प्रचार भाषण या विज्ञापन की भाषा में देखने को मिलता है। **भावपरक अर्थ** या **गुणार्थ** इसके वैकल्पिक शब्द हैं तथा संज्ञानात्मक एवं संदर्भपरक प्रतियोगी शब्द हैं।

संश्लिष्ट synthetic

वे भाषाएं जिनके शब्द एकाधिक रूपिमों द्वारा निर्मित होते हैं। प्राय: संश्लिष्ट भाषाओं के दो वर्ग मिलते हैं-श्लिष्ट एवं अश्लिष्ट। ग्रीक, लैटिन, अरबी, तुर्की आदि भाषाएं इस वर्ग में आती हैं। इस वर्गीकरण के आधार पर प्राय: भाषाओं के मध्य स्पष्ट विभाजक रेखा नहीं खींची जा सकती है। विविध भाषाओं में संयोजन की मात्रा कम या अधिक होती रहती है।

संहत compact

यकोब्सन एवं हॉले द्वारा प्रतिपादित स्वनप्रक्रिया के प्रभेदक अभिलक्षण सिद्धान्त में उच्चारण स्थान की विविधता को दर्शाने के लिए स्थापित ध्वनि समुच्चय के अभिलक्षणों में से एक संहत है जिसका विपरीत अभिलक्षण **विसृत** होता है। इन ध्वनियों का उच्चारणात्मक एवं ध्वनिक विवरण दिया जा सकता है, यथा - वे ध्वनियां जिनके उच्चारण में मुख के भीतरी भाग में एक निकोच तथा स्पैक्ट्रम के संकरे केन्द्रीय भाग में ऊर्जा का उच्चतर संकेन्द्रण होता है, उदाहरणार्थ-संवृत्त स्वर [+ संहत]; उच्च या मध्य स्वर [- संहत] होता है।

संहति cohesion

व्याकरणिक इकाई के रूप में मान्यता प्राप्त शब्द की कई विशेषताओं में से एक संहति है। इससे तात्पर्य यह है कि प्राय: शब्दान्तर्गत नवीन तत्त्वों का सन्निवेश सम्भव नहीं होता है और यह प्रक्रिया शब्द की सीमा पर घटित होती है। संहति को ही अविच्छिन्न नाम से भी अभिहित करते हैं। शब्द की पहचान का यह आधार अंग्रेजी, हिन्दी आदि भाषाओं पर तो सही उतरता है किन्तु जिन भाषाओं में मध्य प्रत्यय मिलते हैं वहाँ यह कार्य नहीं करता है।

कतिपय भाषाविदों ने उस गुण के सन्दर्भ में संहति का प्रयोग किया जो रचनाओं में रूपिम से बृहत्तर इकाइयों को परस्पर बांधता है, यथा - अंग्रेजी का उपपद (आर्टिकल)

+ संज्ञा। इस दृष्टि से शब्दों का कोई भी समूह जो किसी बृहत्तर इकाई का रचक हो, आन्तरिक संहति वाला होता है।

हैलिडे द्वारा प्रस्तावित व्याकरणिक विश्लेषण के उपागम में संहति एक महत्त्वपूर्ण अवधारणा के रूप में स्वीकृत की गई। संहति से तात्पर्य कथन या पाठ के उन बाह्य संरचनात्मक अभिलक्षणों से हैं जो वाक्य के विविध अंशों को जोड़ते हैं, यथा - सर्वनाम का प्रतिनिर्देशी प्रकार्य।

संहिता juncture

भाषा सम्प्रवाह में विराम की स्थिति को संहिता की संज्ञा दी जाती है। यह रूपिम, शब्द या उपवाक्य आदि व्याकरणिक इकाइयों के विभाजित करने वाले स्वनिक सीमावर्ती अभिलक्षणों को सन्दर्भित करता है। वह संहिता जो व्यतिरेक रूप में स्वनिक स्तर पर अनुभवगम्य होती है **स्वनिमिक संहिता** कहलाती है, जैसे - that stuff: that's tuff वह आ जाएगा: वह आज आएगा, वह संहिता जो मात्र संरचना स्तर पर अनुभवगम्य हो उसे **संरचनात्मक संहिता** कहते हैं, यथा - खा ली: खाली।

सकारात्मक positive

ऐसा वाक्य जो नकारात्मक चिह्नहीन होता है अर्थात् जिसके द्वारा सहमति अभिव्यक्त होती है। नकारात्मक इसका व्यतिरेकी है और प्राय: इन दोनों की चर्चा ध्रुवता शीर्षक के अन्तर्गत की जाती है।

अंग्रेजी व्याकरण वर्णन में विशेषण के रूपात्मक विकृतिहीन रूप को भी सकारात्मक कहते हैं, जैसे - high, low, hot।

सजात cognate

जिस स्रोत से कोई भाषा, भाषिक रूप व्युत्पन्न हुआ है उसी समान स्रोत से व्युत्पन्न अन्य भाषाएं या भाषिक रूप सजात कहलाते हैं, उदाहरणार्थ - संस्कृत, ग्रीक, जर्मन, सजात भाषाएं हैं और पितृ, पतेर, फातेर (पिता) सजात शब्द हैं।

इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग एक प्रकार के वाक्यीय सम्बन्ध के लिए भी किया जाता है जिसे **सजात कर्म** कहते हैं अर्थात् जिसकी ऐतिहासिक व्युत्पत्ति उसको निर्दिष्ट करने वाली क्रिया की भांति ही हो (अथवा स्थूल अर्थ में, जो क्रिया के कार्य पर आर्थी रूप से आश्रित हों) यथा - 'प्रश्न पूछो, सुखी जीवन जिओ।'

सजीव animate

शब्द के व्याकरणिक वर्गीकरण का एक उपवर्ग सजीव कहलाता है जिसमें आदमियों एवं जानवरों की गणना होती है। इसके विपरीत वर्ग में निर्जीव वस्तुएं एवं अवधारणाएं परिगणित होती हैं।

सतत continuous

क्रिया रूपों के व्याकरणिक वर्णन में इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग किया जाता है। क्रिया के ये रूप निरन्तरता या अविच्छिन्नता प्रदर्शित करते हैं, यथा - वह जा रहा है; राम खेल रहा था। पारम्परिक व्याकरण से भिन्न भाषाविद् इनकी पक्ष सम्बन्धी व्याख्या पर अधिक बल देते हैं क्योंकि इनमें सातत्य बोधक, पूर्णतावाची एवं कालसूचक अर्थ की जटिल अन्तर्प्रक्रिया समाहित होती है।

सतही shallow

प्रजनक व्याकरण के संशोधित विस्तारित सिद्धान्त में बाह्य संरचना से भिन्न एक प्रतिरूपण स्तर को सतही संरचना नाम दिया गया। दोनों में सैद्धान्तिक भिन्नता यह है कि सतही संरचना में व्याकरण में कई प्रकार की रूपात्मक संक्रियाओं का प्रयोग किया जाता है और साथ ही स्वनप्रक्रियात्मक नियमों, फिल्टर, लोप, शैलीवैज्ञानिक नियमों का भी प्रयोग होता है। कतिपय प्रजनक भाषाविदों ने चक्रिक रूपान्तरणों के परिणाम को भी सतही संरचना नाम दिया, जबकि Revised Extented Standard Theory (REST). इस सिद्धान्त में यह उत्तरवर्ती चक्रिक रूपान्तरणों के निर्गत को सन्दर्भित करता है।

सत्तामीमांसा ontogeny

भाषाविज्ञान में भाषिक सत्ता मीमांसा से तात्पर्य कालक्रमानुसार किसी व्यक्ति विशेष का भाषार्जन विकास एवं ह्रास सम्बन्धी अध्ययन है। शिशु भाषा विश्लेषण में इस अध्ययन का विशेष योगदान होता है।

सत्तावाची essive

किसी अस्तित्त्वपूर्ण वस्तु या व्यक्ति की स्थिति की द्योतक एक विभक्ति। फिन्निश भाषा में सत्तावाची कारक मिलता है।

सत्याश्रयी alethic

वृत्तिवाचक क्रियाओं एवं तत्सम्बन्धी संरचनाओं के विश्लेषण के लिए कतिपय भाषाविदों ने वृत्तिवाचक तर्कशास्त्र से व्युत्पन्न इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग अपने सैद्धान्तिक प्रारूप के अन्तर्गत किया। सत्याश्रयी वृत्तिवाचकता का सम्बन्ध तर्क वाक्यों के वास्तविक सत्य से होता है, यथा - 'गाड़ी तैयार होनी चाहिए' वाक्य से यह भी द्योतित होता है कि 'गाड़ी बाहर खड़ी है'। यह आबंधी (dontic) तथा ज्ञानात्मक (epistemic) से भिन्न होती है।

सत्व substance

भाषा का निर्माण करने वाली आधारभूत सामग्री (यथा - ध्वनि तरंगे; लिपि चिह्न) सत्व कहलाती है। भाषाविज्ञान में सत्व एवं रूप के मध्य भिन्नता स्थापित की गई। रूप से तात्पर्य सम्बन्धों की उस अमूर्त अभिरचना से है जो किसी भाषा द्वारा सत्व पर आरोपित की जाए। सैस्यूर के सिद्धान्त में अर्थ में भी सत्व की सता मानी गई जैसे विचारों, भावनाओ आदि की धारणा सम्बन्धित संचित सामग्री। हॅलिडे के सिद्धान्त में सत्व को एक स्वतन्त्र स्तर माना गया तथा इसका प्रयोग स्वनिक एवं लेखिक माध्यम तक सीमित रखा गया।

सत्ववाचक substantive

किसी व्याकरण द्वारा प्रतिपादित वे प्रारम्भिक तत्त्व जो भाषिक सामग्री के विश्लेषण के लिए अनिवार्य हों, सत्ववाची सार्वभौम कहलाते हैं, यथा-प्रजनक व्याकरण में निरूपित सप., क्रिप; [+मानवीय] आदि संकल्पनाएं।

सनिषेध मंडनोक्ति litotes

अर्थ परिवर्तन का एक प्रकार जिसमें शब्द निर्बल से सबल अर्थ की ओर अग्रसर होता है, यथा - अंग्रेजी शब्द `kill' का प्राचीन अर्थ `torment' अर्थात् `उत्पीड़न' / 'यातना' था जो आजकल 'हत्या / वध' अर्थ में परिवर्तित हो गया है।

सन्निकृष्ट संहिता close juncture

किसी शब्द सीमा के अन्तर्गत एक स्वनिम से दूसरे स्वनिम के उच्चारण में विरामरहित संक्रमण सन्निकृष्ट संहिता कहलाता है, यथा - पीली (पी+ली), nitrate (night+rate)।

सपीर-वूर्फ परिकल्पना Sapir-Whorf hypothesis

अमरीकी भाषाविद् एडवर्ड सपीर एवं उनके शिष्य बेंजामिन ली वूर्फ ने भाषा एवं विचार के मध्य प्राप्त सम्बन्ध को प्रतिपादित करने वाले सिद्धान्त का निरूपण किया। इसे भाषिक सापेक्षवाद का सिद्धान्त भी कहते हैं। इन्होंने भाषा अभिरचना और भाषेतर (सांस्कृतिक) अभिरचना के पारस्परिक सम्बन्धों को अधिक व्यापक धरातल पर प्रस्तुत कर शब्द एवं जीवन-व्यापार की स्थूल अभिव्यक्तियों को अन्योन्याश्रित माना। इनकी मान्यता थी कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी भाषा के माध्यम से विश्व को देख कर व्याख्यायित करता है। प्रत्येक जाति की अपनी पूर्वकल्पित धारणाएं होती हैं जिन्हें वह अपनी भाषा की सीमाओं में व्यक्त करता है अर्थात् प्रत्येक भाषा की अपनी एक सीमित संस्कृति उसी प्रकार होती है जैसे किसी जनजाति की होती है। कोई भी व्यक्ति अपने बाह्य परिवेश को सर्वथा निरपेक्ष भाव से वर्णित नहीं कर सकता। उसकी अपनी एक भंगिमा होती है जो उस भाषा के व्याकरण (संरचना) में भी सर्वत्र परिलक्षित होती है। सपीर-वूर्फ परिकल्पना का तत्कालीन अध्ययनों पर कम प्रभाव पड़ा।

सप्रतिबंध/हेतुमद् conditional

व्याकरणिक वर्णन में एक विशेष उपवाक्य को सन्दर्भित करने वाला शब्द जिसकी आर्थी भूमिका अनुमानों की अभिव्यक्ति होती है। अंग्रेजी में if. unless द्वारा इनकी अभिव्यक्ति होती है (if Ram asks, tell him that...)। अंग्रेजी के विश्लेषणों में 'हेतुमद् काल' की पारम्परिक व्याकरणिक अवधारणा (जिसमें would, should का प्रयोग होता है) प्रायः वृत्तिवाचक क्रिया या पक्षीय क्रिया के रूप में व्याख्यायित की जाती है।

समज्जन syncretism

विभक्तियों के लोप के कारण जब कोई रूप किसी अन्य रूप में विलयित हो जाता है तो यह प्रक्रिया ऐतिहासिक भाषाविज्ञान में समज्जन कहलाती है। किसी एक पदिम के दो रूपों के मध्य की भिन्नता को दर्शाने के लिए भी इस शब्द का प्रयोग मिलता है, यथा - अंग्रेजी वाक्य मैं। talked में talked भूतकाल का रूप है जबकि I have talked में भूतकालिक कृदंत का रूप है यहाँ दोनों के मध्य का भेद समज्जित या निर्विषमीकृत हो गया है।

समतल feat

यकोब्सन एवं हॉले द्वारा प्रतिपादित भेदक अभिलक्षण सिद्धान्त में प्रतिपादित ध्वनि का एक अभिलक्षण जिसका विलोम **असमतल** होता है। ये ध्वनियाँ उच्चारणात्मक

एवं ध्वनिक दोनों दृष्टियों द्वारा विवेचित की जा सकती हैं। इनके उच्चारण में अन्य ध्वनियों की तुलना में मुख का छिद्र संकुचित होता है साथ ही कोमलतालव्यरंजन की प्रक्रिया भी होती है और स्वन स्पैक्ट्रम की उच्च आवृत्ति घटकों की ऊर्जा अपेक्षाकृत कम हो जाती है।

समतान सीमा रेखा isotonic lines

सुर सम्बन्धी विशेषताओं को अंकित करने वाली रेखाएं समतान कहलाती हैं। चीनी परिवार की भाषाओं में सुर का बहुत महत्त्व है। वहां, सुर भेदक का कार्य करता है। हिन्दी क्षेत्र में मेरवाड़ी में कील शब्द एक सामान्य अर्थ में तथा 'की ऽलो' सुर के साथ उच्चारण होने पर 'ओढ़नी' के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

समतुलित equipollent

प्राग् सम्प्रदाय के स्वनप्रक्रियात्मक अध्ययन में जिन प्रतियोगों की चर्चा की गई उनमें से एक समतुलित है तथा अन्य दो **वैयक्तिक** एवं **क्रमिक** हैं। वह प्रतियोग जिसके सदस्य तार्किक दृष्टि से एक दूसरे के समतुल्य हों तथा जो न तो क्रमशः और न ही किसी द्विचर अभिलक्षण के कारण व्यतिरेकी हो, समतुलित कहलाता है। त्रुबेत्सकाय के अनुसार /p/ और /k/ की भिन्नता समतुलित है क्योंकि जहाँ / p / अकोमलतालव्य नहीं है वहीं / k / अद्विओष्ठ्य नहीं है।

समधिकता redundancy

सूचना का वह अंश जो पूर्वानुमेय होने के कारण सम्प्रेषण की दृष्टि से अपेक्षित नहीं होता है। यदि एक भाषिक इकाई के परिज्ञान के लिए किसी अभिलक्षण (स्वनिक, व्याकरणिक) की अनिवार्यता नहीं होती है तो वह अभिलक्षण समधिक माना जाता है, जैसे - हिन्दी स्वनिम /प/ एवं /ब/ का व्यतिरेक घोषता, प्राणता आदि अभिलक्षणों के आधार पर व्याख्येय है किन्तु, इनमें से एक के आधार पर व्यतिरेक स्थापित हो जाने पर, अन्य अभिलक्षण समधिक हो जाते हैं।

प्रजनक स्वनप्रक्रिया में वे नियम जो किसी रूपिम अथवा शब्द के समधिक स्वनिमिक अभिलक्षणों को व्यक्त करते हैं **समधिकता नियम** कहलाते हैं। इनके दो भेद हैं - (i) **खंड समधिकता नियम** अर्थात् वे नियम जो किसी खंड/स्वन के अभिलक्षणों का पूर्वानुमान करते हैं और जो परिवेशी स्वनों से नियन्त्रित नहीं होते हैं। (ii) **अनुक्रम समधिकता नियम** - वे नियम जो किसी खंड /स्वन अथवा उसके अभिलक्षणों का पूर्वानुमान परिवेश में आगत अन्य स्वनों के आधार पर करते हैं।

समपाठ cotext

सन्दर्भ शब्द की संदिग्धार्थिकता को दूर करने के लिए ब्रिटिश भाषाविदों ने इस शब्द का प्रयोग किया जो भाषिक तथा स्थितिपरक परिवेश/सन्दर्भ दोनों का द्योतक है। सामान्यत: भाषिक के लिए समपाठ तथा स्थितिपरक के लिए सन्दर्भ शब्द का प्रयोग मिलता है।

समभाषांश सीमा रेखा isogloss

भाषा सम्बन्धी समानताओं या विषमताओं को जिन रेखाओं द्वारा मानचित्र पर अंकित किया जाए उन्हें समभाषांश सीमा रेखा कहते हैं। भाषा विशेष की स्वन, व्याकरण अथवा शब्द सम्बन्धी प्रकृति को आधार बना कर ये रेखाएं खींची जा सकती हैं। इनके द्वारा बोलियों या उपरूपों का ज्ञान होता है।

समरूप homonym

ऐसे कोशीय मद (शब्द) जिनमें रूपगत समानता एवं अर्थगत भिन्नता हो, यथा - आम (=फल, सामान्य) कनक (=धतूरा, सोना) यहाँ उच्चरित एवं लिखित दोनों रूपों में एकरूपता है। आंशिक समरूपता भी दृष्टिगत होती है जब उच्चरित या लिखित किसी एक रूप में समानता हो, जैसे - समस्वन या समलेख।

समरूप सीमा रेखा isomorph

भाषा मानचित्र पर अंकित वे रेखाएं जो किसी ऐसे वाक् क्षेत्र का निर्देश करती हैं जिसमें व्याकरणिक रूपों, विभक्तियों आदि की एकरूपता हो। इनके द्वारा मुख्यत: बद्ध रूपों का और उनमें भी विभक्त्यात्मक रूपिमों का वर्णन होता है, जैसे - सम्पूर्ण हिन्दी क्षेत्र को भूतकाल द्योतक प्रत्यय की भिन्नता के आधार पर विभाजित किया जा सकता है।

समलेख homograph

ऐसे शब्द जिनकी वर्तनी समान होने पर भी अर्थगत भिन्नता हो समलेख कहलाते हैं। यह एक प्रकार के समरूप कहे जा सकते हैं, यथा - बेल-फल, बेल-वृक्ष की एक जाति जो सहारा लेकर चढ़ती है।इसी प्रकार अंग्रेजी में -

wind -blowing

wind -a clock

समवर्ण, एकस्थानीय homorganic

एक उच्चारण स्थान एवं एक ही करण से उच्चरित स्वन इस वर्ग में आते हैं। इस प्रक्रिया में संकोच एवं संवार भी एक सा होता है, यथा [च]/[छ]; [न][त]।

समवाक्य सीमा रेखा isosyntagmic line

भाषा मानचित्र पर जिन रेखाओं द्वारा वाक्य रचना सम्बन्धी विशेषताओं का क्षेत्र अंकित किया जाता है। इसमें मुहावरे, कहावतों सम्बन्धी समानता को भी लिया जा सकता है। छत्तीसगढ़ी की हलबी बोली के तीन क्षेत्रों में भिन्नता दृष्टिगत होती है। हिन्दी 'उसे बुलाओ' के लिए वहाँ निम्नांकित रूप मिलते हैं-

हुनके कोका	बीजापुर क्षेत्र
हुनके बलाब	नारायणपुर क्षेत्र
हुनके बलाला	जगदलपुर क्षेत्र

समशब्द सीमा रेखा isolexic

जिन रेखाओं के माध्यम से शब्दों की रूपरचना एवं अर्थ को स्पष्ट करते हैं। भाषाओं में एक ही शब्द विविध ध्वन्यात्मक रूप में मिल सकता है (रस्ता / रास्ता) या एक ही शब्द भिन्न अर्थ में प्रयुक्त होता है (बाण- आदत: तीर) अथवा एक ही वस्तु या भाव के लिए विभिन्न शब्द मिलते हैं (कीचड़, चहला, ग्वादा)।

समस्वन homophone

ऐसे शब्द जिनका उच्चारण समान हो किन्तु जिनमें अर्थ स्तर पर भिन्नता हो, यथा - meat / meet; threw / through यह एक प्रकार की आंशिक समरूपता है।

समस्वन सीमा रेखा isophonic line

जहाँ समरूप रेखाएँ रूपरचनात्मक अभिलक्षणों को अंकित करती हैं वहाँ समस्वन रेखाएं स्वन सम्बन्धित विशेषताओं को अंकित करती हैं। स्वन एवं स्वनिक के क्षेत्रीय रूपान्तरों को स्पष्ट कर समान स्वन वाले क्षेत्रों को मानचित्र पर जोड़ दिया जाता है।

समाक्षर लोप haplology

जब एक अनुक्रम में आगत कतिपय ध्वनियों, जिनका उच्चारण समान है, में से

किसी एक ध्वनि या अक्षर का लोप हो जाए तो उसे समाक्षर लोप की संज्ञा देते हैं. यथा - मधुदुध>मदुध। लिखने की प्रक्रिया में जब दो वर्गों में से एक को न लिखा जाए तो यह लिपिगत समाक्षर लोप कहलाता है, यथा - खरीददार - खरीदार।

समाज-भाषाविज्ञान socio-linguistics

भाषाविज्ञान की एक शाखा जो भाषा के विविध पक्षों का सम्यक अध्ययन सामाजिक परिप्रेक्ष्य में करती है। भाषा एक सामाजिक यथार्थ है जो सामाजिक उपकरणों एवं सन्दर्भों से जुड़कर व्यावहारिक बनती है। यह शाखा समाज में गर्हित भाषा का पूर्ण अध्ययन करती है। भाषा तथा समाज के अन्तर्सम्बन्ध के समस्त पक्षों का उद्घाटन, सामाजिक समूहों की पहचान, भाषा के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण, मानक एवं अमानक भाषारूप, राष्ट्रभाषा प्रयोग की व्यवस्था और प्रतिमान, भाषा के स्तर एवं सामाजिक विभेद, बहुभाषिकता का सामाजिक आधार आदि इसके क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं। यदि इन्हीं बिन्दुओं का विश्लेषण भाषिक के स्थान पर सामाजिक दृष्टिकोण से किया जाए तो उसे **'भाषा का समाजशास्त्र'** कहते हैं।

समाज भाषिका sociolect

सामाजिक आधार पर निरूपित किया गया भाषा का एक भेद जो किसी विशिष्ट सामाजिक वर्ग या व्यावसायिक समूह से सम्बन्ध रखता है।

समाज व्यावहारिकतावाद sociopragmatics

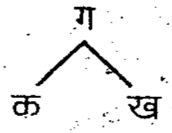
विविध भाषा प्रयोग किन सामाजिक स्थितियों का परिणाम होते हैं अर्थात् किस प्रकार सामाजिक परिस्थितियाँ उनकी व्युत्पत्ति का कारण बनती हैं इसकी चर्चा समाजव्यावहारिकतावाद कहलाती है तथा जब भाषा प्रयोग (language use) का अध्ययन भाषा में विद्यमान संरचनात्मक स्रोतों के आधार पर किया जाए तो उसे संकेत-प्रयोग भाषा विज्ञान की संज्ञा दी जाती है।

समादेश command

इस शब्द का प्रयोग वाक्य प्रकार्यों के वर्गीकरण के सन्दर्भ में किया जाता है तथा कभी व्याकरणिक, कभी आर्थी अथवा समाजभाषिक आधार पर इसे परिभाषित करने का प्रयास किया जाता है। वाक्य विन्यासात्मक दृष्टि से समादेश एक ऐसा वाक्य होता है

जिसमें कर्ता का अभाव हो तथा क्रिया आज्ञार्थक वृत्ति में हो। आर्थी दृष्टि से ये वाक्य किसी व्यक्ति को कुछ करने का निर्देश देते हैं। भाषा में यह कार्य अन्य रूपों द्वारा (वह लड़का जरूर जाएगा) या कभी-कभी अनुतान द्वारा सम्पादित किया जाता है।

आधुनिक प्रजनक व्याकरण में इस शब्द का प्रयोग **घटक समादेश** पदबन्ध के अन्तर्गत मिलता है, जिसे अंग्रेजी में c-command कहते हैं। यदि कोई सर्वप्रथम शाखन आसन्धि जो क को शासित करे वही ख को शासित करे तथा क के द्वारा ख शासित नहीं होता और ख के द्वारा क शासित नहीं होता तो ऐसी स्थिति में प्रथम घटक ग को घटक समादेश कहते हैं, जैसे निम्नांकित वृक्ष में -



अंग्रेजी के परसर्गीय पदबन्ध में यह स्थिति मिलती है।

समान सांचा common core

दो बोलियों अथवा भाषाओं की समान विशेषताओं का योग समान सांचा कहलाता है। इसके आधार पर दो बोलियों / भाषाओं की आन्तरिक समानताओं का सैद्धान्तिक दृष्टि से अध्ययन किया जाता है। दो भाषा / बोली रूपों में पूर्ण समानता सम्भव नहीं है किन्तु भिन्नता होते हुए भी कुछ ध्वन्यात्मक, रूपात्मक एवं व्याकरणिक तत्त्व समान होते हैं, इसे ही समान सांचा कहते हैं।

समानाधिकरण[1] co-ordination

व्याकरणिक विश्लेषण में समतुल्य वाक्यीय महत्व वाली भाषिक इकाइयों को जोड़ने वाली प्रक्रिया समानाधिकरण कहलाती है, यथा - उपवाक्यों, पदबन्धों एवं शब्दों की श्रेणियां। 'राम आया और श्याम गया' वाक्य में समानाधिकरण उपवाक्यों की सम्बद्धता का चिह्नक 'और' उपस्थित है जो समानाधिकरण समुच्चयबोधक शब्द है। कभी-कभी कतिपय रचनाओं में इस चिह्नक का अभाव होता है, यथा - उसने स्पष्ट, सटीक उत्तर दिया।

विद्वानों ने द्विभाषिकता के वर्गीकरण के सन्दर्भ में **समानाधिकृत द्विभाषिकता** शब्द का प्रयोग किया। जो वक्ता दो भाषाओं के संवादी मदों को आंशिक या पूर्ण रूप से भिन्न अर्थ प्रदान करे उसे समानाधिकृत द्विभाषी कहते हैं।

समानाधिकरण[2] oppositive

व्याकरणिक स्तर पर जब इकाइयों का एक क्रम घटकवत कार्य करे तथा जिनकी सत्ता एवं सन्दर्भ समान हो, व्याकरणिक वर्णन के कतिपय प्रारूपों में, इसे समानाधिकरण की संज्ञा दी जाती है, यथा - "मेरे डाक्टर, मि. वर्मा, आजकल लखनऊ में नहीं हैं" वाक्य में दो संज्ञापद हैं और दोनों का वाक्यीय प्रकार्य समान है।

समानार्थक synonym

दो कोशीय मदों के मध्य प्राप्त एक प्रकार का आशय सम्बन्ध। एक आदर्श भाषा में किसी कोशीय मद का एक निश्चित अर्थ होता है किन्तु यह आदर्श स्थिति सदैव नहीं मिलती है। प्रायः एकाधिक कोशीय मद एक या लगभग समान अर्थ द्योतित करते हैं, जैसे - फल : पुष्प; औरत : नारी। ऐसे कोशीय मद समानार्थक एवं इनका सम्बन्ध **समानार्थकता** कहलाता है। समानार्थकता से तात्पर्य समान या समस्त सन्दर्भों में समान अर्थ नहीं होता अर्थात् मदों के मध्य पूर्ण समानता नहीं मिलती है और न ही समानार्थक मद सदैव एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग किए जा सकते हैं, उदाहरणार्थ - 'मैं जीत गया' वाक्य में 'विजय' का प्रयोग अनुपयुक्त होगा।

समानुपाती proportional

प्राग् सम्प्रदाय द्वारा प्रतिपादित प्रतियोग का एक प्रकार जो एकल प्रतियोग से भिन्न होता है। अंग्रेजी के / f/ एवं / v/ के मध्य प्राप्त प्रतियोग समानुपातिक है क्योंकि इसके समानान्तर भाषा में अन्य प्रतियोग कार्यरत मिलते हैं जैसे - /s/ एवं /z/ जबकि /v/ एवं /y/ का प्रतियोग एकल कहलाएगा क्योंकि कोई अन्य खण्ड इस प्रकार का व्यतिरेक प्रदर्शित नहीं करते हैं।

समावेश inclusion

एक प्रकार का आर्थी सम्बन्ध जो अवनाम के आशय सम्बन्ध जैसा होता है, यथा - मिठाई एक प्रकार की खाद्य सामग्री है इस कथन का तात्पर्य यह होगा कि समस्त मिठाइयाँ खाद्य सामग्री वर्ग में समाविष्ट हैं।

व्याकरणिक विश्लेषण में कोई भाषिक रूप जो किसी रचना का घटक भी हो 'समाविष्ट स्थिति' में कहा जाता है, यथा - 'छत से गिरकर' उपवाक्य निम्नलिखित वाक्य में समाविष्ट है 'मेरे पड़ोस में रहने वाला लड़का छत से गिरकर मर गया'।

समावेशक भाषा incorporating languages

शब्द की विशेषताओं को केन्द्र में रखकर संरचनात्मक आधार पर किए गए भाषाओं के वर्गीकरण का एक वर्ग प्रश्लिष्ट या समावेशक नाम से प्रसिद्ध है। इस वर्ग की भाषाओं में मूल तत्त्व एवं प्रत्यय का ऐसा योग होता है कि उनको विखण्डित करना सम्भव नहीं होता। इसमें रूपरचनात्मक दृष्टि से जटिल एवं लम्बे शब्द रूपों का प्रयोग होता है यह अमरीकी जनजातियों की भाषाओं की विशेषता है। कभी-कभी अंग्रेजी में anti/dis/establish/ment/arain/ism/s जैसे सप्रयास निर्मित शब्द मिलते हैं।

समास compound

दो या दो से अधिक मुक्त पदों के योग से निर्मित नया पद समास कहलाता है। प्राय: संयोगी पदों के बीच से कारक चिह्न, कारक परसर्ग तथा समुच्चयबोधक पदों का लोप करके कई पदों के योग से एक समास पद बनता है। लुप्त किए गए पदों को यदि संयोगी पदों के बीच में रख दिया जाए तो इस प्रक्रिया को व्याकरण में समास विग्रह या समास-विश्लेषण की संज्ञा दी जाती है। प्रथम पद और द्वितीय पद की प्रधानता और अप्रधानता तथा विशेषण + संज्ञा, अव्यय + संज्ञा आदि के योग तथा विलुप्तप्राय कारक चिह्नों या परसर्गों के आधार पर हिन्दी में समासों का वर्गीकरण कर्मधारय (शुभागमन, पीताम्बर), द्विगु (चौराहा, पंचवटी) तत्पुरुष (देशभक्ति, सेनानायक), बहुब्रीहि (नीलकंठ, दत्तचित्त), द्वन्द्व (माता-पिता, छत्र-छाया) तथा अव्ययी भाव (दिनोंदिन, यथाशक्ति) इन छः वर्गों में किया जाता है।

समीकरण assimilation

जब कोई स्वन अपने निकटवर्ती स्वन के उच्चारण को प्रभावित कर उसे पूर्णत: या अंशत: अपने अनुरूप बना लेता है तो इस प्रक्रिया को स्वनविज्ञान में समीकरण की संज्ञा देते हैं। ऐतिहासिक भाषाविज्ञान के लिए समीकरण एवं इसके विलोम **विषमीकरण** का अध्ययन महत्त्वपूर्ण अध्येय विषय रहा है। पारम्परिक उपागम भाषा को स्वतन्त्र शब्दों के अनुक्रम के रूप में स्वीकारता है अत: समकालिक वाक् विश्लेषण में समीकरण को अधिक महत्त्व नहीं दिया गया।

समीकरण **पूर्ण** या **आंशिक** दो प्रकार का हो सकता है। अंग्रेजी के tin box पदबन्ध को सामान्य बोलचाल में tin box की जगह tim box, उच्चरित किया जाता है यहाँ आंशिक समीकरण है क्योंकि / n / / b / के प्रभाव में आकर / m / हो गया उसमें

द्विओष्ठ्यीकरण की विशेषता आ गई किन्तु उसमें स्फोटकता (plosiveness) नहीं आई। दूसरा वर्गीकरण **सन्निहित समीकरण** एवं **असन्निहित** के मध्य मिलता है। यदि परिवर्तन सन्निहित स्वन के कारण हो तो उसकी गणना प्रथम वर्ग में और यदि परिवर्तन असन्निहित स्वन के कारण हो तो उसकी गणना द्वितीय वर्ग में होती है।

समीकरण किस दिशा में हो रहा है इस आधार पर तीन वर्ग मिलते हैं-

1. **पश्चगामी -** जब प्रारम्भिक ध्वनि के प्रभाव से स्वन परिवर्तित होता है, यथा- 'lunch score' का उच्चारण s को /ʃ/ उच्चरित कर किया जाए। ये समीकरण कम घटित होते हैं। हिन्दी में 'हाथ ही'-हाथ्थी।
2. **पुरोगामी -** जब स्वन परिवर्तन बाद वाले स्वन के कारण हो, यथा - 'सात दिन' पदबन्ध का उच्चारण 'साद्दिन'।
3. **संलयी समीकरण** - जब स्वर परस्पर एक दूसरे को प्रभावित करें, यथा - सत्य-सच्च। अंग्रेजी में don't you का उच्चारण /dəvntʃʊ/ इस प्रकार होता है।

समीपस्थ अवयव / आसन्न घटक immediate constituent

किसी रचना के समस्त घटकों का पारस्परिक सम्बन्ध एक सा नहीं होता है तथा रचना के कतिपय घटक अन्य की अपेक्षा अधिक घनिष्ठतापूर्वक सम्बद्ध होते हैं। वाक्य रचना या रूप रचना के स्तर पर संरचनात्मक दृष्टि से अधिक घनिष्ठता एवं समीपता रखने वाले घटक आसन्न घटक कहलाते हैं, यथा-यह लड़की सो रही है वाक्य के आसन्न घटक 'यह लड़की' तथा 'सो रही है' होंगे। 'यह लड़की' रचना के घटक 'यह' तथा 'लड़की' है और 'सो रही है' रचना के घटक 'सो' तथा 'रही है'। इस प्रकार यह प्रक्रिया अविभाज्य घटकों के प्राप्त होने की स्थिति तक निरन्तर चलती रहती है। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया को आसन्न घटक विश्लेषण कहते हैं। यह विश्लेषण अमरीकी ब्लूमफील्डियन धारा के संरचनात्मक विश्लेषण का प्रमुख अभिलक्षण माना जाता है।

समुच्चय बोधक conjunction

समुच्चय बोधक अव्यय वे हैं जो दो शब्दों, दो पदबन्धों, दो उपवाक्यों या वाक्यों को मिलाते हैं। रूप और अर्थ, प्रयोग आदि की दृष्टि से इनके दो प्रकार मिलते हैं **समानाधिकरण समुच्चयबोधक** (और, किन्तु, लेकिन आदि) तथा **व्याधिकरण समुच्चयबोधक** (क्योंकि, यदि-तो आदि)।

कुछ सर्वनाम, विशेषण एवं क्रियाविशेषण भी दो वाक्यों को जोड़ते हैं और समुच्चयबोधक की भांति कार्य करते हैं, यथा - जो लड़का आया था, वह चला गया; जैसा तुम करोगे, वैसा ही फल पाओगे; जब वह आएगा तब मैं जाऊंगा।

समुद्दिष्ट referent

किसी भाषिक अभिव्यक्ति द्वारा सन्दर्भित बाह्य जगत के सत्व (जैसे - वस्तु, घटना) की ओर संकेत करने वाला शब्द समुद्दिष्ट कहलाता है, जैसे - पतंग शब्द का समुद्दिष्ट वस्तु पतंग है। इस शब्द का प्रयोग अर्थ के शब्द-वस्तु विश्लेषण तथा शब्द-संकल्पना-वस्तु विश्लेषण दोनों में किया जाता है। समुद्दिष्ट अर्थ की अवधारणा से सम्बन्धित अनेक सीमाओं की चर्चा की गई जैसे अनेक शब्दों का स्पष्ट समुद्दिष्ट नहीं होता (यथा सम्भव, यद्यपि); एक ही वस्तु की ओर संकेत करते हुए एकाधिक भाषिक अभिव्यक्तियों का प्रयोग किया जा सकता है जो पर्यायवाची भी नहीं होते (जैसे - किताब की ओर संकेत करते हुए कह सकते हैं कि वह पुस्तक/यह उत्तर/यह प्रश्न...)

समुद्दिष्ट संज्ञापद referential noun phrase

विधेय कैल्कुलस में प्रयुक्त एक पारिभाषिक शब्द प्रायः जिसका उल्लेख अर्थविज्ञान सम्बन्धी सिद्धान्तों में किसी नाम एवं सरल वाक्य प्रतिज्ञप्ति, जिसका वह अंग है, का सम्बन्ध बताने के लिए किया जाता है यथा - 'राम जाता है' वाक्य में राम इस प्रतिज्ञप्ति का समुद्दिष्ट संज्ञापद है। कारक व्याकरण में प्रत्येक आधारभूत प्रतिज्ञप्ति का विश्लेषण विधेय शब्द तथा अक्रमित समुद्दिष्ट संज्ञापद प्रकार्य-स्थान के समुच्चय के रूप में किया जाता है। विधेय शब्द से इनके आर्थी (कारक) सम्बन्धों के कारण इन प्रकार्य-स्थानों को नामपत्रित किया जाता है। आधुनिक प्रजनक भाषाविज्ञान में इस शब्द का प्रयोग वाक्यान्तर्गत किसी भी संज्ञापदबन्ध स्थिति (चाहे वह कर्तावत् कार्य करे या कर्मवत्) के लिए किया जाता है। अनुबन्धन सिद्धान्त में इसका विशेष स्थान है।

समुद्दिष्ट सूचक referential indices

किसी वाक्य के मदों के समुच्चय से संयुक्त चिह्नकों के लिए प्रजनक व्याकरण में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द जो संदर्भगत भेद या तादात्म की सूचना देता है। हिन्दी के निम्न दो वाक्य (i) औरत ने औरत को जलाया, तथा (ii) औरत ने अपने को जलाया, समान मूलाधार संरचना 'औरत ने औरत को जलाया' से व्युत्पन्न हुए हैं। इन दोनों वाक्यों की

भिन्नता दर्शाने के लिए वाक्यों को चिह्नित किया जाएगा (i) औरत$_{\text{(क)}}$ ने औरत$_{\text{(ख)}}$ को जलाया अर्थात् पहली और दूसरी औरत भिन्न-भिन्न हैं। (ii) औरत$_{\text{(क)}}$ ने औरत$_{\text{(क)}}$ को जलाया अर्थात् दोनों समान हैं। समान समुद्दिष्ट सूचक परिवर्तों से चिह्नित मद प्रति समुद्देश्य कहलाते हैं।

समूह group

प्राग् सम्प्रदाय के स्वनप्रक्रियात्मक अध्ययनों में स्वनिम को 'स्वनिक प्रभेदक अभिलक्षणों का समूह' इन शब्दों में परिभाषित किया गया, उदाहरणार्थ - हिन्दी का 'क' स्वनिम अघोष, अल्पप्राण, स्पर्श, कंठ्य अभिलक्षणों के संयोजन का परिणाम है।

समूहन grouping

उच्चारणात्मक स्वनविज्ञान में प्रयुक्त एक पारिभाषिक शब्द जो जिह्वा की उस स्थिति विशेष को सन्दर्भित करता है जिसमें स्वन उच्चारण के समय जिह्वा का शरीर ऊपर उठा एवं तना होता है, यथा - संवृत्त स्वर [i] और [u] अथवा वर्त्स्य तालव्य स्थान से उच्चरित संघर्षी [ʃ]।

समूहवाचक collective

वे संज्ञाएं जो वस्तुओं के समूह को एक समग्रता के रूप में नामोद्दिष्ट करती हैं, यथा - परिवार, भीड़, सर्वहारा आदि हिन्दी में इनकी गणना जातिवाचक वर्ग के अन्तर्गत ही होती है।

सर विलियम जोन्स Sir William Jones

सर जोन्स भाषाविज्ञानी नहीं विधि विशेषज्ञ थे। सन 1783 में उनकी नियुक्ति कलकत्ता हाईकोर्ट में जज के रूप में हुई थी। भारत जैसे प्राचीन देश की संस्कृति में रुचि होने के कारण कुछ ही समय में उन्होंने संस्कृत पर अपूर्व अधिकार कर लिया। ग्रीक, लैटिन और मध्य यूरोपीय भाषाओं का ज्ञान उन्हें पहले से ही था। इन भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर 1786 में 'रॉयल एशियाटिक सोसाइटी' के स्थापना दिवस के अवसर पर सर जोन्स ने एक महत्त्वपूर्ण उद्घोषणा की। उनके अनुसार संस्कृत, ग्रीक और लैटिन से कहीं अधिक परिनिष्ठित और विलक्षण आकृति की भाषा है और ये भाषाएं किसी समान मूल से विकसित हुई हैं। जोंस की इस मौलिक एवं महत्त्वपूर्ण खोज ने भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन को नवीन दिशा दी।

सम्मिश्र / जटिल complex

भाषाविज्ञान में इस शब्द का प्रयोग अनेक आशयों में मिलता है। **सम्मिश्र शब्द** - जिस शब्द की रचना कम से कम एक मुक्त रूपिम और एक बद्ध रूपिम द्वारा हो (घरेलू); **सम्मिश्र / जटिल वाक्य** - यदि किसी वाक्य में एकाधिक उपवाक्य हों या किसी वाक्य में एक मुख्य उपवाक्य और कम से कम एक आश्रित उपवाक्य हो (यदि पानी नहीं बरसा तो फसल नष्ट हो जाएगी); **सम्मिश्र करण** - यदि किसी स्वन के उच्चारण में एक साथ दो या अधिक एकल करणों का प्रयोग हो; **सम्मिश्र तरंग** वह तरंग जिसमें कंपनों की आवृत्ति एक समान न होकर अनेक रूपों की हो।

प्रजनक व्याकरण के कतिपय प्रारूपों में **सम्मिश्र प्रतीक पदबन्ध** का प्रयोग पदबन्ध चिह्नक के उस प्रतीक के लिए किया जाता है जिसकी अपनी आन्तरिक संरचना होती है। इसमें एक अक्रमित वाक्यीय अभिलक्षणों का समुच्चय होता है, यथा - [स.] [+अमूर्त], [+चेतन], तथा (कतिपय विवरणों में) वह रूपिम जो अभिलक्षण समुच्चय द्वारा अलग किया गया है-

[+ संज्ञा
+ मानवीय
- व्यक्तिवाचक
आदमी]

सर्जनात्मकता creativity

भाषा प्रयोक्ता की वह क्षमता जिसके आधार पर वह अनन्त वाक्यों के उत्पादन एवं अवबोधन में समर्थ होता है तथा ऐसे अनेक वाक्य जो उसने पहले न बोले और न सुने हैं उनका भी वह प्रयोग करता है, उसकी सर्जनात्मकता कहलाती है। यह भाषा का एक प्रमुख अभिलक्षण है जो अभिरचनाओं की उत्पादकता या प्रत्यय अपेक्षिता की ओर संकेत करता है। इसके कारण कतिपय निश्चित संख्यक ध्वनियों के समुच्चय, संरचनाओं आदि के आधार पर अनन्त वाक्य राशि का निर्माण किया जा सकता है। यह विशेषता मानवेतर सम्प्रेषण माध्यमों में नहीं प्राप्त होती है। भाषाविद् चॉमस्की सर्जनात्मकता को विशेष महत्त्व देते हैं। इनके अनुसार भाषिक अध्ययन का उद्देश्य सृजन क्षमता की व्याख्या करना है तथा इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए इन्होंने प्रजनक नियमों का प्रस्ताव रखा।

सर्वनाम pronoun

शब्द के व्याकरणिक वर्गीकरण का एक सदस्य जो बहुधा आकार में छोटा और

संख्या में सीमित होता है तथा जिसका प्रयोग किसी संज्ञा अथवा संज्ञापदबन्ध के स्थान पर किया जाता है। अनेक भाषाओं में सर्वनाम स्वतन्त्र शब्द नहीं होते तथा कतिपय भाषाओं में पश्चाश्रयी होते हैं। हिन्दी में सर्वनाम के कई उपवर्ग मिलते हैं पुरुषवाचक सर्वनाम - मैं, तुम आदि; निश्चयवाचक सर्वनाम - यह, वह, वे, ये; प्रश्नवाचक सर्वनाम - कौन, क्या; सम्बन्धवाचक सर्वनाम - जो, सो, जिस, जिन; अनिश्चय वाचक-कोई, कुछ, किसी; निजवाचक-आप, अपना। हिन्दी में सर्वनाम वचन तथा पुरुष की रूपात्मक अभिव्यक्ति करते हैं तथा सम्बन्धवाचक सर्वनामों में लिंग की अभिव्यक्ति भी होती है। प्राय: किसी भाषा के सार्वनामिक वितरण का व्याकरणिक प्रकथन अत्यन्त जटिल होता है और इसकी चर्चा स्थिति निर्देश एवं अनुसर्व रूप (Pro form) के सन्दर्भ में होती है।

सर्वबोली pandialectal

किसी भाषा की समस्त बोलियो पर लागू होने वाला नियम या भाषिक अभिलक्षण बोली विज्ञान तथा समाजभाषिकी में सर्वबोली नाम से अभिहित किया जाता है।

सर्वभाषिका panlect

व्याकरण का एक सामान्य प्रारूप जिसमें समस्त व्यष्टिपरक भाषिकाएं अन्तर्सम्बन्धित हो सके और जो वक्ता की निष्क्रिय भाषिक दक्षता का प्रारूप प्रस्तुत करे. सर्वभाषिका कहलाता है।

सर्वव्याप्ति total accountability

1940 में संरचनावादी विद्वानों ने भाषिक विश्लेषण के इस सिद्धान्त का परिचय दिया और यह प्रतिपादित किया कि भाषा के एक स्तर पर वर्णित सभी कुछ अन्य स्तरों पर भी पूर्वानुमेय होता है। यह सिद्धान्त स्वनप्रक्रिया एवं रूपरचना के मध्य के सम्बन्ध के सन्दर्भ में प्रस्तुत किया गया। इनके मतानुसार प्रत्येक रूप ऐसे रूपिमों एवं बंधिमों द्वारा निर्धारित किया जाना चाहिए जिनसे उक्ति का निर्माण हुआ है।

सर्वसमता congruence

यह शब्द विश्लेषण के किसी एक स्तर (स्वनप्रक्रिया, व्याकरण, अर्थ) पर लिए गए निर्णयों के मध्य की संवादिता का संकेतक है। वाक्य में विभिन्न स्तरों के मध्य सर्वाधिक संवादिता की स्थिति होती है तथा कुछ अपवादों को छोड़कर प्रत्येक वाक्य व्याकरणिक,

आर्थी एवं स्वनप्रक्रियात्मक दृष्टि से स्वायत्त इकाई होता है। इसकी तुलना में शब्द की अवधारणा में कम समनामता दृष्टिगत होती है। प्रायः शब्द निर्धारण में स्वनप्रक्रियात्मक, रूपरचनात्मक, वाक्यीय तथा आर्थी आधार विरोध करते हैं।

सर्वादेश suppletion

यदि किसी रूप सारिणी के दो सदस्यों के बीच का सम्बन्ध किसी नियम द्वारा स्पष्ट करना सम्भव न हो तो उस स्थिति में वहाँ घटित प्रक्रिया सर्वादेश कहलाती है, यथा - हिन्दी में सहायक क्रिया रूप सारिणी के सदस्य है-था।

सर्वेक्षक investigator

भाषा या बोली क्षेत्र में जाकर सर्वेक्षण करने वाला व्यक्ति, सर्वेक्षक कहलाता है। इसका कार्य भाषाविषयक सामग्री एकत्र करना है। भाषाविद्, सर्वेक्षक के लिए अनेक गुणों की अनिवार्यता पर बल देते हैं, जैसे - धैर्यवान, साहसी, हंसमुख, क्षेत्रीय पद्धति का ज्ञाता, अन्तर्राष्ट्रीय वर्णमाला का ज्ञान आदि।

सह अनुबंधन sister adjunction

वह नियम जो रचना के कतिपय तत्त्वों को निकटवर्ती स्थितियों में रखता है. इसका उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि किस प्रकार ये रचनाएं बृहत्तर इकाइयों में समाविष्ट होती हैं। सह अनुबंधन में एक घटक 'क' को 'ख' से मातृ आसन्धि 'ग' के अन्तर्गत संयुक्त किया जाता है। चॉमस्की द्वारा प्रतिपादित अनुबन्धन में 'क' एवं 'ख' घटक के संयोजन के लिए नवीन 'ख' आसन्धि बनाई जाती है जो 'क, ख' को शासित भी करती है।

सह-उच्चारण[1] co-articulation

उच्चारण प्रक्रिया में मुख्य वागवयव के साथ ही किसी अन्य वागवयव की क्रियाशीलता के फलस्वरूप उद्भूत उच्चारण, यथा - प. अफ्रीकी भाषाओं में प्राप्त सह-उच्चारण स्पर्श [pk], [bg], या [bd]। पूर्वापेक्षी सह-उच्चारण में किसी विशिष्ट ध्वनि के उच्चारण में सहयोग न देने वाला उच्चारक उच्चारण की उस दिशा की ओर क्रियाशील होता है जिसकी आवश्यकता कथन में बाद वाली ध्वनि के लिए है, यथा - अंग्रेज़ी shoe शब्द का sh-बाद वाले [u:] के प्रभाव के पूर्वानुमान के कारण प्रायः ओष्ठ-वर्तुलन द्वारा उच्चरित होता है। जब कोई ध्वनि पूर्व उच्चरित ध्वनि की किसी विशेषता को सुरक्षित रखे

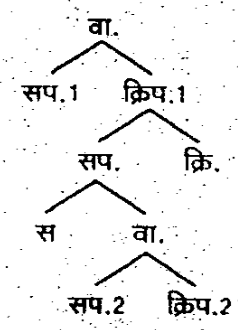
तो इस स्थिति को भी सह-उच्चारण की संज्ञा देते हैं।

सह उच्चारण² secondary articulation

दो बिन्दुओं की सहायता से उच्चरित ध्वनियों में वह उच्चारण बिन्दु जहाँ प्रथम की तुलना में निकोच कम मात्रा में होता है गौण या सह उच्चारण कहलाता है, जैसे - नासिक्यीकरण, तालव्यीकरण आदि। एक दृष्टि से इसे प्राथमिक उच्चारण पर आरोपित उच्चारण माना जा सकता है।

सह उपवाक्य clause - mate

यह शब्द प्रजनक व्याकरण में किसी पदबन्ध चिह्नक के अन्तर्गत आने वाले वाक्य के तत्त्वों के मध्य प्राप्त एक प्रकार के सम्बन्ध की ओर संकेत करताहै। समान वाक्य आसन्धि द्वारा शासित किए जाने पर तत्त्व सह उपवाक्य कहलाते हैं, यथा -



यह सप.1 तथा क्रिप.1 सह उपवाक्य हैं और सप.2 तथा क्रिप.2 भी सह उपवाक्य हैं किन्तु सप.1 और क्रिप.2 सह उपवाक्य नहीं हैं। रूपान्तरण नियमों की चर्चा में इसके माध्यम से लघुता आ सकती है, यथा - चयनपरक प्रतिबन्ध सिर्फ सह उपवाक्यों पर ही लागू होते हैं।

सहगमन conspiracy

प्रजनक स्वनप्रक्रिया में प्रयुक्त एक पारिभाषिक शब्द। नियमों का एक समुच्चय जो किसी विशिष्ट निष्कर्ष को प्राप्त करने के लिए एक साथ कार्यरत हो, और जिसे एक नियम के रूप में प्रतिपादित करना सम्भव न हो।

सहगामिता co-occurrence

भाषा के व्याकरणिक एवं कोशीय नियमों द्वारा स्वीकृत इकाइयों के श्रृंखलात्मक संयोगों को भाषाविज्ञान में इस पारिभाषिक शब्द द्वारा संकेतित करते हैं; यथा - हिन्दी में

'लड़के' शब्द से 'ने' सहगामी है 'लड़का' से नहीं है। इस प्रकार के प्रतिबन्ध 'सहगामिता सम्बन्ध' कहलाते हैं तथा प्रसंग सापेक्ष या विन्यास नियमों के रूप में उल्लिखित होते हैं। ये कार्यरत आश्रयताएं एकदिशिक (जैसे - अंग्रेजी में क्रिया विशेषण क्रिया का सहगामी होता है किन्तु यह अनिवार्य नहीं कि क्रिया क्रिया विशेषण की सहगामी हो), द्विदिशिक (जैसे - सकर्मक क्रिया एवं कर्म) या परस्पर व्यावर्तक (यथा - 'a' तथा 'an' का एक ही संज्ञापद में प्रयोग नहीं किया जा सकता) हो सकती हैं।

सहचारी associative

भाषिक चर्चा करते समय एक कोशीय इकाई जिन अभाषिक भावों को उत्पन्न करती है या उस शब्द से सम्बन्धित अन्य मानसिक भाव जो व्यक्ति के मस्तिष्क में आते हैं। इस अर्थ में सामान्यतः सहचारी शब्द का प्रयोग मिलता है। प्रत्येक शब्द का एक संकल्पनात्मक अर्थ होता है और एक सहचारी जैसे-सुई शब्द का प्रयोग दर्द, वेदना, चुभन का एहसास कराता है यह सहचारी अर्थ है।

कतिपय विद्वान इस शब्द को अधिक निश्चित अर्थ में प्रयुक्त करते हैं, जैसे - स्विस विद्वान सेस्यूर ने सारणिक सम्बन्धों को **सहचारी सम्बन्ध** नाम दिया।

कुछ अन्य विद्वान **सहचारी क्षेत्र** शब्द का उल्लेख करते हैं अर्थात कोशीय इकाइयों का ऐसा समुच्चय जिसके सदस्यों के मध्य रूपात्मक या आर्थी समानता प्राप्त हो।

सहज innate

प्रत्येक शिशु में भाषा अर्जन की जैविक पूर्वप्रवणता होती है। सहजातीयता परिकल्पना के अनुसार शिशु द्वारा अर्जित व्याकरणिक दक्षता, जिसका अर्जन शीघ्र एवं जटिल होता है, की व्याख्या केवल यही परिकल्पना करने में समर्थ है। इनके विचारानुसार मानव को भाषा के सार्वभौम संरचनात्मक सिद्धान्तों के सम्बन्ध में जन्म से सहज ज्ञान होताहै। प्रजनक व्याकरण सहजातीयता को भाषा का एक महत्त्वपूर्ण अभिलक्षण स्वीकारता है।

सहजवर्ग natural class

स्वनों का वह समूह जो वर्ग के पृथक-पृथक सदस्यों की तुलना में कम स्वनिमिक अभिलक्षणों द्वारा अभिव्यक्त किया जा सकता है। इसके दो मुख्य प्रकार्य हैं - स्वन सादृश्य को स्वाभाविकता के आधार पर बोधित कराना, जैसे - [b,d,g] एक सहज वर्ग है। इसे [+ सघोष + तात्कालिक निर्मोचन] अभिलक्षण गुच्छ द्वारा परिभाषित कर सकते हैं जबकि

[b,k,z] को सहज वर्ग नहीं कहा जा सकता। इसका द्वितीय कार्य स्वनिमिक प्रक्रिया को स्वाभाविकता के आधार पर बोधित कराना है, जैसे - $G \rightarrow g/- \begin{Bmatrix} b \\ d \\ g \end{Bmatrix}$ स्वाभाविक स्वनिमिक प्रक्रिया है जबकि $G \rightarrow g/- \begin{Bmatrix} b \\ k \\ z \end{Bmatrix}$ की प्रक्रिया को स्वाभाविक नहीं कहा जा सकता है।

ऐसा नियम जो स्वनिमिक प्रक्रिया की स्वाभाविकता का अतिक्रमण नहीं करता **सहज नियम** (natural rule) कहलाता है, उदाहरणार्थ - किसी अघोष व्यंजन का स्वर मध्य स्थिति में घोष होना सहज नियम है जबकि किसी घोष व्यंजन का स्वरमध्य स्थिति में अघोष होना असहज नियम।

सहप्रतिरूपणात्मक व्याकरण co-representational grammar

1970 में रूपान्तरण व्याकरण का एक रूपान्तर विकसित हुआ। इस भाषिक सिद्धान्त का उद्देश्य बाह्य संरचना को सीधे आर्थी संरचना से सम्बद्ध करना था। यह उपागम एक ऐसी एकाकी संरचना की स्थापना करता है जो वाक्य के आन्तरिक सम्बन्धों को अभिव्यक्त करने वाले वाक्यीय एवं आर्थी पक्षों का सहप्रतिरूपण करती है। इस एकल स्तर की बाह्य वाक्यीय संरचना वर्ग सदस्यता, रेखीय अनुक्रम तथा संज्ञा पदबन्ध सोपानिकी सम्बन्धी सूचनाएं तथा आर्थी संरचना विधेय एवं उसके स्वतन्त्र चरों के मध्य प्राप्त सम्बन्ध के विषय में सूचना देती है।

सहभागी भूमिका participant role

संकेत प्रयोग विज्ञान में यह शब्द उन प्रकार्यों की ओर संकेत करता है जो भाषिक अन्तर्प्रक्रिया में भाग लेने वाले व्यक्तियों पर आरोपित किए जा सकें। वक्ता एवं प्राप्तकर्ता के अतिरिक्त भी कई प्रकार की अन्य भूमिकाएं होती हैं, जैसे-सूचना ग्रहण करने वाला सूचना का मूल स्रोत।

सहवर्ती युग्म adjacency pair

वार्तालाप अन्तर्प्रक्रिया के समाजभाषावैज्ञानिक विश्लेषणों में प्रयोग आने वाला पारिभाषिक शब्द, जो सहभागियों की एकल उत्तेजना-प्रतिक्रिया अनुक्रम की ओर संकेत करता है। किसी वार्तालाप को आरम्भ करने, उसे बनाए रखने तथा वार्तालाप को समाप्त करने में सहवर्ती युग्मों की भूमिका का विश्लेषण किया जाता है, जैसे - किसी से भेंट होने पर या विदा देते समय किए गए भाषा के पारम्परिक प्रयोग। **सम्प्रेषण का जातिविज्ञान** विषय का यह एक महत्त्वपूर्ण अंग है।

सह सम्बन्ध[1] collocation

दो शब्दों के 'साथ-साथ रहने की प्रवृत्ति' को सह प्रयोग/सह सम्बन्ध कहा जाता है। भाषा में कुछ शब्द वितरण की दृष्टि से अपेक्षाकृत अधिक मुक्त होते हैं, जैसे - अच्छा (अच्छा घर, अच्छा लड़का, अच्छी जगह आदि), लेकिन कुछ शब्द किसी विशेष प्रकार या वर्ग के शब्दों की ही अपेक्षा करते हैं जैसे - प्रकांड (प्रकांड पंडित, प्रकांड विद्वान, * प्रकांड घर, * प्रकांड जगह)। भाषा में ये शब्द प्राय: एक दूसरे के सहभागी होकर आते हैं और एक विशेष प्रकार के शाब्दिक प्रतिबन्ध द्वारा नियन्त्रित होते हैं। व्यक्तिगत कोशीय मदों की स्वाभाविक सहभागिता के लिए जे.आर. फर्थ आदि विद्वानों ने इस शब्द का प्रयोग किया, यथा - 'शुभ' शब्द के साथ घड़ी, मुहूर्त, विवाह, कार्य आदि शब्द सह सम्बन्ध रखते हैं। इसी प्रकार सुई का सह सम्बन्ध सिलाई, कढ़ाई, दर्द, चुभन आदि शब्दों से है। ये एक प्रकार के विन्यासक्रमी कोशीय सम्बन्ध होते हैं और एक सीमा तक इनके सम्बन्ध में भाषिक पूर्वानुमेयता सम्भव है। यह पूर्वानुमान कहीं कम और कहीं ज्यादा होता है (जैसे - साफ - सुथरा के मध्य का सम्बन्ध दृढ़ है) यही विशेषता सहसम्बन्ध को आशय साहचर्य (sense associations) से भिन्न स्थापित करती है।

सहसम्बन्ध का एक गुण यह है कि ये रूपात्मक होते हैं आर्थी नहीं, यथा - 'गुलाबी' का सह सम्बन्ध 'शर्म' शब्द से है (नीला, पीला प्रयोग नहीं किया जा सकता है।) जबकि दोनों के बीच के सम्बन्ध का कोई समुद्दिष्ट आधार नहीं है। सहसम्बन्ध प्रजनक व्याकरण के चयन प्रतिबन्ध के समान होता है।

सह सम्बन्ध[2] correlation

प्राग् सम्प्रदाय के विद्वानों ने, ध्वनियों की दो श्रेणियों के मध्य व्याप्त व्यवस्थित सम्बन्ध की व्याख्या के लिए, सहसम्बन्ध शब्द का प्रयोग किया, उदाहरणार्थ - हिन्दी में अघोष एवं सघोष स्पर्श ध्वनियों की श्रेणियाँ घोषत्व के सह सम्बन्ध द्वारा सम्बन्धित हैं अर्थात् यहाँ घोषत्व सहसम्बन्ध का सूचक है।

सहसंवेदिता synesthesis

भाषा के रूप एवं अर्थ के मध्य प्राप्त प्रत्यक्ष साहचर्य अर्थविज्ञान में सहसंवेदिता कहलाता है, उदाहरणार्थ - अंग्रेजी में sl-ध्वनि संयोजन प्राय: अप्रसन्नता अभिव्यक्त करता है (जैसे - slither आदि)। इस प्रकार की स्वन-प्रतिकात्मक इकाइयों का अध्ययन स्वन सौन्दर्यशास्त्र के अन्तर्गत होता है।

सहसूचीकरण coindexing

किन्हीं श्रेणीबद्ध रचकों में सदृश अधोलेख अंक लगाने की प्रक्रिया प्रजनक सिद्धान्त के अन्तर्गत सह-सूचीकरण कहलाती है। ये अंक विशेषत: वाक्य की अन्त:स्तलीय संरचना के रचकों की पहचान करते हैं, यथा - I persuaded Mary$_i$ to leave$_i$ की अन्त:स्तलीय संरचना में सर्वनाम संकेतक का प्रयोग किया गया है। ये अंक इस तथ्य की ओर संकेत करते हैं कि Mary PRO के साथ सहसूचीकृत है और इस प्रकार वह leave शब्द का कर्ता है। लेश सिद्धान्त के संचलन नियम में भी सह-सूचीकरण का प्रयोग किया गया।

सहायक auxilary

क्रिया पदबन्ध के व्याकरणिक वर्णन में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द जो क्रिया के ऐसे समुच्चय की ओर संकेत करता है जिसके सदस्य मुख्य कोशीय क्रिया के आश्रित होते हैं तथा जो वाच्य, काल, अर्थ आदि से सम्बन्धित सूचना दे कार्य की प्रकृति संशोधित करते हैं, यथा - है, था, जाना आदि।

सहायक भाषा auxilary language

वह भाषा जिसका प्रयोग विविध भाषिक समुदाय सम्प्रेषण, व्यापार, शिक्षा आदि के क्षेत्र में करते हैं समाजभाषाविज्ञान मे सहायक भाषा कहलाती है। यह भाषा प्रयोक्ता भाषिक समुदायों में से किसी की भी मातृ भाषा नहीं होती है, जैसे - भारतवर्ष में अंग्रेजी अनेक समुदायों की सहायक भाषा है।

सान्दर्भिक अर्थ contextual meaning

अर्थविज्ञान में इसे प्रसंगार्थ और संवेगार्थ से भिन्न प्रतिपादित किया गया। कोई भाषिक इकाई अपने सामाजिक सन्दर्भ में किस प्रकार व्यवहृत होती है इससे सम्बन्धित सूचना सान्दर्भिक अर्थ कहलाती है, यथा - कथन का निश्चित प्रयोग स्थान और समय क्या है? अथवा कथन किस प्रकार वक्ताओं की आयु, लिंग या वर्ग की सूचना देता है आदि।

सांदर्भिक परिवर्त contextual variant

ध्वनि और व्याकरण के ऐसे परिवर्त जो प्रयोग के लिए अपने सन्दर्भ पर निर्भर

करते हैं सान्दर्भिक परिवर्त कहलाते हैं। इनको आश्रित/प्रतिबन्धित परिवर्त भी कहते हैं। इसके उदाहरण रूप में सहस्वन व सहरूप लिए जा सकते हैं।

सांयोगिक combinatorial

भाषिक इकाइयों का एक आधारिक प्रकार्य अन्य इकाइयों से 'संयुक्त' होकर जटिलतर अभिरचनाओं की उत्पत्ति करना है, यथा - व्यञ्जनों एवं स्वरों के 'सांयोगिक अभिलक्षणों' अथवा सम्बन्धों का प्रयोग अक्षर की परिभाषा में किया जा सकता है। इस अर्थ में संयोग/सम्बन्ध एक प्रकार का शृंखलात्मक सम्बन्ध है तथा व्यतिरेक की सारणिक अवधारणा से विपरीत होता है।

सांस्कृतिक प्रेषण cultural transmission

सांस्कृतिक प्रेषण मानवीय भाषा की मूलभूत विशेषता है। कोई भी भाषा संस्कृति की अभिव्यक्ति भी है और उसका अंग भी। भाषा वंशानुक्रम द्वारा प्राप्त नहीं होती वरन् एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को सिखाती है। यह अवश्य है कि शिशु में कुछ अंतर्जात विशेषताएँ होती हैं जो उसे भाषा अधिग्रहण में सहायता देती हैं किन्तु मानवीय भाषा परिस्थितिजन्य होती है और भाषा अधिग्रहण में समाज का विशेष स्थान होता है। किसी संस्कृति के गुण-अवगुण भाषा के माध्यम से ही आने वाली पीढ़ी तक प्रेषित होते हैं।

सादृश्य analogy

ऐतिहासिक, तुलनात्मक भाषाविज्ञान एवं भाषा अधिग्रहण में प्रयुक्त एक शब्द जो किसी भाषा के अपवाद रूपों को प्रभावित करने वाली नियमन की प्रक्रिया को सन्दर्भित करता है। इस प्रकार भाषा में प्रचलित किसी नियमित रूप के सादृश्य पर नवीन रूप की रचना की जाती है और वक्ता ज्ञात रूप के आधार पर अपवाद रूप को गढ़ लेता है, उदाहरणार्थ - हिन्दी वक्ता प्राय: 'गर्मी' शब्द के सादृश्य पर 'ठंडी' का प्रयोग करते हैं जबकि शब्द 'ठंड' है इसी प्रकार संस्कृत तुभ्यम् से विकसित 'तुझ' के सादृश्य पर 'मुझ' का प्रयोग प्रारम्भ हुआ जो संस्कृत मह्यम् से विकसित है।

साधक / कर्तृ ergative

एस्किमो, बास्क आदि भाषाओं के व्याकरणिक वर्णन में प्रयुक्त एक पारिभाषिक

शब्द। ऐसी रचनाएं जिनमें सकर्मक क्रिया के कर्म तथा अकर्मक क्रिया के कर्ता के मध्य रूपात्मक समान्तरता मिलती है वहाँ सकर्मक क्रिया के कर्ता को **साधक** कहते हैं जबकि अकर्मक क्रिया का कर्ता और सकर्मक क्रिया का कर्म **निरपेक्षिक** कहलाते हैं। कर्तृता की यह अवधारणा कतिपय विद्वानों ने अंग्रेजी पर भी आरोपित की, यथा - the door broke और Thomas broke the door का विश्लेषण कर्तृता के रूप में होगा। broke के अकर्मक प्रयोग का कर्ता इसके सकर्मक प्रयोग के कर्म के समान है अत: क्रिया का अभिकर्ता साधक कर्ता के रूप में आया है।

साधक क्रम feeding order

नियम-क्रमण के प्रजनक भाषा विश्लेषण में प्रयुक्त एक पारिभाषिक शब्द जो नियमों के मध्य अवस्थित एक विशेष प्रकार के प्रकार्यात्मक सम्बन्ध की ओर संकेत करता है। जब किसी एक नियम (क) के अनुप्रयोग से ऐसा संरचनात्मक प्रतिरूपण निर्मित हो जिस पर एक अन्य नियम (ख) प्रयोग किया जा सके तो इस सम्बन्ध को साधक कहते हैं जिसका विपरीतार्थक बाधक होता है। यदि नियम (ख) ज 2 झ है तो निश्चित ही नियम (क) छ 2 ज होगा। इस परिस्थिति में नियम (क) (ख) के सम्बन्ध साधक कहलाएंगे और इन नियमों के रैखिक क्रम साधक क्रम कहलायेंगे।

सापेक्ष relative

किसी स्वन की अन्य स्वनों के संदर्भ में नापी जाने वाली मात्रा स्वनप्रक्रिया में **सापेक्ष मात्रा** कहलाती है।

आधुनिक सिद्धान्तों में सार्वभौम का एक प्रकार **सापेक्ष सार्वभौम** कहलाता है। वह सार्वभौम जो भाषा की सामान्य प्रवृत्ति के अनुरूप हो तथा जिसके अपवाद मिलते हों इसका विलोम **पूर्ण सार्वभौम** होते हैं।

सापेक्षता relativity

भाषिक सापेक्षता का सिद्धान्त भाषा एवं विचार के सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण तथ्यों को उद्‌घाटित करता है। इसके अनुसार किसी व्यक्ति की भाषा उसके जागतिक प्रत्यक्षीकरण के साथ-साथ उसकी सांसारिक व्यवस्था का भी निर्धारण करती है। इस विचार के प्रतिस्थापक जर्मन भाषाविद् हुम्बोल्ड थे। परवर्ती काल में एडवर्ड सपीर एवं उनके शिष्य वूर्फ ने इस धारणा का समर्थन किया जो सपीर-वूर्फ परिकल्पना नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह परिकल्पना पारम्परिक विद्वानों द्वारा प्रस्तावित भाषायी नियतत्त्ववाद तथा भाषिक सापेक्षवाद

का सम्मिलित रूप है।

सामग्री corpus

भाषिक आकड़ों का संग्रह (लिखित अथवा मौखिक भाषा का लिप्यंकित रूप) जिसका प्रयोग किसी भाषा के वर्णन के लिए अथवा उससे सम्बन्धित परिकल्पनाओं को प्रमाणित सिद्ध करने के लिए किया जाता है, उस भाषा की भाषिक सामग्री कहलाता है। प्रजनक भाषाविद् सामग्री प्रतिबन्धित वर्णन की आलोचना करते हैं। इनके मतानुसार भाषिक सामग्री सिर्फ भाषा प्रयोग (performance) का अंग है और भाषाविद् का उद्देश्य सामग्री से ऊपर उठ भाषा समग्रता का अध्ययन विश्लेषण है। किसी नवीन भाषा के सर्वेक्षण कार्य या ऐतिहासिक अध्ययन में सामग्री से अधिक विश्लेषण करना कठिन हो सकता है किन्तु ऐसी भाषाओं में जहाँ भाषाविद् निरन्तर मातृभाषाभाषी के सम्पर्क में रहता है, उसका दृष्टिकोण सामग्री प्रतिबन्धित नहीं वरन् सामग्री पर आश्रित होता है।

सामर्थ्य/क्षमता competence

प्रजनक व्याकरण में प्रयुक्त एक पारिभाषिक शब्द जिससे तात्पर्य किसी व्यक्ति के मातृभाषा ज्ञान से है, नियमों की संहिता जिसके ज्ञान द्वारा व्यक्ति अनन्त वाक्यों के उत्पादन एवं अवबोधन में सक्षम होता है, जो उसे व्याकरणिक अशुद्धियों एवं संदिग्धताओं का ज्ञान कराती है। इस भाषा ज्ञान के आधार पर वक्ता जो कुछ बोलता या सुनता है उसे 'प्रयोग' की संज्ञा दी जाती है अर्थात् भाषा के विशिष्ट कथन। चॉमस्की के विचारानुसार प्रजनक व्याकरण के पूर्व विद्वान मूलाधार सामर्थ्य के स्थान पर कथनों - भाषिक प्रयोग के अध्ययन में संलग्न थे।

भाषिक सामर्थ्य एवं प्रयोग का यह विभाजन प्राय: सभी विद्वानों को स्वीकार्य है किन्तु कतिपय विद्वान इन दोनों अवधारणाओं के मध्य स्पष्ट विभाजक रेखा खींचने के पक्षधर नहीं हैं (जैसी इनकी परिभाषाओं के मध्य है।), क्योंकि अनुतान, प्रोक्ति आदि अभिलक्षणों के सन्दर्भ में यह समस्या आती है कि इन वाक् गुणों को 'सामर्थ्य' के अन्तर्गत रखा जाए या 'प्रयोग' में।

चॉमस्की ने व्याकरणिक सामर्थ्य एवं संकेत प्रयोग विज्ञान सामर्थ्य इन दो वर्गों की चर्चा की है। जहाँ प्रथम भाषा संरचना के सिद्धान्त से सम्बन्धित है वहाँ द्वितीय भाषिक व्यवहार के सिद्धान्त से। किसी वाक्य द्वारा प्रेषित अभाषिक सूचनाएँ वक्ता को **संकेत प्रयोग सामर्थ्य** द्वारा ही ज्ञात होती हैं, यथा - 'आज का दिन बुरा था' परिप्रेक्ष्य में घटित प्रकरणों के आधार पर इस वक्तव्य के एकाधिक सूच्यार्थ हो सकते हैं जो श्रोता की संकेत

प्रयोग दक्षता पर निर्भर करते हैं। हिन्दी के एक अन्य वाक्य 'उसके आते ही हरि चला गया' में 'उसके' तथा 'हरि' एक ही व्यक्ति नहीं है इस तथ्य का ज्ञान **व्याकरणिक दक्षता** से होता है। समाज में प्रभावशाली ढंग से सम्प्रेषण के लिए वक्ता को क्या जानना अनिवार्य है? इसे चॉमस्की **सम्प्रेषण सामर्थ्य** कहते हैं। भाषिक व्यवहार के सामाजिक निर्धारक, वक्ता श्रोता के अन्तर्सम्बन्ध आदि की गणना इसी वर्ग में होती है।

सामाजिक संबोध phatic communion

मानवशास्त्री बी. मैलिनोफ़स्की ने सर्वप्रथम इस पद का प्रयोग किया जो बाद में भाषाविदों द्वारा व्यवहार में लाया गया। इनके अनुसार भाषा का प्रयोग सिर्फ सूचनाओं एवं विचारों के आदान-प्रदान के लिए नहीं वरन् सामाजिक सम्पर्क बनाए रखने तथा सम्पर्क के अनिवार्य वातावरण निर्माण के लिए होता है। इसे भाषा का **संबोध प्रकार्य** कहते हैं। एक सामाजिक गतिविधि के रूप में भाषा का प्रमुखतम प्रयोजन सामाजिक संबंध है वह सामाजिक प्रसंगों में व्यवहृत होती है तथा हमारे अनेक सामाजिक दायित्वों के निर्वाह का साधन बनती है।

सामान्य[1] common

व्याकरणिक वर्णन में एक व्याकरणिक कोटि के अचिह्नित रूपरचनात्मक रूपों को इस शब्द द्वारा सन्दर्भित किया जाता है। अंग्रेजी में. सम्बन्ध कारक के अतिरिक्त संज्ञाओं को **सामान्य कारक** वर्ग में रखते हैं। इसी प्रकार कुछ भाषाओं में **सामान्य लिंग** (उभय लिंग) पदबन्ध का प्रयोग किया जाता है, यथा - फ्रेंच में enfant (बच्चा) शब्द। पारम्परिक व्याकरण में **सामान्य संज्ञा** (जातिवाचक संज्ञा) आर्थी आधार पर प्रतिपादित संज्ञा का एक उपवर्ग है जिसके अन्तर्गत सामान्य अवधारणों की गणना की जाती है जबकि इसके विपरीत व्यक्तिवाचक संज्ञा वर्ग में व्यक्ति. वस्तु विशेष की गणना होती है।

समाजभाषिक अध्ययन में **सामान्य क्रोड** (समान क्रोड) पदबन्ध का प्रयोग मिलता है। यदि कतिपय भाषिक अभिलक्षण किसी भाषा के समस्त रूपों. सभी बोलियों में व्याप्त हों अर्थात् दो या अधिक बोलियों की समान विशेषताओं का योग समान क्रोड कहलाता है।

सामान्य[2] general

सामान्य अर्थात् जो सार्वभौम एवं सर्वमान्य हो। भाषाध्ययन के ऐसे सिद्धान्त एवं पद्धति जिनका अनुपालन सभी भाषाओं में किया जा सके उन्हें सामान्य विशेषताएँ मानते

हैं। इस प्रकार सामान्य भाषाविज्ञान के अन्तर्गत विषय की सभी प्रवृत्तियाँ सैद्धान्तिक, वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक समाहित हैं। कभी - कभी इसको अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान या भाषाविज्ञान की अन्तर्विषयी शाखाओं (यथा - समाजभाषिक, अनुवाद, नृभाषाविज्ञान आदि) के व्यतिरेक रूप में निरूपित किया जाता है। अनेक आरम्भिक भाषाध्ययनों में **सामान्य व्याकरण** पदबन्ध का प्रयोग लगभग इसी अर्थ में मिलता है। इसे ही प्रजनक व्याकरण में **सार्वभौम व्याकरण** अर्थ में ग्रहण किया गया। 1930 में अमरीकी विद्वान अल्फ्रेड कोर्ज़फ़्स्की द्वारा प्रतिपादित दार्शनिक विचारधारा **सामान्य अर्थ विज्ञान** नाम से प्रचलित हुई। आधुनिक अर्थविज्ञान से भिन्न इस उपागम का उद्देश्य व्यक्ति को शब्द एवं वस्तु के पारस्परिक अर्थ के प्रति जागरूक कर सम्प्रेषण व्यवस्था को सुधारना एवं विचारों को स्पष्ट करना है।

सामान्यीकृत पदबन्ध संरचना व्याकरण generalised phrase structure grammar

भाषिक रूपान्तरण के विकल्प रूप में विकसित एक भाषिक सिद्धान्त जो सन्दर्भ मुक्त पदबन्ध संरचना व्याकरण के लगभग समान होता है इस व्याकरण में रूपान्तरण नहीं होते हैं तथा एक वाक्य की वाक्यीय संरचना ही एकमात्र पदबन्ध चिह्नक होती है। पारम्परिक पदबन्ध संरचना व्याकरण में कोटि नामपत्रों (यथा - सप., वा.) की आन्तरिक संरचना नहीं थी जबकि सामान्यीकृत पदबन्ध संरचना व्याकरण में एक कोटि को नियमों द्वारा सरलता से प्राप्य विशिष्ट अभिलक्षणों का एक समुच्चय माना गया।

सामान्यीकृत रूपान्तरण generalised transformation

प्रजनक व्याकरण के प्रारम्भिक प्रारूप में प्रतिपादित रूपान्तरण नियमों का एक प्रकार जहाँ कोई नियम दो या दो से अधिक अन्त्य मालाओं के निविष्ट (input) पर संक्रिया करता है। इसके दो प्रकार होते हैं-संयोजी रूपान्तरण समानाधिकरण की व्यवस्था देखते हैं और आधायित रूपान्तरण आश्रितता की।

सामीप्य विद्या proxemics

संकेत विज्ञान में प्रयुक्त एक पारिभाषिक शब्द जो मानवीय सम्प्रेषण में अंग विन्यास, दूरी एवं स्पृश्य सम्पर्क सम्बन्धी विविधताओं के अध्ययन को सन्दर्भित करता है। ये विविधताएँ संस्कृति सापेक्ष होती हैं तथा इनका विश्लेषण आयु, लिंग, सामीप्य, सामाजिक भूमिका तथा इस प्रकार के अन्य तथ्यों के आधार पर किया जा सकता है।

साम्य सूचक equative

वाक्य का एक प्रकार जिसमें क्रिया के पूर्व एवं क्रिया के पश्चात आने वाले संज्ञा पदों के प्रसंगार्थों के मध्य तत्समक सम्बन्ध होता है, यथा - अंग्रेजी के वाक्य Ram is the teacher. इन तत्त्वों को जोड़ने वाली क्रिया साम्यसूचक क्रिया कहलाती है। रूसी आदि कतिपय भाषाओं में साम्यसूचक वाक्य मिलते हैं जहाँ काप्यूला (copula) क्रिया उपस्थित नहीं होती है।

सार्वभौमिक universal

समस्त भाषाओं में प्राप्त समान अभिलक्षणों को प्रजनक भाषाविद् सार्वभौमिक अभिलक्षण या भाषा सार्वभौम की संज्ञा देते हैं। चॉमस्की के विचारानुसार भाषाविज्ञान का उद्देश्य मानवीय भाषा को परिभाषित करने वाली सार्वभौम विशेषताओं को निरूपित करना है। चॉमस्की सार्वभौम तत्त्वों को दो वर्ग में विभाजित करते हैं **संज्ञापरक सार्वभौम** - वे संकल्पनाएँ जिनसे किसी भाषिक वर्णन में विशिष्ट प्रकथन निर्मित होते हैं, अर्थात् व्याकरण के वे मूल तत्त्व जो किसी भाषिक सामग्री के विश्लेषण के लिए अनिवार्य होते हैं, जैसे - सप., क्रिप., [+अमूर्त]। **रूपात्मक सार्वभौम** अधिक अमूर्त होते हैं, ये ऐसी अनिवार्य शर्तें हैं व्याकरण की रचना के लिए जिनका पूर्ण होना आवश्यक है, जैसे - नियमों के प्रकार, घटकों की संख्या, रूपान्तरण के प्रकार आदि।

सीम / पक्षपद seme

किसी विशिष्ट आर्थी क्षेत्र में कार्यरत लघुतम भेदक आर्थी लक्षण को यूरोपीय विद्वानों ने सीम की संज्ञा दी, जैसे - चौकी तथा कुर्सी के अन्तर को स्पष्ट करने वाले लक्षण, यथा - कुर्सी में हत्थे तथा पीछे टेक होती है। इन विद्वानों ने सीम को वर्गिम व्यतिरेक रूप में स्थापित करने का प्रयास किया और वर्गिम को सामान्य समूह के अभिलक्षण रूप में परिभाषित किया, जैसे - स्त्री/पुरुष।

सीमाकारी आसंधि bounding node

अर्वाचीन प्रजनक व्याकरण में उस आसंधि को यह नाम दिया गया जो सीमावर्ती घटक के रूप में कार्य करता है तथा इस प्रकार रूपान्तरणों अथवा अन्य नियमों के अनुप्रयोग को अवरुद्ध करता है।

सीमा - चिह्नक boundary marker

रूपान्तरण व्याकरण में संरचनात्मक इकाइयों की सीमाओं को दर्शाने वाले चिह्न. उदाहरणार्थ - एक श्रृंखला के तत्त्वों को (+) चिह्न तथा सीमाओं को (#) चिह्न दर्शाता है, यथा - # राम + बाजार + वर्त.+जा+-ता+ है#।

सीमित restricted

सामाजिक नियमों एवं व्यवस्था की प्रकृति के सामान्य सिद्धान्त के सन्दर्भ में समाजशास्त्री बेसिल बर्नस्टीन ने भाषा-प्रयोग के दो भेदों की चर्चा की - **सीमित कोड** एवं **विस्तृत कोड**। सीमित कोड के सम्बन्ध में उनका यह विचार था कि इसका प्रयोग सापेक्षत: अनौपचारिक स्थितियों में किया जाता है। यह प्रयोग वक्ता को एक समुदाय से जोड़ता है और इसकी पूर्ण अर्थवत्ता सन्दर्भ पर निर्भर करती है। इस कोड में सर्वनाम, बद्ध प्रश्न, शारीरिक चेष्टाएं अनुतान आदि अभिलक्षणों का प्रयोग अर्थ अभिव्यक्ति के लिए किया जाता है जबकि विस्तृत कोड में इसका अभाव होता है।

सुगठन well-formedness

प्रजनक व्याकरण के अन्तर्गत सुगठन शब्द का प्रयोग व्याकरणिकता के सन्दर्भ में किया गया। चॉमस्की के मतानुसार यदि कोई वाक्य एक व्याकरण नियमों से प्रजनित है तभी उसे सुगठित कहा जा सकता है। यदि वाक्य असुगठित है तो वह नियमों द्वारा प्रजनित नहीं किया जा सकता है।

सुव्यक्तता explicitness

भाषाविज्ञान की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता, सम्प्रति जो विश्लेषण का मुख्य उद्देश्य भी है। जब किसी नियम की सम्पूर्ण विशेषताएँ और जिन परिस्थितियों में वह नियम सक्रिय हो उन समस्त स्थितियों को सूक्ष्म रूपेण प्रतिपादित किया जाए तो इसे सुव्यक्तता कहते हैं। पारम्परिक व्याकरण के संदिग्ध वर्णन प्राय: सुव्यक्त वर्णन से भिन्न होते हैं इनकी व्याख्या बिना पूर्व ज्ञान के सम्भव नहीं होती है (उदाहरणार्थ - पारम्परिक व्याकरण में प्राप्त संज्ञा की परिभाषा वक्ता के निर्णय पर निर्भर करती है।)

सूक्ष्मता delicacy

हैलीडे के सिद्धान्त में विश्लेषण के ऐसे मापक्रम को सूक्ष्मता नाम दिया गया जो

सिद्धान्त की कोटियों को परस्पर सम्बन्धित करता है, यथा - एक उपवाक्य सकारात्मक अथवा प्रश्नवाचक वर्ग में वर्णित किया जा सकता है और प्रश्नवाचक का विश्लेषण अनेक प्रकार के प्रश्नों में करना सम्भव है इसी प्रकार आगे विश्लेषण किया जाता है। हैलीडे के उपागम के अन्य मापक्रम श्रेणी (rank) तथा द्योतन (exponence) हैं।

सूक्ष्म भाषाविज्ञान microlinguistics

कुछ वर्षों से भाषाविज्ञान को विषयवस्तु की संकीर्णता और विस्तार के आधार पर दो वर्गों में विभाजित किया गया - सूक्ष्म एवं बृहत भाषाविज्ञान। संकीर्ण विचारधारा भाषा-विज्ञान को स्वतन्त्र विज्ञान के रूप में स्थापित करती है जिसका उद्देश्य भाषा के एककालिक वर्णन के लिए सामान्य सिद्धान्त का निर्माण करना है। सर्वप्रथम स्विस विद्वान फर्दिनान्द डी सेस्यूर ने भाषाध्ययन के संकुचित क्षेत्र की आवश्यकता पर बल दिया और यह प्रतिपादित किया कि भाषाविज्ञान का उद्देश्य भाषा के कलेवर में प्राप्त समस्त विशेषताओं का भाषिक आधार पर वर्णन करना है।

सूक्ष्म लिप्यंकन narrow transcription

स्वन लिप्यंकन करने की वह पद्धति जिसमें सूक्ष्म स्वनिक विशेषताओं का भी ध्यान रखा जाता है। इसमें शुद्ध उच्चारण को प्रकट करने के लिए विशेषक चिह्नों का प्रयोग किया जाता है इसका विलोम **स्थूल लिप्यंकन** है।

सूचक informant

भाषिक विश्लेषण की उपयोगी सामग्री के लिए जो व्यक्ति स्रोत का कार्य करे। सूचक प्रायः मातृभाषा - भाषी ही होता है। सूचक का कार्य सामान्य वक्ता एवं भाषाविद् दोनों पूरा कर सकते हैं इसका उद्देश्य अन्वेषण की जा रही भाषा के नमूने एकत्रित करने मे सहायता देना है। क्षेत्रीय पद्धति में सूचक का विशेष महत्त्व है।

सूचना information

ऐसी जानकारी जिसमें चयन की सम्भाव्यता हो सूचना कहलाती है। यह शब्द गणित के सम्प्रेषण सिद्धान्त से भाषाविज्ञान में आया है।

सूत्रात्मक भाषा formulaic language

ऐसे कथन जिसमें सामान्य वाक्यीय एवं रूपरचनात्मक अभिलक्षणों का अभाव होता है उन्हें कतिपय सैद्धान्तिक एवं वर्णनात्मक अध्ययन में सूत्रात्मक कहा जाता है। कभी - कभी विशेष चिह्न अथवा सूत्रयुक्त भाषाएँ भी इस वर्ग में रखी जाती हैं, जैसे - वैज्ञानिक लिपि। जन्मदिन पर बधाई, जीते रहो, दूधो नहाओ पूतों फलो जैसे वाक्यों के व्यतिरेक भाषा में नहीं मिलते हैं। इस प्रकार की अप्रचलित संरचनाएँ निश्चित सामाजिक परिस्थितियों में ही प्रयुक्त होती हैं।

सेनिम ceneme

भाषा की स्वनप्रक्रियात्मक व्यवस्था की लघुतम इकाई के लिए ग्लोसेमैटिक्स में सेनिम पद का प्रयोग किया गया। स्वनविज्ञान एवं स्वनप्रक्रिया की भांति 'सेनिम संरचना' शब्द का भी प्रयोग मिलता है जिसके अन्तर्गत सेनिमों का विश्लेषण किया जाता है।

सोपानिकी hierarchy

भाषाविज्ञान में इस शब्द का प्रयोग वर्गीकरण विज्ञान के माध्यम से प्रारम्भ हुआ। सोपानिकी से तात्पर्य, भाषिक इकाइयों का कोई भी वर्गीकरण जो आनुक्रमिक आश्रित स्तरों की श्रेणी को मान्यता दे, से लिया जा सकता है। भाषाविज्ञान की किसी भी शाखा के आधार पर इसको स्पष्ट किया जा सकता है, जैसे - वाक्य का विश्लेषण उसके आसन्न घटकों में किया जाता है। अमरीकी भाषाविदों ने इस पर विशेष बल दिया और अन्तर्निवेश की अवधारणा को स्वीकार किया। इनके अनुसार प्रोक्ति में वाक्य, वाक्य में उपवाक्य, उपवाक्य में पदबन्ध. पदबन्ध में शब्द एवं शब्द में रूप अन्तर्निविष्ट हो एक सोपानिकी का निर्माण करते हैं।

स्टैन्डर्ड थ्योरी standard theory

अमरीकी भाषाविद् नोअम चॉमस्की ने 1965 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'ऑस्पेक्ट्स' (Aspects of the theory of syntax) में प्रजनक व्याकरण का जो प्रारूप प्रस्तुत किया उसे स्टैन्डर्ड थ्योरी नाम दिया गया। यह प्रारूप 'सिन्टैक्टिक स्ट्रक्चर्स' में प्रतिपादित प्रारूप से मुख्यत: दो बिन्दुओं पर भिन्न था। इस प्रतिमान में नियम संरचना को पूर्ण बनाने के लिए अर्थ पक्ष को ग्रहण किया गया तथा साथ ही इसमें अन्त:स्तलीय एवं बहिस्तलीय संरचना

की संकल्पनाओं का विस्तृत वर्णन किया गया। प्रथम प्रारूप में उल्लिखित बीज वाक्य, रूपस्वनिमिक घटक इसमें ग्रहण नहीं किए गए तथा सभी रूपान्तरणों को अनिवार्य माना गया।

स्तर level

भाषाविदों ने भाषाध्ययन में सरलता एवं विश्लेषण में सुविधा के लिए भाषा को कतिपय वर्गों में विभाजित किया। भाषा के ये वर्ग स्तर कहलाते हैं। इसके लिए प्रजनक व्याकरण में घटक और स्तरपरक व्याकरण में तल (strata) शब्द का प्रयोग किया गया। सामान्यत: स्वनविज्ञान, व्याकरण एवं अर्थ तीन स्तरों की चर्चा की जाती है। संरचनात्मक विद्वानों ने स्वनविज्ञान एवं स्वनप्रक्रिया तथा शब्दकोश को अर्थ से भिन्न स्तर के रूप में स्थापित किया और व्याकरण को रूपरचना एवं वाक्य रचना दो उपस्तरों में विभाजित किया। इन विद्वानों के अनुसार स्वनविज्ञान एवं अर्थ बाह्य जगत से सम्बन्धित होने के कारण भाषाविज्ञान से प्रत्यक्षत: सम्बन्धित नहीं है। स्तरों की संख्या एवं उनके पारस्परिक सम्बन्ध को लेकर विद्वानों में वैचारिक मतभेद मिलता है। ब्लूमफील्ड भाषिक विश्लेषण को स्वनविज्ञान के निम्न स्तर से उच्चस्तर की दिशा में बढ़ाने की चर्चा करते हुए स्तर सम्मिश्रण की आज्ञा नहीं देते हैं। हैलिडे सिद्धान्त में स्वनप्रक्रिया को अन्तर्स्तरीय माना गया जो स्वनिक एवं लेखिक सत्व को व्याकरण एवं कोशीय रूपों से संयुक्त करता है।

स्तर उच्छलन level skipping

बन्धिम व्याकरण के प्रवर्तक पाइक द्वारा उल्लिखित तीन प्रक्रियाओं में से एक। वह प्रक्रिया जहाँ एक स्तर के तत्त्व आगामी स्तर पर नहीं वरन् उसके बाद वाले स्तर पर समाविष्ट होते हैं, यथा - अंग्रेजी के पदबन्ध The king of Spain's son में सम्बन्ध कारक का चिह्न रूपग्रामिक स्तर पर शब्द में संयुक्त न होकर पदबन्ध 'The king of Spain' में संयुक्त हुआ है।

स्तर विन्यासी व्याकरण Stratificational grammar

अमरीकी भाषाविद् सिडनी एम. लैम्ब एवं उनके सहयोगियों ने फ्रांसीसी विद्वान सेस्यूर तथा लुई हेल्मस्लेव से सूत्रग्रहण कर इस भाषिक सिद्धान्त की स्थापना की। लैम्ब ने भाषा का प्रत्यक्षीकरण जटिल सम्बन्धों की व्यवस्था के रूप में किया और भाषिक संरचना की एक सतह / स्तर (strata) को दूसरे से व्युत्पन्न न मान उनके सम्बन्धों को पर्याप्त महत्त्व दिया। इन्होंने अंग्रेजी आदि भाषाओं के लिए छ: स्तर माने। इनके अनुसार

स्वनप्रक्रिया का स्तर अधोस्वनिमिक (या स्वनिक) तथा स्वनिमिक से मिलकर बना है; व्याकरण में कोशिमिक एवं रूपिमिक अन्तर्निहित हैं और शब्दार्थ विज्ञान के अन्तर्गत अर्थिमिक एवं अधोअर्थिमिक (या आर्थी) तल समाहित हैं। भाषा व्यवस्था के प्रत्येक तल की अपनी समस्तरीय व्यवस्था होती है जो दूसरे तलों से स्वतन्त्र है। लैम्ब दो प्रकार के सम्बन्धों का उल्लेख करते हैं -विन्यासात्मक एवं प्रतिफलनात्मक। प्रत्येक तल पर विविध तत्त्वों के सुगठित संयोजनों के मध्य घटित सम्बन्ध विन्यासात्मक कहलाते हैं जबकि अन्तर्तलीय सम्बन्ध प्रतिफलनात्मक कहलाते हैं।

स्थानाश्रित सचलता positional mobility

शब्द को एक व्याकरणिक इकाई के रूप में निर्धारित करने वाला अभिलक्षण। इसके अनुसार यद्यपि शब्द स्वयं वाक्यान्तर्गत सचल होता है किन्तु उसके निर्मायक घटक तत्त्वों का पुनर्विन्यास सम्भव नहीं होता, जैसे - हिन्दी शब्द अनौपचारिकतावश में आगत घटकों का विन्यास वशऔपचारिकताअन इस क्रम में नहीं किया जा सकता है।

स्थिति[1] position

किसी भाषिक इकाई के अन्तर्गत आगत प्रकार्यात्मक व्यतिरेकी स्थानों को भाषा-विज्ञान में स्थिति की संज्ञा दी जाती है, जैसे - शब्दान्तरगत रूपिम तथा वाक्यान्तरगत शब्द। प्राय: सोपानिक क्रम में उच्चस्तरीय इकाई में तत्त्वों की आरम्भिक, मध्यवर्ती एवं अन्त स्थितियों का उल्लेख किया जाता है। वह परिवर्त जो परिवेश विशेष पर आश्रित हो स्थानाश्रित परिवर्त कहलाता है, जैसे - सहस्वन, सहरूप आदि।

स्थिति[2] situation

किसी अनुमानित काल या बिन्दु पर भाषा की अवस्था उसकी स्थिति कहलाती है अर्थात् वह बहिर्भाषीय अवस्था जिसमें भाषा घटित होती है, जैसे - मध्यकालीन या उन्नीसवीं शताब्दी की हिन्दी। भाषा की ये अवस्थाएँ संकालिक भाषाविज्ञान के क्षेत्र का निर्माण करती हैं। अर्थ पक्ष के सम्पूर्ण उद्‌घाटन के लिए भाषाविज्ञान स्थिति या स्थितिपरक सन्दर्भ के परिप्रेक्ष्य में भाषा/कथन के अध्ययन की महत्ता पर बल देता है। सामाजिक परिस्थिति में घटित परिवर्तन भाषा में व्यवस्थित परिवर्तन लाता है इनके सह सम्बन्ध का अध्ययन समाजभाषाविज्ञान का क्षेत्र है। यहाँ स्थिति शब्द स्थूल अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। किसी कथन का स्थितिपरक अर्थ उसके समाजभाषिक निर्वचन के समतुल्य होगा, अर्थात् धार्मिक, राजनैतिक या अनौपचारिक स्थितियाँ।

स्थिति निर्देशी deixis

भाषा के वे अभिलक्षण जो प्रत्यक्षत: उस स्थिति की वैयक्तिक अल्पकालिक एवं स्थानिक विशेषताओं से जुड़े होते हैं जिसमें ऐसा कथन घटित हुआ हो जो अर्थ के स्तर पर स्थिति से सम्बन्धित हो। हिन्दी के वह, यह, जहाँ, वहाँ आदि शब्द इसी वर्ग में आते हैं। 'मैं वहाँ जा रहा हूँ' वाक्य में यह पुर्वानुमान किया गया है कि 'वहाँ' द्वारा संकेतित स्थान का ज्ञान श्रोता को पहले से ही है। संकेत प्रयोग एवं भाषार्जन सम्बन्धी अध्ययन में स्थिति निर्देशी अभिव्यक्तियों का विश्लेषण सहायक होता है।

स्थिति सन्दर्भ context of situation

फ़र्थ के भाषिक सिद्धान्त में प्रयुक्त एक पारिभाषिक शब्द। इस सिद्धान्त में अर्थ को बहुआयामी माना गया जिसके अनेक पक्ष बाह्य समाज से सम्बद्ध होने के साथ-साथ भाषिक विश्लेषण स्तर - ध्वनि, व्याकरण एवं अर्थ से भी सम्बन्धित हैं। यह उन समस्त बाह्य सामाजिक अभिलक्षणों की ओर संकेत करता है जो कथन के, इन स्तरों से सम्बन्धित, विश्लेषण के लिए उपयोगी होते हैं।

स्थूल लिप्यंकन broad transcription

स्वन-लिप्यंकन की वह पद्धति जिसमें सूक्ष्म स्वनिक विशेषताओं का समावेश नहीं होता है। ऐसे लेखन में प्रत्येक प्रभेदक स्वन के लिए ही एक पृथक चिह्न होता है न कि प्रत्येक अप्रभेदक स्वन के लिए भी अर्थात् यह पद्धति स्वनिमिक लिप्यंकन के काफी निकट है।

स्पर्श[1] plosive

उच्चारण प्रयत्न के आधार पर व्यंजन ध्वनियों के स्वनिक वर्गीकरण का एक वर्ग। इनके उच्चारण में वाक् पथ में वायु प्रवाह पूर्णत: बाधित हो अचानक निर्मोचित होता है चूंकि अवरोध के पीछे बना वायु का दबाव अचानक प्रवाहित होता है अत: इन्हें अंग्रेजी में plosive नाम दिया गया, इन्हें stop भी कहते हैं। ये व्यंजन घोष तथा अघोष दोनों हो सकते हैं। इस वर्ग में क्, त्, प् आदि स्वन आते हैं।

स्पर्श[2] stop

उच्चारण प्रयत्न के आधार पर किए गए वाक् ध्वनियों के वर्गीकरण का एक प्रकार। इन स्वनों का उच्चारण वाक् पथ के पूर्ण अवरोध द्वारा होता है। काकल पर किए

गए अवरोध को छोड़कर सभी स्पर्श स्वनों में वायु मार्ग का अवरोध दो बिन्दुओं पर होता है - कोमल तालु (इस अवरोध के कारण वायु नासा विवर में नहीं जा पाती है) तथा मुखान्तर्गत कोई अन्य स्थान। हिन्दी क्, ख्, ग्, त्, थ् आदि इसी वर्ग की ध्वनियाँ हैं। यदि अवरोध एक स्थान पर होता है तो उच्चरित स्वन **सरल स्पर्श** कहलाते हैं और यदि दो बिन्दुओं पर साथ-साथ अवरोध होता है तो इस स्थिति में उच्चरित स्वन **सम्मिश्र / जटिल स्पर्श** कहलाते हैं।

स्फोट sphota

संस्कृत वैयाकरण भट्टोजि दीक्षित के अनुसार 'जिसमें अर्थ प्रस्फुटित होता है' उस शब्दतत्त्व को स्फोट कहते हैं। श्री भूषणकार कौंडभट्ट का विचार है कि 'जिससे अर्थ ज्ञात होता है वह स्फोट है'। पतञ्जलि के विचारानुसार 'स्फोट शब्द है और ध्वनि शब्द का गुण'। ध्वनि कर्ण ग्राह्य होती है जबकि स्फोट बुद्धि ग्राह्य होता है। बोलते समय वक्ता की बुद्धि में स्थित शब्द (स्फोट) ध्वनि का कारण होता है जिसका प्रयोग अर्थ बताने के लिए किया जाता है, स्पष्ट है कि ध्वनि कार्य होती है और स्फोट कारण।

स्रोत नाम eponym

व्यक्ति विशेष के नाम से व्युत्पन्न शब्द स्रोत नाम कहलाते हैं, उदाहरणार्थ निरालानगर, इन्दिरानगर, हिटलरशाही, गांधी टोपी आदि।

स्वतः आधायक self embedding

ऐसी रचनाएँ जिनकी व्युत्पत्ति संरचनात्मक संक्रियाओं के एक निश्चित क्रम द्वारा हो स्वतः आधायक कहलाती हैं। ये संक्रियाएँ कळख+ (क)+ ग रूप में होती हैं। हिन्दी सम्बन्धपरक उपवाक्य इसके उदाहरण कहे जा सकते हैं, जैसे - वह लड़का, जिसके पिता दुर्घटनाग्रस्त हो गये थे, फेल हो गया। यहाँ 'लड़का फेल हो गया' वाक्य में 'लड़के के पिता दुर्घटनाग्रस्त हो गए' वाक्य आधायित है। इस प्रक्रिया का आगे विस्तार किया जा सकता है किन्तु चॉमस्की के मतानुसार वाक्य में एकाधिक स्वतः आधायक होने पर रचना की ग्राह्यता कम हो जाती है, जैसे - वह लड़का जिसके पिता, उसकी मां के दूसरे पति, दुर्घटनाग्रस्त हो गए, फेल हो गया।

स्वन phone

ध्वनि का लघुतम अनुभवगम्य, विच्छिन्न खण्ड स्वनविज्ञान में स्वन कहलाता है। खण्डीय स्वनप्रक्रिया के मतानुसार स्वन स्वनिम के भौतिक प्रतिफलन होते हैं तथा स्वनिम के स्वनिक परिवर्त सहस्वन कहलाते हैं।

स्वनगुण prosody

स्वनप्रक्रिया में स्वराघात, प्रबलता, गति एवं लय (खण्डेतर स्वनिमों) की विविधता को सामूहिक रूप में स्वनगुण की संज्ञा दी जाती है। कभी-कभी इन्हें खण्डेतर अभिलक्षण के अन्तर्गत परिगणित किया जाता है किन्तु संकुचित विचारधारा उपरिवर्णित परिवर्तों को ही स्वनगुण में समाहित करती है तथा शेष खण्डेतर अभिलक्षणों को पराभाषिक मानती है। इन अभिलक्षणों का अध्ययन विश्लेषण **स्वनगुणिमविज्ञान** के अन्तर्गत किया जाता है।

स्वनन प्रक्रिया phonation process

सुरयन्त्र में घटित ऐसी मौखिक क्रिया जिसकी भूमिका न तो स्वन आरम्भ करने में और न उच्चारण में होती है। स्वरतन्त्रियों का विविध प्रकार का प्रकम्पन ही मुख्यत: इसके अन्तर्गत आता है। स्वनन प्ररूप में स्वरतन्त्रियों की विभिन्न स्थितियों का अध्ययन किया जाता है, जैसे -

i घोष- उच्चारण के समय जब स्वरतन्त्रियों की परस्पर निकटता के कारण मध्य का मार्ग संकीर्ण हो तथा स्वरंतन्त्रियों में तनाव की वजह से वायु प्रकम्पित होकर निकले।

ii अघोष- स्वरंतन्त्रियों के पूर्णत: निश्चेष्ट रहने के कारण मध्य मार्ग खुला रहे और वायु निर्बाध रूप से बाहर आए।

iii फुसफुसाहट- स्वरतन्त्रियाँ बहुत निकट अथवा एकदम सटी और तनी हों जिससे उनमें प्रकम्पन सम्भव नहीं हो।

iv श्वासद्वारीय- स्वरतन्त्रियों के ऊपर का भाग एक दूसरे के साथ पूर्णत: जुड़ जाए और बीच का मार्ग अवरुद्ध हो जाए। इस प्रकार श्वासद्वार बन्द होने के कारण अन्दर की वायु अन्दर और बाहर की बाहर रह जाए।

v श्वसित घोष- स्वरतन्त्रियों का निचला भाग एक दूसरे से दूर रहने के कारण अघोष की स्थिति में और ऊपरी भाग निकट रहने के कारण प्रकम्पित स्थिति में रहता है।

vi काकल रंजित- स्वरतन्त्रियों का निचला भाग एक दूसरे से पूरी तरह सटे रहने से श्वासद्वारीय स्पर्श की स्थिति में और ऊपरी भाग निकट रहने के कारण प्रकम्पित स्थिति में रहता है।

स्वन परिवर्तन sound variation

समय के साथ किसी भाषा की स्वन-व्यवस्था मे घटित परिवर्तन स्वन परिवर्तन कहलाते हैं। ये कई प्रकार के होते हैं कहीं नवीन स्वन का आगम (स्नान - असनान); कहीं लोप (कृपया - कृप्या); कहीं विपर्यय (पागल - पगला) आदि स्थितियाँ मिलती हैं। ऐतिहासिक भाषाविज्ञान में स्वन परिवर्तन के आन्तरिक एवं बाह्य कारणों की चर्चा होती है। तुलनात्मक भाषाविज्ञान में नियमित स्वन परिवर्तन **स्वन नियम** (जैसे - ग्रिम नियम, ग्रैसमेन नियम) कहलाता है।

स्वनप्रक्रिया phonology

किसी भाषा विशेष में प्राप्त स्वन्यात्मक संरचनाओं और व्यवस्थाओं का विश्लेषण स्वनप्रक्रिया का क्षेत्र है। इसके अन्तर्गत भाषा के सार्थक स्वनों का व्यतिरेक एवं विरोध के आधार पर अध्ययन तथा स्वनों के वितरण एवं विन्यास का विश्लेषण किया जाता है। इस प्रकार जहाँ **स्वनविज्ञान** सामान्य स्वनों का भौतिक विवेचन करता है वहाँ **स्वनप्रक्रिया** स्वन के अमूर्त मानसिक पक्ष का। इसमें भाषा विशेष में प्राप्त स्वनों के प्रकार्य व व्यवस्था का विश्लेषण होता है।

स्वनविज्ञान phonetics

भाषाविज्ञान की वह शाखा जिसमें भाषायी स्वनों का सूक्ष्मातिसूक्ष्म वर्णन, विश्लेषण एवं वर्गीकरण किया जाता है। इसका उद्देश्य वाक् स्वनों के उच्चारण स्थान एवं अपेक्षित प्रयत्न को ज्ञात करना तथा स्थान एवं प्रयत्न के आधार पर स्वनों का वर्गीकरण करना है। अध्ययन की मूलभूत स्थापना उच्चारण, प्रसारण एवं श्रवण के आधार पर इसकी तीन शाखाएँ की जाती हैं - **उच्चारणमूलक स्वनविज्ञान**-स्वनों के उच्चारण में प्रयुक्त वागवयवों की संचालन प्रक्रिया का अध्ययन विश्लेषण इसका क्षेत्र है; **संवहनमूलक स्वनविज्ञान**-प्रत्येक स्वन तरंग के रूप में होता है। उच्चारण किए जाने पर यह तरंग चतुर्दिक व्याप्त वायुकणों को विक्षुब्ध करती है और कणों द्वारा संवहित होती है। स्वन संवहन से सम्बन्धित अध्ययन ही इसका क्षेत्र है; **श्रवणमूलक स्वनविज्ञान**-स्वनों को सुनकर कान उन्हें मस्तिष्क को प्रेषित करता है। भाषा के अर्थपक्ष की दृष्टि से कान का कार्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इस शाखा में वाक् स्वनों का विश्लेषण श्रवणेन्द्रिय द्वारा उनके ग्रहण किए जाने की संक्रियाओं के आधार पर किया जाता है।

स्वन सौन्दर्यशास्त्र phonaesthetics

यह शास्त्र स्वनों के सौन्दर्य अभिलक्षणों का अध्ययन करता है। इसके अन्तर्गत किसी स्वन की स्वन प्रतीकात्मकता विश्लेषित की जाती है, जैसे - अंग्रेजी में sl व्यञ्जन गुच्छ से प्रारम्भ होने वाले बहुत से शब्द 'फिसलन' (slippery) अर्थ की प्रतीति कराते हैं - slide, slip, slush, sludge आदि इसी प्रकार - ump व्यंजन गुच्छ अन्त वाले शब्द एक प्रकार के वृत्ताकार मास (mass) का अर्थ देते हैं - stump, plump, chump, hump आदि।

स्वनिम phoneme

सदृश वाक् स्वनों का ऐसा वर्ग जिनकी भिन्नताओं के प्रति वक्ता उदासीन रहता है और उन्हें समान मानता है तथा जो ऐसे अन्य वर्गों से व्यतिरेक प्रदर्शित करता है। इस वर्ग में समाविष्ट स्वन या तो पूरक वितरण में होते हैं या मुक्त, जैसे - हिन्दी काल और खाल में आगत क् ख् स्वनिम हैं। स्वनिम अमूर्त एवं मानसिक इकाई है, भाषा में स्वन प्रयुक्त होते हैं। किसी स्वनिम के विविध परिवर्त उस स्वनिम के सहस्वन कहलाते हैं। ये शब्द विशेष का अर्थ नहीं परिवर्तित करते हैं, परस्पर एक दूसरे से स्वनिक रूप में मिलते-जुलते होते हैं तथा एक सहस्वन के परिवेश में दूसरे का प्रयोग नहीं हो सकता है। यद्यपि कभी-कभी मुक्त रूप से एक दूसरे के स्थान पर बोले जा सकते हैं। जहाँ ल् ओर र् हिन्दी में स्वनिम है वहाँ जापानी में ये सह स्वन है।

किसी भाषा के सार्थक स्वनों का व्यतिरेक और विरोध के आधार पर अध्ययन तथा उनके वितरण और व्यवस्था का विश्लेषण **स्वनिम विज्ञान** कहलाता है। ऐसी वर्णमाला जिसका प्रत्येक वर्ण किसी स्वनिम का प्रतिनिधित्व करता है **स्वनिमिक वर्णमाला** होती है। इसमें सहस्वनों के लिए पृथक वर्ण नहीं होते हैं।

स्वनिमात्मक इकाई phonematic unit

जे.आर. फर्थ ने स्वनगुण स्वनप्रक्रिया के सिद्धान्त में दो विश्लेष्य कोटियों की चर्चा की -स्वनिमात्मक एवं स्वनगुण। वह इकाई जो स्वर व्यंजन के रूप में रेखीय अनुक्रम में प्रयुक्त होती है तथा खण्डीय होती है, स्वनिमात्मक कहलाती है।

स्वर vowel

ऐसी सघोष ध्वनियाँ जिनके उच्चारण में वायु धारा फेफड़ों से निसृत हो निर्बाध

रूप से कंठ तथा मुखविवर से होती हुई बाहर निकलती है। इनके उच्चारण में न तो किसी प्रकार की रुकावट उत्पन्न होती है और न ही घर्षण सुनाई पड़ता है। मुखविवर का मार्ग बन्द होने पर वायु नासिका विवर से निसृत होती है और उच्चरित स्वन **नासिक्य स्वर** कहलाता है। यदि मार्ग आंशिक रूप में बन्द हो तो स्वर **अनुनासिक** कहलाता है। स्वर **मुखर** एवं **आक्षरिक** भी होते हैं तथा उन में संस्कार होते हैं।

स्वराभ vocoid

हॉकेट ने ध्वनियों को दो वर्गों में विभाजित किया-स्वराभ एवं व्यंजनाभ। वे ध्वनियाँ जिनके उच्चारण में वायु जीभ के बीचोबीच होकर बिना किसी घर्षण के मुंह से निकलती है स्वराभ कहलाती हैं। ये केन्द्रगत, अनुनादी तथा मौखिक होती हैं।

स्वर मध्य intervocalic

दो स्वर ध्वनियों के मध्य में आगत व्यञ्जन। इस स्थिति में आगत व्यञ्जन की स्वनिक विशेषताएँ प्राय: अन्य स्थिति से भिन्न होती हैं, जैसे - सघोष व्यञ्जन की घोषता बढ़ जाती है। संस्कृत कोकिल शब्द में 'क' मध्यवर्ती स्थिति में है।

स्वर यन्त्र larynx

श्वास नली के ऊपर का वह भाग जिसमें घोषतन्त्रियाँ स्थित हैं। यह उपस्थियों, उतकों एवं मांसपेशियों से निर्मित एक डिब्बे की भांति होताहै। स्वर यन्त्र के चारो तरफ उपास्थि, उतक होते हैं और मध्य की जगह खाली रहती है जो श्वासद्वार कहलाती है। श्वासद्वार के दोनों तरफ लम्बी पतली छिल्लियाँ (घोषतन्त्रियाँ) होती हैं जो ओंठ की भांति सुरयन्त्र के भीतरी भाग में स्थित होती हैं। स्वर यन्त्र के जैविक एवं भाषिक दोनों प्रकार्य होते हैं। जैविक उपादान के रूप में स्वर यन्त्र एक वाल्व की भांति कार्य करता है जो फेफड़ो को ढँकता है। इसका द्वितीय प्रकार्य विविध प्रकार के ध्वनि प्रभाव (यथा - घोषता, फुसफुसाहट, श्वासद्वारीय स्पर्श आदि) उत्पन्न करना है। कभी-कभी सुरयन्त्र द्वारा उच्चरित ध्वनियाँ **काकलीय** भी कहलाती हैं। किसी स्वन के प्राथमिक उच्चारण के साथ-साथ घोषतन्त्रियों का कंपित जैसा कंपन सह उच्चारण के रूप में हो तो इस प्रक्रिया को **काकलीकरण** की संज्ञा देते हैं। काकल को देखने के लिए पारम्परिक पद्धति **काकलदर्शी** का प्रयोग किया जाता है। यह गोल हैण्डिल वाला शीशा होता है जिसे मुख के अन्तर्गत लगाते हैं और शीशे में अंकित छवि की तस्वीरें ली जाती हैं। **काकललेखी** सुरतन्त्रियों के कम्पन को रिकार्ड करने का एक यन्त्र होता है।

स्वराघात / सुर pitch

वह औच्चारिक विशेषता जो स्वरतन्त्रियों से उत्पन्न होती है अत: स्वरतन्त्रियों के कम्पन की मात्रा में भिन्नता स्वराघात में भिन्नता का प्रमुख कारण होती है। यह आवृत्ति के धरातल पर परिमाप्य वह खंडेतर गुण है जो वस्तुनिष्ठ होता है। साधारणत: मानव की स्वरतन्त्रियाँ 42 आवृत्ति प्रति सेकण्ड की न्यूनतम सीमा से लेकर 2400 आवृत्ति प्रति सेकण्ड की उच्चतम सीमा के मध्य कम्पित होती हैं। स्वरतन्त्रियों के कम्पन पर निर्भर रहने के कारण सघोष स्वनों में ही स्वराघात होता है। सामान्यत: इसके तीन भेद किए जाते हैं- उच्च, सम एवं निम्न। इनमें सम का मूल्य सामान्य और तटस्थ होता है जिसके सन्दर्भ में उच्च और निम्न परिभाषित किए जाते हैं। शब्द संरचना के धरातल पर प्रतिफलित स्वराघात तान कहलाता है, जबकि वाक्य संरचना के धरातल पर प्रतिफलित अनुतान/सुरलहर।

स्वरात्मक vocalic

प्रजनक स्वनशास्त्रियों ने भेदक अभिलक्षण सिद्धान्त में ध्वनि का एक अभिलक्षण स्वरात्मक प्रतिपादित किया जिसका व्यतिरेकी **अस्वरात्मक** होता है। इन ध्वनियों के उच्चारण में वायु वाक् पथ से निर्बाध रूप में बाहर निकलती है तथा घोषतन्त्रियाँ स्वत: घोषत्व की स्थिति में होती हैं, जैसे - [इ] और [उ] स्वरों के उच्चारण में मुख विवर में होने वाला सहज संकुचन। [ल, र] आदि व्यंजन भी स्वरात्मक होते हैं।

स्वरित circumflex accent

ग्रीक आदि भाषाओं में आरोही-अवरोही तान के सूचक स्वराघात को सकर्मफ्लैक्स कहते हैं। भाषाओं में यह दीर्घता, संकुचन अथवा अवरोही-आरोही तान तथा कुछ अन्य भाषाओं में स्वर-गुण का सूचक है। इस आघात का विशेषक चिह्न ^ है।

संस्कृत शब्द स्वरित वास्तव में इसका पूर्ण समानार्थी नहीं है। वह स्वराघात जिसमें उदात्त एवं अनुदात्त का मेल होता है उसे स्वरित कहते हैं (समाहार: स्वरित:)। इसमें अक्षर के स्वराघात का प्रारम्भिक अंश उदात्ततर होता है।

स्वरीकरण vocalization

भाषा विकास-क्रम में किसी व्यंजन का स्वर हो जाना स्वरीकरण कहलाता है, जैसे - हिन्दी में बारह> बारा; प्राचीन अंग्रेजी plegerre>आधुनिक अंग्रेजी player।

स्वायत्त autonomous

इस विशेषण का प्रयोग प्रायः भाषाविज्ञान को विज्ञान के रूप में प्रतिष्ठित करने वाली चर्चा में किया गया। इसका निहितार्थ यह था कि अब भाषा का अध्ययन भाषिक आधारों पर कियां जाए। भाषिक अध्ययन अन्य विषयों (तर्कशास्त्र, साहित्य, आलोचक) में रुचि रखने वाले विद्वानों पर आश्रित नहीं हैं इसका अपना स्वतन्त्र स्वायत्तपूर्ण विषय क्षेत्र है।

स्वन प्रक्रिया में इस शब्द का प्रयोग स्वनिम की विशेषता अभिलक्षित करने के लिए किया गया। जब किसी स्वनिम का वर्णन व्याकरणिक संरचना (विशेषतः शब्द) से उसके सम्बन्ध को ध्यान में रखे बिना किया जाए तो उसे स्वायत्त स्वनिम कहते हैं।

प्रजनक व्याकरण की 'स्टैन्डर्ड थ्योरी' में स्वायत्त वाक्य विन्यास की चर्चा की गई। इसके अनुसार व्याकरण का वाक्यीय अंश अर्थविज्ञान पर आश्रित नहीं होता है अर्थात् वाक्य की व्याकरणिकता सुनिश्चित करने वाले तथ्य वाक्य के अर्थ को निर्धारित करने वाले तथ्यों के बिना ही अपना कार्य करते हैं। प्रजनक अर्थविज्ञान में इस दृष्टिकोण की आलोचना की गई।

स्वायत्तखंडी स्वनिमविज्ञान auto segmental phonology

स्वन के खण्डीय सिद्धान्तों से व्यतिरेक प्रदर्शित करने वाला स्वनप्रक्रिया का एक उपागम। यह उपागम स्वनप्रक्रिया को अनेक सतहों में निर्मित मानता है और प्रत्येक सतह खण्डों के एक रेखीय विन्यास द्वारा निर्मित होती है तथा ये खण्ड परस्पर सहचारी रेखाओं द्वारा सम्बन्धित होते हैं। ये इस तथ्य की सूचना देती हैं कि उनका साथ-साथ उच्चारण कैसे होगा। आरम्भ में इस सिद्धान्त का प्रतिपादन तान का अध्ययन करने के लिए किया गया किन्तु बाद में इसका क्षेत्र विस्तृत हो गया और एकाधिक खण्ड पर आच्छादित अभिलक्षणों का भी अध्ययन किया जाने लगा।

स्वाश्रित automatic

किसी भाषा के स्वनप्रक्रियात्मक नियमों के कारण प्रेरित रूपरचनात्मक परिवर्तन स्वाश्रित कहलाते हैं, यथा - हिन्दी रूपरचना में /-अक/ एवं /-क/ का संयोग स्वनप्रक्रिया पर निर्भर है। /-अक/ का योग विवृत्ताक्षर के बाद होता है (छींक, हूक)।

स्वीकार्यता acceptability

एक मातृ भाषाभाषी जिस सीमा तक भाषिक सामग्री को सम्भव तथा मान्य समझता

है उसे स्वीकार्यता की संज्ञा देते हैं। जिस कथन का प्रयोग सामान्य एवं सम्भव माना जाए उसे 'स्वीकार्य कथन' कहते हैं। किसी कथन की स्वीकार्यता निर्धारित करने में अनेक जटिलताएँ आती हैं क्योंकि प्रायः मातृभाषियों के स्वीकार्यता सम्बन्धी निर्णय समान नहीं होते हैं। कोई कथन वक्ता को स्वीकार्य है अथवा अस्वीकार्य यह उसकी अन्तःप्रज्ञा (intution) पर निर्भर करता है जो उसकी सामाजिक, सांस्कृतिक, प्रादेशिक पृष्ठभूमि, आयु, व्यक्तिगत मान्यताओं आदि से प्रभावित होती है। कभी-कभी एक कथन किसी एक बोली में स्वीकार्य समझा जाता है और अन्य में अस्वीकार्य, उदाहरणार्थ - कपड़े डाल लो, कपड़े पहन लो। हिन्दी के बहुत से वक्ता 'दही' शब्द को स्त्रीलिंग मान 'दही खट्टी है' वाक्य को शुद्ध मानते हैं जबकि अन्य वक्ता 'दही खट्टा है' वाक्य को शुद्ध मानते हैं किन्तु एक भाषाविद् की दृष्टि में ऐसे समस्त कथन स्वीकार्य हैं जिनका प्रयोग समाज के किसी वर्ग द्वारा निरन्तर बोलने और लिखने में किया जा रहा है। यहाँ विश्लेषणात्मक समस्या यह निश्चित करना है कि समाज का कौन सा वर्ग किस उपलक्ष्य पर किस कथन का प्रयोग करता है। कभी-कभी एक ही बोली में, एक सन्दर्भ में, कोई कथन स्वीकार्य तथा दूसरे में अस्वीकार्य समझा जाता है, यथा - औपचारिक भाषा तथा बोलचाल की भाषा में प्राप्त भिन्नता; लिखित एवं मौखिक भाषा का भेद; विविध, धार्मिक, वैज्ञानिक भाषा रूपों में प्राप्त अन्तर।

भाषिक सामग्री की स्वीकार्यता को ज्ञात करने के लिए भाषाविज्ञान में अनेक तकनीकों की खोज हुई है। ये प्रायः एक प्रयोग के रूप में होती है जिनमें संदिग्ध स्वीकार्यता वाले वाक्य समुच्चयों के विषय में मातृभाषी से पूछा जाता है। यदि एक हिन्दी वक्ता निम्नलिखित वाक्य बोलता है - 'मैं साड़ी सिलकर कल लाऊंगा, तो भाषाविद् का कार्य यह निश्चित करना है कि यह अशुद्धि (काढ़-सिल) वक्ता के कारण है अथवा उसकी भाषा व्यवस्था का अभिन्न अंग अथवा किसी सामाजिक समुदाय की भाषा व्यवस्था का अभिलक्षण। यहाँ यह विशेषता लखनऊ के जरदोजी कारीगरों के मध्य प्राप्त होती है। स्पष्ट है कि इस प्रकार के अन्वेषणों में अनेक सूचक, प्रचुर मात्रा में भाषिक सामग्री तथा समय की आवश्यकता होती है। एक पूर्ण अस्वीकार्य वाक्य के पूर्व (*) तारक चिह्न लगता है तथा आंशिक अस्वीकार्य के पूर्व (?) प्रश्न चिह्न लगता है -

* मैंने आंखों की खुशबू सूंघी।

? यह ईमानदार फूल की कहानी है।

स्वीकार्यता के साथ-साथ वाक्य की व्याकरणिकता के विषय में भी जानना आवश्यक है। इन दोनों शब्दों मे भिन्नता है। ऐसा सम्भव है कि कोई वाक्य भाषिक नियमों के आधार पर सही (व्याकरणिक) हो किन्तु स्वीकार्य न हो यथा - मेरी आंखें भी सुनती हैं।

प्रजनक व्याकरण सिद्धान्त में स्वीकार्यता में प्राप्त विविधता को भाषिक प्रयोग के आधार पर विश्लेषित किया गया जबकि व्याकरणिकता भाषिक दक्षता का विषय है।

ह

हाँ-ना प्रश्न yes-no question

प्रश्नवाचक रचना का एक उपवर्ग जहाँ उत्तर हाँ या ना के रूप में ही होता है। अंग्रेजी में ये रचनाएँ प्रतिलोम कर्ता-कर्म-क्रम द्वारा रूपात्मक दृष्टि से चिह्नित होती हैं; जैसे - is he here? क-प्रश्न इनकी व्यतिरेकी रचनाएँ होती हैं।

हिन्दी Hindi

यह भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा एवं दस राज्यों (उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, उत्तरांचल, झारखण्ड, छत्तीसगढ़) की राजभाषा है। इतिहासकारों का मत है कि हिन्दी शब्द वस्तुत: 'सिन्धु' से निर्मित है। भाषा के अर्थ में 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग छठी शताब्दी ईसा पूर्व ईरान में हुआ और इसे 'जुबाने हिन्दी' कहा गया। परवर्ती काल में 'हिन्दी' का प्रयोग मुसलमानों की भाषा के लिए किया गया। जिसमें अरबी एवं फारसी के शब्द अधिक थे। संस्कृत शब्दों से युक्त रूप 'हिन्दवी' कहलाया। दक्षिण भारत में हिन्दी को 'दक्खिनी' या 'दकनी' नाम दिए गए। सन् 1800 में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना हुई जहाँ जॉन गिल क्राइस्ट हिन्दी अध्यापक नियुक्त हुए जिन्हें 'हिन्दी' का जनक भी कह सकते हैं। इन्होंने हिन्दी, हिन्दवी, उर्दू, रेख्ता को मिलाकर नई भाषा बनाई जिसे 'हिन्दुस्तानी' नाम दिया। 1900 शताब्दी के प्रथम चरण में हुए इस कॉलेज के अधिवेशन में लार्ड एमहर्स्ट ने बताया कि हिन्दी वस्तुत: संस्कृत शब्दावली पर आधारित है हिन्दुस्तानी हिन्दुओं के लिए परिचित नहीं है। इस प्रकार 1900 शताब्दी में हिन्दी, हिन्दुई, हिन्दवी एकीकृत हो गए तथा उर्दू, रेख्ता, अरबी, फारसी शब्द एकीकृत हो गए। आज हिन्दी के दो वर्ग मिलते हैं पूर्वी हिन्दी एवं पश्चिमी हिन्दी। मानक हिन्दी के तीन सोपान, यथा - प्राचीन हिन्दी (1000 - 1400ई.), मध्यकालीन हिन्दी (1400 - 1800ई.) और आधुनिक हिन्दी (1800 से आज तक) किए जाते हैं।

हिक्कित ejective

उच्चारण प्रयत्न के आधार पर किया गया व्यञ्जन का एक वर्ग जिसमें श्वासद्वारीय वायु प्रवाह तन्त्र के द्वारा उच्चरित ध्वनियाँ आती हैं। मुख अथवा ग्रसनी में वायु के संपीडन के दौरान श्वासद्वार बन्द रहता है तत्पश्चात् वायु छोड़ी जाती है। इस प्रकार के व्यंजन अमरीकी - इंडियन काकेशी, अफ्रीकी (हाउस) भाषाओं में मिलते हैं। ये ध्वनियाँ विशेष चिह्न द्वारा चिह्नित की जाती हैं यथा - [t']।

हैलिडे सम्प्रदाय Halliday school

1967-70 के बीच हैलिडे ने सिस्टेमिक व्याकरण की एक नई रूपरेखा प्रस्तुत की जिसमें भाषा संरचना को सामाजिक प्रयोजन एवं व्यवहार क्षेत्र से जोड़ने का प्रयास किया तथा भाषिक व्याकरण के साथ-साथ एक सामाजिक व्याकरण की संकल्पना की। हैलिडे ने भाषा के तीन प्रयोजनों के साथ तीन संरचना-स्तरों की कल्पना की - (i) वस्तुजगत में व्यक्ति जो कुछ अनुभव करता है उस अनुभूति की अपनी संरचना होती है (ii) अनुभूति संरचना को वक्ता अपने अंतर्वैयक्तिक दृष्टिकोण के अनुसार भाषा की निश्चित व्यवस्था के अन्तर्गत व्यक्त करता है (iii) वक्ता अपने संदेश को व्यक्त करने के लिए विशेष प्रसंग या प्रकरण अनुसार उपयुक्त भाषिक विकल्प का चयन करता है जो भाषा की 'सूचना संरचना' का निर्माण करता है। हैलिडे के विचारों का अनुप्रयोग पाठ विश्लेषण, शैलीविज्ञान तथा अन्य कई क्षेत्रों में किया गया।

ह्रास reduction

स्वन प्रक्रिया के अन्तर्गत ह्रास पारिभाषिक शब्द किसी स्वनिम के उच्चारण में लगने वाले समय में कमी की ओर संकेत करता है। अक्षर के सामान्य स्वरूप का क्षीण रूप **ह्रसित अक्षर** कहलाता है। स्वर-अवश्रुति व्यवस्था में स्वर के सामान्य स्वरूप से क्षीण रूप **ह्रसित स्वर** कहलाता है, जैसे - यज्ञ > इष्ट।

जब किसी शब्द के उच्चारण या लेखन में उसके किसी अंश का लोप हो जाए तो उस प्रक्रिया को भी ह्रास की संज्ञा दी जाती है, जैसे - सब+ही-सभी। कुछ भाषाओं में प्रबल बलाघात के फलस्वरूप निकटवर्ती बलाघाताहीन अक्षर का स्वर अनुच्चारित रह जाता है या क्षीण हो जाता है, जैसे - बाजार-बजार।

प्रजनक व्याकरण में वह रूपस्वनिमिक नियम जिसके अनुसार दो रूपों की सन्धि के फलस्वरूप उनमें से एक या दोनों के स्वरूप क्षीण हो जाते हैं, उदाहरणार्थ - घोड़ा + दौड़ = घुड़दौड़, बच्चा + पन = बचपन।

व्याकरण के क्षेत्र में यह शब्द ऐसे उपवाक्य की ओर संकेत करता है जो एक या अधिक तत्त्वों का ह्रास होने के कारण पूर्ण स्वतन्त्र रचना की भांति प्रयुक्त नहीं हो सकता है। इन्हें लुप्तांश रचना, संकुचित रचना या संक्षिप्त रचना की संज्ञा भी दी जाती है। कतिपय उपागम इन सभी के मध्य भेद भी स्थापित करते हैं।

शब्द-तालिका

अ

अंगजा आश्रित व्याकरण daughter dependency grammar 1

अंगविक्षेपविज्ञान kinesics 1

अंगागिवाचन synecdoche 2

अंत coda 2

अंत प्रत्यय suffix 2

अंतरण transference 2

अंतरीकृत internalized 2

अन्तर्गामी वायु प्रवाह ingressive air stream 3

अन्तर्निहित अभिलक्षण inherent feature 3

अन्तर्मुखी endophoric 3

अन्तर्राष्ट्रीय स्वनवर्णमाला international phonetic alphabet 3

अंतर्विनिमेयता interchangeability 4

अंतर्वैयक्तिक interpersonal 4

अंतिम final 4

अन्तिम घटक ultimate constituent 4

अंत:केन्द्रिक रचना endocentric construction 4

अन्त:प्रज्ञा intuition 5

अंत:भाषिक interlingual 5

अंत:लक्षी नियम क्रमण intrinsic rule ordering 6

आ

ऊ

ए

ऐ

ओ

ग

घ

च

ज

द

ध

न

प

य

र

ल

व

स

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची (हिन्दी)

कामता प्रसाद गुरू (सम्वत् 2009) हिन्दी व्याकरण, काशी।

कैलाशचन्द्र भाटिया (1973) भाषा भूगोल, प्रथम संस्करण, हिन्दी समिति।

भोलानाथ तिवारी और कृष्णकुमार गोस्वामी (1980) अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, आलेख प्रकाशन, दिल्ली।

भोलानाथ तिवारी (1984) अनुवाद विज्ञान, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली।

महेश प्रसाद जायसवाल (1981) आधुनिक भाषाविज्ञान का इतिहास, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

सत्यदेव चौधरी (1979) भारतीय शैलीविज्ञान, अलंकार प्रकाशन, दिल्ली।

सुरेश कुमार (1977) शैली विज्ञान, दि मैकमिलन कम्पनी ऑफ इण्डिया लिमिटेड, दिल्ली।

सुरेश कुमार (1986) अनुवाद सिद्धान्त की रूपरेखा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

सूरजभान सिंह (1985) हिन्दी का वाक्यात्मक व्याकरण, साहित्य सहकार, दिल्ली।

सूरजभान सिंह, (1997) हिन्दी भाषा संदर्भ और संरचना, साहित्य सहकार, दिल्ली।